(?)

॥ मंगलाचरण ॥

दोहा।

ॐ नमो अरिहन्त सिद्ध, आचारज उवज्भाय।
साधु सकल के चरण कूं, वन्दूं शीश नमाय ॥१॥
महामन्त्र ए सुध जपूं, प्रात समय सुखकार।
विघ्न मिटै संकट कटै, वरतै जय जयकार ॥२॥
सुमरूं श्री भिक्षु गुरु, प्रबल बुद्धि भण्डार।
तासु प्रसादे पामिये, समकित रत्न उदार ॥३॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥

नमस्कार थावो अरिहंत भगवंतने।

ते अरिहंत भगवंत केहवा छै १२ बारे गुणे करी सहित छै ते कहै छै अनन्तो ज्ञान १ अनन्तो दर्शण २ अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव ध्वनि ५ भामण्डल ६ फटिक सिंहासण ७ आशोकवृक्ष ८ पुष्प वृष्टि ९ देव दुन्दुभी १० चमरवीजे ११ छत्र धारे १२

॥ णमो सिद्धाणं ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवंतने।

ते सिद्ध भगवंत केहवा छै आठ गुणे करी सहित छै ते कहै छै केवल ज्ञान १ केवल दर्शण २ आत्मिक

सुप्त ३ पायक समकित ४ अटल अवगाहणा ५ अगु रुलघु ६ अगुरु लघुभाव ७ अन्तराय रहित ८

॥ णमो आयरियाणं ॥

नमस्कार थावो आचार्य महाराजने ।

ते आचार्य महाराज केहवा छै ३६ छत्रीस गुणे करी सहित छै ते कहै छै आरजदेश ना उपना १ आरज कुल ना उपना २ जातवंत ३ रूपवंत ४ थिर संघयण ५ धीरजवंत ६ आलोयणा दूसरा पासे करे नहीं ७ पोतेरा गुण पोते वर्णन न करे ८ कपटी न होवे ९ अभ्यात्मिक पांच इन्द्री जीते १० राग द्वेष रहित होवे ११ देश ना जाण होवे १२ काल ना जाण होवे १३ निपुण बुद्धि होवे १४ घणा देशारी भाषा जाणे १५ पांच आचार सहित १६ सूत्रारा जाण होवे १७ अर्थरा जाण होवे १८ सूत्र अर्थ दोना रा जाण होवे १९ कपटरी पूछै तो उत्थापे नहीं २० हेतुना जाण होवे २१ कारणरा जाण होवे २२ दृष्टान्त ना जाण होवे २३ न्यायरा जाण होवे २४ सीखवे समर्थ २५ प्रायश्चित्तना जाण होवे २६ थिर परिवार २७ आदेज वचन बोले २८ परीषह जीते २९ समय परसमय ना जाण ३० गंभीर होवे ३१ तेजवन्त होवे ३२ पण्डित विचक्षण होवे ३३ सोमचन्द्रमाजिसा ३४ शूरवीर होवे ३५ बहु गुणी होवे ३६ ।

पुनः

५ पांच इन्द्रि जीते ४ च्यार कषाय टाले, नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य पाले ५ पंच महाव्रत पाले ५ पंच आचार पाले ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४ वीर्य ५, ५ पंच सुमति पाले इर्या १ भाषा २ ऐषणा ३ अयाण भंडमत नषेवणा ४ उचारपासवण ५, ३ तीन गुप्ति मन १ बचन २ काय गुप्ति ३

इति षटत्रीस गुण संपूर्ण ।

॥ णमो उवज्झायाणं ॥

नमस्कार थावो उपाध्याय महाराजने ।

ते उपाध्याय महाराज केहवा छै २५ पचवीस गुणे करी सहित छै ते कहै छै १४ चवदे पूरब ११ इग्यारे अंग भणे भणावे ।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ बारे उपंग भणे भणावे ।

॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

नमस्कार थावो लोकने विषै सर्व साधु मुनिराजोंने

ते साधु मुनिराज केहवा छै सप्तवीस गुणे करी सहित छै ते कहे छै ५ पंच महाव्रत पाले ५ इन्द्री जीते ४ च्यार कषाय टाले भाव संचय १५ करण संचय १६

जोग सचय १७ क्षमावत १८ वैराग्यवत १६ मन समा धारणिया २० वचन समा धारणिया २१ काय समा धारणिया २२ ज्ञान सपना २३ दर्शन सपना २४ चारित्र सपना २५ वेदनी आया समो अहियासे २६ मरण आया समो अहियासे २७

इति संपूर्णम्।

॥ सामायक लेवोकी पाटी ॥

करेमि भन्ते सामाइय सावज्ज जोग पचक्खामि जाव नियम (मुहूर्त एक) पज्जुवासामि दुविहेण तिविहेण मणेण वायाये कायाये न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि।

॥ सामायक पारवोकी पाटी ॥

नवमा सामायक व्रतके विषे क्यो कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोउ सामायक में समता न कीधी विकथा कीनी हुवे अणपूरी पारी होय पारना विसार्यो होय मन वचन काया का जोग माठा परिवरताया होय सामायक में राज कथा देश कथा स्त्री कथा भत्त कथा करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़।

॥ अथ तिक्खुत्ता की पाटी ॥

तिक्खुत्तो अयाहीण पयाहीण वन्दामि नमसामि

सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मङ्गलं देइयं चेइयं पज्जु वासामि मत्थेण वन्दामि ।

अथ पंचपद वन्दणा ।

पहिले पद श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (बीस) तीर्थङ्कर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (एक सह साठ) तीर्थङ्कर देवाधिदेवजी पञ्च महाविदेह खेत्रां के विषै विचरै छै अनन्त ज्ञान का धणी अनन्त दर्शण का धणी अनन्त बल का धणी एक हजार आठ लक्षणा का धारणहार चौसठ इन्द्रां का पूजनीक, चौतीस अति-शय, पैंतीस वाणी, द्वादश गुण सहित विराजमान छै ज्यां अरिहन्ता से मांहरी वन्दना तिक्खुता का पाठ से मालूम होज्यो ।

दूजे पद अनन्ता सिद्ध पन्दरा भेदे अनन्ती चौबीसी मोक्ष पहुंता तिहां जनम नहीं जरा नहीं रोग नहीं सोग नहीं मरण नहीं भय नहीं संयोग नहीं वियोग नहीं दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भावास में आवै नहीं इसा उत्तम सिद्ध भगवन्ता से मांहरी वन्दना तिक्खुत्ता का पाठ से मालूम होज्यो ।

तीजे पद जघन्य दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली पञ्च महाविदेह खेत्रां में विचरै छै केवल

ज्ञान केवल दर्शण का धारक लोकालोक प्रकाशक सब द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाणे देखे ते ज्यां केवलीजी से म्हारी वन्दना निरखुता का पाठ से मालूम होज्यो ।

चौथे पद गणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी थविर जी ते गणधरजी महाराज केहवा छे अनेक गुणा बिराज मान छे आचार्यजी महाराज केहवा छे छत्तीस गुणा विराजमान छे उपाध्यायजी महाराज केहवा छे पचीस गुणा विराजमान छे थविरजी महाराज केहवा छे धर्म से डिगता हुआ प्राणी ने थिर करी राखे शुद्ध आचार पाले पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां से म्हारी वन्दना निरखुता का पाठ से मालूम होज्यो ।

पांचमें पद म्हारा धर्म आचारज गुरु पूज्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्री कालूरामजी स्वामी (वर्तमान आचारज को नाम लेणो) जघन्य दोय हजार कोड साधु साध्वी उत्कृष्टा नव हजार कोड साधु साध्वी अढ़ाई द्वीप पन्दरे क्षेत्रा में विचरे छे ते म्हा उत्तम पुरुष केहवा छे, पांच महाव्रत का पालणहार, छव काया मा पीहर, पांच सुमति सुमता, तीन गुप्ति गुप्ता, बारे भेदे तपस्या का करणहार, बावीस परीषह का जीतणहार, बयालीस दोष टाल आहार पाणी का लेवणहार, बावन अनाचार का टालणहार, सत्तावीस गुण संयुक्त निर्लोभी

निरलालची, सचित्त का त्यागी, अचित्त का भोगी, संसार से पूठा, मोक्ष से स्हामां, अस्वादी, त्यागी, वैरागी, तेडिया आवै नहीं, नोंतियां जीमें नहीं, वायरा नीं परै अप्रतिवन्ध विहारी इसा महापुरुषां से मांहरी वन्दना तिक्खुत्ता का पाठ से मालूम होज्यो।

पच्चिस बोल।

१ पहले बोलै गति च्यार ४

नरकगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देव-गति ४

२ दूजै बोलै जाति ५

एकेन्द्री, वेइन्द्री, तेइन्द्री, चौइन्द्री, पंचेन्द्री,

३ तीजै बोलै काया छव ६

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६

४ चौथे बोलै इन्द्रियां ५

श्रोतइन्द्री १ चक्षुइन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रसइन्द्री ४ स्पर्शइन्द्री ५

५ पांचमें बोलै पर्याय छव ६

आहार पर्याय १ शरीर पर्याय २ इन्द्रिय पर्याय ३ श्वासोश्वास पर्याय ४ भाषा पर्याय ५ मन पर्याय ६

७ छठे बोले प्राण १०

श्रोतइन्द्री बलप्राण १ चक्षुइन्द्री बलप्राण २ घ्राण इन्द्री बलप्राण ३ रसेन्द्री बलप्राण ४ स्पर्शइन्द्री बलप्राण ५ मन बलप्राण ६ वचन बलप्राण ७ काया बलप्राण ८ श्वासोश्वास बलप्राण ९ आयुष बलप्राण १०

७ सातमे बोले शरीर पांच ५

औदारिक शरीर १ वैक्रिय शरीर २ आहारिक शरीर ३ तैजस शरीर ४ कार्मण शरीर ५

८ आठमे बोले जोग पन्द्रह १५

४ च्यार मनका

सत्य मन जोग १ असत्य मन जोग २ मिश्र मन जोग ३ व्यवहार मन जोग ४

४ च्यार वचन का

सत्य भाषा १ असत्य भाषा २ मिश्र भाषा ३ व्यवहार भाषा ४

७ काया का

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय को मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक मिश्र ६ कार्मण जोग ७

९ नवमें बोलै उपयोग बारह १२

५ पांच ज्ञान

मति ज्ञान १ श्रुति ज्ञान २ अवधि ज्ञान ३ मन पर्यव ज्ञान ४ केवल ज्ञान ५

३ तीन अज्ञान

मति अज्ञान १ श्रुति अज्ञाम २ विभङ्ग अज्ञान ३

४ च्यार दर्शन

चक्षु दर्शन १ अचक्षु दर्शन २ अवधि दर्शन ३ केवल दर्शन ४

१० दशमें बोलै कर्म आठ ८

ज्ञानावरणी कर्म १ दर्शनावरणी कर्म २ वेदनी कर्म ३ मोहनीय कर्म ४ आयुष्य कर्म ५ नाम कर्म ६ गोत्र कर्म ७ अन्तराय कर्म ८

११ इग्यारमें बोलै गुणस्थान चौदा १४

१ पहिलो मिथ्यात्व गुणस्थान

२ दूजो सहस्वादन समदृष्टि गुणस्थान

३ तीजो मिश्र गुणस्थान

४ चौथो अव्रत समदृष्टि गुणस्थान

५ पांचमों देशव्रत श्रावक गुणस्थान

६ छठो प्रमादी साधू गुणस्थान

७ सातमो अप्रमादी साधू गुणस्थान

८ आठमों नियट बादर गुणस्थान
९ नवमों अनियट बादर गुणस्थान
१० दशम् सूक्ष्म सपराय गुणस्थान
११ इग्यारमूं उपशान्त मोह गुणस्थान
१२ बारम् क्षीणमोहनीय गुणस्थान
१३ तेरम् सयोगी केवली गुणस्थान
१४ चौदम् अयोगी केवली गुणस्थान
१२ बारमें बोलै पाच इन्द्रिया की तेवीस विषय
श्रोतइन्द्री की तीन विषय
जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३
चक्षु इन्द्री की पाच विषय
काले १ पीले २ नीले ३ राते ४ धोले ५
घ्राणइन्द्री की दोय विषय
सुगन्ध १ दुर्गन्ध २
रसइन्द्री की पाच विषय
खट्टो १ मीठो २ कडवो ३ कसायलो ४ तीखो ५
स्पर्श इन्द्री की आठ विषय
हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५
चिकणू ६ ठण्डो ७ उनो ८
१३ तेरमें बोलै दश प्रकार की मिथ्यात्व
१ जीवनें अजीव सरदह ते मिथ्यात्व

२ अजीवनें जीव सरदह ते मिथ्यात्व

३ धर्मनें अधर्म सरदह ते मिथ्यात्व

४ अधर्मनें धर्म सरदह ते मिथ्यात्व

५ साधूनें असाधू सरदह ते मिथ्यात्व

६ असाधूनें साधू सरदह ते मिथ्यात्व

७ मार्गनें कुमार्ग सरदह ते मिथ्यात्व

८ कुमार्गनें मार्ग सरदह ते मिथ्यात्व

९ मोक्ष गयानें अमोक्ष गयो सरदह ते मिथ्यात्व

१० अमोक्ष गयानें मोक्ष गयो सरदह ते मिथ्यात्व

१४ चौदमें बोलै नव तत्व को जाणपणो तींका ११५ एक सौ पन्दरा बोल

चौदै जीव का

सूक्ष्म एकेन्द्री का दोय भेद—

१ पहिलो अपर्यासो २ दूसरो पर्यासो

बादर एकेन्द्री का दोय भेद—

३ तीजो अपर्यासो ४ चौथो पर्यासो

बेइन्द्री का दोय भेद—

५ पांचमूं अपर्यासो ६ छट्ठो पर्यासो

तेइन्द्री का दोय भेद—

७ सातमूं अपर्यासो ८ आठमूं पर्यासो

पाँचन्द्री का ठोय भेद—

६ नवम् अपर्यासो १० दशम् पर्यासो

असन्नी पचेन्द्री का ठोय भेद—

११ इग्यारम् अपर्यासो १२ बारम् पर्यासो

सन्नी पचेन्द्री का ठोय भेद—

१३ तेरम् अपर्यासो १४ पर्यासो

१४ चौदे अजीव का भेद—

धर्मास्तिकाय का ३ भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश

अधर्मास्तिकाय का ३ भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश

आकाशास्तिकाय का ३ भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश

काल को दशम् भेद (ये दश भेद अरूपी छै)

पुद्गलास्तिकाय का च्यार भेद—

खन्ध, देश, प्रदेश, परमाणु

६ पुन्य नव प्रकारे

अन्नपुन्ने १ पाणपुन्ने २ लैणपुन्ने * ३ सयण पुन्ने † ४ वत्थपुन्ने, ५ मनपुन्ने ६ वचनपुन्ने ७ कायापुन्ने ८ नमस्कारपुन्ने ९

* लैण=जगा जमीनादिक † सयण=पाट बाजोटादिक

१८ पाप आठारे प्रकार—

प्राणातिपात १ मृषावाद * २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैसुन्य ‡ १४ परपरिवाद १५ रति अरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन शल्य १८

२० वीस आस्रव का—

मिथ्यात्व आस्रव १ अव्रत आस्रव २ प्रमाद आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ५ प्राणातिपात आस्रव ६ मृषावाद आस्रव ७ अदत्तादान आस्रव ८ मैथुन आस्रव ९ परिग्रह आस्रव १० श्रोतइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव ११ चक्षुइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १२ घ्राणइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १३ रसइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १४ स्पर्शइन्द्री मोकली मेले ते आस्रव १५ मन प्रवर्तावै ते आस्रव १६ वचन प्रवर्तावै ते आस्रव १७ काया प्रवर्तावै ते आस्रव १८ भण्डोपकरणमेलतां † अजयणा करै ते आस्रव १९ सुई कुसाग्रमात्र सेवै ते आस्रव २०

---

* वाद=बोलना ‡ पैसुन्य=चुगली

† अजयण=यत्ता नहीं।

२० वीस संवर का—

सम्यक् ते संवर १ व्रत ते संवर २ अप्रमाद ते संवर ३ अकषाय संवर ४ अजोग संवर ५ प्राणातिपात न करे ते संवर ६ मृषावाद न बोले ते संवर ७ चोरी न करे ते संवर ८ मैथुन न सेवे ते संवर ९ परिग्रह न राखे ते सम्वर १० श्रुतइन्द्री वश करे ते सम्वर ११ चक्षुइन्द्री वश करे ते संवर १२ घ्राणइन्द्री वश करे ते संवर १३ रसेन्द्री वश करे ते संवर १४ स्पर्शइन्द्री वश करे ते संवर १५ मन वश करे ते संवर १६ वचन वश करे ते सम्वर १७ काया वश करे ते संवर १८ भण्डउप-गरणादिक अजयणा न करे ते संवर १९ सूई कुसाग्र न सेवे ते सम्वर २०

१२ निर्जरा बारे प्रकारे

अणसण ⊛ १ ऊणोदरी † २ भिक्षाचरी ३ रस परित्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषणा ६ प्राय-श्चित ७ विनय ८ वैयावच ९ सिज्झाय १० ध्यान ११ विउसग्ग ‡ १२

४ बन्ध च्यार प्रकारे—

प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ अनुभागबंध ३ प्रदेशबंध ४

⊛ अणसण=उपवासादिक † ऊणोदरी=कम खाना

‡ विउसग्ग=निश्चल काउसग्ग

४ मोक्ष च्यार प्रकारे—

ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४

१५ पन्दरमें बोलै आत्मा आठ—

द्रव्यआत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३ उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शन आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

१६ सोलमें बोलै दण्डक चौवीस—

१ सात नारकियां को एक दण्डक

१० दश दण्डक भवनपतिका—

असुरकुमार १ नागकुमार २ सोवन कुमार ३ विद्युत कुमार ४ अग्नि कुमार ५ दीपकुमार ६ उदधि कुमार ७ दिसाकुमार ८ वायु कुमार ९ स्तनित कुमार १०

५ पांच थावरका पञ्च दण्डक—

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५

१ बेइन्द्री को सतरमों

१ तेइन्द्री को अठारमों

१ चौइन्द्री को उगणीसमों

१ तिर्यञ्च पंचेन्द्री को बीसमों

१ मनुष्य पंचेन्द्री को इकवीसमो

१ वाणव्यन्तर देवता को बावीसमों

१ जोतिषी देवता को तेवीसमों

१ वैमानिक देवता को चौवीसमों

१७ सतरवें बोलै लेश्या छव ६—

कृष्णलेश्या १ नील लेश्या २ कापोत लेश्या ३
तेजो लेश्या ४ पद्म लेश्या ५ शुक्ल लेश्या ६

१८ अठारमें बोलै दृष्टि ३ तीन—

सम्यक्दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि २ समामिथ्या दृष्टि ३

१९ उगणीसमें बोलै ध्यान ४ च्यार—

आर्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४

२० बीसमें बोलै षट्द्रव्य को जाणपणो

धर्मास्तिकायने पांचा बोलां ओलखीजै—
द्रव्यथकी एक द्रव्य, क्षेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी गुणथकी जीव पुद्गल ने हालवा चालवा को सहाय, अधर्मास्तिकाय ने पांचां बोलां ओलखीजै—द्रव्य थी एक द्रव्य, क्षेत्र थी लोक प्रमाणे कालथकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी गुण थी थिर रहवा को सहाय, आकाशास्तिकाय ने पांच बोल करी ओलखीजै—द्रव्य थी एक द्रव्य, क्षेत्र थी लोक अलोक प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी

अरूपी, गुण थी भाजन गुण, काल ने पांचां बोलां ओलखीजै—द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थी वर्त्तमान गुण, पुद्गलास्तिकाय ने पांच बोल थी ओलखीजै—द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित भाव थी रूपी, गुण थी * गले मले, जीवास्तिकाय ने पांच बोल करी ओलखीजै—द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थी चैतन्य गुण।

२१ एकवीसमें बोलै रासि २ दोय—

जीवरासि १ अजीवरासि २

२२ बावीसमें बोलै श्रावक का १२ बारह व्रत—

१ पहिला व्रत में श्रावक स्थावर जीव हणवा को प्रमाण करे और त्रस जीव हालतो चालतो हणवा का सउपयोग त्याग करे।

२ दूजा व्रत में मोटकी झूठ बोलवा का सउपयोग त्याग करे।

---

* गले मलेः घटे बधेः अथवा जुदा एकत्र होय।

३ तीजा व्रत में श्रावक राजदण्डे लोक भण्डे इसी मोटकी चोरी करवा का त्याग करे ।

४ चौथा व्रत में श्रावक मर्याद उपरान्त मैथुन सेवा का त्याग करे ।

५ पाचमा व्रत में श्रावक मर्याद उपरान्त परिग्रह राखवा का त्याग करे ।

६ छट्ठा व्रतके विषय श्रावक दशों दिशि में मर्याद उपरान्त जावा का त्याग करे ।

७ सातवां व्रतके विषय श्रावक उपभोग परिभोग का बोल २६ छवीस छै जिणरी मर्याद उपरान्त त्याग करे तथा पन्दरह कर्मादान की मर्याद उपरान्त त्याग करे ।

८ आठमा व्रत के विषय श्रावक मर्याद उपरान्त अनर्थ दण्ड का त्याग करे ।

९ नवमा व्रत के विषय श्रावक सामायक की मर्याद करे ।

१० दशमा व्रत के विषय श्रावक देसावगामी सवर की मर्याद करे ।

११ इग्यारमू व्रत के विषय श्रावक पोषह करे ।

१२ बारमू व्रत के विषय श्रावक शुद्ध साधु निर्ग्रंथ

ने निर्दोष आहार पाणी आदि चउदह प्रकार नो दान देवे ।

२३ तेवीसमें बोलै साधूजी का पंच महाव्रत—

१ पहिला महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे जीव हिंसा करे नहीं, करावै नहीं, करतां ने भलो जाणै नहीं, मनसे वचन से काया से ।

२ दूसरा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलतां प्रते भलो जाणै नहीं, मन से वचन से काया से ।

३ तीजा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं, करावे नहीं, करतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से वचन से काया से ।

४ चौथा महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं, सेवावे नहीं, सेवतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से वचन से काया से ।

५ पांचवां महाव्रत में साधूजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं, राखतां प्रते भलो जाणे नहीं, मन से वचन से काया से ।

२४ चौवीसमें बोलै भांगा ४६ गुणचास—

करण ३ जोग ३ तीन से हुवै ।

करण ३ का नाम—करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनु-

मोदूं नहीं, जोग ३ का नाम—मनसा, वायसा, कायसा।

आंक ११ का भांगा ९—

एक करण एक जोग से करणा, करूं नहीं, मनसा १, करूं नहीं वायसा २, करूं नहीं कायसा ३, कराऊं नहीं मनसा ४, कराऊं नहीं वायसा ५, कराऊं नहीं कायसा ६, अनुमोदूं नहीं मनसा ७, अनुमोदूं नहीं वायसा ८, अनुमोदूं नहीं कायसा ९

आंक १२ बारमां का भांगा ९—

एक करण दोय जोगसे, करूं नहीं मनसा वायसा १, करूं नहीं मनसा कायसा २, करूं नहीं वायसा कायसा ३, कराऊं नहीं मनसा वायसा ४, कराऊं नहीं मनसा कायसा ५, कराऊं नहीं वायसा कायसा ६, अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा ७, अनु-मोदूं नहीं मनसा कायसा ८, अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा ९

आंक १३ का भांगा ३—

एक करण तीन जोग से, करूं नहीं मनसा वायसा कायसा १, कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा २, अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा ३

आंक २१ का भांगा ९—

दोय करण एक जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं बायसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा ३, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा ४, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा ५, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ६, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा ७, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा ८, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ९

आंक २२ बावीस का भांगा ९ नव—

दोय करण दोय जोग से, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा बायसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा कायसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं बायसा कायसा ३, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा ४, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ५, करूं नहीं अनुमोदूं बायसा कायसा ६, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा ७, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ८, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा ९

आंक २३ तेवीस का भांगा ३ तीन—

दोय करण तीन जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं

मनसा वायसा कायसा १, करू नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा २, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा ३

आंक ३१ का भागा ३ तीन—

तीन करण एक जोगसे, करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा १, करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा २, करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ३

आंक ३२ बत्तीस का भागा ३ तीन—

तीन करण दोय जोग से, करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा १, करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा २, करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा ३

आंक ३३ तेतीस को भागो १ एक—

तीन करण तीन जोगसे करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा।

२५ पचीसमें बोलै चारित्र पांच—

सामायिक चारित्र १ छेदोपस्थापनीय चारित्र २ परिहार विशुद्ध चारित्र ३ सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ४ यथाख्यात चारित्र ५

॥ इति पचास बोल सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ पाना की चरचा ॥

---

१ जीव रूपी के अरूपी. अरूपी किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय ।

२ अजीव रूपी के अरूपी, रूपी अरूपी दोनूं हीं, किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल ये च्यार तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी ।

३ पुन्य रूपी के अरूपी, रूपी, ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म कर्म ते पुद्गल, पुद्गल ते रूपी ही छै ।

४ पाप रूपी के अरूपी, रूपी, ते किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल, पुद्गल ते रूपी

५ आस्रव रूपी के अरूपी, अरूपी ते किणन्याय आस्रव जीव का परिणाम छै, परिणाम ते जीव छै, जीव ते अरूपी छै, पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय ।

६ संवर रूपी के अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं ।

६ संवर सावद्य के निरवद्य. निरवद्य छै, ते किण न्याय कर्म रोकवारा परिणाम निरवद्य छै।

७ निरजरा सावद्य के निरवद्य, निरवद्य छै ते किण न्याय कर्म तोड़वारा परिणाम निरवद्य छै।

८ बन्ध सावद्य के निरवद्य, दोनूं नहीं ते किणन्याय अजीव छै इणन्याय।

९ मोक्ष सावद्य के निरवद्य, निरवद्य छै, सकल कर्म मूकाय सिद्ध भगवन्त थया ते निरवद्य छै।

छट्ठी तीजी आज्ञा मांहि बाहर की।

१ जीव आज्ञा मांहि के बाहिर, दोनूं छै ते किणन्याय, जीव का चोखा परिणाम आज्ञा मांहि छै खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर।

२ अजीव आज्ञा मांहि के बाहिर, दोनूं नहीं अजीव छै।

३ पुन्य आज्ञा मांहि के बाहिर, दोनूं नहीं, अजीव छै इणन्याय।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ आस्रव आज्ञा मांहि के बारे, दोनूं ही छै, ते किण न्याय, आस्रव नां पांच भेद छै तिणमें मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो आज्ञा बाहिर छै,

५ आस्रव चोर के साहूकार, दोनूं छै आस्रव तो चोर छै, अने अशुभ छै, शुभ जोग साहूकार छै।

६ संवर चोर के साहूकार, साहूकार कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छै।

७ निर्जरा चोर के साहूकार, साहूकार छै, कर्म तोड़वारा परिणाम साहूकार छै।

८ बन्ध चोर के साहूकार, दोनूं नहीं अजीव

९ मोक्ष चोर के साहूकार, साहूकार, मूंकाय कर सिद्ध थया ते साहूकार छै।

छट्ठी पांचवीं जीव अजीव की

१ जीव ते जीव छै के अजीव, जीव, ते सदाकाल जीव को जीव रहसे अजीव कदे नहीं।

२ अजीव ते जीव छैके अजीव छै, अजीव छै, अजीव को जीव किण ही काल में हुवै नहीं।

३ पुन्य जीव छै के अजीव छै, अजोव छै, ते किण न्याय शुभ कर्म पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै।

४ पाप जीव छै के अजीव, अजीव छै, किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै।

४ पाप छांडवा जोग के
छै, किणन्याय पाप ते अशुभ
दुखदाई छै ते छांडवा ही जोग

५ आस्रव छांडवा जोग के अ
जोग छै, किणन्याय आस्रव द्वारे
छै, आस्रव कर्म आवा नां बारणा
जोग छै।

६ संवर छांडवा जोग के आदरवा जोग,
छै, किणन्याय कर्म रोके ते संवर छै
जोग छै।

७ निर्जरा छांडवा जोग के आदरवा जोग
जोग छै, किणन्याय देश थी कर्म तोड़ै
जीव उज्ज्वल थाय ते निर्जरा छै ते आ
ही छै।

८ बन्ध छांडवा जोग के आदरवा जोग,
छै ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नो बन्ध
जोग ही छै।

९ मोक्ष छांडवा जोग के आदरवा जोग,
जोग छै, ते किणन्याय सकल कर्म खपावे, ज
निरमल थाय, सिद्ध हुवे, इणन्याय आदरवा ज
छै।

३ आकाशास्तिकाय सावद्य के
अजीव छै।

४ काल सावद्य के निरवद्य, दोनूं
५ पुद्गलास्तिकाय सावद्य के
अजीव छै।

६ जीवास्तिकाय सावद्य के निरव
अजीव छै।

छव द्रव्य पर लड़ी ६ नव

१ धर्मास्तिकाय आज्ञा मांहि के बाहर,
किणन्याय, आज्ञा मांहि बाहर तो जीव
अजीव छै।

२ अधर्मास्तिकाय आज्ञा मांहि के बाहर,
किणन्याय अजीव छै।

३ आकाशास्तिकाय आज्ञा मांहि के बाहर,
किणन्याय अजीव छै।

४ काल आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं नहीं,
अजीव छै।

५ पुद्गल आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं नहीं, किण
अजीव छै।

६ जीव आज्ञा मांहि के बाहर, दोनूं छै, किणन्याय

४ काल जीव के अजीव, अजीव

५ पुद्गलास्तिकाय जीव के अजीव,

६ जीवास्तिकाय जीव के अजीव,

छक द्रव्य पर लड़ी १२

एक अनेक की ।

१ धर्मास्तिकाय एक छै के अनेक छै, न्याय द्रव्य थकी एक ही द्रव्य छै ।

२ अधर्मास्तिकाय एक छै के अनेक छै, थकी एक ही द्रव्य छै ।

३ आकाशास्तिकाय एक के अनेक, एक अलोक प्रमाणे एक ही द्रव्य छै ।

४ काल एक छै के अनेक छै, अनेक छै, ० अनन्ता द्रव्य छै, इणन्याय ।

५ पुद्गल एक छै के अनेक छै, अनेक छै, ० अनन्ता द्रव्य छै, इणन्याय ।

६ जीव एक छै के अनेक छै, अनेक छै, अनन्ता छै इण न्याय ।

लड़ी १३ तेरमी ।

छव में नव में की चरचा ।

१ कर्मों को कर्त्ता छव पदारथ में कोण ? नव तत्व में कोण ?

उत्तर—छव में जीव, नव में जीव

२ कर्मों को उपार्जिना छव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव,

३ कर्मों को लगावता छव में कोण ?

उ०—छव में जीव, नव में जीव,

४ कर्मों को रोकना छव में कोण ? नव

उ०—छव में जीव, नव में जीव, सवर

५ कर्मों को तोड़ता छव में कोण ? नव में

उ०—छव में जीव, नव में जीव,

६ कर्मों को वापना छव में कोण ? नव में

उ०—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव।

७ कर्मों को मुकावता छव में कोण ? नव में

उ०—छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष।

छट्ठी १४ बोट्मी।

१ अठार पाप सेवे ते छव में कोण ? नव में

छव में जीव, नव में जीव, आस्रव।

२ अठारे पाप सेवा का त्याग कर ते छव में कोण

नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा,

अने त्याग छव में जीव, नव में जीव, सवर।

३ सामायक छव में कोण ? नव में कोण ? छव में

जीव, नव में जीव, सवर।

४ व्रत छव में कोण ? नव में कोण
नव में जीव, संवर ।

५ अव्रत छव में कोण ? नव में कोण
नव में जीव, आस्रव ।

६ अठारे पाप को वहरमण छव में
कोण ? छव में जीव, नव में जीव, सं

७ पञ्च महाव्रत छव में कोण ? नव में को
जीव, नव में जीव, संयर ।

८ पांच चारित्र छव में कोण ? नव में कोण
जीव, नव में जीव संवर ।

९ पांच सुमति छव में कोण ? नव में कोण ?
जीव, नव में जीव, निर्जरा ।

१० तीन गुप्ति छव में कोण ? नव में कोण ?
जीव, नव में जीव, संवर ।

११ बारे व्रत छव में कोण ? नव में कोण ? छव
जीव, नव में जीव, संवर ।

१२ धर्म छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव
नव में जीव, संवर, निर्जरा ।

१३ अधर्म छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव,
नव में जीव आस्रव ।

१४ दया उव म कोण ? नव मे कोण ?
नव मे जीव, सवर निर्जरा ।
१५ हिंसा उव म कोण ? नव मे कोण ?
नव म जीव, आस्रव ।

छही १५ पंद्रहमी ।

१ जीव उव म कोण ? नव मे कोण ? उव
नव मे जीव, आस्रव, सवर, निर्जरा, म
२ अजीव उव म कोण ? नव म कोण ? उव
नव मे अजीव पुन्य, पाप, बन्ध ।
३ पुन्य उव म कोण ? नव मे कोण ? उव में
नव म अजीव, पुन्य, बन्ध ।
४ पाप उव में कोण ? नव म कोण ? उव म
नव म अजीव, पाप बन्ध ।
५ आस्रव उव म कोण ? नव म कोण ? उव म
नव म जीव, आस्रव ।
६ सवर उव म कोण ? नव म कोण ? उव म जीव,
नव म जीव, सवर ।
७ निर्जरा उव में कोण ? नव में कोण ? उव में जीव,
नव में जीव निर्जरा ।
८ बन्ध उव में कोण ? नव में कोण ? उव मे पुद्गल,
नव में अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

९ मोक्ष छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष ।

लड़ी १६ सोलमी ।

१ धर्मास्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में धर्मास्ति, नव में अजीव ।

२ अधर्मास्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में अधर्मास्ति नव में अजीव ।

३ आकाशास्ति छव में कोण ? नव में कोण ? छव में आकाशास्ति, नव में अजीव ।

४ काल छव में कोण ? नव में कोण ? छव में काल, नव में अजीव ।

५ पुद्गल छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

६ जीव छव में कोण ? नव में कोण ? छव में जीव नव में जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा मोक्ष ।

लड़ी १७ सतरमी ।

१ लेखण (कलम) पूठो कागद को पानो, लकड़ी की पाटी, छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में अजीव ।

२ पात्रो, रजोहरण, चादर, चोलपट्टो, आदि भण्ड

उपगरण, उव में कोण ? नव में कोण ? उव पुद्गल, नव मे अजीव।

३ धान की दाणो, उव मे कोण ? नव में कोण उव में जीव, नव मे जीव।

४ रूख (वृक्ष) उव मे कोण ? नव मे कोण ? उव में जीव, नव में जीव।

५ लाकड़ी छाया उव में कोण ? नव में कोण ? उव में पुद्गल, नव में अजीव।

६ दिन रात उव में कोण ? नव में कोण ? उव में काल, नव में अजीव।

७ श्री सिद्ध भगवान उव में कोण ? नव में कोण ? उव में जीव, नव में जीव, मोक्ष।

लड़ी १८ अठारमी।

१ पुन्य धर्म एक के दोय ? दोय, किणन्याय, पुन्य तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

२ पुन्य और धर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किण न्याय, पुन्य तो रूपी छै धर्मास्ति अरूपी छै।

३ धर्म और धर्मास्ति एक के दोय ? दोय किणन्याय धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किण न्याय, अधर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

५ पुन्य अने पुन्यवान एक के द
न्याय, पुन्य तो अजीव छै, पु

६ पाप अने पापी एक के दोय ?
पाप तो अजीव छै, पापी जीव छै

७ कर्म अने कर्मां को कर्त्ता एक के
किणन्याय, कर्म तो अजीव छै,
जीव छै।

लड़ी १९ उन्नीसमी

१ कर्म जीव के अजीव ? अजीव छै।

२ कर्म रूपी के अरूपी ? रूपी छै।

३ कर्म सावद्य के निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव

४ कर्म चोर के साहूकार, दोनूं नहीं अजीव

५ कर्म आज्ञा मांहि के बाहर ? दोनूं नहीं

६ कर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग ?
जोग छै।

७ आठ कर्मां में पुन्य कितना, पाप कितना ?
वरणी, दर्शणावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ए
कर्म तो एकान्त पाप छै, वेदनी, नाम, गोत्र,
ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छै।

लड़ी २० वीसमी।

१ धर्म जीव के अजीव ? जीव छै।

२ धर्म मावग्य के निरवंग्य ? निर्वग्य

३ धर्म आज्ञा माहि के बाहर ? श्री आज्ञा माहि छै।

४ धर्म चोर के साहूकार ? साहूकार छै

५ धर्म रूपी के अरूपी ? अरूपी छै।

६ धर्म छाठवा जोग के आवरवा जोग जोग छै।

७ धर्म पुन्य के पाप ? दोनू नहीं, किणन्य तो जीव छै, पुन्य पाप अजीव छै।

लड़ी २१ इक्कीसमीं।

१ अधर्म जीव के अजीव ? जीव छै।

२ अधर्म मावग्य के निर्वद्य ? सावद्य छै।

३ अधर्म चोर के साहूकार ? चोर छै।

४ अधर्म आज्ञा माहि के बाहर, बाहर छै।

५ अधर्म रूपी के अरूपी ? अरूपी छै।

६ अधर्म छाडवा जोग के आवरवा जोग ? छाडवा जोग छै।

७ अधर्म पुन्य के पाप ? दोनू नहीं, किणन्याय, पुन्य पाप अजीव छै, अधर्म जीव छै।

लड़ी २२ बाइस

१ सामायक जीव के अजीव ? जीव

२ सामायक सावद्य के निर्वद्य ?

३ सामायक चोर के साहूकार ?

४ सामायक आज्ञा मांहि के बाहर ?

५ सामायक रूपी के अरूपी ? अरूपी छै

६ सामायक छांडवा जोग के आदरवा
रवा जोग छै।

७ सामायक पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं,
पुन्य पाप अजीव छै, सामायक जीव छै।

लड़ी २३ तेबीसमी।

१ सावद्य जीव के अजीव ? जीव छै।

२ सावद्य सावद्य छै के निर्वद्य ? सावद्य छै।

३ सावद्य आज्ञा मांहि के बाहर ? बाहर छै।

४ सावद्य चोर के साहूकार ? चोर छै।

५ सावद्य रूपी के अरूपी ? अरूपी छै।

६ सावद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग ? छांडवा
जोग छै।

७ सावद्य पुन्य के पाप ? दोनूं नहीं, पुन्य पाप तो
अजीव छै, सावद्य जीव छै।

छट्टी २४ चोवीसमी ।

१ निर्ग्रन्थ जीव के अजीव ? जीव छै ।

२ निर्ग्रन्थ सावद्य के निर्वद्य ? निर्वद्य छै ।

३ निर्ग्रन्थ चोर के साहूकार ? साहूकार छै ।

४ निर्ग्रन्थ आज्ञा मांहि के बाहर ? मांहि छै ।

५ निर्ग्रन्थ रूपी के अरूपी ? अरूपी छै ।

६ निर्ग्रन्थ छादवा जोग के आदरवा जोग ? आदरवा जोग छै ।

७ निर्ग्रन्थ धर्म के अधर्म ? धर्म छै ।

८ निर्ग्रन्थ पुन्य के पाप ? पुन्य पाप दोनू नहीं, किण न्याय ? पुन्य पाप तो अजीव छै, निर्ग्रन्थ जीव छै ।

छट्टी २५ पचीसमी ।

१ नव पदार्थ में जीव कितना पदार्थ ? अने अजीव कितना पदार्थ ? जीव आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये पांच तो जीव छै, अनें अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, ये च्यार पदार्थ अजीव छै ।

२ नव पदार्थ में सावद्य कितना निर्वद्य कितना ! जीव अने आस्रव ये दोय तो सावद्य निर्वद्य दोनू छै, अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, ये सावद्य निर्वद्य

दोनूं नहीं। संवर, निर्जरा,
निर्वद्य छै।

३ नव पदार्थ में आज्ञा मांहि
कितना ? जीव, आस्रव, ये दोय
पण छै, अने आज्ञा बाहर पण छै।
पाप, बन्ध, ये च्यार आज्ञ मांहि
नहीं। संवर, निर्जरा, मोक्ष ये आज्ञा

४ नव पदार्थ में चोर कितना साहूकार
जीव, आस्रव, तो चोर साहूकार
अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ये चोर सा
नहीं, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये तीन

५ नव पदार्थ में छांडवा जोग कितना
कितना ? जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आस्रव
ये छव तो छांडवा जोग छै, संवर, निर्जरा,
ये तीन आदरवा जोग छै अने जाणवा जोग
ही पदार्थ छै।

६ नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितना ?
आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष ये पांच तो अ
छै, अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै पुन्य, पाप, बन्ध
रूपी छै।

७ नव पदार्थ में एक कितना अनेक कितना ?

छै, काल, जीव, पुद्गलास्ति ए तीन अनेक छै, इणा का अनन्ता द्रव्य छै।

७ छव द्रव्य में सप्रदेशी कितना अप्रदेशी कितना ? एक काल तो अप्रदेशी छै, बाकी पांच सप्रदेशी छै।

लड़ी २७ सत्ताइसमी।

१ पुन्य धर्म के अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्याय ? धर्म अधर्म जीव छै, पुन्य अजीव छै।

२ पाप धर्म के अधर्म ? दोनूं नहीं, किणन्याय ? धर्म अधर्म तो जीव छै, पाप अजीव छै।

३ बन्ध धर्म के अधर्म ? दोनूं नहीं. किणन्याय ? धर्म अधर्म तो जीव छै, बन्ध अजीव छै।

४ कर्म अने धर्म एक के दोय ? दोय छै, किणन्याय ? कर्म तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

५ पाप अने धर्म एक के दोय ? दोय छै, किणन्याय ? पाप तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

६ धर्म अने अधर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किणन्याय ? धर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

७ अधर्म अने धर्मास्ति एक के दोय ? दोय, किणन्याय ? अधर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

प्रश्नोत्तर

१ थारी गति कांई—मनुष्य गति ।

२ थारो जाति कांई—पंचेन्द्री ।

३ थारी काय कांई—त्रस काय ।

४ इन्द्रियां कितनी पावे—५ पांच ।

५ पर्याय कितना पावे—६ छव ।

६ प्राण किनना पावे—१० दश पावे ।

७ शरीर किनना पावे—३ तीन—औदारिक, तेजस, कार्मण ।

८ जोग कितना पावे—९ नव पावै च्यार मन का, च्यार वचन का, एक काया को, औदारिक ।

९ उपयोग कितना पावै—४ च्यार पावै मति ज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षु दर्शन ३ अचक्षु दर्शन ४ ।

१० थारे कर्म कितना ८ आठ ।

११ गुणस्थान किसो पावै—व्यवहार थी पांचमं, साधु ने पूछै तो छट्ठो ।

१२ विषय कितनी पावै—२३ तेवीस।

१३ मिथ्यात्व मा दश बोल पावै के नहीं, व्यवहार से पावै नहीं।

१४ जीव का चौदा भेदां में से किसो भेद पावै,? एक चौदम् पर्यासो सन्नी पचेन्द्री को पावै।

१५ आत्मा कितनी पावै—श्रावक में तो ७ सात पावै, अनें साधु में आठ पावै।

१६ दण्डक किसो पावै—एक इकवीसमूं।

१७ लेश्या कितनी पावै—६ छव।

१८ दृष्टि कितनी पावै—व्यवहार थी एक सम्यक् दृष्टि पावै।

१६ ध्यान कितना पावै—३ तीन, शुक्ल ध्यान टाल के।

२० छव द्रव्य में किसा द्रव्य पावै—१ एक जीव द्रव्य।

२१ राशि किसी पावे—एक जीव राशि।

२२ श्रावक का बारा व्रत श्रावक में पावै।

२३ साधू का पञ्च महाव्रत पावै के नहीं—साधू में पावै श्रावक में पावै नहीं।

२४ पाञ्च चारित्र श्रावक में पावै के नहीं—नहीं पावै, एक देश चारित्र पावै।

१ एकेन्द्री की गति काई—तिर्यञ्च गति।

२ एकेन्द्री की जाति काई एकेन्द्री।

३ एकेन्द्री में काया किसी पावै—५ पांच थावर की।
४ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी पावै—एक स्पर्श इन्द्री
५ एकेन्द्री में पर्याय कितनी पावै—४ च्यार मन भाषा ए दोय टली।
६ एकेन्द्री में प्राण कितना पावै—४ च्यार पावै, स्पर्श इन्द्रीय बलप्राण १ काय बलप्राण २ श्वाशोश्वाश बलप्राण ३ आउषो बलप्राण ४।
७ मूरड़ माटी मुलतानी पत्थर सोना चांदी रत्नादिक पृथ्वीकाय का प्रश्नोत्तर।

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यञ्च गति
जाति काई	एकेन्द्री
काय किसी	पृथ्वीकाय
इन्द्रियां कितनी पावै	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी पावै	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार पावै, स्पर्श इन्द्री बल प्राण १ काय बल २ श्वाशोश्वाश बल ३ आयुषो बल प्राण ४।

८ पाणी ओसादि अप्पकाय का प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति काई	एकेन्द्री

काय किसी	अप्पकाय
इन्द्रिया कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

९ अग्नि तेउकाय ना प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यञ्च गति
जाति काई	एकेन्द्री
काय किसी	तेउकाय
इन्द्रिया कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

१० वायुकाय का प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यञ्च गति
जाति काई	एकेन्द्री
काय काई	वायुकाय
इन्द्रियाँ कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पान, फूल, फल, छीलण, फूलण आदि वनस्पतिकाय ना प्रश्नोत्तर

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यञ्च गति
जाति काई	एके न्द्री

काय कांई	वनस
इन्द्रियां कितनी	एक
पर्याय कितनी	४ च्यार,
प्राण कितना	४ च्यार,

१२ लट गिण्डोला आदि बेन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति कांई	बेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	२ दोय, स्पर्श, र
पर्याय कितनी	५ पांच, मन प
प्राण कितना	६ छव, रस इन्द्री
	स्पर्श इन्द्री बल प्राण
	काय बल प्राण
	श्वाशोश्वाश बल प्राण
	आउषो बल प्राण
	भाषा बल प्राण

१३ कीड़ी मकोड़ा आदि तेन्द्री का

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति कांई	तेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रिया कितनी	३ तीन स्पर्श १ रस २ घ्राण ३

१६ नारकी की

प्रश्न	
गति कांई	नरक
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रिया कितनी	५ पाचोही
पर्याय कितनी	६ छः
प्राण कितना	१० दशो ही

१७ देवता की पृच्छा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देव गति
जाति कांई	पचेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	५ पाचों ही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेली
प्राण कितना	१० दशों ही

१८ मनुष्य की पृच्छा असन्नी की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पचेन्द्री
काय कांई	त्रसकाय
इन्द्रियां कितनी	पाच
पर्याय कितनी	३॥ श्वाश लेवे तो उश्वाश नहीं
प्राण कितना	७॥ श्वाश लेवे तो उश्वाश नहीं

८ पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्काय।

प्रश्न	उत्तर
सञ्ञी के असञ्ञी	असञ्ञी छे मन नही
सूक्ष्म के बादर	दोनूं ही प्रकार की छे
त्रस के स्थावर	स्थावर छे।

९ बेन्द्री तेन्द्री चौइन्द्री की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सञ्ञी के असञ्ञी	असञ्ञी छे मन नही
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१० तिर्यञ्च पंचेन्द्री की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सञ्ञी के असञ्ञी	दोनूं ही छ
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

११ असन्नी मनुष्य चौदे स्थानक में उपजै

प्रश्न	उत्तर
सञ्ञी के असञ्ञी	असञ्ञी छे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१ एकेन्द्री में वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेद पावै।

२ पृथ्वी पाणी वनस्पति अग्नि वायरो यां पांचां में वेद कितना पावै—१ एक नपुंसक ही छै।

३ वेन्द्री तेन्द्री चौइन्द्री में वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेद ही पावै छै।

४ पंचेन्द्री में वेद कितना पावै—सन्नी में तो तीनों ही वेद पावै छै, असन्नी में एक नपुंसक वेद ही छै।

५ मनुष्य में वेद कितना पावै—असन्नी मनुष्य चौदे थानक में उपजै जिणां में तो वेद एक नपुंसक ही पावै छै, सन्नी मनुष्य गर्भ में उपजै जिणा में वेद तीनों ही पावै छै।

६ नारकी में वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेद ही पावै छै।

७ जलचर, थलचर, उरपर, भुजपर, खेचर यां पांच प्रकार का तिर्यंचा में वेद कितना पावै—छमोर्छम उपजै ते असन्नी छै जिणा में तो वेद नपुंसक ही पावै छै, अने गर्भ में उपजै ते सन्नी छै जिणा में वेद तीनों ही पावै छै।

८ देवता में वेद कितना पावै—उत्तर भवनपति, वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दूजा देवलोक तांई

९ श्रावक उपवास आदि तप करै ते व्रत में के अव्रत में—व्रत में।

१० श्रावक पारणूं करै ते व्रत में के अव्रत में—अव्रत में किणन्याय ? श्रावक को खाणो पीणो पहरणो ए सर्व अव्रत में छै श्री उववाई तथा सूयगडांग सूत्र में विस्तार कर लिख्या छै।

११ साधूजी ने सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कांई होवै व्रत में के अव्रत में—अशुभ कर्म क्षय थाय तथा पुन्य बंधै छै, १२ मूं व्रत छै।

१२ साधूजी ने असूजतो दोष सहित आहार पाणी दियां कांई होवै तथा व्रत में के अव्रत में—श्री भगवती सूत्र में कह्यो छै, तथा श्री ठाणांग सूत्र के तीजै ठाणे में कह्यो छै अल्प आयु बंधै अकल्याणकारी कर्म बंधै तथा असूजतो दीधो ते व्रत में नहीं, पाप कर्म बंधै छै।

१३ अरिहन्त देव देवता के मनुष्य—मनुष्य छै।

१४ साधू देवता के मनुष्य—मनुष्य छै।

१५ देवता साधू नीं वन्छा करै के नहीं करै—करै साधू तो सबका पूजनीक छै।

१६ साधू देवता की बन्छा करै के नहीं करै—नहीं करै

१७ सिद्ध भगवान देवता के मनुष्य—दोनूं नहीं।

उत्तर—कसाई ने तारवा निमित्त उपदेश देवै ते वीत-राग को धर्म छै।

४ कोई वाड़ा में पशु जानवर दुखिया छै अने साधू जिण रास्ते जाय रह्या छै तो जीवां की अनुकम्पा आणी छोडै के नहीं छोडै—नहीं छोडै, किणन्याय;

उ०—श्रीनिशीथ सूत्र के १२ बारमें उद्देशे में कह्यो छै अनुकम्पा करी त्रस जीव बांधै बंधावै अनुमोदै तो चौमासी प्रायश्चित आवै, तथा साधु संसारी जीवां की सार संभार करै नहीं साधु तो संसारी कर्तव्य त्याग दिया।

॥ अथ तेरा द्वार

प्रथम मूल द्वार ।

मूल १ दृष्टान्त २ कुण ३
अरूपी ६ निर्णय ७ भाव ८ द्रव्य
द्रव्यादिक १० आज्ञा ११ गिनप १२
ए तेरा द्वार जाणवा, प्रथम मूल द्वार कहे
ते चेतना लक्षण अजीव ते अचेतना
ते शुभ कर्म, पाप ते अशुभ कर्म,
आस्रव, कर्म रोकै ते संवर, देशथकी
देशथकी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा, जीव
शुभाशुभ कर्म बन्ध्या ते बन्ध, समस्त
मुकावै ते मोक्ष ।

॥ इति प्रथम द्वार सम्पूर्ण ॥

दूसरो दृष्टान्त द्वार ।

जीव चेतन का २ दोय भेद—
एक सिद्ध, दूजो संसारी, सिद्ध कर्मां रहित छै
संसारी कर्मां सहित छै, तिणरा अनेक भेद छै,

सूक्ष्म अने बादर त्रस ने स्थावर, सन्नी अने असन्नी तीन वेद, च्यार गति, पांच जाति, छव काय, चौदे भेद जीवनां, चौवीस दण्डक इत्यादि अनेक भेद जाणवा, चेतन गुण ओलखवा ने सोनारो दृष्टान्त कहै छै, जिम सोनारो गहणो भांजी भांजी ने और और आकारे घड़ावे तो आकार नो विनाश थाय पण सोनारो विनाश नहीं, तैसे कर्मों का उदय थी जीव की पर्याय पलटै पण मूल चेतन गुण को विनाश नहीं।

अजीव अचेतन तिणरा पांच भेद—

धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति, तिणमें च्यारां की पर्याय पलटै नहीं एक पुद्गलास्ति की पर्याय पलटै ते ओलखवा ने सोनारो दृष्टान्त कहै छै—जिम कोई सोनारो गहणो भांजी भांजी और और आकारे घड़ावे तो आकारनों विनाश होय सोनारो विनाश नहीं, ज्यूं पुद्गल की पर्याय पलटै पण पुद्गल गुण को विनाश नहीं। पुन्य ते शुभ कर्म पाप ते अशुभ कर्म ने पुन्य पाप ओलखवा ने पथ्य अपथ्य आहार नो दृष्टान्त कहै छै, कदेक जीवकै पथ्य आहार घटै और अपथ्य आहार वधै, तो जीव के निरोगपणो घटै अने

सरोगपणो पर्वे कहे जीव ई
पथ्य पवै तव जीव ई सरोगपणो
पणो पवै पथ्य अपथ्य दोनू घट
मरण पामे, ज्यों जीव के पुन्य
तो सुख घटै अने दुःख पवै, कहे
अर पुन्य पवै तो सुख पवै अने
पाप दोनू क्षय होय तो जीव मोक्ष
ते आस्रव ते ओलखवा ने तीन दृष्टान्त
कहै छै।

१ प्रथम कारण (कथन)
  १ तलाव रे नालो ज्यों जीव रे आस्रव।
  २ हवेली के पारणो ज्यों जीव रे आस्रव
  ३ नाव के छिद्र ज्यों जीव रे आस्रव।
२ दूजो कारण (कथन)
  १ तलाव अने नालो एक ज्यूं जीव आस्रव
  २ हवेली पारणो एक ज्यों जीव आस्रव एक।
  ३ नाव अने छिद्र एक ज्यूं जीव आस्रव एक।
३ कर्म आवै ते आस्रव ने ओलखवा ने तीजो
कहै छै।
  १ पाणी आवै ते नालो ज्यों कर्म आवै ते आस्रव।
  २ मनुष्य आवै ते पारणो ज्यों कर्म आवै त

आस्रव ।

३ पाणी आवे ते छिद्र ज्यों कर्म आवे ते आस्रव ।

४ इम कह्यां थकां कोई कर्म अने आस्रव एक सरधै तेहने दोय सरधावा ने चौथो कहण कहै छै ।

१ पाणी अने नालो दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय ।

२ मनुष्य अने बारणो दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय ।

३ पाणी छिद्र दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय ।

विशेष ओलखवा ने पांचमूं कहण कहै छै ।

१ पाणी आवै ते नालो पण पाणी नालो नहीं ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

२ मनुष्य आवै ते बारणो पण मनुष्य बारणो नहीं, ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

३ पाणी आवै ते छिद्र पण पाणी छिद्र नहीं ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

कर्म रोकै ते संवर ते ओलखवा ने तीन दृष्टान्त कहे छै ।

१ तलाव रो नालो रूंधै ज्यों जीव रे आस्रव रूंधै ते संवर ।

२ दूजै बोलै कहो स्वामीजी पहली जीव और पाछै कर्म ए बात मिलै ? गुरु बोल्या नहीं मिलै। प्रश्न—क्यों न मिलै, उ०—कर्म बिना जीव रह्यो किहां मोक्ष गयो पाछो आवै नहीं यों न मिलै।

३ तीजै बोलै कहो स्वामीजी पहली कर्म अने पछै जीव ए मिलै ? गुरु कहै नहीं मिलै। प्र०—क्यों न मिलै, गुरु कहै कर्म कियां बिना हुवै नहीं, तो जीव बिना कर्म कुण किया।

४ चौथे बोलै कहो स्वामीजी जीव कर्म एक साथ उपना ए मिलै ? गुरु कहै न मिलै। प्र०—किण-न्याय ? उ०—जीव, कर्म यां दोयां ने उपजा-वण वालो कुण।

५ पांचमें बोलै जीव कर्म रहित छै ए बात—मिलै ? गुरु कहै न मिलै। प्र०—किणन्याय ? उ०—ए जीव कर्म रहित होवै तो करणी करवा री खप (चूंप) कुण करै मुक्ति गयो पाछो आवै नहीं।

६ छठै बोलै कहो स्वामीजी जीव अने कर्म नो मिलाप किण विधि थाय छै गुरु कहै अपच्छान पूर्वे पणै अनादि काल से जीव कर्म रो मिलाप चल्यो जाय छै तिण बन्ध रा च्यार भेद छै।

प्रकृति बन्ध कर्म स्वभाव रे न्याय १ स्थिति

तीजो कुण द्वार कहे छै ।

जीव चेतन छव द्रव्यां में कोण नव पदार्थों में कोण? छव द्रव्यां में तो एक जीव नव पदार्थों में पांच। जीव १ आस्रव २ संवर ३ निर्जरा ४ मोक्ष ५

अजीव अचेतन छव में कोण नव में कोण—छव में ५ नव में ४ छव द्रव्यां में तो धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकाशास्ति ३ काल ४ पुद्गलास्ति ५, नव पदार्थों में अजीव १ पुन्य २ पाप ३ वन्ध ४

पुन्य ते शुभ कर्म छव में कोण नव में कोण—छव में एक पुद्गल, नव में तीन, अजीव १ पुन्य २ बन्ध ३

पाप ते अशुभ कर्म छव में कोण नव में कोण—छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन, अजीव १ पाप २ बन्ध ३

कर्म ग्रह ते आस्रव छव में कोण नव में कोण—छव में जीव, नव में जीव १ आस्रव २

कर्म रोके ते संवर छव में कोण नव में कोण—छव में जीव, नव में जीव सम्वर

देशथी कर्म तोडी देशथी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा छव में कोण नव में कोण—छव में जीव, नव में जीव १ निर्जरा २

कर्मां ने रोकै ते कोण रुक्या ते कोण—रोकै तो जीव, रुक्या ते कर्म।

कर्मां ने तोड़े ते कोण तूट्या ते कोण—तोड़े ते जीव, अने तूट्या ते कर्म।

कर्मां ने बांधै ते कोण बंध्या ते कोण—बांधै ते जीव बंधिया ते कर्म।

कर्मां ने खपावै ते कोण अने क्षय थया ते कोण—खपावै ते जीव क्षय थया ते कर्म।

॥ इति तृतीय द्वारम् ॥

अथ चोथो आत्म द्वार कहे छै।

जीव चेतन ते आत्मा छै अनेरो नहीं।

अजीव अचेतन आत्मा नहीं अनेरो छै।

आत्मा रे काम आवै छै पण आत्मा नहीं, कोण कोण काम आवै छै ते कहै छै:—

धर्मास्तिकाय अवलम्ब न चालै छै।

अधर्मास्तिकाय अवलम्ब ने स्थिर रहै छै।

आकाशास्तिकाय अवलम्ब ने बसै छै।

काल अवलम्ब ने कार्य करै छै।

पुद्गल खाय छै, पीवै छै, पहरै छै, ओढै छै, इत्यादि अनेक प्रकारे आत्मा रे काम आवै छै पण आत्मा नहीं।

पुन्य ते शुभ कर्म तेहने पुन्य कहीजे, तेहने अजीव कहीजे, तेहने बन्ध कहीजे ।

पाप ते अशुभ कर्म तेहने पाप कहीजे. अजीव कहीजे, बन्ध कहीजे ।

कर्म ग्रहै ते आस्रव कहीजे, तेहने जीव कहीजे, कर्म रोकै ते संवर कहीजे, जीव कहीजे ।

देश थकी कर्म तोड़ी देश थकी जीव उज्वल थाय तेहने निर्जरा कहीजे, जीव कहीजे ।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध कहीजे, अजीव कहीजे ।

समस्त कर्म मूंकावे ते मोक्ष कहीजे, जीव कहीजे हिवे एहनी ओलखणा न्याय सहित कहै छै ।

जीव ने जीव किणन्याय कहीजे, गये काल जीव छो, वर्त्तमान काल जीव छै, आगामी काल जीव को जीव रहसी इणन्याय ।

अजीव ने अजीव किणन्याय कहीजे, गये काल अजीव छो, वर्त्तमान काल अजीव छै, आगामी काले अजीव को अजीव रहसी ।

पुन्य ने अजीव किणन्याय कहीजे, पुन्य ते शुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते अजीव छै ।

संयम, संवर, विवेक, विउसग, ए छऊं आत्मा कही छै, वलि चारित्र आत्मा कही छै, चारित्र जीवरा परिणाम छै इणन्याय।

निर्जरा ने जीव किणन्याय कहीजे, भला भाव प्रवर्तावी ने जीव देशथी उज्वलो हुवै ते जीव छै।

बन्ध ने अजीव किणन्याय कहीजे, बन्ध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै।

मोक्ष ने जीव किणन्याय कहीजे, समस्त कर्म मूंकावै ते मोक्ष कहीजे, निर्वाण कहीजे, सिद्ध भगवान कहीजे, सिद्ध भगवान ते जीव छै, इणन्याय मोक्ष ने जीव कहीजे।

॥ इति पञ्चम द्वारम् ॥

अथ छट्टो रूपी अरूपी द्वार कहे छै।

जीव अरूपी छै, अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै, पुन्य रूपी छै, पाप रूपी छै, आस्रव अरूपी छै, संवर अरूपी छै, निरजरा अरूपी छै, बंध रूपी छै, मोक्ष अरूपो छै, हिवे एहनी ओलखना कहै छै।

जीवने अरूपी किणन्याय कहीजे? छव द्रव्य में जीव ने अरूपी कह्यो छै, पांच वर्ण पावै नहीं।

अजीव मे अरूपी रूपी दोनू किणन्याय कहीजे ? अजीव का पाच भेद धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गल, इणमें च्यार तो अरूपी छै, यामें पाच वर्ण पावै नहीं एक पुद्गल रूपी छै।

पुन्य ने रूपी किणन्याय कहीजे ? पुन्य तो शुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै।

पाप ने रूपी किणन्याय कहीजे ? पाप ते अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते रूपी छै।

आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? कृष्णादिक छऊ भाव लेश्या अरूपी कही छै।

मिथ्यात्व आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? मिथ्या दृष्टि अरूपी कही छै।

अव्रत आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे? अत्याग भाव परिणाम जीवरा अरूपी कह्या छै।

प्रमाद आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? अण-उछाहपणो ते प्रमाद आस्रव छै जीवरा परिणाम छै, ते जीव छै जीव ते अरूपी छै।

कषाय आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? श्री ठाणांग दशमें ठाणे जीव परिणामी रा दश भेदां में कषाय परिणामी कह्यो छै, अने ज्ञान दर्शन चारित्र परि णामी कह्या छै, ए जीव छै, तिम कषाय परिणामी जीव

छै, कषायपणे परिणमें ते कषाय परिणामी आस्रव छै, जीव छै, जीव ते अरूपी छै।

जोग आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? तीनों ही जोगां रो उठान कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम अरूपी छै।

संवर ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? अठारे पाप ठाणा रो विरमण अरूपी छै।

निरजरा ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? कर्म तोड़वा रो बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम अरूपी छै।

बन्ध ने रूपी किणन्याय कहीजे ? बन्ध ते शुभाशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रूपी छै।

मोक्ष ने अरूपी किणन्याय कहीजे ? समस्त कर्मां ने मूकावे ते जीव छै, तेहने मोक्ष कहीजे, निर्वाण कहीजे, सिद्ध भगवान कहीजे, सिद्ध भगवान ते अरूपी छै।

॥ इति छट्ठो द्वारम् ॥

अथ सातमूं सावद्य निर्वद्य द्वार।

जीव तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै, अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं। पुन्य पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, अजीव छै। आस्रव का पांच भेद, मिथ्यात्व आस्रव, अव्रत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार

तो सावद्य छै, अशुभ जोग सावद्य छै, शुभ जोग निर्वद्य छै। इणन्याय आस्रव सावद्य निर्वद्य दोनूं छै। संवर निर्वद्य छै। निरजरा निर्वद्य छै। बंध सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै। मोक्ष निर्वद्य छै।

॥ इति सप्तम द्वारम् ॥

अथ आठमूं भाव द्वार कहे छै।

भाव ५ पांच—उदय भाव १, उपशम भाव २, क्षायक भाव ३, क्षयोपशम भाव ४, परिणामिक भाव ५।

उदय तो आठ कर्म नो अने उदय निपन्न रा दोय भेद—जीव उदय निपन्न १, दूजो जीव रे अजीव उदय निपन्न २, जिणमें जीव उदय निपन्नरा ३३ तेतीस भेद ते कहे छै, च्यार गति ४, छव काय १०, छव लेश्या १६, च्यार कषाय २०, तीन वेद २३ मिथ्याती २४, अव्रती २५, असन्नी २६, अनाणी २७, आहारता २८ संसारता २९, असिद्ध ३०, अकेवली ३१ छद्मस्थ ३२, सजोगी ३३।

हिवे जीव रे अजीव उदय निपन्नरा ३० तीस भेद ते कहे छै, पांच शरीर ५, पांच शरीर रे प्रयोगे परिणम्या द्रव्य, ५ पांच वर्ण, २ दोय गन्ध, ५ पांच रस, ८ आठ स्पर्श, एवं तीस।

उपशम रा दोय भेद—एक तो उपशम १ दूजो उपशम निपन्न भाव, उपशम तो एक मोह कर्मरो होय, उपशम निपन्न रा दोय भेद, उपशम समकित १, उपशम चारित्र २।

क्षायक रा दोय भेद—एक तो क्षायक दूजो क्षायक निपन्न, क्षायक तो आठ कर्मां को होय अने क्षायक निपन्न रा १३ तेरा भेद, ते कहै छै।

केवल ज्ञान १, केवल दर्शन २, आत्मिक सुख ३, क्षायक सम्यक्त्व ४, क्षायक चारित्र ५, अटल अवगाहना ६, अमुर्त्तिक पणो ७, अगुरु लघु पणो ८, दान लब्धि ९, लाभ लब्धि १०, भोग लब्धि ११, उपभोग लब्धि १२, वीर्य लब्धि १३।

क्षयोपशम रा दोय भेद, एक तो क्षयोपशम १, दूजो क्षयोपशम निपन्न भाव २, क्षयोपशम तो च्यार कर्म को ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय अन्तराय, अने क्षयोपशम निपन्न भाव रा ३२ बत्तीस बोल, ते कहै छै।

ज्ञानावरणीय कर्म रो क्षयोपशम होय तो ८ आठ बोल पावै, केवल वरजी ४ च्यार ज्ञान, ३ तीन अज्ञान, एक भणवो गुणवो।

दर्शनावरणीय कर्म रो क्षयोपशम होय तो आठ

मोल पावै, ५ पांच इन्द्री, ३ तीन दर्शन केवल परजी।

मोहनीय कर्म रो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पावै, ४ च्यार चारित्र, एक देश व्रत, ३ तीन दृष्टि।

अन्तराय कर्म रो क्षयोपशम होवै तो आठ बोल पावैं, ५ पांच लब्धि, ३ तीन वीर्य।

परिणामिक रा दोय भेद सादिया परिणामी अनादिया परिणामी १, अनादिया परिणामिक रा दश भेद तिणमें ६ छव द्रव्य धर्मास्ति आदि, ७ लोक, ८ आठमूं अलोक, ९ नवमूं भवी, १० अभवी। अने सादिया परिणामी रा अनेक भेद गाम नगर गढ़ा पहाड़ पर्वत पताल समुद्र द्वीप विमान इत्यादि अनेक भेद आदि सहित जाणवा।

जीव आसरी जीव परिणामिक रा १० दश कहै छै।

गति परिणामी १, इन्द्रिय परिणामी २, परिणामी ३, लेश्या परिणामी ४, जोग परिणामी गोग परिणामी ५, ज्ञान परिणामी ७, दर्शन ८, चारित्र परिणामी ९, वेद परिणामी, दश १

हिवै जीव आसरी अजीव परिणामी रा भेद कहै छै।

बंधन परिणामी १, गई परिणामी २, संठाण परि-णामी, ३, भेद परिणामी ४, वर्ण परिणामी ५, गन्ध परिणामी ६, रस परिणामी ७, स्पर्श परिणामी ८, अगुरु लघु परिणामी ९, शब्द परिणामी १० ।

जीव में भाव पावे ५ पांचूं ही ।

अजीव पुन्य पाप बन्ध में भाव एक परिणामिक ।

आस्रव भाव दोय—उदय, परिणामिक ।

संवर भाव ४ च्यार, उदय बरजी ने ।

निरजरा भाव ३ तीन—क्षायक, क्षयोपशम, परि-णामिक ।

मोक्ष भाव दोय—क्षायक परिणामिक ।

॥ इति अष्टम द्वारम् ॥

अथ नवमूं द्रव्य गुण पर्याय द्वार ।

द्रव्य तो जीव असंख्य प्रदेशी, गुण आठ, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग, सुख, दुःख, एक एक गुणरी अनन्ती अनन्ती पर्याय ।

ज्ञान करी अनन्ता पदार्थ जाणै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

दर्शन करी अनन्ता पदार्थ सरधै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

चारित्र थी अनन्त कर्म प्रदेश रोके तिणसूं अनन्ती पर्याय।

तप करी अनन्त कर्म प्रदेश तोड़े तिणसूं अनन्ती पर्याय।

वीर्य नी अनन्ती शक्ति तिणसूं अनन्ती पर्याय।

उपयोग थी अनन्त पदार्थ जाणे देखे तिणसूं अनन्ती पर्याय।

सुख अनन्त पुन्य प्रदेश सूं अनन्त पुद्गलिक वेदे तिणसूं अनन्ती पर्याय। वलि अनन्त कर्म ने अलगा कर्या थी अनन्त आत्म सुख प्रगटे अनन्ती पर्याय।

दुःख अनन्त पाप प्रदेश सूं अनन्त दुःख वेदे अनन्ती पर्याय।

अजीव ना पांच भेद—धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति यांको द्रव्य गुण पर्याय कहै

द्रव्य तो एक धर्मास्ति, गुण चालवा नो पर्याय अनन्त पदार्थ ने चालवा नो सहाय अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो एक अधर्मास्ति, गुण थिर सहाय, पर्याय अनन्ता पदार्थ ने थिर रहवा नो तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो एक आकाशास्ति, गुण भाजन पर्याय अनन्त पदार्थों नो भाजन तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो काल, गुण वर्त्तमान, पर्याय अनन्ता पदार्थों पर वरतै तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो एक पुद्गल, गुण अनन्त गलै अनन्त मिलै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो पुन्य गुण जीवकै शुभ पणै उदय आवै, पर्याय अनन्त प्रदेश शुभ पणै उदय आवै सुख करै तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो पाप, गुण जीवरे अनन्त प्रदेश अशुभ पणै उदय आवै, अनन्त दुख करै तिणसूं अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो आस्रव गुण कर्म ग्रहै पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश ग्रहै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो संवर गुण कर्म रोकवा रो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश रोकै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो निर्जरा गुण देश थकी कर्म प्रदेश तोड़ी देश थी जीव उजलो थाय, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश तोड़ै तिणसूं अनन्ती पर्याय।

द्रव्य तो बन्ध, गुण जीव ने बांध राखवा रो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश करी बांधै तिण सूं अनन्ती पर्याय।

थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी, गुण थकी जीव रै अशुभ पणै उदय आवै।

आस्रव ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल थकी रा ३ तीन भेद—एकेक आस्रव री आदि नहीं अन्त नहीं ते अभव्य आसरी, एकेक आस्रव री आदि नहीं पण अन्त छै ते भव्य आसरी, एकेक आस्रव री आदि छै अन्त छै ते पड़वाई आसरी, तेहनी स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त्त उत्कृष्टी देश ऊणी अर्ध पुद्गल परावर्तन, भाव थकी अरूपी गुण थकी कर्म ग्रहवा नो गुण।

संवर ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी तो असंख्याता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त रहित, भाव थी अरूपी, गुण थकी कर्म रोकवा रो गुण।

निर्जरा ने पांच बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी अकाम निर्जरा का तो अनन्ता द्रव्य, सकाम निर्जरा का असंख्याता द्रव्य, खेत्र थी जीवां कने, काल थकी आदि अन्त रहित भाव थकी अरूपी, गुण थकी कर्म तोड़वा रो गुण।

बन्ध ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य क्षेत्र थकी जीवा कने, काल थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी, गुण थकी कर्म भाव गलवा रो।

मोक्ष ने पाचों बोल करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, क्षेत्र थकी जीवां कने, काल थकी एकेक सिद्धा री आदि अन्त नहीं, एकेक सिद्धा री आदि छै पण अन्त नहीं, भाव थकी अरूपी गुण थकी आत्मिक सुख।

धर्मास्तिकायने पाचा बोल करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी एक द्रव्य, क्षेत्र थी लोक प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित भाव थकी अरूपी, गुण थकी जीव पुद्गल ने चालवा रो साभ।

अधर्मास्तिकाय ने पाचा बोल करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी एक द्रव्य, क्षेत्र थी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त रहित भाव थकी अरूपी, गुण थकी जीव पुद्गल ने स्थिर रहवा रो सहाय।

आकाशास्तिकाय ने पाचा बोल करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी एक द्रव्य क्षेत्र थकी लोक प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित, भाव अरूपी गुण थकी भाजन गुण।

काल ने पाचा बोल करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थी अढाई द्वीप प्रमाणे, काल थकी अदि अन्त रहित, भाव थकी अरूपी, गुण थकी वर्त्तमान गुण।

पुद्गलास्तिकाय ने पांचां बोलां करी ओलखीजे।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्र थकी लोक प्रमाणे, काल थकी आदि अन्त सहित, भाव थकी रूपी, गुण थकी गलै मलै।

॥ इति दशम द्वारम् ॥

अथ एकादशमूं आज्ञा द्वार कहे छै।

जीव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, ते किणन्याय? सावद्य कर्त्तव्य आसरी आज्ञा बाहर छै अने निर्वद्य कर्त्तव्य आसरी आज्ञा मांहि छै।

अजीव आज्ञा मांहि के बाहर? अजीव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नहीं, ते किणन्याय? अजीव छै, अचेतन छै, जड़ छै।

पुन्य, पाप, बंध, ए तीनूं आज्ञा मांहि बाहर नहीं अजीव छै।

आस्रव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, किणन्याय? आस्रव ना पांच भेद—मिथ्यात्व १, अव्रत २, प्रमाद ३

जीवने छांडवा जोग किणन्याय कहीजे? आपरा जीव को भाजन करी किणी जीव ऊपर ममत्व भाव न करवो।

अजीव छांडवा जोग किणन्याय कहीजै? किणी अजीव पर ममत्व भाव न करवो।

पुन्य पाप छांडवा जोग किणन्याय कहीजै? शुभ अशुभ कर्म छांडवा जोग छै।

आस्रव ने छांडवा जोग किणन्याय कहीजै? आस्रव कर्म ग्रहै छै। कर्मां रो उपाय छै। शुभाशुभ कर्म आवाना बाराणा छै। ते छांडवा जोग छै।

कर्म रोकै ते संवर आदरवा जोग छै।

देश थकी कर्म तोड़ी, देश थकी जीव उज्जल थाय। ते निर्जरा आदरवा जोग छै।

बंध नें छांडवा जोग किणन्याय कहीजै? शुभाशुभ कर्म जीव के बंध रह्या छै ते बंध तो छांडवा ही जोग छै।

मोक्ष ने आदरवा जोग किणन्याय कहीजे? समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष आदरवा जोग छै।

॥ इति द्वादशम द्वारम् ॥

अथ तेरमूं तलाव द्वार कहे छे।

तलाव रूपी जीव जाणवो। अतलाव ते तलाव रूपी अजीव जाणवो। निकलता पाणी रूप पुन्य पाप जाणवा। नाला रूप आश्रव जाणवो। नाला बंध रूप संवर जाणवो। मोरी करी ने पाणी काढ़े ते निर्जरा जाणवो। मांहिला पाणी रूप बंध जाणवो। खाली तलाव रूप मोक्ष जाणवो।

॥ इति तेरद्वार सम्पूर्णम् ॥

॥ जाणपणा का पच्चीस बोल ॥

१ देव अरिहन्त, गुरु निग्रन्थ, धर्म केवली परूप्यो। ये तीन अमूल्य रत्न छै।

२ जीव, अजीव, पुन्य, पाप, धर्म, अधर्म, बन्ध, अबन्ध, आत्मा, अणआत्मा, पदार्थ जाण्या बिना समकित नहीं, समकित बिना चारित्र नहीं तथा मुक्ति नहीं, उपाई सुख मोक्षा धर्म नहीं।

३ साधु का भेष पहन कर साधु नाम धरावे से साधु नहीं जैसे ही पञ्च प्रत्याख्यान स्पर्श बिना श्रावक नहीं, ३ द्रव्य, नव तत्त्व, च्यार गति, ३ रत्न, देव गुरु धर्म ओलख्या से सम्यक्त्वी जाणवो।

४ असंजती जीव को जीवणो वंछै ते राग, मरणो वंछै ते द्वेष, संसार समुद्र से तिरणो वंछै ते वीतराग देव को धर्म।

५ जीव जीवै ते दया नहीं, मरै ते हिन्सा नहीं, मारण वाला ने हिन्सा, नहीं मारै ते दया।

६ पृथ्वी पाणी वनस्पति अग्नि वायरो (हवा) त्रस-काय में बेन्द्री से पंचेन्द्री तक यह छऊं काया ने मारै नहीं मरावे नहीं मारतां प्रते भलो जाणै नहीं, तेह दया छै, भय नहीं उपजावै ते अभय दान छै।

७ श्रावक च्यारू आहार भोगवै ते अव्रत छै तेहथी पाप कर्म लागै छै, देश थकी या सर्व थकी त्याग करै तेह व्रत छै, संवर धर्म छै, मन वचन काया का शुभ जोग वरतावै ते निर्जरा धर्म तिण थी पुन्य कर्म लागै छै।

८ गृहस्थ खावै पीवै, दूजा ने खुवावै पावै खावतां पीतां प्रते भलो जाणै ते अधर्म अव्रत आस्रवद्वार तेहथी अशुभ पाप कर्म लागै छै।

९ सर्व सावद्य जोग का त्याग करी पञ्च महाव्रत पालै तेह साधू, नहीं पालै ते असाधू, देश थकी त्याग करी शुद्ध देवगुरु धर्म की आराधना करै संसार सगपण अनित्य जाणै साधूपणा का भाव राखै श्रमण निग्रंथ की उपाशना करै, ते श्रमणोपासक।

१७ अठारे पाप सेवा का त्याग करै, तीन करण तीन जोग से मारणा जोग पचखै, साधू तणी पर गोचरी करै, पड़िमा आदरै, पादोपगमनादि संथारो करै, साधू पणो नहीं पचखै, ते श्रावक भी छै गुणस्थान पावणो ही पावै उणमें साधू नहीं कहीजै आनन्दजी ने संथारा रे अन्तसमा माहे उपासकदशा सूत्रमें प्रत्यक्ष कह्यो छै।

१८ शुद्ध साधू मुनिराज ने सूजतो निर्दोष आहार पाणी दिया कर्म निर्जरा होय, तथा कल्याणकारी कर्म से पुन्य बंधै, संसार परित करै, शुभ दीर्घ आयु बांधै ठाणांग भगवती विपाक आदि सूत्रमें घणी जगा कह्यो छै।

१९ सर्व व्रतधारी साधू ते संजती छट्ठा गुणस्थान से चवदमा ताई, असंजती अपचखाणी ते अव्रत पहिला गुणस्थान से चौथा ताई, देश व्रतधारी संजतासंजती श्रावक ते पांचमा गुणस्थान जाणवो, त्याग करै ते व्रत देश संवर, आगार राख्यो सो सेवै सेवावै भलो जाणै ते अव्रत आश्रव है, सूयगडांग उववाई आदि सूत्रा में विस्तार है।

२० असंजती अव्रती अपचखाणी ने प्रासुक सूजता असूजता निर्दोष तथा दोष सहित परिग्रह गयान्त पाप, निर्जरा नहीं। भगवती सूत्रके आठमा शतक छट्ठे उद्देशे कह्यो है।

१४ साता दियां साता होय ए प्ररूपणां वाला ने भगवान सूत्र सूयगडांग अध्ययन ३ उद्देशे ४ में इम कह्यो छै आर्य मार्ग थी न्यारो १, समाधि मार्ग थी अलगो २, जिन धर्म की हेलणारो करणहार ३, अल्प सुखां रे वास्ते घणां सुखांरो हारण हार ४ असत्य पक्ष थी अमोक्षरो कारण ५, लोहवाणीयांपरे घणो भूरसी ६।

१५ त्रस जीवने साधू अनुकम्पा अरथे बांधै बंधावै बांधतानें भलो जाणै तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो तथा बंधिया हुआ जीव ने अनुकम्पा आणी छोडै छुडावै छोडतां प्रते भलो जाणै तो चौमासी प्रायश्चित्त आवै सूत्र निशीथ उद्देशे १२ में कह्यो छै।

१६ चुलणी पिया श्रावक पोसामें ३ पुत्राने मारतो देखी बचाया नहीं माता ने छुड़ावण उठ्यो तो पोसो भागो, उपासगदसा सूत्र अध्ययन तीजै कह्यो छै तथा अरणक आदि श्रावक पण मोह अनुकम्पा नहीं करी।

१७ साधू मुनिराज ने लब्ध फोड़णी नहीं, सूत्र पन्नवणा पद ३६ में कह्यो छै तेजो लेश्या फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया लागै, इम वैक्रिय लब्धि आहारिक लब्धि फोड्यां क्रिया कही छै तथा भगवती शतक ३ उद्देशे ४ वैक्रिय लब्धि फोडै तिणमांहि कह्यो, विना आलोयां मरै तो विराधक कह्यो छै।

१८ असजमी ने दान देवा दीरावा का त्याग आगे पण घरा ? श्रावक किया सूत्र मे चाल्या छै उपासग दसा में आनन्दजी अन्यतीर्थी ने असजती ने देवा दीवावा का त्याग भगवत पासे किया छै धर्म होय तो त्याग किम करे।

१९ देवल प्रतिमा कारणे पृथ्वीकाय हणे तिण ने भगवान् आचारग तथा प्रश्न व्याकरण सूत्र मे अहित अबोध को कामी कह्यो, तथा धर्म हेत जीव हण्या दोष नहीं इम प्ररूपे ते अनारज नो वचन छै आचारग में कह्यो है, एहवी अशुद्ध प्ररूपणा वालो मिथ्याती मन्द बुद्धि छै।

२० सर्व प्राण भूत जीव सत्व ने दु ख उपजावे नहीं भय उपजावे नहीं, झुरावे नहीं, प्रतापना नहीं देवे, तो साता वेदनी नो बन्ध सूत्र भगवती शतक ७ उद्देशे ६ कह्यो छै परन्तु एकेन्द्री मार पचेन्द्री पोख्या धर्म किसी जगा नहीं कह्यो।

२१ साता वेदनी, मनुष्य देवता नो आयुष, शुभ नाम, ऊच गोत्र ए ४ शुभ कर्म ते पुन्य छै, करणी निर्वद्य जिन आज्ञा में है, ए पुन्यनी करणी भगवती शतक ८ में उद्देशे ६ में कही है।

२२ साधू मुनिराज आहार उपगारिक भोगवे

निरवद्य छै। दशवैकालिक अध्ययन ४ चौथे
८ मी में कह्या छै जयणा युत आहार करतां पाप
तथा अध्ययन ५ में साधू नी गोचरी असावद्य
साधवानो हेतु कही। सूत्र भगवती शतक १ ७
कह्यो छै साधू शुद्ध आहार भोगतां (७) सात कर्म
पाड़े तथा दशवेकालिक सूत्रमें शुद्ध गति कही छै

२३ मिथ्याती उ॰वास बेलादिक तप करै
साधू मुनिराज ने निर्दोष आहार पाणी दे
मन वचन काया का शुभ जोग वरतावै जेह
करणी जिन आज्ञा में छै, तेह थी पाप क्षय
बंधै, सूत्र भगवती शतक ८ में उद्देशो १०
विना क्रिया करै तेह ने देश आराधक कह्यो
कुमार हाथी रा भव में सुसला जानवर नी
आपणो पग ऊंचो राख्यो घणो कष्ट सह्यो
संसार करी मनुष्य नो आऊखो बांध्यो, उ
७ सात में मिथ्याती ने निर्जरा आसरी सुत्र
भगवती शतक ६ में उद्देशो ३१ में अस
अधिकारे प्रथम गुणठाणारा धणीरा शुभ
शुभ परिणाम विशुद्ध लेश्या कही छै।

२४ साधू मुनिराज अचित निर्दोष
अनें ठंडा बासी आहार पाणी में बेन्द्री

ते नहीं भोगवे परन्तु वेइन्द्रियादि तथा पूरणादि नहीं
होवे तो दलो थामी आहार भोगवता दोष नहीं उत्तरा
ध्ययन ८ में गाथा १२मी में मीनल पिन्ड आहार छेणो
कह्यो तथा आचारंग श्रुतस्कंध १ अध्ययन ६ में उदेशो ४
चौथे गाथा १३ में भगवान ठण्डो आहार भोगव्यो लियो
कह्यो छै तिणा टीकामें थामी भात कह्यो तथा प्रश्न
व्याकरण अध्ययन १० में मीनल थामी कह्यो, तिणठोरन
नहीं आहार करी द्वेष नहीं करणो इम कह्यो छै।

२४ गृहस्थ ने सूत्र भणावा की जिन आज्ञा नहीं
प्रश्न व्याकरण अध्ययन ७ में में महाऋषि ने ही सूत्र
भणवारी आज्ञा दही देवेन्द्र नरेन्द्र अरचे भणे तथा
अन्यतिर्थी गृहस्थ ने पापणी देई वेचायें वेदता प्रते
भलो जाणे तो चौमासी प्रायश्चित आवे निशाथ उद्देशो
१६ में कह्यो छै, साधू ने भी कालभाषा सूत्र भणवा
सूत्र व्यवहार उद्देशो १० में कह्यो छै तिणरी विगत
दीक्षा लिया ३ वर्ष हुया निशीथ ४ वर्ष हुया पछै
सूयगडाङ्ग ५ वर्ष पछै वृहत कल्प व्यवहार दसाश्रुतस्कंध
८ वर्ष ठाणाङ्ग समवायाङ्ग १० वर्ष दीक्षा लिया पछै
भगवती भणै इम कह्यो छै तथा उववाई प्रश्न २० में
श्रावकाने अरथ जाणकार कह्या छै।

॥ इति ॥

अथ संजयारो थोकड़ो ।

संजया	पन्नवणाद्वार १	वेदद्वार २	रागद्वार	कल्पद्वार ४
सामायक चारित्र १	भेद २, इत्तर, आव । इत्तर पहले छेहले तीर्थंकरांके वारे। आवतानी स्थिति ज० ७ दिन मध्यम ४ मास उ० ६ मास । आव २२ तीर्थंकरांके वारे तथा महाविदेहमें, स्थिति जावजीव तांई ।	सवेदी वेद ३ पावे अवेदी उपशम क्षीण	सरागी	ठिई कल्पी अठिई कल्पी जिन कल्पी थिवर कल्पी कल्पातीत।
छेदोपस्थापनी चारित्र २	भेद २, अतिचार सहित, दोष लगावे १ अतिचार रहित, दोष न लगावे २ अतिचार रहित २३वां तीर्थंकरना साधु २४वां में आवे तथा नव दीक्षित ।	सवेदी वेद ३ पावे अवेदी उपशम क्षीण	सरागी	ठिई कल्पी थिवर कल्पी जिन कल्पी ।
परिहारविशुद्ध चारित्र ३	भेद २, निर्विशमाण १ निर्विष्टकाय २। निर्विशमाण=तप करवा ने पेठो, निर्विष्टकाय=तप करी ने निकल्यो।	सवेदी वेद २ पुरुष वेद, कृत नपुंसक वेद	सरागी	ठिई कल्पी थिवर कल्पी जिनकल्पी।
सूक्ष्म सम्प-	भेद २, संक्लेशमान १ विशुद्धमान २ संक्लेश्यमाण=उप- =क्षपक श्रेणी चढ़तो ।	अवेदी उपशम क्षीण	सरागी	ठिई कल्पी अठिई कल्पी कल्पातीन।
				" कल्पी अठिई कल्पी

संज्ञा	लिंगद्वार ९	शरीरद्वार १०	क्षेत्रद्वार ११	कालद्वार १२	गतिद्वार तथा पदवी १३
सामायक चारित्र १	द्रव्यलिंगी १ स्वलिंगी २ अन्यलिंगी तापसादि ३ गृहलिंगी गृहस्थ के भेष ४ भावलिंगी ५	शरीर ५ पावे	जन्म १५ कर्मभूमि सारण अढ़ाई द्वीप में	अवसर्पणी जन्म तथा आश्री ३।४।५ और उत्सर्पणी जन्म आश्री २।३।४ तथा आश्री ३।४ आरे	जघन्य पहले देवलोक उ० ५ अनुत्तर विमाण । पदवी ५ इन्द्र, सामानिक, लोकपाल, ताय त्रिसक, अहमिन्द्र । स्थिति ज० २ पल्य उ० ३३ सागर ।
छेदोपस्थापनी चारित्र २	एवम् ५ पावे	शरीर ५ पावे	जन्म ५ भरत ५ इरवर्त । सारण अढ़ाई द्वीपमें	एवम्	एवं सामायक वत्
परिहार विशुद्ध चारित्र ३	३ पावे द्रव्यलिंगी १ भावलिंगी २ स्वलिंगी ३	शरीर ३ पावे उदारिक, तेजस कारमाण	जन्म ५ भरत ५ इरवर्त । सारण नहीं ।	अवसर्पणी जन्म आश्री ३।४ तथा आसरी ३।४।५ उत्सर्पणी जन्म आसरी २।३।४ तथा आश्री ३।४ आरे	जघन्य पहले देवलोक उ० ८ देवलोक । पदवी ४ अहमिन्द्र टाली । स्थिति ज० २ पल्य उत्कृष्टी १८ सागर ।
सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ४	सामायक वत् ५ पावे	एवम् ३	जन्म १५ कर्मभूमि सारण नहीं एवं सारण अढ़ाई द्वीपमें	एवम्	जघन्य उत्कृष्टी ५ अनुत्तर विमान । पदवी १ अहमिन्द्र । स्थिति जघन्य उत्कृष्टी ३३ सागर ।
यथाख्यात चारित्र ५	सामायक वत् ५ पावे	एवम् ३	जन्म १५ कर्मभूमि । सारण नहीं एवं सारण अढ़ाई द्वीपमें	एवम्	जघन्य ५ अनुत्तर विमान उत्कृष्टी मोक्ष । पदवी २ अहमिन्द्र तथा सिद्ध । स्थिति जघन्य ३३ सागर उत्कृष्टी मोक्ष ।

संजया	जोग द्वार १६	उपयोग द्वार १७	कषाय द्वार १८	लेश्या द्वार १९	प्रणाम स्थिति द्वार २०	कर्म बंध द्वार २१	कर्म वेदे द्वार २२
सामायक चारित्र १	जोग ३ मन, वचन, काया	सागार अणागार २ पावे	सकषाई। ४ तथा ३।२।१ पावे	लेश्या ६ पावे	वद्धमाण, हायमाण, अवट्ठिया ३ स्थिति वद्धमाण हायमाणकी ज० १ समो उ० अन्तर्मुहूर्त्त। अवट्ठिया की ज० १ समो उ० सात समा	सामायक में ७।८ कर्म बांधे	८ कर्म वेदे
छेदोपस्थापनी चारित्र २	जोग ३	एवम्	एवम्	लेश्या ६ पावे	एवम्	एवम्	एवम्
परिहार विशुद्ध ३	जोग ३	एवम्	सकषाई ४	लेश्या ३ भली पावे	एवम्	एवम्	एवम्
सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ४	जोग ३	सागार १	एक सजल को लोभ	लेश्या १ शुक्ल	वद्धमाण १ हायमाण २ स्थिति ज० १ समो उ० अन्तर्मुहूर्त्त	६ बांधे आयु मोहनी वर्जी	एवम्
यथाख्यात चारित्र ५	जोग ३ पावे तथा अजोगी हुवे	सागार अणागार २	अकषाई उपशत क्षीण	लेश्या १ परम शुक्ल	वद्धमाण अवट्ठिया। वद्धमाण की स्थिति ज० १ समो उ० अन्तर्मुहूर्त्त। अवट्ठिया की स्थिति ज० १ समो उ० देश ऊणो कोड़ पूर्व।	साता वेदनी तथा अबंध	७ वेदे तथा ४ वेदे

संयम	घणामन आसरी	स्थितिद्वार २९	घणामन आसरी	आंतराद्वार ३०	घणामन आसरी	समुद्घात द्वार ३१	क्षेत्रद्वार ३२
सामायक चारित्र १	जघन्य २ वार उ० ७२०० वार	जघन्य १ समो उत्कृष्टो देशूणो क्रोड़ पूर्व	सदाकाल	जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उ० देशूणो अर्द्ध पुद्गल	आंतरो पडे नहीं	६ पावे	लोकरे असंख्यातमें भाग
छेदोपस्थापनी चारित्र २	जघन्य २ वार उ० ९६० वार	एवम्	जघन्य २५० वर्ष उत्कृष्टा ५० लाख क्रोड सागर	एवम्	ज० ६३ हजार वर्ष उ० १८ कोडाकोड सागर कांई ऊणो	६ पावे	एवम्
परिहार विशुद्ध ३	जघन्य २ वार उ० ७ वार	ज० १ समो उ० २९ वर्ष ऊणो क्रोड़ पूर्व	जघन्य देश ऊणा २०० वर्ष उत्कृष्टा देशूणा २ क्रोड पूर्व	एवम्	ज० ८४ हजार वर्ष उ० १८ कोडाकोड सागर कांई ऊणो	३ पावे वेदनी, मरण, कषाय,	एवम्
सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ४	जघन्य २ वार उ० ४ वार	जघन्य १ समो उ० अन्तर्मुहूर्त्त	जघन्य १ समो उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	जघन्य १ समो उत्कृष्टा ६ मास	नथी	एवम्
यथाख्यात चारित्र ५	जघन्य २ वार उ० ५ वार	जघन्य १ समो उ० देश ऊणो क्रोड़ पूर्व ८	सदाकाल	एवम्	आंतरो पडे नहीं	केवल समुद्घात पावे तो	लोकरे असंख्यातमें भाग तथा आखे लोकमें केवल समुद्घात करे जद

अथ नियंठारो थोकड़ो ।

नियंठा	पन्नवणा द्वार १	वेदद्वार २	रागद्वार ३	कल्पद्वार ४	चारित्र द्वार	प्रतिसेवी द्वार ६
पुलाक १	भेद ५ नाण पुलाक १ दर्शण पुलाक २ चारित पुलाक ३ लिंग पुलाक ४ यथासूक्ष्म पुलाक ५	सवेदी वेद २ पुरुष वेद, पुरुष नपुंसक वेद	सरागी	ठिईकल्पी पहले छेहले तीर्थंकर वारे, अठिईकल्पी २ तीर्थंकरांके वारे, महाविदेहमें थिवरक० ३	२ सामायक, छेदोपस्थापनी	मूल गुण उत्तर गुणमें दोष लगावे
बकुश २	भेद ५ आभोग १ अनाभोग २ संवुडे ३ असंवुडे ४ यथासूक्ष्म किंचित ५	सवेदी वेद ३ पावे	सरागी	४ ठिईकल्पी, अठिईकल्पी, जिनकल्पी, थिवरकल्पी ४	२ सामायक, छेदोपस्थापनी	उत्तर गुणमें दोष लगावे
पडिसेवणा ३	भेद ५ नाण १ दर्शन २ चारित्र ३ लिंग ४ आहासुहुम ५	सवेदी वेद ३ पावे	सरागी	४ ऊपर ज्यूं	२ सामायक, छेदोपस्थापनी	मूल गुण उत्तरगुण दोनोंमें दोष लगावे
कषाय कुशील ४	भेद ५ नाण १ दर्शन २ चारित्र ३ लिंग ४ आहासुहुम ५	सवेदी ३ तथा अवेदी उपसंत खीण	सरागी	५	४ सामायक छेदोपस्थापनी परिहार विशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय	मूल गुण उत्तर गुण दोनों में दोष न लगावे पडिवजती वेलां जठा पछे
निग्रंथ ५	भेद ५ पढम समै निग्रंथ १ अपढम समै निग्रंथ २ चरम ३ अचरम ४ आहासुहुम निग्रंथ ५	अवेदी उपसंत खीण	वीतरागी उपसंत खीण	३ ठिईकल्पी, अठिईकल्पी, कल्पातीत	१ यथाख्यात	अपडिसेवी
स्नातक ६	भेद ५ अछवी सबला न करे १ असबले २ अकम्मे ३ निर्मल ज्ञान ४ अपरिस्सावी ५	अवेदी खीण	वीतराग खीण	३ ठिईकल्पी, अठिईकल्पी, कल्पातीत	१ क्षायिक	अपडिसेवी

निर्यंठा	कालद्वार १२	गतिद्वार १३	पदवी	थिति	थानकद्वार १४
पुलाक १	अवसर्पणी कालमें जन्म ३जे थोथे आरे छता ३।४।५ आरे उत्सर्पणी जन्म २।३।४ आरे छता ३।४।५ आरे महाविदेहमें पिण	जवन्य१ देवलोक उत्कृष्टो ८ देवलोक	४ पदवी इन्द्र १सामानिक २ लोकपाल ३ त्रायत्रिंसक ४	जघन्य २ पल्य उत्कृष्टी १८ सागर	असंख्याता २
बुकस २	अवसर्पणी कालमें जन्म छता ३।४।५ आरे उत्सर्पणी कालमें जन्म २।३।४ आरे छता ३।४ आरे	जवन्य १ देवलोक उत्कृष्टो १२ देवलोक	४ पदवी ऊपरज्यू	जघन्य २ पल्य उत्कृष्टी २२ सागर	असंख्याता ३
पडिसेवणा३	अवसर्पणी कालमें जन्म छता ३।४।५आरे उत्सर्पणी जन्म २।३।४ छता३।४आरे	जवन्य १ देवलोक उत्कृष्टो १२ देवलोक	४ पदवी उपरज्यु	जघन्य २ पल्य उत्कृष्टी २२ सागर	असंख्याता ४
कषाय कुशील ४	अवसर्पणी कालमें जन्म छता आश्री ३।४।५ आरे उत्सर्पणी काल में जन्म २।३।४ आरे छता ३।४ आरे	जवन्य १ देवलोक उत्कृष्टा५ अनुत्तर विमान	५ पदवी इन्द्र १सामानिक२ लोकपाल३ त्रायत्रिंसक४ अहमिंद्र५	जघन्य २ पल्य उत्कृष्टी ३३ सागर	असंख्याता ५
निग्रन्थ ५	पुलाक ज्यूं पूर्ण मारण आश्री अढाई द्वीपमें	जवन्य उत्कृष्टो ५ अनुत्तर विमान	अहमिंदर १	जघन्य उत्कृष्टी ३३ सागर	१थानक सर्वसुं थोडा
स्नातक ६	पुलाक ज्यु पूर्ण साहरण अढाई द्वीपमें	मोक्षगति	सिद्धपदवी	मोक्षगति	१थानक सर्वसुं थोडा

नियठा	लेश्याद्वार १९	परणाम द्वार २०	थिति	कर्मबंध द्वार २१	कर्मवेदद्वार २२	कर्म उदीरणा द्वार २३
पुलाक १	लेश्या ३ भली पावै	३ पावै वद्दमाण हायमाण अवट्ठिया	वद्दमान हायमानकी जघन्य थिति १ समो उ० अन्तमुंहुर्त्त। अवट्ठियाकी ज० १ समो उ० ७ समा	७ बांधे आउखो वर्जी नै	८ कर्म वेदै	६ कर्म उदीरे आयु वेदनी वर्जी
बुकस ३	३ भली पावै	३ पावै	ऊपरज्यु	७।८ बांधे	८ वेदै	८।७।६ आयु वर्जी ७ उदीरे वेदनी आयु वर्जी ६ उदीरे
पडिसेवणा ३	३ भली पावै	३ पावै	ऊपरज्यु	७।८ बांधे	८ वेदै	८।७।६
कषाय कुशील ४	६ लेश्या पावै	३ पावै	ऊपरज्यु	६।७।८ आउखो मोहनी वर्जी नै	८ वेदै	८।७।६।५ वेदनी। मोहनी। आयु वर्जी ५ उदीरे
निग्रन्थ ५	१ शुक्ल लेश्या पावै	१ पावै वद्दमाण अवट्ठिया	वद्दमान की थिति ज० उ० अन्तर्मुहूर्त्त अवट्ठियाकी ज० १ समो उ० अन्तर्मुहूर्त्त	साता वेदनी	७ वेदै मोहनी टल्यो	२ उदीरै नाम नै गोत्र ५ उदीरै वेदनी मोहनी आयु वर्जी
स्नातक ६	१ परम शुक्ल तथा अलेशी	२ पावै वद्दमाण अवट्ठिया	वद्दमान का ज० उ० अन्तर्मुहूर्त्त अवट्ठियाकी ज० अंतर्मुहूर्त्त उ० देशणी क्रोडपूर्व	साता वेदनी तथा अबंध	४ वेदै वेदनी आउखो नाम गोत	२ उदीरै नाम गोत्र तथा अण उदीरणा हुवै।

निर्यंठा	घणां जीवां आश्री	आंतरा द्वार ३०	घणा आश्री	समुद्‌घातद्वार ३१	क्षेत्रद्वार ३२	फर्शना द्वार ३३
पुलाक १	जघन्य१ समो उत्कृष्टो अन्तर्मुहूर्त्त	जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उ० देशूणो अर्द्धपुद्गल	जघन्य १ समो उत्कृष्टा संख्यातावर्ष	३समुद्‌घात पावै। वेदनी। कषाय। मरण	लोकरे असंख्यात में भाग	लोकरे असंख्यात में भाग फरशे
बुकस २	सदाकाल	अर्द्ध पुद्गल देशूणो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त	आंतरो नथी	५ पहला पावै	एवम्	ऊपरज्यू
पडिसेवणा ३	सदाकाल	अर्द्ध पुद्गल देशूणो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त	आंतरो नथी	५ पहला पावै	एवम्	ऊपरज्यु
कषाय कुशील ४	सदाकाल	एवम्	आंतरो नथी	६ पावै	एवम्	ऊपरज्यु
निग्रंथ ५	जघन्य १ समो उ० अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	जघन्य१ समो उत्कृष्टो ६ मास	नथी	एवम्	ऊपरज्यु
स्नातक ६	सदाकाल	आंतरो नहीं	आंतरो नथी	केवल समुद्‌घात।	लोकरे असंख्यात भाग तथा आसे लोक में	लोकरे असंख्यात में भाग तथा आसो लोक फर्शे।

॥ अथ लघुदण्डक ॥

पहलो शरीर द्वार ।

शरीर ५—औदारिक १ वैक्रिय २ आहारिक ३ तैजस ४ कार्मण ५ ।

सातों ही नारकी और सर्व देवताओं में शरीर पावै ३—वैक्रिय १ तेजस २ कार्मण ३ ।

च्यार थावर, तीन विकलेंद्री में, तथा असन्नी तिर्यञ्च, असन्नी मनुष्य, सर्वयुगलियां में शरीर पावै ३—औदारिक १ तेजस २ कार्मण ३ ।

वाउकाय, सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री मनुष्यणी में शरीर पावै ४ औदारिक १ वैक्रिय २ तेजस ३ कार्मण ४ ।

गर्भज मनुष्यों में शरीर पावै पांचूंही ॥

सिद्धां में शरीर पावै नहीं ॥

॥ इति प्रथम शरीर द्वारम् ॥

दूजो अवगाहना द्वार ।

जघन्य अवगाहना आंगुल को असंख्यातमो भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाझेरी ।

उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुल को संख्या तमो भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन जाझेरी।

पहली नारकी की अवगाहना उत्कृष्टी ७॥। धनुष्य ६ आंगुल की।

दूजी नारकी की अवगाहना साढ़ी पन्द्राह १५॥ धनुष और १२ आंगुल की।

तीजी नारकी की अवगाहना ३१। धनुष की।

चौथी नारकी की अवगाहना ६२॥ धनुष की।

पांचवीं नारकी की अवगाहना १२५ धनुष की।

छट्ठी नारकी की अवगाहना २५० धनुष की।

सातवीं नारकी की अवगाहना ५०० धनुष की।

जघन्य सातूंही नारकी की आंगुल को असंख्यातमो भाग, उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य आंगुल को संख्यात मो भाग उत्कृष्टी आप आपसूं दूणी।

देवतां की अवगाहना।

१५ परमाधामी १० भुवनपति, वाणव्यन्तर, त्रिर्भू म्भका, ज्योतिषी, पहला तथा दूजा देवलोक, पहिला किल्बिषी की अवगाहना ७ सात हाथ की।

तीसरा तथा चौथा देवलोक दूजा किल्बिषी की ६ छव हाथ की।

नवलोकांतिक, पांचवां तथा छठा देवलोक, तीजा किल्विषी की अवगाहना ५ पांच हाथ की।

सातवां तथा आठवां देवलोक का देवतां की अवगाहना ४ च्यार हाथ की। नवमा, दशमा, इग्यारवां, तथा बारवां की ३ तीन हाथ की अवगाहना होय। ६ नव ग्रैवेयक का देवां की दोय हाथ की।

पांच अनुत्तर विमान का देवां की अवगाहना १ एक हाथ की।

देवता उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यातमो भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन की अवगाहना जाणो।

बारवां देवलोक के ऊपर का देव वैक्रिय करै नहीं।

च्यार थावर तथा असन्नी मनुष्य की जघन्य, उत्कृष्टी आंगुल को असंख्यातवों भाग।

वनस्पतिकाय की अवगाहना जघन्य तो आंगुल को असंख्यातमो भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाझेरी कमल फूल की अपेक्षा।

बेइन्द्री की अवगाहना १२ जोजन की, उत्कृष्टी।

तेइन्द्री की अवगाहना ३ कोस की, उत्कृष्टी।

चौरिन्द्री की अवगाहना ४ कोस की, उत्कृष्टी।

अने जघन्य आंगल को असंख्यातवों भाग।

तिर्यञ्च पचेन्द्री का ५ भेद—

१ जलचर सन्नी असन्नी की १००० जोजन की।

२ थलचर सन्नी की ६ कोस की असन्नी की प्रत्येक कोस की।

३ उरपुर सन्नी की १००० जोजन की, असन्नी की प्रत्येक जोजन की।

४ भुजपर सन्नी की प्रत्येक कोस की, असन्नी की प्रत्येक धनुष की।

५ खेचर सन्नी असन्नी की प्रत्येक धनुष की तिर्यञ्च पचेन्द्री उत्तर वैक्रिय करे तो जघन्य आंगुल के संख्यात में भाग उत्कृष्टी ९०० जोजन की करे, मोटी अवगाहना वाले उत्तर वैक्रिय करै नहीं।

सन्नी मनुष्य की अवगाहना।

५ भरत ५ ऐरवरत का मनुष्या की, अवसर्पणी के पहिले आरे लागतां ३ कोस की उतरता २ कोस की, दूजे आरे लागता २ कोस की उतरता १ कोस की तीजै आरे लागता १ कोस की उतरता ५०० धनुष की, चौथे

आरै लागतां ५०० धनुष की उतरतां ७ हाथकी, पांचवें आरै लागतां ७ हाथ की उतरतां १ हाथ की, छट्ठे आरै लागतां १ हाथ की उतरतां १ हाथ मठेरी जाणवी।

इस तरह उत्सर्पणी में चढ़ती कहणी। वेके लाख जोजन की जाझेरी करे ५ हेमवय, ५ अरुणवयका युगलियां की १ कोस की, ५ हरिवास ५ रम्यक वासका की २ कोस की, ५ देवकुरू ५ उत्तर कुरूका की ३ कोस की, ५६ अन्तर द्वीपका की ८०० धनुष की ५ महा विदेह खेत्र का मनुष्यां की ५०० धनुष की।

सिद्धां की जघन्य १ हाथ ८ आंगुल की उत्कृष्टी ३३३ धनुष, १ हाथ ८ आंगुल की।

॥ इति अवगाहना द्वारम् ॥

तीसरा संघयन द्वार।

संघयन ६ तेहना नाम वज्र ऋषभनाराच १, ऋषभनाराच २, नाराच ३, अर्ध नाराच ४, केल को ५ छेवटो ६ एवं।

नारकी देवता में संघयण पावै नहीं।

५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यञ्च में संघयण १ छेवटो, गर्भज मनुष्य तिर्यञ्च में

सघयण पावै ६ उ$_2$ ही, सर्व युगलिया त्रेसठशलाका पुरुषों में मघयण वज्र ऋषभ नाराच पावै ।

॥ इति सघयण द्वारम् ॥

चौथो संठाण द्वार ।

संस्थान ६—तेहना नाम—समचौरस १ निगवपरिमंडल २, सादिक ३, वामन्य ४, कुब्ज ५, हुण्डक ६, ७ नाम नारकी, ५ थावर, ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य तिर्यंच में संठाण हुण्डक ।

तिणमें पांच थावर की विगत ।

पृथ्वीकाय को चन्द्र मसूर की दाल ।

अप्पकाय को बुदबुदो ।

तेउकाय को सूई को कलापो ।

वाउकाय को ध्वजा पताका ।

सर्व देवता, सर्व युगलिया, तथा त्रेसठशलाका पुरुषा में समचौरस संस्थान ।

गर्भेज मनुष्य तिर्यंच में ६ छहू ही मिला में पावै सही ।

॥ इति संठाण द्वारम् ॥

पांचमूं कषाय द्वार ।

कषाय ४—क्रोध मान माया, लोभ ।

२४ दंडकां में कषाय ४ पावै, मनुष्य अकषाई पण होय सिद्धां में कषाय नहीं।

॥ इति कषाय द्वारम् ॥

छट्ठो संज्ञा द्वार।

संज्ञा ४—आहार संज्ञा १ भय संज्ञा २ मैथुन संज्ञा ३ परिग्रह संज्ञा ४। २४ दंडकां मैं संज्ञा ४ पावै, मनुष्य असंज्ञी बहुता पण होय, सिद्धां में संज्ञा नहीं।

॥ इति संज्ञा द्वारम् ॥

सातमूं लेश्या द्वार।

सात नारकी में पावै ३ माठी (द्रव्य लेश्या लेखवी) तेहनी विगत।

पहली दूसरी में पावै १ कापोत।

तीजी मैं कापोत वाला घणा, नील वाला थोड़ा।

चौथी में पावै १ नील।

पांचमी में नील वाला घणा, कृष्ण वाला थोड़ा।

छट्ठी में पावै १ कृष्ण।

सातमी में पावै १ महाकृष्ण।

भवनपति वाणव्यन्तर देवतां में लेश्या पावै ४ पद्म शुक्ल टली (द्रव्य लेखवी)

पृथ्वी अप्प वनस्पतिकाय में तथा सर्व युगलियां में लेश्या पावै ४ प्रथम।

तेउ वाउकाय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, तिर्यंच में लेश्या पावै ३ माठी।

जोतिषी, पहला दूजा देवलोक तथा पहिला किल्विषी में लेश्या पावै १ तेजू।

तीजा चौथा पांचवा देवलोक तथा दूजा किल्विषी में पावै १ पद्म।

तीजा किल्विषी तथा छट्ठा देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध ताईं पावै १ शुद्ध। केतलाइक मनुष्य अलेशी पण होय सिद्धा में लेश्या नहीं।

सन्नी मनुष्य तिर्यंच में लेश्या पावै ६ छह ही।

॥ इति लेश्या द्वारम् ॥

आठमूं इन्द्रिय द्वार।

इन्द्री ५ श्रोत, चक्षु, घ्राण, रस, स्पर्श एव ५, ७ नारकी, सर्व देवता, गर्भेज मनुष्य, गर्भेज तिर्यंच, असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच पचेन्द्री सर्व युगलिया में इन्द्री ५ पावै। ५ थावर में इन्द्री १ स्पर्श पावै, बेइन्द्री में २ इन्द्री होय,—स्पर्श रस, तेइन्द्री में ३ इन्द्री होय—स्पर्श रस घ्राण, चउरिन्द्री में ४ होय

ओतेन्द्री विना। मनुष्य नो इन्द्रियां ५ण होय, सिद्धांके इन्द्रीय होय ही नहीं।

॥ इति इन्द्रिय द्वारम् ॥

नवमूं समुद्घात द्वार।

समुद्धात ७ वेदनी १ कषाय २ मरणान्त ३ वैक्रिय ४ तेजस ५ आहारिक ६ केवल ७।

सात नारकी वाउकाय में ४ पहिली समुद्धात पावै, भुवपनति वानव्यन्तर जोतषी बारवां देवलोक तांई का देवता गर्भज तिर्यञ्च में समुद्धात ५ आहारिक केवल टली, ४ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच सर्व युगलिया बारवां से ऊपर का देवता में समुद्धात ३ पावै, पहली। गर्भज मनुष्यां में समुद्धात ७ सातों ही पावै। केवल्यां में १ केवल समुद्धात पावै। तीर्थङ्कर समुद्धात करै नहीं. सिद्धां के समुद्धात नहीं।

॥ इति समुद्धात द्वारम् ॥

दशमूं सन्नी असन्नी द्वार।

सन्नी के मन, असन्नी के मन होय नहीं। ७ नारकी सर्व देवता गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच युगलिया सन्नी होय। ५ थावर, ३ विकलेन्द्री, छमुर्छिम मनुष्य, छमु-

र्छिम तिर्यंच ये असन्नी होय। मनुष्य भी सन्नी भी असन्नी पण होय, सिद्ध सन्नी असन्नी नहीं होय।

॥ इति सन्नी असन्नी द्वारम् ॥

इग्यारमूं वेद द्वार।

१—वेद, स्त्री १ पुरुष २ नपुंसक ३। ७ नारकी ५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच्च वेद १ नपुंसक होय। भुवनपति वानव्यन्तर, जोतिषी पहला दूजा देवलोक, पहला किल्विषी, सर्व युगलिया मे वेद २ स्त्री तथा पुरुष होय। तीजा देवलोक सूं सर्वार्थ सिद्धताई वेद १ पुरुष होय। मनुष्य अवेदी पण होय। सिद्धा के वेद नहीं।

॥ इति वेद द्वारम् ॥

बारमूं पर्याय द्वार।

पर्याय ६ आहार १, शरीर २, इन्द्रिय ३, श्वासो श्वाश ४, भाषा ५, मन ६, पर्याय तब ६।

सर्व देवता में पावै ५ पर्याय। मन भाषा भेली छेबजी ५ थावर में पर्याय ४ होय पहली। असन्नी मनुष्य में पर्याय ३।। तीन तो पहली चारी में श्वा छेवै उश्वाश नहीं लेवै ३ विकलेन्द्री, असन्नी तिर्यं

पंचेन्द्री में पर्याय ५ पावै मन टल्यो। सिद्धां में पर्याय पावै नहीं। सन्नी मनुष्य निर्यञ्च सर्व युगलिया ७ नारकी में पावै छः ६।

॥ इति पर्याय द्वारम् ॥

तेरमूं दृष्टि द्वार।

दृष्टि ३ सम्यक् १ मिथ्यात २ समभिथ्या दृष्टि ३ एवं ३ होय।

७ नारकी, १२ बारमां देवलोक तांई देवता, गर्भज मनुष्य गर्भज तिर्यंच में दृष्टि तीनूं ही होय। ५ थावर में, असन्नी मनुष्य में, ५६ अन्तरद्वीप का युगलिया में दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि पावै। ९ ग्रैवेक का देवतां में, ३ विकलेन्द्री में, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में, ३० अकर्म भूमिका युगलिया में, दृष्टि २ सम्यक् १, मिथ्या २ पावै ५ अनुत्तर विमान का देवता, सिद्धां में दृष्टि १ सम्यक् पावै।

॥ इति दृष्टि द्वारम् ॥

चौदमूं दर्शन द्वार।

दर्शन ४—चक्षु १, अचक्षु २, अवधि ३, और केवल दर्शन एवं दर्शन ४ जाणवा।

७ नारकी, सर्व देवता में गर्भज तिर्यंच में दर्शन चक्षु १, अचक्षु २, अवधि ३। गर्भज मनुष्यांमें दर्शन

४ होय, ५ थावर बेइन्द्री, तेइन्द्री मे, दर्शन १ अचक्षु पावे। चौइन्द्री छमुर्छिम तिर्यंच, मनुष्य, सर्व युगलिया में दर्शन २—चक्षु १, अचक्षु २ सिद्धा में १ केवल दर्शन ही पावे।

॥ इति दर्शन द्वारम् ॥

पंद्रमूं ज्ञान द्वार।

ज्ञान ५—मति १, श्रुति २, अवधि ३, मन पर्यव ४, केवल ज्ञान एव ५।

७ नारकी, सर्व देवता, गर्भज तिर्यंच में ज्ञान ३ पावे पहला। गर्भज मनुष्या में ज्ञान ५ पावे। ५ थावर असन्नी मनुष्य, ५६ अन्तर द्वीप रा युगलिया में ज्ञान नहीं पावे। ३ विकलेन्द्री, असन्नी पचेन्द्री तिर्यंच में ३० अकर्म भूमिका युगलिया में ज्ञान २ पावे, मति, श्रुति। सिद्धा में १ केवल ज्ञान ही पावे।

॥ इति ज्ञान द्वारम् ॥

सोलमूं अज्ञान द्वार।

अज्ञान ३—मति अज्ञान १, श्रुति अज्ञान २, विभङ्ग अज्ञान एव ३।

७ नारकी, ९ ग्रैवेक ताईं रा देवता गर्भज तिर्यंच, गर्भज मनुष्या में अज्ञान ३ ही पावे। ५ थावर, ३

विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री, सर्व युगलियां में अज्ञान २ ही पावै मति अज्ञान १, श्रुत अज्ञान २, ५ अनुत्तर का देवता में सिद्धां में अज्ञान पावै नहीं ।

॥ इति अज्ञान द्वारम् ॥

सत्तरमूं योग द्वार ।

योग १५-मन का ४, सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्र मन ३ व्यवहार मन एवं ४। वचन का जोग ४—सत्य वचन १, असत्य वचन २, मिश्र वचन ३, व्यवहार वचन एवं ४। काया का जोग ७—औदारिक १ औदारिक को मिश्र २, वैक्रिय ३, वैक्रिय को मिश्र ४, आहारिक ५, आहारिक को मिश्र ६ कार्मण ७, एवं १५।

७ नारकी सर्व देवता में जोग पावै ११ मन का ४, वचन का ४, वैक्रिय ९ वैक्रिय को मिश्र १० कार्मण ११ सर्व युगलियां में योग पावै ११ मन का ४, वचन का ४.औदारिक ९, औदारिक को मिश्र १० कार्मण ११। वाउकाय वरजीने, ४ स्थावर, असन्नी मनुष्य में योग ३ औदारिक औदारिक को मिश्र कार्मण। तीन विकलेन्द्री, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री, में पावे ४ औदारिक १, औदारिक मिश्र २ व्यवहार भाषा ३ कार्मण ४। वायुकाय में योग पावै ५—औदारिक

१, औदारिक मिश्र २, वैक्रे ३, वैक्रे मिश्र ४, कार्मण ५, गर्भेज तिर्यञ्च, मनुष्यणी मे योग पावै १३ आहारिक आहारिक को मिश्र टल्यो, गर्भेज मनुष्यां मे पावे १५ ही, चौदमे गुणठाणें अजोगी होय। सिद्धा मे जोग पावे नहीं।

॥ इति जोग द्वारम् ॥

अठारमूं उपयोग द्वार।

७ नारकी, ६ नव ग्रैवेक ताई का देवता, गर्भज तिर्यञ्च मे उपयोग पावे ६ ज्ञान तो ३ मति श्रुति अवधि। अज्ञान ३ मति अज्ञान श्रुति अज्ञान विभग अज्ञान, दर्शन ३ चक्षु अचक्षु अवधि।

५ थावर मे पावै ३ मति श्रुति अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

असन्नी मनुष्य, तथा ५६, अन्तरद्वीप का युगलिया मे उपयोग पावै ४ मति श्रुति अज्ञान तथा चक्षु अचक्षु दर्शन।

बेइन्द्री तेइन्द्री में उपयोग पावै ५—मति श्रुति ज्ञान २, मति श्रुति अज्ञान २, तथा अचक्षु दर्शन।

चौरिन्द्री, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री, ३० अकर्म भूमि का युगलिया मे, उपयोग पावै ६—मति श्रुति ज्ञान २

अज्ञान २, चक्षु अचक्षु दर्शन एवं ६। पांच अणुत्तर में पावै ६ तीन ज्ञान, तीन दर्शन।
गर्भज मनुष्यां में उपयोग पावै १२ सिद्धां में उपयोग पावै २ केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १।

॥ इति उपयोग द्वारम् ॥

उगणीसमूं आहार द्वार।

उन्नीस दंडक का जीव तो छहुं ही दिशा को आहार लेवै।

पांच थावर तीन·च्यार पांच छव दिशि को आहार लेवै।

केतला मनुष्य अणआहारी पण होय, सिद्ध भगवंत आहार लेवै नहीं।

॥ इति आहार द्वारम् ॥

बीसमूं उत्पत्ति द्वार।

७ नारकी, आठवां देवलोक तांई का देवता, तेउ, वाउ काय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य तिर्यञ्च सर्व युगलियां में उत्पति पावै गति २ की, मनुष्य तिर्यञ्च।

नवमां देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध तांई का देवता में उत्पत्ति पावै १ मनुष्य गति की।

पृथ्वी अप वनस्पतिकाय में उत्पत्ति पावै ३ गति की (नारकी टली)

गर्भज मनुष्य तिर्यंच में उत्पत्ति च्यारू ही गति की।

सिद्धां में १ मनुष्य गति की।

॥ इति आगति द्वारम् ॥

इक्कीसमूं स्थिति द्वार।

नारकी की स्थिति।

१ पहली नारकी की स्थिति जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टी १ सागर की।

२ दूसरी नारकी की जघन्य १ सागर की उत्कृष्टी ३ सागर की।

३ तीसरी नारकी की जघन्य ३ सागर की उत्कृष्टी सात ७ सागर की।

४ चौथी नारकी की जघन्य ७ सागर की उत्कृष्टी १० सागर की।

५ पांचमीकी जघन्य १० उत्कृष्टी १७ सागर की।

६ छट्ठी नारकी की जघन्य १७ उत्कृष्टी २२ सागर की।

७ सातमी नारकी की जघन्य २२ उत्कृष्टी ३३।

भवन पति देवतां की स्थिति—

दक्षिण दिशि का असुर कुमार की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १ सागर की, यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ३॥ पल्योपम की।

दक्षिण दिशि का ९ नो निकाय का देवतां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १॥ पल्योपम की, यांकी देव्यां की जघन्य १० हजार वर्ष उत्कृष्टी ॥। पौण पल्योपम की।

उत्तर दिशि का असुर कुमारां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १ सागर जाझेरी यांकी देव्या की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्टी ४॥ साढा च्यार पल्योपम की।

उत्तर दिशि का ९ निकाय का देवतां की जघन्य १० हजार वर्ष की ऊत्कृष्टी देश ऊणीं दोय पल्योपम की, देव्यां की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी देश ऊणीं १ पल्योपम की।

वानव्यन्तर देवतां की स्थिति।

जघन्य १० हजार वर्ष की उ० १ पल्योपम की, यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्ष की उ०

॥ आधा पल्योपम की, त्रिभुमस्य देवों की भी इतनी ही।

जोतषी देवा की स्थिति।

चन्द्रमां की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्टी १ पल्योपम एक लाख वर्ष अधिक, यांकी देव्या की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्टी आधा पल्य ५० हजार वर्ष की, सूर्य की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्टी १ पल्योपम १ हजार वर्ष अधिक, याकी देव्यां की जघन्य पाव पल्य की उत्कृष्टी ॥ आधी पल्य पांच सौ वर्ष अधिक। ग्रह की जघन्य पाव पल्य की उ० १ पल्य की. याकी देव्यां की ज० पाव पल्य, उत्कृष्टी ॥ आधी पल्योपम की।

नक्षत्रां की ज० पाव पल्य उ० ॥ आधी पल्य की याकी देव्यां की ज० पाव पल्य उ० पाव पल्य आझेरी।

तारां की ज० पल्य को आठमूं भाग उ० पाव पल्य की, यांकी देव्यां की ज० अठवाव पल्य उ० अठपाव पल्य आझेरी।

वैमानिक देवता की स्थिति।

१ पहला देवलोक में जघन्य १ पल्योपम उत्कृष्ट

२ सागर की, यांकी परिग्रहि देव्यां की ज० १ पल्य उ० ७ पल्य, अपरिग्रहि देव्यां की ज० १ पल्य उ० ५० पल्योपम की।

२ दूसरा देवलोक में ज० १ पल्य जाझेरी उ० २ सागर जाझेरी, यांकी देव्यां की जघन्य १ पल्य जाझेरी उ० परिग्रही की ६ पल्य की, अपरिग्रही की ५५ पल्योपम की।

३ तीसरा देवलोक में ज० २ सागर उ० ७ सागरकी।

४ चौथा देवलोक की ज० २ सागर जाझेरी उ० ७ सागर जाझेरी।

५ पांचवां की ज० ७ सागर उ० १० सागर की।

६ छट्ठा देवलोक का देवतां की ज० १० सागर उ० १४ सागर की।

७ सातवां की ज० १४ उ० १७ सागर की।

८ आठमां की ज० १७ उ० १८ सागर की।

९ नवमां की ज० १८ उ० १९ सागर की।

१० दशमां की ज० १९ उ० २० सागर की।

११ इग्यारमां की ज० २० उ० २१ सागर की।

१२ बारमां की ज० २१ उ० २२ सागर की।

१३ पहिला ग्रैवेयक की ज० २२ उ० २३।

१४ दूसरा ग्रैवेयक की ज० २३ उ० २४।

१५ तीसरा ग्रैवेयक की जघन्य २४ उ० २५ ।

१६ चौथा ग्रैवेयक की जघन्य २५ उ० २६ ।

१७ पांचमा ग्रैवेयक की जघन्य २६ उ० २७ ।

१८ छट्ठा ग्रैवेयक की जघन्य २७ उ० २८ ।

१९ सातमा ग्रैवेयक की ज० २८ उ० २९ ।

२० आठमा ग्रैवेयक की जघन्य २९ उ० ३० ।

२१ नवमा ग्रैवेयक की जघन्य ३० उ० ३१ ।

२२ विजय १, विजयन्त २, जयन्त ३ ।
अपराजित, ४ ए च्यार अनुत्तर वैमान की जघन्य
३१ उत्कृष्टी ३३ सागर ।

२३ सरवार्थ सिद्धिका देवां की जघन्य ३३ उत्कृष्टी
३३ सागर ।
नव लोकान्तिक देवतां की स्थिति ८ सागर की,
पहिला किल्विषी की ३ पल्य, दूजा की ३ सागर,
तीजा की १३ सागर की ।

पांच स्थावर की स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त की
उत्कृष्टी पृथ्वीकाय की २२ हजार वर्ष की, अप्पकाय
की ७ हजार वर्ष की, तेउकाय की ३ दिन रात की
वायु काय की ३ हजार वर्ष की वनस्पति काय की
१० हजार वर्ष की ।

तीन विकलेन्द्री की जघन्य अन्तर मुहूर्त की

उत्कृष्टी बेइन्द्री की १२ वर्ष की, तेइन्द्री की ४६ दिन रात की, चौइन्द्री की ६ महीना की। तिर्यञ्च पंचेन्द्री की जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की उत्कृष्टी जलचर की १ कोड़ पूर्व की, थलचर सन्नी की ३ पल्योपम की, असन्नी की ८४ हजार वर्ष की, उरपुर सन्नी की कोड़ पूर्व की, असन्नी की ५३ हजार वर्ष की, भुजपर सन्नी की कोड़ पूर्व की, असन्नी की ४२ हजार वर्ष की, खेचर सन्नी की पल्योपम के असंख्यातमूं भाग, असन्नी की ७२ हजार वर्ष की। असन्नी मनुष्य की ज० उ० अन्तर मुहूर्त्त की।

सन्नी मनुष्य की स्थिति, ज० अन्तर मुहूर्त्त की उ० ५ भरत, ऐरभरत का मनुष्यां की अवसर्पिणी के पहिलो आरो लागतां ३ पल्य की, उतरतां २ पल्य की, दूसरो लागतां २ पल्य की, उतरतां १ पल्य की तीसरो लागतां १ पल्य की, उतरतां कोड़ पूर्वकी, चौथो आरो लागतां कोड़ पूर्व की उतरतां १२५ वर्ष की, पांचमूं लागतां १२५ वर्ष की, उतरतां २० वर्ष की, छट्ठो लागतां २० वर्ष की, उतरतां १६ वर्ष की। उतसर्पिणी काल में इमहिज चढ़ती, कहणी पांच महाविदेह खेत्रां की १ कोड़ पूर्व की उत्कृष्टी स्थिति।

युगलिया की स्थिति —

५ हेमवय, ५ अरणवयका की ज० देश ऊणी १ पल्य उ० १ पल्य की।

५ हरिवास, ५ रम्यकवासका की ज० देशऊणी २ पल्य उ० २ पल्य की।

५ देवकुरू, ५ उत्तरकुरूका की ज० देशऊणी ३ पल्य उ० ३ पल्य की।

५६ अन्तर द्वीपका की पल्योपम को असंख्यातमू भाग की।

एक एक सिद्धां की आदि नहीं अन्त नहीं, एक एक की आदि छै पण अन्त नहीं।

॥ इति स्थिति द्वारम् ॥

॥ २२ मुं समोह्या असमोह्या द्वार ॥

समोह्या तो समुद्धात फोटी ताणावेजो करी मरै, असमोह्या विना समुद्धाते गोलीका भड़ाका वत् मरै।

२४ दण्डक का जीव दोनूं प्रकारका मरण करै।

॥ इति समोह्या असमोह्या द्वारम् ॥

॥ २३ मुं चवन द्वार ॥

७ नारकी, आठमा देवलोक ताई का देवता, पृथ्वी अप्प वनस्पति काय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी, मनुष्य, में चवन री गति की मनुष्य तिर्यंच।

नवमां देवलोक से सरवार्थ सिद्ध तांई का देवनां में चवन १ मनुष्य की, सातमी नारकीमें तथा तेउ वाउ में चवन १ तिर्यंच गति की ही।

गर्भज मनुष्य तिर्यंच, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में चवन च्यारूं ही गति की, युगलियां में चवन १ देव गति की। सिद्धां में चवन पावै नहीं।

॥ इति चवन द्वारम् ॥

॥ २४ मूं गतागति द्वार ॥

पहिली से छट्ठी नारकी तांई गति २ दण्डक, आगति २ दण्डकां की मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्री।

सातमीं नारकी में आगति २ दण्डकां की, गति तिर्यञ्च पंचेन्द्री की, गत जाणवी।

भवनपति, वानव्यन्तर, ज्योतिषी, पहिला दूजा देव लोक तथा पहिला किल्विषी देवतां की, आगत २ दण्डकां की (मनुष्य तिर्यञ्च की) गति ५ दण्डकां की (तिर्यंञ्च मनुष्य पृथ्वी अप्प वनस्पति की)

तीजा देवलोकसे आठमां देवलोक तांई गतागत २ दण्डकां की (मनुष्य तिर्यञ्च) नवमां देवलोक से सरवार्थ सिद्धि तांई गतागत १ मनुष्य की।

पृथ्वी अप्प वनस्पति काय की आगत २३ दण्डकां की (नारकी टली) गति १०—दण्डकां की ५

स्थावर, ३ विकलेन्द्री ८, मनुष्य ६, तिर्यञ्च एव १० की।

तेउ वायुकाय में आगत १० दण्डका की, गति ६ दण्डका की, मनुष्य टल्यो, ३ विकलेन्द्रीमें १० की आगत १० की गति ऊपर वत्।

असन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रीमें आगति १० दण्डकाकी ऊपर वत् गति २२ दण्डका की जोतिषी वैमानिक टल्यो।

सन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्री मे आगति २४ की गति २४ की।

असन्नी मनुष्य में आगत ८ दण्डका की, पृथ्वी अप्प वनस्पति तीन विकलेन्द्री मनुष्य तिर्यञ्च एव ८, अनें गति १० दण्डका की पूर्ववत्।

गर्भेज मनुष्य में आगति २२ दण्डका की तेउ वाउ टल्यो, गति २४ दण्डका की, ३० अकर्म भूमि का युगल्यिा में आगति २ दण्डका की मनुष्य तिर्यञ्च गति १३ दण्डका की १० तो भवनपतिका वानव्यन्तर ११ जोतिषी १२ वैमानिक १३ एव।

५६ अन्तर द्वीप का युगलिया में आगति २ दण्डका की ऊपरवत् गति ११ दण्डका की १० तो भवनपति का १ वानव्यन्तर को ११।

सिद्धा में आगति मनुष्य की गति नहीं।

॥ इति गतागत सम्पूर्ण ॥

॥ २५ मूं प्राण द्वार ॥

७ नारकी सर्व देवता गर्भेज मनुष्य तिर्यञ्च सर्व युगलिया में प्राण १० दशूं ही पावै, ५ स्थावर में प्राण ४ पावै, स्पर्श इन्द्री बल १, काय २, स्वाशोस्वाश ३, आऊपो ४ एवं।

बेइन्द्री में पावै ६, तेइन्द्री में पावै ७, चौइन्द्री में पावै ८ प्राण।

असन्नी मनुष्य में पावै ७॥ स्वाश लेवै तो उस्वाश नहीं असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में पावै ९ मन टल्यो।

१३ में गुणठाणे पावै ५ पांच इन्द्रियां का टल्या।

१४ में गुणठाणे पावै १ आऊपो बलप्राण, सिद्धां में प्राण पावै नहीं।

॥ इति प्राण द्वारम् ॥

॥ २६ मूं योग द्वार ॥

नारकी देवता मनुष्य सन्नी तिर्यञ्च युगलियां में योग पावै ३ मन वचन काय का।

पांच स्थावर असन्नी मनुष्य में १ काय को पावै।

तीन विकलेन्द्री असन्नी पंचेन्द्री में योग पावै २ वचन काया।

चवदमें गुणठाणे वाला मनुष्य अयोगी होय, सिद्धांमें योग पावै नहीं।

॥ इति लघुदण्डकम् ॥

॥ पच्चीस बोल की चरचा ॥

१ पहले बोले गति चार ४—

१ एक गति किण में पावे ? मनुष्य में पावे।

२ दोय गति किण में पावे ? श्रावक में—मनुष्य, तिर्यंच।

३ तीन गति किण में पावे ? नपुंसक वेद में (देवता टलयो)।

४ चार गति किण में पावे ? समचै जीव में।

२ दूजे बोले जात पांच ५—

१ एक जात किण में पावे ? एकेन्द्री में।

२ दोय जात किण में पावे ? वैक्रिय शरीर में—एकेन्द्री, पंचेन्द्री।

३ तीन जात किण में पावे ? तीन विकलेन्द्री में।

४ चार जात किण में पावे ? असत्काय में (एकेन्द्री टली)।

५ पांच जात किण में पावे ? समचै जीव में।

३ तीजे बोले काय छव ६—

१ एक काय किण में पावे ? साधु में—त्रसकाय।

२ दोय काय किण में पावे ? वैक्रिय शरीर में—
वायुकाय, त्रसकाय ।

३ तीन काय किण में पावे ? तेजूलेश्या एकेन्द्री
में—पृथ्वी, पाणी, वनस्पति ।

४ चार काय किण में पावे ? तेजूलेश्या में पावे
(तेउ, वाउ, टली) ।

५ पांच काय किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे
(त्रस टली) ।

६ छव काय किण में पावे ? समचै जीव में ।

४ चौथे बोले इन्द्री पांच ५—

१ एक इन्द्री किण में पावे ? पृथ्वीकाय में—स्पर्श ।

२ दोय इन्द्री किण में पावे ? लट, गिंडोला
में—रस, स्पर्श ।

३ तीन इन्द्री किण में पावे ? कीड़ी, मकोड़ा
में—घ्राण, रस, स्पर्श ।

४ चार इन्द्री किण में पावे ? माखी, मच्छर में
(श्रुत-इन्द्री टली) ।

५ पांच इन्द्री किण में पावे समचै जीव में ।

५ पांचवें बोले पर्याय छव ६—

१ एक पर्याय किण में पावे ? शरीर पर्यायरे
अलधिया में—आहारपर्याय ।

२ दो पर्याय किण में पावे ? इन्द्री पर्यायरे अप्रथिया में—आहार, शरीर।

३ तीन पर्याय किण में पावे ? एकेन्द्री अपर्याप्ता में—आहार, शरीर, इन्द्री।

४ चार पर्याय किण में पावे ? एकेन्द्री में (मन, भाषा टली)।

५ पाच पर्याय किण में पावे ? माठी में पावे (मन पर्याय टली)।

६ छव पर्याय किण में पावे ? समधी जीव में।

६ उठे धोले प्राण दश १०—

१ एक प्राण किण में पावे ? चउदमे गुणस्थान में—आयुष बल प्राण।

२ दोय प्राण किण में पावे ? वाटे वहता जीवमकाया, आयुष।

३ तीन प्राण किण में पावे ? एकेन्द्री अपर्याप्ता में—स्पर्श, काया, आयुष।

४ चार प्राण किण मे पावे ? एकेन्द्री में—स्पर्श, काया, स्वासोस्वास, आयुष।

५ पाच प्राण किण में पावे ? तेरहवे गुणस्थान में (पाच इन्द्रिया का टल्या)।

६ छव प्राण किण में पावे ? बेइन्द्री म—

रस, स्पर्श, वचन, काया श्वासोश्वास, आयुष।

७ सात प्राण किण में पावे ? तेइन्द्री में (श्रुत चक्षु, मन टल्या)।

८ आठ प्राण किण में पावे ? चौइन्द्री में (श्रुत, मन टल्या)।

९ नव प्राण किण में पावे ? असन्नी पंचेन्द्री में (मन टल्यो)।

१० दश प्राण किण में पावे ? समचै जीव में।

७ सातवें बोले शरीर पांच ५—

१ एक शरीर किण में पावे ? एक शरीर किण ही में नहीं पावे।

२ दोय शरीर किण में पावे ? बाटे बहता जीव में—तेजस, कार्मण।

३ तीन शरीर किण में पावे ? पृथ्वीकाय में—औदारिक, तेजस, कार्मण।

४ चार शरीर किण में पावे ? वायुकाय में (आहारिक टल्यो)।

५ पांच शरीर किण मे पावे ? समचै जीव में।

८ आठवें बोले योग पन्द्रह १५—

१ एक योग किण में पावे ? तीसरा गाम के वाणा में—औदारिक।
२ दोय योग किण में पावे ? उड़ती माखी में—औदारिक, व्यवहार भाषा।
३ तीन योग किण में पावे ? तेउकाय में—औदारिक, औदारिक मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण।
४ च्यार योग किणमें पावे ? बेइन्द्री में—औदारिक औदारिक मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण।
५ पांच योग किण में पावे ? वायुकाय में—औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण।
६ छव योग किण में पावे ? असन्नी में—औदारिक औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण।
७ सात योग किण में पावे ? केवल्या में—सत्यमन, व्यवहार मन, सत्यभाषा, व्यवहार भाषा, औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मण।
८ आठ योग किण मे पावे ? तीजे गुणस्थान में—नियमा ४ मन, ४ वचन की।

९ नव योग किण में पावे ? परिहार विशुद्ध चारित्र में—४ मन का, ४ वचन का, १ औदारिक ।

१० दश योग किण में पावे? तीजे गुणस्थानमें—४ मन का, ४ वचन का, औदारिक, वैक्रिय ।

११ इग्यारह योग किण में पावे ? नारकी में—४ मन का, ४ वचन का, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र कार्मण ।

१२ बारह योग किण में पावे ? श्रावक में (आहारिक, आहारिक मिश्र, कार्मण टल्यो) ।

१३ तेरह योग किण में पावे ? तिर्यंच में (आहारिक, आहारिक मिश्र, टल्या) ।

१४ चउदह योग किण में पावे ? मन योगी में (कार्मण टल्यो) ।

१५ पन्द्रह योग किण में पावे ? समचै जीव में ।

९ नवमें बोले उपयोग बारह १२—

१ एक उपयोग किण में पावे ? बाटे वहता सिद्धां में—केवल ज्ञान ।

२ दोय उपयोग किण में पावे ? सिद्धां में—केवल ज्ञान, केवल दर्शन ।

३ तीन उपयोग किण में पावे ? एकेन्द्री मे— मति, श्रुति, अज्ञान, अचक्षु दर्शन।

४ चार उपयोग किण में पावे ? दशवे गुणस्थान में—४ ज्ञान (केवल वरजीने)।

५ पाच उपयोग किण मे पावे ? बेइन्द्री मे— मति, श्रुति, ज्ञान, मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन।

६ छव उपयोग किण मे पावे ? मिथ्याती मे —३ अज्ञान, ३ दर्शन (केवल वरजीने)।

७ सात उपयोग किण मे पावे ? छट्ठे गुणस्थान मे —केवल वरजी ने ४ ज्ञान ३ दर्शन।

८ आठ उपयोग किण मे पावे ? अधर्म मे — ३ अज्ञान, ४ दर्शन, केवल ज्ञान।

९ नव उपयोग किण मे पावे ? देवता मे (मन पर्यव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या)।

१० दश उपयोग किण मे पावे ? स्त्रीवेद मे (केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या)।

११ इग्यारह उपयोग किण मे पावे ? अभावक मे (मन पर्यव टल्यो)।

१२ बारह उपयोग किण में पावे ? समचे जीव मे ।

१० दशवें बोले कर्म आठ ८—

१, २, ३ कर्म किणमें पावे ? किण ही में नहीं।

४ चार कर्म किण में पावे ? केवल्यां में—
वेदनी, आयुष्य, नाम, गोत्र।

५, ६ कर्म किण में पावे ? किण ही में नहीं पावे।

७ कर्म किण में पावे ? बारवें गुणस्थान में
(मोहनी टल्यो)।

८ कर्म किण में पावे ? समचै जीव में।

११ इग्यारवें बोले गुणस्थान चउदह १४—

१ एक गुणस्थान किण में पावे ? एकेन्द्री में
—पहलो।

२ दोय गुणस्थान किण में पावे ? बेइन्द्री में—
पहलो, दूजो।

३ तीन गुणस्थान किण में पावे ? अपर्याप्ता में
—१, २, ४।

४ चार गुणस्थान किण में पावे ? देवता में—
४ प्रथम।

५ पांच गुणस्थान किण में पावे ? तिर्यंञ्च सन्नी
पंचेन्द्री में— ५ प्रथम।

६ छव गुणस्थान किण में पावे ? कृष्ण लेश्या
में ६ प्रथम।

७ सात गुणस्थान किण मे पावे ? तेजू लेश मे सात प्रथम।

८ आठ गुणस्थान किण मे पावे ? अप्रमादी मे —आठ छेहला।

६ नव गुणस्थान किण मे पावे ? स्त्रीवेद मे— नव प्रथम।

१० दश गुणस्थान किण मे पावे ? लोभ कषाय मे —दश प्रथम।

११ इग्यारह गुणस्थान किण में पावे ? चक्षु दर्शन में (१०, १३, १४ टल्या)।

१२ गुणस्थान किण में पावे ? सम्यक्त्वी में (१, ३ टल्या)।

१३ तेरह गुणस्थान किण मे पावे ? सयोगी (चउदमों टल्यो)।

१४ चउदह गुणस्थान किण मे पावे ? जीव मे ।

१२ बारहवें बोले पांच इन्द्री की २३ विषय—

८ विषय एकेन्द्री मे —८ स्पर्श इन्द्री की।

१३ विषय बेइन्द्री मे —५ रस, ८ स्पर्श ।

१५ विषय तेइन्द्री मे —२ घ्राण, ५ रस, ८ इन्द्री की।

२० विषय चौइन्द्री में—(श्रुत इन्द्री की तीन टली)।

२३ विषय पंचेन्द्री में।

१३ तेरहवें बोले १० प्रकार की मित्थ्यात किण में पावे? मित्थ्याती में पावे।

१४ चउदहवें बोले नवतत्व ना ११५ भेद तिणमें जीवना १४—

१ एक भेद किण में पावे? केवल ज्ञानी में पावे चउदमों।

२ दोय भेद किण में पावे? देवतां में पावे —१३, १४।

३ तीन भेद किण में पावे? मनुष्य में पावे —११, १३, १४।

४ चार भेद किण में पावे? एकेन्द्री में पावे —४ प्रथम।

५ पांच भेद किण में पावे? भाषक में पावे— ६, ८, १०, १२, १४।

६ छव भेद किण में पावे? सम्यक्ती में पावे —५, ७, ६, ११, १३, १४।

७ सात भेद किण में पावे? पर्यासा में पावे— ७ पर्यासा का।

८ आठ भेद किण मे पावे ? अणाहारिक मे पावे—७ अपर्यासा, १ चउदमों।

९ नव भेद किण में पावे ? औदारिक मिश्र मे पावे—(२, ६, ८, १०, १२ टल्या)

१० दश भेद किण मे पावे ? त्रसकाय में पावे (एकेन्द्री का ४ टल्या)।

११ इग्यारह भेद किण मे पावे ? कोरा तिर्यंचर भेदा मे (११, १३, १४ टल्या)।

१२ बारह भेद किण में पावे ? असन्नी मे पावे (१३, १४ टल्या)।

१३ तेरह भेद किण मे पावे ? कोरा असयती मे पावे—(चउदमों टल्यो)।

१४ चउदह भेद किण मे पावे ? समचे जीव मे।

१५ पन्द्रवे बोले आत्मा आठ ८—

१ एक आत्मा किण में पावे ? द्रव्य जीव मे पावे-द्रव्य आत्मा।

२ दोय आत्मा किण में पावे ? उपशम भाव में पावे-दर्शन चारित्र।

३ तीन आत्मा किण में पावे ? उदय भाव में पावे-कषाय, योग दर्शन।

४ चार आत्मा किण में पावे ? सिद्धां में पावे--
   द्रव्य, उपयोग, ज्ञान, दर्शन।

५ पांच आत्मा किण में पावे ? निर्जरा में पावे
   (द्रव्य, कषाय, चारित्र, टली)।

६ छव आत्मा किण में पावे ? मित्थ्याती में पावे
   (ज्ञान, चारित्र, टली)।

७ सात आत्मा किण में पावे ? श्रावक में पावे
   (चारित्र टली)।

८ आठ आत्मा किण में पावे ? साधु में पावे।

१६ सोलह्वें बोले दण्डक चौबीस २४—

१ एक दण्डक किण में पावे सात नारकी में पावे
   १ प्रथम।

२ दोय दण्डक किण में पावे ? श्रावक में पावे—
   २०, २१,

३ तीन दण्डक किण में पावे ? शुक्ल लेश्या में
   पावे—२०, २१, २४,

४ चार दण्डक किण में पावे ? तिर्यंच त्रसकाय
   में पावे—१७, १८, १९, २०,

५ पांच दण्डक किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे--
   १२, १३, १४, १५, १६,

६ छव दण्डक किण में पावे ? त्रसकाय नपुंसक में पावे—१, १७, १८, १६, २०, २१,

७ सात दण्डक किण में पावे कोरा अचक्षु दर्शन में पावे—१२, १३, १४, १५, १६, १७, १८

८ आठ दण्डक किण में पावे ? कोरा असन्नी में पावे—१२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १६

६ नव दण्डक किण में पावे ? तिर्यञ्च में पावे—१२ से २० ताई।

१० दश दण्डक किण में पावे ? असन्नी में पावे—१२ से २१ ताई।

११ इग्यारह दण्डक किण में पावे ? नपुंसक वेद में पावे (१३ देवता का टल्या)।

१२ बारह दण्डक किण में पावे ? गर्भ बिना सन्नी कृष्ण लेश्या में पावे—१ से ११ ताई तथा बाईसमों।

१३ तेरह दण्डक किण में पावे ? सर्व देवता में पावे—२ से ११ ताई, २२, २३, २४,

१४ चउदह दण्डक किण में पावे ? कोरा सन्नी में पावे—१३ देवतारा १ नारकी रो।

१५ पन्द्रह दण्डक किण में पावे ? स्त्रीवेद में पावे—१३ देवतारा, २०, २१,

१६ सोलह दण्डक किण में पावे ? सन्नी में पावे (५ थावर, ३ विकलेन्द्री टल्या) ।

१७ सतरह दण्डक किण में पावे ? चक्षु दर्शन में पावे (५ थावर, बेइन्द्री तेइन्द्री का टल्या)

१८ अट्ठारह दण्डक किण में पावे ? तेजू लेश्या में पावे (३ बिकलेन्द्री, नारकी, तेउ, वाउ का टल्या) ।

१९ उगणीस दण्डक किण में पावे ? सम्यक्ती में पावे (५ थावर का टल्या) ।

२० बीस दण्डक किण में पावे ? अढाई द्वीप बारे नीचा लोक में (२१, २२, २३, २४, टल्या)

२१ इकवीस दण्डक किण में पावे ? नीचा लोक में पावे (२२, २३, २४ टल्या) ।

२२ बाईस दण्डक किण में पावे ? कृष्ण लेश्या में पावे (२३, २४ टल्या) ।

२३ तेईस दण्डक किण में पावे ? एकेन्द्री की आगत में (नारकी रो एक दण्डक पहलो टल्यो) ।

२४ चौबीस दण्डक किण में पावे ? अव्रती में पावे ।

१७ सतरवे बोले लेश्या छव—

१ एक लेश्या किण पावे ? तेरवे गुणस्थान में पावे—१ शुक्ल ।

२ दोय लेश्या किण में पावे ? तीजी नारकी में पावे—कापोत, नील ।

३ तीन लेश्या किण में पावे ? तेउकाय में पावे—कृष्ण, नील, कापोत ।

४ चार लेश्या किण में पावे ? पृथ्वी काय में पावे (पद्म, शुक्ल टली) ।

५ पाच लेश्या किण में पावे ? सन्यासी री गत देवता में पावे (शुक्ल टली) ।

६ छव लेश्या किण में पावे ? समचै जीव में ।

१८ अठारवे बोले दृष्टि तीन ३—

१ एक दृष्टि किण में पावे ? चौथे गुणस्थान में पावे सम्यक दृष्टि ।

२ दोय दृष्टि किण में पावे ? बेइन्द्री में पावे—सम्यक, मिथ्या ।

३ तीन दृष्टि किण में पावे ? समचै जीव में ।

१६ उगणीसवें बोले ध्यान चार ४—

१ एक ध्यान किण में पावे ? केवलया में पावे—१ शुक्ल ।

२ दोय ध्यान किण में पावे ? सातवें गुणस्थान में पावे—धर्म, शुक्ल।

३ तीन ध्यान किण में पावे ? श्रावक में पावे (शुक्ल टल्यो)।

४ चार ध्यान किण में पावे ? समचै जीव में।

२० बीसवें बोले ६ द्रव्य रा ३० बोल।

१ एक द्रव्य अलोकमें पावे—आकाशास्तिकाय।

६ छव द्रव्य लोक में पावे।

२१ इकवीसवें बोले रास दोय २—

१ एक रास किणमें पावे ? जीवमें पावे—१ जीव रास।

२ दोय रास किण में पावे ? लोक में पाव।

२२ बाईसवें बोले श्रावकरा १२ व्रत—ते श्रावकमें पावे।

२३ तेईसवें बोले साधुजी ना पांच महाव्रत—साधुजी में पावे।

२४ चौवीसवें बोले भांगा ४९—श्रावक में पावे।

२५ पचीसवें बोले चारित्र पांच ५—

१ एक चारित्र किण में पावे ? केवल्यांमें पावे—यथाख्यात।

२ दोय चारित्र किण में पावे ? पुलाकनियंठा में पावे—सामायक, छेदोस्थापनीय।

३ उदय भाव तीन—कषाय, जोग, दर्शन।

२ उपशम भाव दोय—दर्शन, चरित्र।

६ क्षायक क्षयोपशम छव आत्मा द्रव्य, कषाय टली

८ परिणामिक भाव आठ आत्मा।

४ चौथे बोलै आठ आत्मा में शास्वती केती? अशास्वती केती?

१ शास्वती तो एक द्रव्य आत्मा।

७ अशास्वती सात आत्मा।

५ पांच में बोलै आठ आत्मा में सावद्य केती? निर्वद्य केती?

१ द्रव्य आत्मा तो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं,

१ कषाय आत्मा सावद्य छै।

२ जोग तथा दर्शन आत्मा सावद्य निर्वद्य दोनूं छै।

४ ज्ञान, चरित्र, वीर्य, उपयोग, ए च्यार आत्मा निर्वद्य छै।

६ छठै बोलै आठ आत्मा में जाणे किसी? देखै किसी? सरधै किसी आत्मा?

जाणें तो ज्ञान तथा उपयोग आत्मा, देखै उपयोग आत्मा, सरधै दर्शन आत्मा. कला जाणै उपयोग आत्मा, करै जोग आत्मा, कर्म रोकै चारित्र आत्मा, तोड़ै जोग आत्मा, शक्ति वीर्य आत्मा की।

७ सात में बोलै उदय का ३३ (तेतीस) बोला में सावध केता ? निर्वध केता ?

१६ सोलै बोल तो सावध निर्वद्य दोनू नहीं, त कहे उे च्यार गति ४, छ काय १०, असन्नी ११, अप्राणी १२, ससारता १३, असिद्ध १४, अकेवली १५, छद्मस्थ १६।

३ तीन भली लेश्या निर्वद्य है।

१२ बारे सावद्य उे, तीन माठी लेश्या ३, च्यार कषाय ७ तीन वेद १०, मिथ्याती ११, अव्रती १२।

२ आहारता, सजोगी, ए दोय सावद्य निर्वद्य दोनू ही छै।

८ आठ में बोलै जीव पदार्थ किसे भाव ? यावत मोक्ष पदार्थ किसे भाव ?

१ जीव पदार्थ भाव पाचो ही पावै।

४ अजीव, पुन्य, पाप बन्ध ए च्यार पदार्थ भाव १ एक परिणामिक।

१ आस्रव पदार्थ भाव दोय उदय, परिणामिक।

१ सवर पदार्थ भाव च्यार उदय वरजी ने।

१ निर्जरा पदार्थ भाव तीन—क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक।

१ मोक्ष भाव दोय—क्षायक, परिणामिक ।

६ नव में बोलै उदय का ३३ (तेतीस) बोल किसे किसे कर्म के उदय से तथा किसी आत्मा ?

१३ तेरा बोल तो नाम कर्म के उदय से, तिणमें च्यार गति ४, छय काय १०, तीन भली लेश्या १३ ।

१२ बारे बोल मोहनीय कर्म के उदय से, च्यार कषाय ४, तीन वेद ७, तीन माठी लेश्या १०, मिथ्याती ११, अव्रती १२, एवं

२ दोय बोल ज्ञानावरणी कर्म के उदय से—असन्नी अन्नाणी ।

२ आहारता, संजोगी, ए दोय बोल मोहनीय, नाम, कर्म ना उदय से ।

२ छद्मस्थ, अकेवली, ए दोय बोल ज्ञानावरणी, दर्शणावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म के उदय से ।

२ संसारता, असिद्धता, ए दोय बोल, च्यार अघातिक कर्म के उदय से, हिवे आत्मा कहै छै ।

१७ सतरे बोल तो अनेरी आत्मा —

च्यार गति ४, छय काय १०, अव्रती ११,

'अमसी १०, अज्ञाणी १३, ससारता १४
असिद्ध १५, अकेवली १६, छद्मस्थ १७।
८ आठ बोल जोग आत्मा —
छव लेश्या ६, आहारता ७, सयोगी ८।
४ च्यार कषाय कषाय आत्मा।
३ तीन वेद कोई कषाय कहै कोई अनेरी कहै।
१ मिथ्याती दर्शन आत्मा।

१० दशमें बोलै जीव ने जीव जाणी यावत मोक्ष मोक्ष जाणी ते किसे भाव ? क्षायक, क्षयोपशम परिणामिक, ए तीन भाव।

११ इग्यारमें बोलै जीव ने जीव जाणी, यावत म ने मोक्ष जाणी, ते किसी आत्मा ? उपयोग ज्ञान आत्मा।

१२ बारमें बोलै जीव पदार्थ केती आत्मा ? यावत मोक्ष पदार्थ केती आत्मा ? जीव में आत्मा पावै आठ ही अजीव, पुन्य, पाप, बंध, आत्मा नहीं। आस्रव ३ (तीन) आत्मा-कषाय जोग दर्शन। संवर (दोय) आत्मा-दर्शन तथा चारित्र। निर्जरा (पांच) आत्मा द्रव्य, कषाय, चारित्र टली। पदार्थ अनेरी आत्मा।

१३ तेरमें बोलै छव में नव में कोण ? उन्य छव में

कोण, नव में कोण?—छव में पुद्गल, नव में च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

उपशम छव में कोण, नव में कोण?—छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बन्ध।

क्षायक छव में कोण, नव में कोण?—छव में पुद्गल, नव में च्यार—अजीव पुन्य, पाप, बन्ध।

क्षयोपशम छव में कोण, नव में कोण? छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बंध।

परिणामिक छव में कोण, नव में कोण?—छव में छव, नव में नव।

चौदमें बोलै उदय निपन्न छव में कोण, नव में कोण?—यावत परिणामिक निपन्न छव में नव में कोण—

उदय निपन्न छव में कोण, नव में कोण?—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव। उपशम निपन्न छव में कोण? नव में कोण?—छव में जीव, नव में जीव, संवर। क्षायक निपन्न, छव में कोण? नव में कोण—छवमें जीव, नव में ४ जीव, संवर, निर्जरा मोक्ष। क्षयोपशम निपन्न छव में कोण? नव में कोण—छव में जीव, नव में ३ जीव, संवर, निर्जरा।

परिणामिक निपञ्च छव म कोण ? नवमे कोण ?—
छव मे उत्र, नव मे नव ।

१५ पनरमे बोले आठ कर्म नों उदय, छव में, नव में कोण ? ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्म नों उदय तो छवमें पुद्गल, नव में तीन,—अजीव, पाप, बंध ।
वेदनी, नाम, गोत, आयु, ए च्यार कर्म नों उदय छव में पुद्गल, नव में च्यार, अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध ।

१६ सोलमे बोलै मोहनीय कर्म नों उपशम, छव में कोण ? नव में कोण ? छव मे पुद्गल, नव मे तीन, अजीव, पाप, बन्ध । बाकी सात कर्म नों उपशम होवै नहीं ।
ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय अन्तराय, ए च्यार कर्म नो क्षायक, छवमे कोण नवमे कोण ?—
छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बन्ध ।
वेदनी नाम गोत ए तीन कर्म नों क्षायक, छव म कोण ? नव में कोण ?—छव मे पुद्गल, नव म च्यार—अजीव पुन्य, पाप, बन्ध ।
आयुष को क्षायक छव मे कोण ?—नव में कोण ? छव मे पुद्गल, नव म तीन—अजीव, पुन्य, बन्ध ।

ज्ञानवरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय ए च्यार कर्म नो क्षयोपशम, छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन— अजीव, पाप, बन्ध। बाकी च्यार कर्म रो क्षयोपशम, होवे नहीं।

१७ सतरमें बोलै आठ कर्म ना निपन्न नीं विगत। छव कर्म नों उदय निपन्न, छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में जीव, नव में जीव।

मोहनीय, नाम, ए दोय कर्म नो उदय निपन्न, छव में जीव नव में जीव, आस्रव।

सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे, नहीं, एक मोहनीय कर्म नों उपशम निपन्न होवे, ते छव में जीव, नव में जीव, संवर।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म रो क्षायक निपन्न छव में जीव, नव में जीव निर्जरा। एक मोहनीय कर्म रो क्षायक निपन्न छव में जीव, नव में जीव, संवर निर्जरा। बाकी च्यार अघातिक कर्म को छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष। च्यार अघातिक कर्म रो तो क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं। ज्ञानावरणी दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म को क्षयो-

पशम निपन तो छव में जीव, नव में जीव, निर्जरा। मोहनीय कर्म को क्षयोपशम निपन छव में जीव, नव में जीव, सवर, निर्जरा।

१८ अठार में बोले आठ कर्म नों बन्ध आदिसत्ता किसे किसे गुण ठाणे—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, नाम, गोत ए पांच कर्म नों बन्ध पहिला गुण ठाणा से दशमा गुण ठाणा ताई।

मोहनीय कर्म नों बन्ध पहिला गुण ठाणा से नवमा गुण ठाणा ताई।

आयु कर्म नों बन्ध पहिला गुण ठाणासे सातमा ताई। तीजो गुण ठाणों खाली।

वेदनी कर्म नों बन्ध तेरमा गुण ठाणां ताई

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, ए तीन कर्म नो उदय अने उदय निपजनी सत्ता बारमा गुण ठाणा ताई।

वेदनी नाम, गोत्र, आयुष, ए च्यार कर्म नों उदय अने उदय निपजनी सत्ता चौदमा गुणठाणा ताई।

मोहनीय कर्म नों उदय निपन पहिला गुण ठाणा से दसमा गुणठाणां ताई। अने सत्ता इग्यारमा गुण ठाणां ताई।

१६ उगणीस में बोलै चौदे गुणठाणां को उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम निपन्न कहै छै, ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों उदय निपन्न तो पहिला से बारमां तांई।
दर्शन मोहनीय नों उदय निपन्न पहिला से सातमा तांई।
चारित्र मोहनीय नों उदय निपन्न पहिला से दशमा तांई।
वेदनी, नाम, गोत्र, आयुष ए च्यार कर्म नों उदय निपन्न पहिला से चौदमा तांई।
सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे नहीं, एक मोहनीय कर्म नों होय तिण में दर्शन मोहनीय नों उपशम निपन्न तो चौथा से इग्यारमा तांई। चारित्र मोहनीय को इग्यारमें गुण ठाणै ही। ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों क्षायक निपन्न तेरमें चौदमें गुण ठाणै तथा श्री सिद्ध भगवान में। दर्शन मोहनीय को क्षायक निपन्न चौथा गुण ठाणां से चौदमा तांई। अनें चारित्र मोहनी को बारमा से चौदमा तांई तथा श्री सिद्ध भगवान मांहि।
वेदनी, नाम, गोत्र आयु ए च्यार कर्म नों क्षायक

निपज गुण ठाणा में पावे नहीं, श्री सिद्ध भगवान में पावे।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों क्षयोपशम निपन्न तो पहिला से बारमा गुण ठाणा ताई।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से सातमा गुण ठाणा ताई।

चारित्र मोहनीय नों क्षयोपशम निपन्न पहिला से दशमा गुण ठाणा ताई।

च्यार अघाति कर्म नो क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं।

२० बीस में बोले आठ कर्मा में पुन्य कितना पाप कितना तथा पुन्य कितना से लागै पाप कितना से लागै?—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय अन्तराय ए च्यार कर्म तो एकान्त पाप छै।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनू ही छै।

मोहनीय कर्म से तो पाप लागै अने नाम कर्म से पुन्य लागे बाकी छव कर्म से पुन्य पाप दोनू नहीं लागै।

२१ इक्कीस में बोलै आस्रवना बीस भेद तथा संवर ना बीस भेद किसे किसे गुणठाणे कितना कितना पावै ?

आस्रव के २० बीस भेदों की विगत।

पहिले तथा तीजे गुणठाणे तो बीस पावै, दूजै चौथे पांचमें गुणठाणे १९ उगणीस पावै मित्थ्यात टल्यो। छठै गुणठाणे १८ अठारै पावै, मित्थ्यात्व तथा अव्रत आस्रव टल्यो। सातमा से दशमा गुणठाणां तांई ५ पांच आस्रव पावे कषाय, जोग, मन, बचन, काया, ए पांच जाणवा। इग्यारमें बारमें तेरमें च्यार पावे कषाय टली। चौदमें आस्रव पावे नहीं। हिवे संवर के बीस बोलां की विगत—पहिलासे चउथा गुणठाणां तांई तो संवर पावै नहीं, पांच में गुणठाणे एक समकिते संवर पावै, सम्पूर्ण व्रत ते संवर पावै नहीं। देश व्रत पावै ते देखव्यो नहीं।

छट्ठै गुणठाणै २ (दोय) पावै समकिते व्रतते, सातमा से दशमा गुणठाणां तांई १५ (पंद्रह) संवर पावै। अकषाय, अजोग, मन, बचन, काया, ए पांच टल्या।

इग्यारमें से तेरमें गुणठाणा ताई १६ सोळा सवर पावै, अजोग, मन, वचन, काया, ए च्यार टळया।

चौदह गुणठाणे २० बीसूही सवर पावे।

२२ बाईस में बोलै चौदा गुणठाणा किस्यो भाव किसी आत्मा ?

पहिलो दूजो तीजो गुणठाणों तो भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा दर्शन। चौथो गुणठाणो भाव च्यार—उदय, वरजीने, आत्मा दर्शन।

पांचमू गुणठाणो भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा देशचारित्र।

छट्ठा से दशमा गुणठाणा ताई भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा चारित्र। इग्यारमूं गुणठाणो भाव दोय—उपशम परिणामिक, आत्मा उपशम चारित्र।

बारमू गुणठाणो भाव दोय—क्षायक परिणामिक आत्मा क्षायक चारित्र।

तेरमू गुणठाणो भाव दोय—क्षायक परिणामिक आत्मा उपयोग।

चउदमों गुणठाणो भाव परिणामिक आत्मा अनेरी।

२३ तेवीसमें बोले धर्म अधर्म किस्यो भाव किसी आत्मा ?

धर्म भाव ४ (च्यार) उदय टाली, आत्मा तीन, दर्शन, चारित्र, जोग। अधर्म भाव दोय उदय परिणामिक, आत्मा ३ तीन, कषाय, जोग, दर्शन।

२४ चौवीसमें बोले दया हिन्सा किस्यो भाव किसी आत्मा।

दया भाव ४ (च्यार) उदय वरजी ने, आत्मा २ (दोय) चारित्र, जोग।

हिन्सा भाव २ (दोय) उदय परिणामी आत्मा जोग, छव में नवमें का बोल कहणा।

२५ पचीसमें बोले शुभ जोग अशुभ जोग किस्यो भाव, किसी आत्मा ?

शुभ जोग तो भाव च्यार—उपशम, वरजी ने, आत्मा जोग।

अशुभ जोग भाव दोय—उदय परिणामी, आत्मा जोग। छव में नव में का बोल कहणा।

२६ छवीसमें बोलै व्रत अव्रत किस्यो भाव किसी आत्मा ?

व्रत भाव ४ (च्यार) उदय, वरजी ने आत्मा,

चारित्र। अज्ञत भाव २ (दोय) उदय परिणामी आत्मा अनेरी।

२७ सत्तावीसमें बोलै पञ्च महाव्रत पञ्च सुमति तीन गुप्त किसो भाव किसी आत्मा?

पञ्च महाव्रत तीन गुप्त तो भाव ४ (च्यार) उदय वरजी, आत्मा, चारित्र।

पांच सुमति भाव तीन—क्षायक क्षयोपशम, परिणामिक, आत्मा जोग।

२८ अठावीसमें बोलै १० (बारै) व्रत किसो भाव किसी आत्मा?

भाव, क्षयोपशम परिणामी, आत्मा, देश चारित्र।

२९ उगणतीसमें बोलै समकित मिथ्यात्व किसो भाव किसी आत्मा? समकित भाव च्यार—उदय वरजी नै, आत्मा, दर्शन। मिथ्यात्व भाव उदय परिणामी, आत्मा दर्शन।

३० तीसमें बोलै ज्ञान अज्ञान किसो भाव किसी आत्मा?

ज्ञान भाव ३ (तीन) क्षायक क्षयोपशम परिणामी, आत्मा, उपयोग, ज्ञान। अज्ञान भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामिक आत्मा उपयोग।

३१ इकतीसमें बोलै द्रव्य जीव, भाव जीव, किसे भाव किसी आत्मा ?

द्रव्य जीव भाव एक परिणामिक, आत्मा द्रव्य भाव जीव भाव पांचों ही, आत्मा द्रव्य वरजी ने सात। छव में नव में का बोल कहणा।

३२ बत्तीसमें बोलै अठारे पाप ठाणा रो उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम छव में कोण नव में कोण ?

छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बन्ध।

३३ तेतीसमें बोलै अठारे पाप ठाणा रो उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम निपन्न छव में कोण नव में कोण ?

उदय निपन्न छव में जीव नव में जीव आस्रव।

उपशम निपन्न छव में जीव नव में जीव संवर।

सतरा (१७) को तो क्षायक निपन्न छव में जीव नव में जीव संवर, एक मिथ्या दर्शन शल्य को छव जीव नव में जीव संवर निर्जरा क्षयोपशम निपन्न छव में जीव नव में जीव संवर निर्जरा।

३४ चौतीसमें बोलै बारह व्रत को द्रव्य क्षेत्र काल भाव राखै तेहनी विगत।

पहिला व्रत से आठमा व्रत तांई तो द्रव्य थकी

आधार राखै ते द्रव्य उपरान्त त्याग, क्षेत्र थी सर्व लोकों में, काल थकी जाव जीव, भाव थकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुण थकी सवर निर्जरा। भव में व्रत द्रव्य क्षेत्र ऊपर परिमाणे काल थकी एक मुहूर्त्त भाव थी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुण थकी सवर निर्जरा। दशमू व्रत द्रव्य क्षेत्र भाव गुण तो ऊपर परिमाणे, काल थकी रात्रि जितनो काल। इग्यारमों व्रत को द्रव्य क्षेत्र भाव गुण तो ऊपर परिमाणे काल थकी अहोरात्रि परिमाण।

बारमू व्रत को द्रव्य थकी साधुजी नें कल्पै ते चौदह प्रकार नो द्रव्य, क्षेत्र थकी कल्पै ते क्षेत्रमें काल थकी कल्पै ते काल में, भाव थकी रागद्वेष रहित, गुण थकी सवर निर्जरा।

१५ पैंतीस में बोलै नव पदार्थ में निजगुण कितना परगुण कितना ?

निजगुण तो पाच। जीव, आस्रव, सवर निर्जरा, मोक्ष।

परगुण ४ (च्यार)। अजीव, पुन्य, पाप, बध।

१६ छत्तीसमें बोलै दर्शन मोहनीय कर्म को उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम कितना गुण ठाणा

पावै। दर्शन मोहनीय को उदय निपन्न पहिला गुणठांणा से सातमां तांई, चारित्र मोहनीय को उदय निपन्न पहिलासे दशमा तांई।

चारित्र मोहनीय को उपशम निपन्न एक इग्यारमें ही गुणठाणे॥

दर्शन मोहनीय को उपशम निपन्न चौथा से इग्यार में गुणठाणा तांई।

दर्शन मोहनीय को क्षायक निपन्न चौथा से चौदमें गुणठाणे तथा सिद्धां में।

चारित्र मोहनीय को क्षायक निपन्न बारमें तेरमें चौदमें गुणठाणे।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से सातमां गुणठाणे तांई।

चारित्र मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से दशमां गुणठाणां तांई।

३७ सेंतीसमें बोलै आठ आतमां में मूल गुण किननी उत्तर गुण कितनी—

मूल गुण एक चारित्र आत्मा, उत्तर गुण एक जोग आत्मा। बाकी दोनूं नहीं।

३८ अड़तीस में बोलै आठ आत्मा किसे भाव किसी आत्मा—आत्मा तो आप आपरी, द्रव्य आत्मा

तो भाव एक परिणामी, कषाय आत्मा भाव दोय उदय परिणामी, जोग आत्मा भाव च्यार उपशम बरजी ने उपयोग ज्ञान वीर्य ए तीन आत्मा भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामिक दर्शन आत्मा भाव पाचों ही।

चारित्र आतमा भाव च्यार उदय बरजी।

३६ गुण चालीस में बोलै आठ आत्मा छव में कोण नवमें कोण।

द्रव्य आत्मा छव में जीव नवमें जीव, कषाय आत्मा छव में जीव, नवमें जीव आस्रव। योग आत्मा छव में जीव नवमें जीव आस्रव निर्जरा। उपयोग, ज्ञान, वीर्य ये तीन आत्मा छव में जीव नव में जीव निर्जरा।

दर्शन आत्मा छव में जीव नव में जीव आस्रव संवर निर्जरा।

चारित्र, आत्मा, छव मे जीव नव में जीव सवर।

४० चालीस में बोलें आस्रव का (बीस) २० बोल किसे भाव किसी आत्मा?

भाव तो उदय परिणामिक बीसूं ही बोल। मिथ्यात्वी दर्शन आत्मा, अव्रत प्रमाद अमेरी आत्मा। कषाय कषाय आत्मा बाकी बोलै आस्रव योग आत्मा।

४१ एकचालीसमें बोलै संबर ना २० (बीस) बोल किसे भाव किसी आत्मा।

अकषाय संबर भाव तीन उपशम क्षायक परिणामिक, आत्मा अनेरी।

अजोग, मन बचन काया ए च्यार संबर भाव एक परिणामिक आत्मा अनेरी। सम्यक ते संबर भाव ४ (च्यार) उदय बरजी ने, आत्मा दर्शन। अप्रमादी संबर भाव च्यार उदय-बरजी आत्मा अनेरी। बाकी १३ (तेरा) संबर का बोल भाव ४ (च्यार) उदय बरजीनें आत्मा चारित्र।

४२ बयालीस में बोलै पंदरह जोग किसे भाव किसी आत्मा, जीव, अजीव तथा रूपी अरूपी की विगत।

भाव की विगत।

सत्यमन जोग सत्य भाषा व्यवहार मन व्यवहार भाषा, औदारिक ए पांच जोग भाव च्यार उपशम बरजीनें।

औदारिक को मिश्र, कार्मण ए दोय जोग भाव तीन उदय क्षायक परिणामिक।

असत्यमनजोग, मिश्र मन जोग, असत्य भाषा

मिश्र भाषा वैक्रियपनोमिश्र आहारिक न मिश्र ए छव जोग भाव दोय उदय परिणामिक, आहारिक वेके ए दोय जोग भाव ३ उदय क्षयो पशम परिणामी।

सावद्य निर्वद्य कितना।

असत्य मन योग असत्य भाषा मिश्र मन योग मिश्र भाषा, आहारिक न मिश्र, वैक्रिय मू मिश्र ए छव योग तो सावद्य छै बाकी नव योग सावद्य निर्वद्य दोनू छै।

पन्द्र योग जीव के अजीव द्रव्ये अजीव भावे जीव। पन्द्र योग रूपी के अरूपी द्रव्ये रूपी भावे अरूपी।

४१ तयालीस में बोल पाच इन्द्रिया की पूछा पाच इन्द्री जीव के अजीव ?

द्रव्ये अजीव भावे जीव। पाच इन्द्री रूपी के अरूपी ? द्रव्ये रूपी भावे अरूपी। पाच इन्द्रिया में कामी कितनी भोगी कितनी ? कामी तो दोय श्रुत इन्द्री, चक्षु इन्द्री अने भोगी बाकी तीन इन्द्रिया। पाच इन्द्रिया में क्षेत्री कितनी अक्षेत्र कितनी ? एक स्पर्श इन्द्री तो क्षेत्री बाकी च्यार इन्द्रिया अक्षेत्री

द्रव्य थी इन्द्री कितनी भाव थी कितनी ? द्रव्य थी तो आठ ते कहै छै दोय कान, दोय आंख, नाक, जीहा, स्पर्श। भाव थी पांच श्रुत चक्षु घ्राण रस स्पर्श एवं छव में कोण नव में कोण ? भाव इन्द्री छव में जीव नव में जीव निर्जरा, ते किणन्याय दर्शनावरणी कर्म क्षय उपशम थयां थी जीव इन्द्रिय पणो पाम्यो इणन्याय।

४४ चमालीस में बोलै जीव परिणामी रा १० बोल किसे भाव किसी आत्मा ?

गति परिणामी भाव दोय, उदय परिणामी, आत्मा अनेरी। कषाय परिणामी भाव दोय उदय परिणामिक, आत्मा, कषाय। वेद परिणामी भाव उदय परिणामी आत्मा कषाय तथा अनेरी। योग परिणामी लेश परिणामी भाव च्यार उपशम वरजी ने आत्मा योग। इन्द्रिय परिणामिक भाव दोय, क्षयोपशम परिणामी, आत्मा उपयोग। ज्ञान परिणामिक उपयोग परिणामिक भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामी आत्मा आप आपरी। दर्शन परिणामी भाव पांचों ही, आत्मा दर्शन। चारित्र परिणामी भाव च्यार उदय वरजी ने आत्मा, चारित्र।

४१ पैंतालीसमें बोलै जीव परिणामी रा १० (दस) बोल उव मे कोण नव में कोण ?

गति परिणामी उव मे जीव नव में जीव आस्रव वेद परिणामी कषाय परिणामी छव में जीव नवमें जीव आस्रव। योग लेश्या परिणामी उव में जीव नव मे जीव आस्रव निर्जरा। दर्शन परिणामी उव में जीव नव में जीव आस्रव सवर निर्जरा। इन्द्रिय उपयोग ज्ञान परिणामी उव में जीव नव मे जीव निर्जरा। चारित्र परिणामी छव में जीव नव मे जीव सवर।

४६ छयालीसमें बोले चौदह गुणठाणा वाला में शरीर कितना पावै ?

पहिला से पाच गुणठाणा ताई तो शरीर ४ च्यार पावै आहारिक टल्यो, छठे गुणठाणे शरीर पावै पाचों ही, सातमा गुणठाणा से चौदमा गुणठाणा ताई शरीर पावै ३ (तीन) औदारिक तेजस कार्मण। पाच शरीर चौ स्पर्शी के आठ स्पर्शी ? च्यार शरीर तो आठ स्पर्शी छै कार्मण चौ स्पर्शी छै। पाच शरीर जीव के अजीव ? अजीव छै।

४७ सैंतालीसमें बोले २४ (चौबीस) दण्डक में लेश्या कितनी पावै ?

सात नारकी १ तेउ २ वायु ३ बेइन्द्री ४ तेइन्द्री ५ चौइन्द्री ६ असन्नी मनुष्य ७ असन्नी तिर्यञ्च ८ यां में तो ३ माठी लेश्या पावै।

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय १ बनस्पतिकाय १ भवन पतिका १० वानव्यन्तर १ यां चौदह दण्डकां में लेश्या पावै ४ पद्म शुक्ल बरजी ने। जोतषी अने पहिला दूजा देवलोक का देवता में लेश्या पावै १ तेजू। तीजा से पांचमां तांई पद्म। छट्ठा देवलोक से सरवार्थ सिद्ध तांई पावै १ शुक्ल। सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यञ्च में लेश्या पावै छव। सर्व जुगलिया में ४ च्यार पद्म शुक्ल टली।

४८ अड़चालीसमें बोलै अजीव ना चौदह भेद ऊंचा नीचा तिरछा लोक में कितना? ऊंचो लोक अने अढ़ी द्वीप बारै १० पावै। धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति को खन्ध अने काल ए च्यार टल्या। नीचो लोक अढ़ाई द्वीप में ११ (इग्यारे) पावै काल और बध्यो। ऊंची दिशि में ११ (इग्यारे) पावै नीची दिशि में १० पावै।

४९ उणपचास में बोलै च्यार गति ४ पांच जाति ९, छव काय १५, चौदह भेद जीव का २९ चौबीस दण्डक एवं ५३ सूक्ष्म ५४ बादर ५५ त्रस

४६ स्थावर ४७ पर्याप्तो ४८ अपर्याप्तो ४६ ०पुद्
मठ बोल किसो भाव किसी आत्मा ? भाव उदय
परिणामी, आत्मा अनेरी, छव में कोण नव में
कोण ? छव में जीव नव में जीव। तथा सावद्य
निर्वद्य दोनू नहीं।

५० पचासमें बोलै २२ (बाईस) परीषह किसे किसे
कर्म के उदय तथा छव में नव में कोण ?
११ इग्यारे परीषह तो वेदनी कर्म ना उदय से।
२ दोय ज्ञानावरणी कर्म ना उदय से।
८ आठ मोहनीय कर्म ना उदय से।
१ अन्तराय कर्म का उदय से।

५१ इक्यावन में बोलै तेतीस पदवी किस्यो भाव
किसी आत्मा ?
१६ उगणीस पदवी तो भाव २ (दोय) उदय
परिणामिक, आत्मा अनेरी।
१ केवली महाराज की पदवी भाव दोय क्षाय
परिणामिक आत्मा उपयोग।
१ साधूजी महाराज की पदवी भाव ४ (च्यार
उदय वरजी आत्मा चारित्र।
१ श्रावक की पदवी भाव ३ (दोय) क्षयोपशम
परिणामी, आत्मा, देश चारित्र।

१ समदृष्टि की पदवी भाव ४ (च्यार) उदय
घरजी आत्मा, दर्शन।
उगणीस पद्वी तो छव में जीव नव में जीव
समदृष्टि की अने केवली की पद्वी छव में
जीव नव में जीव निर्जरा। साधू श्रावक की
पद्वी छव में जीव नव में जीव संवर।

५२ बावनमें बोलै नव तत्व का ११५ (एकसह पंदरह)
बोल की।
जीव कितना—जीव तो ७० सत्तर तेहनी विगत
जीव का १४, आस्रव का २०, संवर का २०,
निर्जरा का १२, मोक्ष का ४, एवं ७०।
अजीव ४५ तेहमें अजीव का १४, पुन्य का ६,
(नव) पाप का १८ (अठारा) बंध का ४ (च्यार)
एवं ४५।
सावद्य कितना निर्वद्य कितना?
निर्वद्य तो ३६, तिणमें निर्जरा का १२, संवर का
२०, मोक्ष का ४, ए ३६ छत्तीस।
सावद्य १६ तिणमें आस्रव का १६ (मन वचन
काया योग ए च्यार टल्या)।
दोनूं नहीं ५६ तिणमें ४५ अजीव का चौदह जीव
का ए सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं।

च्यार आस्रव मन वचन काया जोग ए आस्रव निर्वद्य दोनू छै।
आज्ञा मांही कितना—१६ ऊपर परमाणे।
आज्ञा बाहर कितना—१६ आस्रव का।
आज्ञा मांही बाहर कितना—४ (च्यार) मन वचन काया योग ए च्यार आस्रव का।
४६ बोल आज्ञा मांही बाहर दोनू नहीं।
रूपी कितना अरूपी कितना ?
अरूपी तो ८० (अस्सी) जिणमें ७० (सत्तर) तो जीव का १०, अजीव का (पुद्गल का च्यार टाल्यां) ६ (नव) पुन्य का, १८ (अठारा) पाप का, ४ (च्यार) बंध का ४ पुद्गलका। यह ३५ रूपी छै।
एकसत पदरह बोलां में छांडवा आदरवा जाणवा योग कितना ?
जाणवा योग तो ११५ एकसत पदरह, आदरवा योग ३६ (छत्तीस) निर्जरा काया सो अने छांडवा योग ७६ जिणमें अजीव का ४५, जीव का १४, आस्रव का २० एम ७६ थया।

॥ किसे भाव ॥

४५ अजीव का तो भाव एक परिणामिक १४

जीव का २० आस्रव का ए चौतीस बोल भाव दोय उदय परिणामिक।

संवर का २० (बीस) बोलां में से १५ पंदरह तो भाव च्यार उदय वरजी ने, अने अकषाय संवर भाव ३ (तीन) उपशम क्षायक परिणामिक, अयोग मन वचन काया ए च्यार भाव एक परिणामिक।

निर्जरा का १२ बोल भाव ३ तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामिक।

४ मोक्ष का यामें से ज्ञान तप ए दोय तो भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामी, अने दर्शन चारित्र ए दोय भाव च्यार उदय वरजी ने।

॥ इति सम्पूर्ण ॥

॥ अथ अल्पा बोहत ॥

१ सर्व थोड़ा गभज मनुष्य
२ तेथ्थी मनुष्यणी २७ गुणी ।
३ ,, बादर तेऊकाय का पर्याप्ता असंख्यात गुणा।
४ ,, पाच अनुत्तर का देवता असंख्यात गुणा।
५ ,, ऊपरला ग्रैवेयक का देवता सख्यात गुणा।
६ ,, बीचला ग्रैवेयक का देवता सख्यात गुणा।
७ ,, नीचला त्रिक का सख्यात गुणा।
८ ,, १२ मा देवलोक का सख्यात गुणा।
९ ,, ११ मा देवलोक का संख्यात गुणा।
१० ,, १० मा का सख्यात गुणा।
११ ,, ९ मा का सख्यात गुणा।
१२ ,, सातमी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा।
१३ ,, छट्ठी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा।
१४ ,, आठमा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा।
१५ ,, सातमा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा।
१६ ,, पाचमी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा।
१७ ,, छठा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा।

१८ तेहथी चौथी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

१९ ,, पांचवां देवलोक का देवता असंख्यात गुणा।

२० ,, तीजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

२१ ,, चौथा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।

२२ ,, तीजा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।

२३ ,, दूजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा।

२४ ,, छमूर्छम मनुष्य असंख्यात गुणा ।

२५ ,, दूजा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।

२६ ,, दूजा की देव्यां संख्यात गुणी ।

२७ ,, पहला देवलोक का देवता संख्यात गुणा ।

२८ ,, पहला की देव्यां संख्यात गुणी ।

२९ ,, भवनपति देवता असंख्यात गुणा ।

३० ,, भवनपति की देव्यां संख्यात गुणी ।

३१ ,, पहली नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

३२ ,, खेचर पुरुष असंख्यात गुणा ।

३३ ,, खेचरणी संख्यात गुणी ।

३४ ,, थलचर पुरुष संख्यात गुणा ।

३५ ,, थलचरणी संख्यात गुणी ।

३६ ,, जलचर पुरुष संख्यात गुणा ।

३७ ,, जलचरण संख्यात गुणी ।

३८ ,, वानव्यन्तर देवता संख्यात गुणा ।

३६ तेहथी वानव्यन्तर देवी सग्यात गुणी।
४० ,, जोतिषी देवता सख्यात गुणा।
४१ ,, जोतिषीणी देवी सख्यात गुणी।
४२ ,, खेचर नपुन्सक संख्यात गुणा।
४३ ,, थलचर नपुन्सक संख्यात गुणा।
४४ ,, जलचर नपुन्सक सख्यात गुणा।
४५ ,, चौइन्द्री का पर्याप्ता संख्यात गुणा।
४६ ,, पंचेन्द्री का पर्याप्ता विशेषाईया।
४७ ,, बेन्द्री पर्याप्ता विशेषाईया।
४८ ,, तेन्द्री पर्याप्ता विशेषाईया।
४६ ,, पचेन्द्री अपर्याप्ता असख्यात गुणा।
५० ,, चौइन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया।
५१ ,, तेन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया।
५२ ,, बेन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया।
५३ ,, बादर प्रत्येक वनस्पति पर्याप्ता असख्य गुणा।
५४ ,, बादर निगोद पर्याप्ता असख्यात गुणा।
५५ ,, बादर पृथ्वी का पर्याप्ता असख्यात गुणा
५६ ,, बादर अप्काय पर्याप्ता असख्यात गुणा
५७ ,, बादर वायुकाय पर्याप्ता असख्यात गुणा।
५८ ,, बादर तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा

५९ तेहथी बादर प्रत्येक शरीरी वनस्पति अपर्यासा
असंख्यात गुणा ।

६० „ बादर निगोद अपर्यासा असंख्यात गुणा ।

६१ „ बादर पृथ्वीकाय अपर्यासा असंख्यात गुणा ।

६२ „ बादर अप्पकाय अपर्यासा असंख्यात गुणा ।

६३ „ बादर वायुकाय अपर्यासा असंख्यात गुणा ।

६४ „ सूक्ष्म तेऊकाय अपर्यासा असंख्यात गुणा ।

६५ „ सूक्ष्म पृथ्वी अपर्यासा विशेषाईया ।

६६ „ सूक्ष्म अप्प अपर्यासा विशेषाईया ।

६७ „ सूक्ष्म वायु अपर्यासा विशेषाईया ।

६८ „ सूक्ष्म तेऊ पर्यासा संख्यात गुणा ।

६९ „ सूक्ष्म पृथ्वी पर्यासा विशेषाई ।

७० „ सूक्ष्म अप्प पर्यासा विशेषाईया ।

७१ „ सूक्ष्म वायु पर्याप्ता विशेषाईया ।

७२ „ सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

७३ „ सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता संख्यात गुणा ।

७४ „ अभव्य जीव अनन्त गुणा ।

७५ „ पड़वाई समदृष्टि अनन्त गुणा ।

७६ „ सिद्ध भगवन्त अनन्त गुणा ।

७७ „ बादर वनस्पति पर्याप्ता अनन्त गुणा ।

७८ „ बादर पर्याप्ता विशेषाईया ।

७६ तेहथी बादर वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा।
८० „ बादर अपर्याप्ता विशेषाईया।
८१ „ सर्व बादर विशेषाईया।
८२ „ सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा।
८३ „ सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाईया।
८४ „ सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्ता संख्यात गुणा।
८५ „ सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाईया।
८६ „ सर्व सूक्ष्म विशेषाईया।
८७ „ भव्य जीव विशेषाईया।
८८ „ निगोदिया विशेषाईया।
८९ „ वनस्पति विशेषाईया।
९० „ एकेन्द्री विशेषाईया।
९१ „ तिर्यंच विशेषाईया।
९२ „ मिथ्यात्वी विशेषाईया।
९३ „ अव्रती विशेषाईया।
९४ „ सकषाई विशेषाईया।
९५ „ छद्मस्थ विशेषाईया।
९६ „ संयोगी विशेषाईया।
९७ „ संसारी जीव विशेषाईया।
९८ „ सर्व जीव विशेषाईया।

॥ अथ श्रावक प्रतिक्रमण ॥

अर्थ सहित ।

णमो अरिहंताणं	णमो सिद्धाणं	णमो
नमस्कार थावो अरिहन्त भगवन्त में	नमस्कार थावो श्रीसिद्ध भगवान में	नमस्कार थावो
आयरियाणं	णमो उवज्झायाणं	णमो लोए
श्रीआचारज महाराज ने	नमस्कार थावो श्री उपाध्याय महाराज ने	नमस्कार थावो लोक के विषे
सव्व साहूणं ।		
सर्व साधु मुनिराजों में		

॥ अथ तिक्खुत्ता को पाटो ॥

अर्थ सहित

तिक्खुत्तो	आयाहिणं	पयाहिणं	वंदामि	नमं
तीन वार	दाहिणापासायी	प्रदक्षिणा देई	वंदना करूं	नमस्कार
सामी	सक्कारेमि	सम्माणेमि	कल्लाणं	मंगलं
करूं	सत्कार करूं	सम्मान करूं	कल्याणकारी	मङ्गलकारी
देवयं	चेइयं	पज्जुवासामी	मत्थएण	वंदामि
धर्म देव	चित्त प्रसन्नकारी ज्ञानवंत	सेवना करूं	मस्तकेकरी	वंदना नमस्कार करूं

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सुत्तरी करणेणं पायच्छित करणेणं
तेहना उत्तर प्रधान करवा प्रायश्चित्त करवो
विसोही करणेणं विसल्ली करणेणं
विशुद्धि करवो सल्य रहित करवो
पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए
पाप कर्म का नाश करवा निमित्त
ठामि करेमि काउस्सग्गं अनत्थ
स्थिर हुई करूं छूं काय उत्सर्ग इण मुजब आधार
ध्यान
ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
ऊंचा श्वास नीचा श्वास खांसी छींक
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए
उबासी डकार अधोवायु भँवल
पित्त मुच्छाए सुहुमेहिं अङ्ग संचालेहिं
पित्तकर मूर्च्छा सूक्ष्मपणे शरीर को हालवो
सुहुमेहिं खेल संचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
सूक्ष्मपणे श्लेष्मको संचार सूक्ष्म दृष्टि चलावो
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहीउ
इत्यादिक एह म्हारे आगार से ध्यान भागे नहीं विराधना नहीं
हुज्ज मे काउसग्गो जाव अरिहं
होज्यो मने काउसग्ग ते ध्यान जिहां तक अरि

ताण भगवन्ताण नमुक्कारेण नपारेमि
हन्त भगवन्त को नमस्कार करी ने नहीं पार
ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण
तहां तांई शरीर से स्थान से मौन करी ध्यान करी
अप्पाण वोसरामि ॥ इति ॥
आत्मा ने पापथकी वोसराऊ

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरेजिणे
लोक के विषे उद्योतकारी धर्म तीर्थ करता जिन
अरिहन्ते कित्तइस्स चउवीसंपि केवली ॥१॥
अरिहन्तों को कीरति करू चौवीस ही केवली
उसभ मजीय च वंदे संभवमभिनन्दण च
ऋषभ अजित पुन वंदू संभवनाथ अभिनन्दनजी पुन
सुमइ च पउमप्पह सुपास जिण च चन्दप्पह
सुमति पुन पद्म प्रभ सुपार्श्व जिन पुन चंदा प्रभ
वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदन्त सीयल सिज्जंस
वंदू सुविधनाथ पुन दूसरे नाम शीतल श्रीयांश
पुष्पदंत
वासुपुज्ज च विमल मणन्त च जिण धम्म
वासुपूज्य पुन विमलनाथ अनन्तनाथ पुन जिन धर्मनाथ

शंतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथु अरं च मल्लिं
शान्ति पुनः वंदू कुंथु अर पुनः मल्लिनाथ
नाथ नाथ

वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि
वंदू मुनिसुव्रत नमि जिन पुनः वंदू

रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं
अरिष्टनेमि पार्श्वनाथ तथारूप वर्द्धमान वंदू पुनः यह

मये अभिथुया विहूयरयमला पहीण जर
मैं स्तुति करी दूर किया कर्मरूप क्षीण भया जन्म
रज मैल

मरणा चउविसंपि जिणवरा तित्थयरा मे
मरण जिन्होंका ये चोवीस जिनराज तिर्थंकर म्हारे ऊपर

पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिए महिया जे ये
प्रसन्न थावो कीर्ति करी वंदू मोटा मते ते ये
पूज्या छ्याप

लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं
लोक के विषै उत्तम सिद्ध छै रोग रहित समकित
बोध लाभ

समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मल
समाधि प्रधान उत्तम देवो चन्द्रमां थी निर्मल

यरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागर वर
कारी सूर्य थी अधिक प्रकाशकारी समुद्र समान

गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥
गंभीर वलघा सिद्ध सिद्धि मने देवो

अप्पडिहय वरनाणं दंसण धराणं विअट्टछउ
अप्रतिहत प्रधान ज्ञान दर्शन धारक निवर्त्यो

माणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं
छद्मस्थपणो पोते जीत्या अने दूजाने जीतावे पोते तिस्या दूसरने तारे

बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं
पोते प्रति दूजा ने प्रति कर्म थी दूजा ने सर्वज्ञ
बोध पाम्या बोधे मुकाव्या मुकावे

सव्वदरिसीणं सिवमयल मरुअ मणंत
सर्वदरशी कल्याणकारी अचल अरुज अनन्त

मक्खय मव्वाबाह मप्पुणरावित्ति सिद्धिगइ
अक्षय अव्याव्याधि फेरू आवे नहीं इसी सिद्धगति

नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं। इति॥
नामवाला स्थान प्राप्त हुवा जिनेश्वरा ने नमस्कार थावो

॥ प्रतिक्रमण ॥

आवस्सही इच्छामिणं भंते तुम्भेहिं अब्भणु
अवश्य इच्छूं छूं मैं हे भगवन्त तुम्हारी आज्ञा से

नायेसमाणे देवसी पडिक्कमणुं ठाएमि देवसी
दिवस प्रतिक्रमण ठाऊं करूं मैं दिवस
सम्बन्धी सम्बन्धी

ज्ञान दर्शण चारित्र तप अतिचार चिंतवनार्थं
ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिन्तवना के अर्थ

करेमि काउस्सग्गं ॥१॥
करूं छूं मैं काउसग्ग ते ध्यान

॥ इच्छामि ठामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अ
इच्छूं हूं करूं कायुत्सर्ग ज्यो मैं दिन में की
यारो कओ काईओ वाईओ माणसिओ उस्सुत्तो
पाप कार्यो शरीर से वचन से मन से सूत्र वि
उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्वि
रुद्ध मार्ग अकल्पनीय नहीं करणा जोग दुर ध्यान खोटा
चिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो
चिन्तवना अणाचार नहीं इच्छा जोग
असमणपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते
श्रावक के नहीं करना ज्ञान दर्शन देशव्रत
जोग पाप है व्रत भंगादि
सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं
श्रुत सामायक तीन गुप्ति च्यार कषाय
पंचण्हं मणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं
पाँच अणुव्रत तीन गुणव्रत च्यार
सिक्खावयाणं बारस विहस्स सावग धम्मस्स
शिक्षा व्रत बारे विध श्रावक धर्म का
जं खंडिअं जं विराहिअं तस्समिच्छामि
ज्यो खण्डना करा ज्यो विराधना करा तिसको मिथ्याकरि
दुक्कडं ॥ ५ ॥
दुकृत

॥ अथ क्षमावंत श्रमणोको वंदना ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

इच्छूं छूं हे क्षमावन्त साधू वदवा सचित्तादि छांड़ निपाप
आपने शरीर पणे हुई निर्जराअथ

निसीहिआए अणु जाणह मे मिउग्गहं निस्सीहि

शरीर करी आज्ञा देवो मुझे मर्यादा अशुभ जोग
मांही निवर्तवो

अहो कायं। कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो

चर्ण स्पर्शवाकी म्हारी कायासे खमज्यो हे भगवान् किलामना
आज्ञा देवो तुमारा चर्ण फरसतां

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसोवईक्कंतो

थोड़ी किलामना बहुत समाधि भावकर दिवस बीत्यो
हुई हुवे तो। तुमारो

जत्ता मे जवणिज्जंचभे। खामेमि खमासमणो

संयम रूप यात्रा इन्द्री नो इन्द्री आपकूं खमाऊं हे क्षमावंत
की विषय उपशमावी ते जपणी छूं साधू

देवसिअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि।

दिवस सम्बन्धी व्यतिक्रम अवश्य करणी नां पड़िकमूं छूं।
अतिचार थकी

खमासमणाणं देवसिआए आसायणाये

हे क्षमावन्त श्रमण दिवस सम्बन्धी असातना

तित्तीसन्नयराए जं किंचिमिच्छाए मणदुक्कडाए

तेतीस मांहेली ज्यो कोई किञ्चित् मिथ्या मनसे दुकृत
क्रिया करी किया

वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए
वचन से दुकृत काया से दुकृत किया, क्रोध थी मान थी
मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए
माया कपट लोभ करी सब काल में सर्व मिथ्या उपचार किए
सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ
सब धर्म किया का उल्लंघन पहुँची ज्यो मैं दिवस में
किया असातना किए
अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि
अतिचार किया तिससे हे क्षमा श्रमण निवर्तूँ हूँ
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥इति॥
निन्दूँ हूँ गर्हूँ हूँ आत्मा थी वोसराऊँ हूँ।

॥ ज्ञानातिचार आलोवा की पाटी ॥

आगमे तिविहे पन्नते तंजहा सुत्तागमे
आगम तीन प्रकारे परूप्या है कहे छै सूत्र आगम
अत्थागमे तदुभयागमे ॥ एहवा श्री ज्ञान के
अर्थ आगम सूत्र अर्थ दोनूं आगम
विषै अतिचार दोष लाग्या होय ते आलोऊं—
जवाइद्ध १वच्चामेलिय २हिनक्खर ३अच्चक्खर ४ पयहीण ५
जे कोई वचन मिलाया हीन अक्षर अधिक पदहीन ५
अधिक १ दोष २ कह्या ३ अक्षर ४
विणयहीण ६ जोगहीण ७ घोसहीण ८ सुट्ठुदिन्न
विनय हीण ते संयोग हाण ७ उच्चारण थोड़ा सूत्र ते दीधो
अविनय ६ हीण ८ अकर्मीत में ९

दुद्दुपडिच्छियं १० अकालेकऊ सिज्झाए ११ काले ण
छोटा सूत्र की इच्छा करी १० विनाकाले सिझाय करी ११ सिझायना

कऊ सिज्झाऊ १२ असिज्झाये सिज्झाए १३ सिज्झाए
कालमें सिझाय न करी १२ असिज्झाय में सिज्झाय करी १३ सिज्झाय में सिज्झाय न करी १४

न सिज्झाय १४ भणतां गुणतां चितारतां
थोखतां ज्ञानकी ज्ञानवन्त की आसातना करी होय
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ सम्यक्त्व के अतिचार ॥

दंसण श्रीसमकित अर्हंतो महदेवो जावज्जीवं
सुध सरधना ते समकित दर्शन ते अरिहन्त मांहरे देव जाव जीव लग

सुसाहुणो गुरुणो जिणपन्नतं तत्तं इयसम्मत्तं
शुद्ध साधू गुरू जिन प्ररूप्यो ते धर्म तत्व यह समकित

मए गहियं
मैं ग्रहण कियो।

एहवा समकित ने विषै जे कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोऊं, जिन वचन सांचा न सरध्या होय १, न प्रतीत्या होय २, न रुच्या होय ३. पर पाखण्डी की प्रशंसा करी होय ४, संस्तवो (परिचय) कीधो होय ५, समकित रूपी रत्न ऊपरे मित्थ्यात्व रूप रज मेल खेह लागी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ अथ बारह व्रत ॥

पडमे अणुव्वए थूलाउ पाणाइवायाउ
प्रथम देशथी व्रत मोट को प्राणातिपात थी

वेरमण व्रत पांच बोले करी ओलखीजे, द्रव्यथकी
निवर्त्तवो।

त्रस जीव बेइन्द्री तेइन्द्री चउरिन्द्री पचेन्द्री बिन
अपराधे आकुटी हणवानी विधि करी ने सउपयोग हणूं
नहीं हणाऊ नहीं मनसा वायसा कायसा। द्रव्य थकी
एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्र मांहि काल थकी जाव
जीवलग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित
गुण थकी संवर निर्जरा एहवा प्रकार पहला व्रत ने विषै
जे कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊ।

त्रस जीव ने गाढे बंधन बांध्या होय १ गाढा घाव
घाल्या होय २ चामड़ी छेदन किया होय ३ अति भार
घाल्यो होय ४ भात पाणीमा विछोहा कीना होय ५।
तस्स मिच्छामि दुक्कड़।

बीए अणुव्वए थूलाउ मुसावायाउ विरमण
बीजो अणुव्रत स्थूल थी कूड बोलवा निवर्तवा

पांच बोले करी ओलखीजे द्रव्य थकी कनालिक १
कन्या के वास्ते झूठ

गोवालिक २	भौमालिक ४	थापण मोसो ४
गाय भैंसादि कारण झूंठ	भूमि निमित्त झूंठ	लेकर नटचो ते अमानत मे खयानत

कूडीसाख ५
झूंठी साक्षी

इत्यादि मोटको झूंठ मर्यादा उपरान्त बोलूं नहीं बोलाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्य थकी एहिज द्रव्य खेत्र थकी सर्व खेत्रां में, काल थकी जाव जीव लगे, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे दूजा व्रत विषै अति-चार दोष लागा होय ते आलोऊं।

किणी प्रते कूड़ो आल दियो होय २

रहस्य छानी बात प्रकट करी होय २

स्त्री पुरुष ना मरम प्रकाश कीधा होय ३

मृषा उपदेश दीधो होय ४

कूड़ो लेख लिख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं तइये अणुव्वए थूलाउ अदिन्ना दाणाउ विरमणं पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्य थकी खेत्र खणी। गांठ खोली तालो पड़कुञ्जी करी बाट पाड़ी पड़ी वस्तु मोटकी सधणियां सहित जाणी, इत्यादि मोटकी चोरी मर्यादा उपरान्त करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा

कायसा, द्रव्य थकी पटिज द्रव्य, क्षेत्र थकी सर्व क्षेत्र में, काल थकी जाव जीव लगे, भाव थकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुण थकी सबर निर्जरा पाप म्हारै तीजा व्रत में ज्यो कोई अतिचार लागो होय तो आलोऊं।

चोर की चुराई वस्तु लीधी होय १ चोर ने सहाय दीधो होय २ राज विरुद्ध व्योपार कीधो होय ३ कूड़ा तोला कूड़ा मापा कीधा होय ४ वस्तु में भेल संभेल कीधो होय ५ सच्चरी दिखाय नच्चरी आपी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति ॥

चउत्थे अणुव्वए थूलाउ मेहुणाओ विरमणं
चौथो मथुन स्थूलथका मैथुनथकी निवर्तं

पाच मोला करी ओलखीजे द्रव्य थकी तो देवता देवागना सम्बन्धिया मैथुन सेऊ नहीं सेवाऊं नहीं तिर्यंच तिर्यंचणी सम्बन्धी मैथुन सेऊ नहीं सेवाऊं नहीं, मनुष्य सम्बन्धी मैथुन सेऊ नहीं सेवाऊं नहीं, मनुष्यणी सम्बन्धी मैथुन सेवा की मर्यादा कीधी है तिण उपरान्त सेऊ नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्य थकी पडिज द्रव्य, क्षेत्र थकी सर्व क्षेत्रा में, काल थकी जावज्जीव, भाव थकी राग द्वेष रहित

उपयोग सहित, गुण थकी संबर निर्जरा, एहवा म्हारे चौथा व्रत में ज्यो अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं।

थोड़ा कालकी राखी परिग्रही सूं गमन कीधो होय १ अपरिगृहीता सूं गमन कीधो होय २ अनेक क्रीड़ा कीधी होय ३ पराया नाता विवाह जोड्या होय ४ काम भोग तीव्र अभिलाषा से सेया होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति ॥

पंचमें अणुव्वए थूलाउ परिग्गहाउ विरमणं
पंचमूं अणुव्रत स्थूलयको परिग्रहते धनको निवर्त्तवो

पांचां बोलां करी ओलखीजे द्रव्यथकी खेत्तु
उघाड़ी जमीन

वत्थु यथा प्रमाण, हिरण सुवन्न यथा प्रमाण
ढको जमीन जेह प्रमाण कोधो, चांदी सोनाका जे प्रमाण कीधो

धन धान यथा प्रमाण द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण।
द्रव्य नाज जेह प्रमाण कीधो दासदासी हाथी घोड़ादिक चौपद जे प्रमाण कीधो।

कुम्भो धातु यथा प्रमाण,
तांबो पीतल लोहादिनो जेह प्रमाण कीधो,

द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, क्षेत्र थकी सर्व क्षेत्रों में, काल थकी जावज्जीव लगे, भाव थकी राग द्वेष रहित

उपयोग सहित, गुण थकी सवर निर्जरा एहवा म्हारा पांचवा अणु व्रत में ज्यो अतिचार लागा होय ते आलोऊ, खेतु वत्थुरो प्रमाण अतिक्रम्यु होय १, हिरण्य सुवर्ण रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय २, धन धान्य रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ३, द्विपद चउपद रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ४, कुम्भी धातु रो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ५, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति ॥

छट्ठो दिशि व्रत पाचा बोल ओलखिजे द्रव्य थकी तो ऊंची दिशारो यथा प्रमाण, नीची दिशा रो यथा प्रमाण तिरछी दिशा रो यथा प्रमाण, या दिशा रो प्रमाण कीधो तेह उपरान्त जाय कर पंच आस्रव द्वार सेऊ नहीं सेवाऊ नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी तो पहिज द्रव्य, क्षेत्र थी सर्व लैत्रा में, काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी सवर निर्जरा एहवा म्हारे छट्ठा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे तो आलोऊं।

ऊंची दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय १
नीची दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय २
तिरछी दिशा रो प्रमाण अतिक्रम्यो होय ३
एक दिशा घटाई होय एक दिशा बधाई होय ४

पंथ में सन्देह सहित अधिक चाल्यो चलायो होय ५
तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं

॥ इति ॥

सातमूं उपभोग परिभोग व्रत पांचां बोलां ओलखिजे, द्रव्य थकी छब्बीस बोलांकी मर्याद ते कहै छै

उलणिया विहं १	दंतण विहं २	फल विहं ३
अङ्ग पूछणादि विधि	दाँतण विधि	फल विधि
अभिंगण विहं ४	उवट्टण विहं ५	मंजण विहं ६
तेलभिंगादि विधि ते तेल मालिस	उवटणादि की विधि	स्नान की विधि
वत्थ विहं ७	विलेवण विहं ८	पुप्फ विहं ९
वस्त्र विधि	विलेपण विधि	पुष्प विधि
आभरण विहं १०	धूप विहं ११	पेज विहं १२
पहरवाका गहणाँ विधि	धूप की विधि	दूध आदि पीवा की विधि
भक्खण विहं १३	उदन विहं १४	सूप विहं १५
सूखड़ी आदि भक्षण की विधि	चावल की विधि	दाल की विधि
विगय विहं १६	साग विहं १७	महुर विहं १८
विगय की विधि	साग की विधि	मधुर की विधि
जीमण विहं १९	पाणी विहं २०	मुखवास विहं २१
जीमण की विधि	पाणी की विधि	मुखवास तांबूलादि की विधि

बाहण विह २२ सयण विह २३ पत्री विह २४
गाडी प्रमुख की बैठण सोवा की विधि पगरखी का
विधि पाट्या कुरसा बिछौनादि पर विधि
सचित्त विह २५ द्रव्य विह २६
सचित की विधि द्रव्य को विधि

ए छावीस बोला की मर्याद करी, जिण उपरान्त भोगऊ नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी लदिब द्रव्य क्षेत्र थकी सर्व लोक में काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुण थकी संवर निर्जरा एहवा सातमा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं॥ पच्चख्खाणा उपरान्त सचित्त रो आहार कीनो होय ॥१॥ पच्चख्खाणा उपरान्त द्रव्य रो आहार कीनो होय ॥२॥ पच्चख्खाणा उपरान्त गहिणा अधिक पहन्या होय ॥३॥ पच्चख्खाणा उपरान्त कपड़ा अधिक पहन्या होय ॥४॥ पच्चख्खाणा उपरान्त उपभोग परिभोग अधिक भोग्या होय। तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

पन्दरह करमा दान जाणवा जोग छै पण आदरवा जोग नहीं ते कहै छै।

इंगालकम्मे १ वणकम्मे २ साडी कम्मे ३
अग्निकारी कुंभा— वन कम है कर्मों घास सकट कम है
रादि कम हरतनादि कमको गाडी प्रमुखनो कर्म

भाड़ी कम्मे ४ — भाड़े ते किराया देवाका कर्म
फोड़ी कम्मे ५ — लूपादि कर्म ते नारेल सुपारी पत्थर आदि फोड़वो
दंतवाणिज्जे ६ — दांतको विणज ते व्योपार

लक्खवाणिज्जे ७ — लाखको वाणिज्य
रस वाणिज्जे ८ — रस व्यापार ते घी, तेल सहतादि
केस वाणिज्जे ६ — वाल चमरादि व्योपार

विषवाणिज्जे १० — जहरको व्यापार
जन्तु पिलण्या कम्मे ११ — कल घाणी प्रमुख कर्म

निलच्छणिया कम्मे १२ — कसी वधियादि कर्म ज्यानवरोंने वाधी कर्म
दवगिदावणियां कम्मे १३ — दावानलदेवो कर्म ते धन प्रमुखमें लायलगायवो

सर द्रह तालाव सोसणियां कम्मे १४ — सरोवर द्रह तालाव आदिने सोषावो ते कर्म
असई पोषणिया कम्मे १५ इति ॥ — असती ते असंजती जननें पोषवा नों कर्म

ए पंदरह कर्मादान आगार उपरान्त सेया सेवाया होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ॥ इति ॥

आठमूं अनर्थ दंड विरमण व्रत पांच वोलां ओलखिजे,

द्रव्य थको अवज्झाणचरियं १ — भूंडा ध्याननो आचरवो
पम्मायचरियं २ — प्रमाद करवो
हंसपयाणं ३ — प्राण हिंसा
पाव कम्मोवएसं ४ — पाप कर्म को उपदेश

ए च्यार प्रकारे अनरथ दंड आठ प्रकार का आगार उपरान्त सेऊ नहीं ते कहे छै।

आणहिउया १	नागहिउया २	आगारिहिउया ३
आपणे हित	न्यातीला के हित	घर के हित
परिवारे हिउया ४	मित्तहिउया ५	नागहिउया
परिवार के हित	मित्र के हित	नाग देवता नि
भूत हिउया ७	जक्ख हिउया ८	
भूत देवता निमित्त	जक्ष देवता निमित्त	

द्रव्य थकी एहिज द्रव्य, क्षेत्र थकी सर्व क्षेत्र काल थकी जाव जीव लग, भाव थकी राग द्वेष रहि उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म आठमा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हो ते आलोऊ।

कन्दर्पमी कथा कीधी होय १ मद कुचेष्टा कीधी होय
काम क्रीडाकी कथा को करजो भाडनापरे कुचेष्टा करि होय

मुखसे अरि वचन बोलया होय ३ अधिकर
मुखसे जोडा वचन बोल्या होय नाता जोड

जोडा मुकाया होय ४ उपभोग परिभो
छुडाया तथा का मरतार को विरह कियो एक बार भोग में आवै है बार बार में आवै

अधिका भोग्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं
मर्यादा उपरान्त अधिक भोग्या होय ते तो मिच्छामि दुक्कडं

॥ इति ॥

नवमो सामायक व्रत पांचां षोला ओलखिजे

करेमि भन्ते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि
करूं छूं मैं हे भगवन्त सामायक सावद्य जोग पच्चखाण

जाव नियमं (मुहूर्त्त एक) पज्जुवासामि दुविहेणं
यावत नियम एक मुहूर्त्त ते दोय घड़ी सेऊं छूं दोय करणं से

तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा-
तीन योगसे. सावद्य नही करूं नही कराऊं मनसे वचन से

कायसा तस्सभंते पड़िक्कमामि निन्दामि गरिहामि
शरीर से तिणसूं हे भगवान पडिकमूं छूं निन्दू छूं गर्हणा ते निषेधूं छूं

अप्पाणं वोसरामि ॥
पाप से आत्मां ने वोसराऊं छूं

द्रव्य थकी सामायक द्रव्य, खेत्र थकी सर्व खेत्रां में काल थकी एक मुहूर्त्त तांई. भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा नवमा व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं ।

॥ इति ॥

मन वचन कायका माठा जोग प्रवर्ताया होय १ पाड़वा ध्यान प्रवर्ताया होय २ सामायक में समता नहीं करी हुवे ३ अण पूगी पारी होय ४ पारवो विसारयो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ ॥

दशमो देशावगासो व्रत पाचा बोला ओलखिने द्रव्य थकी दिन प्रते प्रभात थी प्रारम्भीमें पूर्वादि छव दिसिरी मर्याद करी तिण उपरान्त आई पाच आश्रव द्वार सेऊ नहीं सेवाऊ नहीं तथा जेतली भूमिका आगार राख्या तिण में द्रव्यादिक री मर्याद करी जिस उपरान्त सेऊ नहीं सेवाऊ नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी छजिज द्रव्य, क्षेत्र थी सर्व क्षेत्र में, काल थकी जेतलो काल राख्यो, भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी सवर निर्जरा, एहवा म्हारे दशमा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागो ते आलोऊ।

नहीं भूमिका बारली वस्तु मगाई होवे १ मुकलाई होवे २ शब्द करी आपो जणायो होय ३ रूप करी आपो जणायो होय ४ पुद्गल न्हाखी आपो जणायो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़। इति

इग्यारम् पौषध व्रत पाचा बोला करि ओलखिजे द्रव्य थकी।

असाण पाण खादिम स्वादिम ना पच्चक्खाण
आहार पाणी मेवादिक पान सुपारीदिक को पचखाण
अबम्भना पच्चक्खाण उमकमणी सुवन्नना पच्चक्खाण
मैथुन सेवाका त्याग योसराया हुआ रत्न सोना का त्याग
माला वणग विलेवन ना पच्चक्खाण
पुष्पमाला गुलाल रंगादि चन्दनादिनो विलेपन का त्याग
सस्थमुसलादि सावज्भ जोगरा पच्चक्खाण
शस्त्र मुसलादि सांवद्य जोगका पचखाण

इत्यादि पच्चक्खाण करी ने कने द्रव्य राख्या जिणां उपरान्त पंच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्य थी एहिज द्रव्य, खेत्र थी सर्व खेत्रां में, काल थकी (दिवस) अहो रात्रि प्रमाण, भाव थकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे इग्यारमा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं।

सेज्जा संथारो अपड़िलेह्यो होय दुप्पडिलेह्या
सोवाकी जगां विस्तर पड़िलेहा नहीं होय आछीतरह नहीं
होय १ अप्रमाज्यों होय दुप्रमाज्यों होय २
पड़लेहना करी नही प्रमाज्यों आछीतरह नहीं प्रमाज्यों
उच्चारपापवण भूमिका अपडिलेही होय दुपडि
छोटी वड़ी नितकी जमीव पडिलेही न होय अथवा
लेही होय ३ अप्रमार्जी होय दुप्रमार्जी होय ४

आछी लगे नहीं पूंज्या नहीं तथा रीत प्रमाणे नहीं पूज्या होय
पडिलेहया होय

पोषह में निन्दा विकथा कषाय प्रमाद करी होय ४ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ ।

॥ इति ॥

बारमूं अतिथि सविभाग व्रत पार्वा बोल ओळखिजे द्रव्य थकी ।

समणे निगंथे फासु एषणीज्जेण असण १
श्रमण निग्रंथ ने प्रासुक निर्दोष आहार
अचित

पाण २ खाइमं ३ साइम ४ वत्थ ५ पडिगाह ६
पाणी मेवो लोंग सुपारी आदि वस्त्र पात्रो

कंबल ७ पाय पुच्छण ८ पाडियारा ९ पीढ़
कांबलो पगपूछणों आवीने पाछा देवा
ओलावे ते अमानत

फलग १० सेज्या ११ संथारो १२ ओषध १३
बाजोटादि जमीन जगह तृणादिक १ द्रव्यं

भेषद १४ पडिलाभमाणे विहरामि ॥
चूर्णादि प्रतिलाभतो थको विचरूं

इत्यादिक चौदह प्रकारनूं दान शुद्ध साधुनें देऊं वेषधारक देवता प्रते नहीं जाणू मनसा वायसा कायसा, द्रव्य थकी एहिज कल्पनो द्रव्य, क्षेत्र थकी कल्पै जिण क्षेत्रा में, काल थकी कल्पै जिण काल में, भाव थकी रागं

द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारा बारमां व्रत के विषै जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं सूजती वस्तु सचित्त पर मेली होय १ सचित्त थी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्तु पारकी पारकी वस्तु आपणी कीधी होय ४ भाणैं बैठ साधू साध्वियां की भावनां नहीं भाई होय तेहनूं मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

॥ अथ संलेखणा की पाटी ॥

इह लोगा संसह प्पउगो १ — यह लोककी अशकी तथा द्रव्यादि की इच्छा
परलोगासंसह प्पउगो २ — परलोक में सुखकी वांछा
जीविया संसह प्पउगो ३ — जीवित की इच्छा
मरणा संसह प्पउगो ४ — मरण की इच्छा
काम भोगा संसह प्पउगो ५ — काम भोग की इच्छा
मा मुज्झ हुज्ज मरणन्ते । — उपरोक्त ५ विचार मुझने मर्णान्त तक मत होज्यो ।

॥ इति ॥

अठारे पाप :—

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १०

द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य १४पर परिवाद १५ रति अरति १६ माया मोसो १७ मिथ्या दर्शन सल्य १८ ॥ इति ॥

तस्स सव्वस्स की पाटी ।

तस्स सव्वस्स देवसी अस्स आयारस्स दुचितिंय दुब्भासिय
जे सब अतिचार कोई किणमा कोई
दुच्चिट्ठिय आलोय ता पडिक्कमामि
भाषा खोटी चेष्टा काया की आलोई तेह पडिक्कमुं हूं
निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥
निन्दुं महण्या करूं पाप कर्म थी आत्माने वोसराउं
॥ इति ॥

तस्स धम्मस्स की पाटी ।

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठि ओमि
तेह धर्म केवलपरूप्यो तेहने विषे उठ्यो छूं
आराहणाए विरओमि विराहणाए सव्वोतिविहेणं
आराधना निमित्त निवर्त्यो छू विराधनाथी अतिचार सर्व
त्रिविध करी
पडिक्कन्तो, वंदामि जिण चउव्वीस
पडिक्कम्यू छूं, वांदू छूं जिन राजने चोवीसने
आलोयणा करिके
॥ इति ॥

॥ अथ मंगलीक की पाटी ॥

चत्तारि मङ्गलं अरिहन्ता मङ्गलं सिद्धा मङ्गलं
च्यार मंगलीक अरिहन्त मङ्गल छै सिद्ध मङ्गलकारी छै
साहू मङ्गलं केवली पन्नत्तो धम्मो मङ्गलं ॥
साधू मंगलीक केवली प्ररूप्यो धर्म ते मंगलीक
चत्तारिलोगुत्तमा अरिहन्तालोगुत्तमा
ए च्यार लोक में उत्तम जाणवा अरिहन्त लोक में उत्तम
सिद्धा लोगुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवली
सिद्ध लोकमें उत्तम साधू लोक में उत्तम केवली
पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा ॥ चत्तारि सरणं
प्ररूप्यो धर्म ते लोकमे उत्तम च्यार शरणा
पवज्जामि अरिहन्ता सरणं पवज्जामि सिद्धा
ग्रहण करूं अरिहन्तो का शरणा ग्रहण करता हूं सिद्धांका
सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवली
शरणा लेता हूं साधूका शरण है केवली
पन्नत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि ॥ च्यारों शरणा
प्ररूपित धर्मका शरण ग्रहण करता हूं

ए सगा अवर न सगो कोय जे भवप्राणी आदरै अक्षय अमर पद होय ।

॥ देवसी प्रायश्चित की पाटी ॥

देवसी प्रायश्चित विसोद्धनार्थ करेमि काउस्सगं ।

॥ इति प्रतिक्रमणं ॥

॥ अथ पडिक्रमणो करने की विधि ॥

प्रथम चौवीसत्थो करणो जिणा में

इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी। तस्सोत्तरी की पाटी २। ध्यान में इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी मन में विचारकर एक नवकार गुणनों ३॥ लोगस्सउज्जोयर की पाटी ३। नमोत्थुण की पाटी ४।

१ प्रथम आवसग्ग सामाइक में।

१ आवस्सई इच्छामिण भन्ते।

२ नवकार एक।

३ करेमि भंते सामाइय।

४ इच्छामिठामि काउस्सग्ग।

५ तस्सोत्तरी की पाटी।

ध्यानमें ९९ निन्नाणवे अतिचार—

आगमें तिविहे पन्नत्ते की पाटी तिणमें ज्ञान का चवदह अतिचार।

दसण श्रीसमत्ते की पाटी तिण में समकित का ५ अतिचार।

बार व्रताका अतिचार ६० तथा १५ कर्मादान। इह होगा ससह ष्पठगे की पाटी। (तिण में) अति चार ५ सलेखणाका। यह सर्व ९९ अतिचार। अठारह पाप स्थानक करणा।

इच्छामि ठामि आलोऊं जो में देवसी अइयारोकउ ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कह पारलेणो ।

॥ इति प्रथम आवसग्ग समाप्त ॥

॥ दूसरा आवसग्गकी आज्ञा ॥

एक लोगस्स की पाटी ।

॥ इति दूजो आवस्सग समाप्त ॥

॥ तीजा आवसग्ग की आज्ञा ॥

दोय खमा समणां कहणा

॥ इति तीजा आवसग्ग समाप्त ॥

॥ चौथा आवसग्ग की आज्ञा ॥

ऊभाथकां ध्यानमें कह्या सो प्रगट कहणा

८ आठ पाटी बैठा थकां कहणी जिणां की विगत ।

१ तस्स सव्वस की पाटी

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते सामाइयं की पाटी ।

४ चत्तारि मंगलं की पाटी ।

५ इच्छामि ठामि पडिकमेउ जो में देवस्सी ।

६ इच्छामि पडिकमेउ की पाटी ।

७ आगमें तिविहे की पाटी।

८ दंसण श्री समत्ते की पाटी।

ग आठ पाटी करकर बारह व्रत अतिचार सहित करणा

पांच संलेखणा का अतिचार करणा।

अठारे पाप स्थानक करणा।

इच्छामि ठामि पडिकमेउ जो मैं देवसी की पाटी करणी।

तस्स धम्मस्स केवली पन्नत्तस्स की पाटी।

छोय खमासमणा करणा।

पांच पदा की वन्दना करणी।

सात लाख पृथ्वीकाय सात लाख अप्पकाय इत्यादि खमत खामणां की पाटी।

॥ इति चौथो आवश्यक समाप्त ॥

॥ पंचमा आवसग की आज्ञा लेई करे ॥

१ देवसी प्रायश्चित्त विशोधनार्थं करेमि काउसग्ग।

२ एक नवकार।

३ करेमि भन्ते सामायिक की पाटी।

४ इच्छामि ठामि काउसग्ग की पाटी।

५ तस्सोत्तरी की पाटी।

ध्यान में लोगस्स करणा की परम्पराय रीति—

प्रभाते तथा सांझ वक्त ४ च्यार लोगस्स को ध्यान

पक्खी ने १२ बारै लोगस्स को ध्यान ।

चौमासी पक्खी ने २० लोगस्स को ध्यान ।

छमछरी ने चालीस लोगस्स को ध्यान ।

ध्यान पारी लोगस्स की पाटी प्रगट कहणी ।

२ दोय खमासनणां कहणा ।

॥ इति पंचमूं आवस्सग समाप्त ॥

छठ्ठा आवसग्ग की आज्ञा लेई कहणा तेहनी विगत ।

गयेकालनूं पडिक्कमणो, वर्त्तमान कालमें समता, आगामियां कालका पचक्खाण यथाशक्ति करणा ।

सामाई १ चौवीसथो २ वंदना ३ पडिक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पचखाण ६ यां छऊं आवसग्गां में ऊंची नीची हींणी अधिक पाटी कही होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

दोय नमोत्थुणं कहणां जिण में पहिला में तो सिद्ध गई नाम धेइयं ठाणं संपताणं नमो जिणाणं ।

दूजा नमोत्थुणं में सिद्ध गई नाम धेइयं ठाणं संपवेकामी नमो जिणाणं ।

॥ इति ॥

अथ बासठिया को थोकड़ो।

इकवीस द्वार का १०२ बोल।

जीव गई इन्द्रिय काए जोगे वेए कसाय लेस्साय।
सम्मत्त णाण दसण संजय उवओग आहारे ॥१॥
भासग परित्त पज्जत्त सुहुम सण्णी भविस्थि चरिमेय॥

(१) जीव १, (२) गति ८, (३) इन्द्रीय ७, (४) काय ८, (५) योग ५, (६) वेद ५, (७) कषाय ६, (८) लेश्या ८, (९) सम्यक्त्व ८, (१०) ज्ञान १०, (११) दर्शन ४, (१२) संयति ६, (१३) उपयोग २, (१४) आहार २, (१५) भाषक २, (१६) परित ३, (१७) पर्याप्ता ३, (१८) सूक्ष्म ३, (१९) सन्नी ३, (२०) भवि ३, (२१) चर्म २, ।

इण थोकड़े मे बासठियो कांई कारण कह्यो ते लिखे छे—१४ जीव, १४ गुणस्थान, १५ योग १२ उपयोग, ६ लेश्या, १ अल्पाबोहत सर्व मिल बासठ हुवा इण कारण इण मे बासठियो कह्यो, तिण पीछे इण थोकड़े मांहे बोल बढ़ाया छे।

भवि और चर्म के बीच में अस्तिकायरो द्वार छे ते द्वार इस थोकड़ा मांहें लियो नहीं।

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
१-१	सर्व जीव में	१४	१४	१५	१२	६
२-१	नारकी मे	२ (१३, १४)	४ प्रथम	११ औदारिक, औदारिक मिश्र, आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	९ मन पर्यव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या	३ प्रथम
२	तिर्यंच में	१४	५ प्रथम	१३ आहारिक आहारिक मिश्र टल्या	९ ऊपर प्रमाणे	६
३	तिर्यंचणी में	२ (१३, १४)	५ प्रथम	१३ ऊपर प्रमाणे	९ ऊपर प्रमाणे	६
४	मनुष्य में	२ (११, १३, १४)	१४	१५	१२	६
५	मनुष्यणीमें	२ (१३, १४)	१४	१३ आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	१२	६
६	देवता मे	२ १३, १४	४ प्रथम	११ औदारिक, औदारिक मिश्र, आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	९ मन पर्यव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
७	देवागणा में	२ (१३, १४	४ प्रथम	११ ऊपर प्रमाणे	९ ऊपर प्रमाणे	४ प्रथम
८	सिद्धा में	०	०	०	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन,	०,

बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
सइन्द्रिया में	१४	१२ प्रथम	१५	१० केवलज्ञान, केवल दर्शनटल्या	६
एकेन्द्री में	४ प्रथम	१ प्रथम	५ औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय वैक्रियमिश्र, कार्मण	३ मति, श्रुति अज्ञान अचक्षु दर्शन	४ प्रथम
बेइन्द्री मे	२ (५, ६)	२ (१, २)	४ औदारिक, औदारिक मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण	५ मति, श्रुति ज्ञान, मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन	३ प्रथम
तेइन्द्री मे	२ (७, ८)	२ (१, २)	४ ऊपर प्रमाणे	५ ऊपर प्रमाणे	३ प्रथम
चौइन्द्री मे	२ (९, १०)	२ (१, २)	४ ऊपर प्रमाणे	६ मति, श्रुति ज्ञान, मति श्रुति अज्ञान, चक्षु, अचक्षु दर्शन	३ प्रथम
पंचेन्द्री में	४ छेहला	१२ प्रथम	१५	१० केवलज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
अनेन्द्री में	१ चउदमो	२ (१३, १४)	७ सत्यमन, व्यवहार मन, सत्य भाषा, व्यवहार भाषा औदारिक, औदारिक मिश्र कार्मण	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन	१ शुक्ल
सकाया में	१४	१४	१५	१२	६
पृथ्वी काया में	४ प्रथम	१ प्रथम	३ औदारिक, औदारिक मिश्र कार्मण	३ मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन	४ प्रथम

बोल	जीवनां भेद १४	गुणस्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
अप्पकायामें	४ प्रथम	१ प्रथम	३ औदारिक औदारिक मिश्र, कार्मण	३ मति, श्रुति अज्ञान अचक्षु दर्शन	४ प्रथम
तेउकायामें	४ प्रथम	१ प्रथम	ऊपर प्रमाण	३ ऊपर प्रमाणे	३ प्रथम
वायुकायामें	४ प्रथम	१ प्रथम	५ औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण	३ ऊपर प्रमाणे	३ प्रथम
वनस्पति कायामें	४ प्रथम	१ प्रथम	३ औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मण	३ ऊपर प्रमाणे	४ प्रथम
त्रसकायामें	१० छेल्ला	१४	१५	१२	६
अकायामे	०	०	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
सयोगीमें	१४	१३ प्रथम	१५	१२	६
मनयोगीमें	१ चउदमो	१३ प्रथम	१४ कार्मण टल्यो	१२	६
वचनयोगीमें	५ त्रसका पर्याप्ता	१३ प्रथम	१४ कार्मण टल्यो	१२	६
काया योगी मे	१४	१३ प्रथम	१५	१२	६

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुणस्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
५	अयोगी में	१ चउदमो	१ चउदमों	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
६-१	सवेदी मे	१४	९ प्रथम	१५	१० केवलज्ञान, केवल दर्शन टल्या।	६
२	स्त्री वेदी में	२ छेहला	९ प्रथम	१३ आहारिक ने आहारिक मिश्र टल्या	१० ऊपर प्रमाणे	६
३	पुरुषवेदी में	२ छेहला	९ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
४	नपुंसक वेदी में	१४	९ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
५	अवेदी में	१ चउदमों	६ छेहला	७ अनेन्द्रीय जिम	९ तीन अज्ञान टल्या	१ शुक्ल
७ १	सकषायीमें	१४	१० प्रथम	१५	१० केवलज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
२	क्रोध कषायी में	१४	९ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
३	मान कषायीमें	१४	९ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
४	माया कषायी में	१४	९ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
५	लोभकषायी में	१४	१० प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	६
६	अकषायी मे	१ चउदमो	४ छेहला	७ अनेन्द्रीय जिम	६ ३ अज्ञान टल्या	१ शुक्ल

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
८-१	सलेश्यी में	१४	१३ प्रथम	१५	१२	६
२	कृष्णलेश्यीमें	१४	६ प्रथम	१५	१० केवलज्ञान, केवल दर्शन टल्या।	१ कृष्ण
३	नीललेश्यी में	१४	६ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	१ नील
४	कापोत लेश्यी में	१४	६ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	१ कापो
५	तेजूलेश्यी में	३ (३, १३, १४)	७ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	१ तेजू
६	पद्मलेश्यी में	२ छेहला	७ प्रथम	१५	१० ऊपर प्रमाणे	१ पद्म
७	शुक्ललेश्यी में	२ छेहला	१३ प्रथम	१५	१२	१ शुक्ल
८	अलेश्यी में	१ चउदमो	१ चउदमों	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
९-१	सम्यक्त्वी में	६, ५ असन्नी का अपर्याप्ता, १४ चउदमों	१२ टल्या १, ३	१५	९ तीन अज्ञान टल्या	६
२	सास्वदान सम्यक्त्वी में	६ ऊपर प्रमाणे	१ दूजो	१३ आहारिक आहारिक मिश्र टल्या	६ प्रथम तीन ज्ञान, तीन दर्शन	६
३	उपशम सम्यक्त्वी में	२ छेहला	८ (४ सूं ११ तांई)	१५	७ प्रथम चार ज्ञान, तीन दर्शन	६

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
४	वेदक सम्यक्त्वो में	२ (१३, १४)	४ (४ सूं ७ ताई)	१५	७ प्रथम चार ज्ञान, तीन दर्शन	६
५	क्षयोपशम सम्यक्त्वी में	२ (१३, १४)	४ (४ सूं ७ ताई)	१५	७ ऊपर प्रमाणे	६
६	क्षायक सम्यक्त्वी मे	२ (१३, १४)	११ ४ सूं १४ ताई	१५	६ तीन अज्ञान टल्या	६
७	मिथ्यात्वी में	१४	१ प्रथम	१३ आहारिक आहारिक मिश्र टल्या	६ तीन अज्ञान प्रथम ३ दर्शन	६
८	सम मिथ्यात्वी में	१ चउदमों	१ तीजो	१० ४ मन, ४ वचन औदारिक, वैक्रिय	६ ऊपर प्रमाणे	६
०-१	सज्ञानी में	६, ५ त्रस का अपर्याप्ता, १ चउदमों	१२ टल्या १, ३	१५	६ तीन अज्ञान टल्या	६
२ ३	मतिज्ञानी में श्रुतिज्ञानी में	६ ऊपर प्रमाणे	१० टल्या १, ३, १३, १४	१५	७ प्रथम ज्ञान ४, दर्शन ३	६
४	अवधि ज्ञानी में	२ (१३, १४	१० ऊपर प्रमाणे	१५	७ ऊपर प्रमाणे	६
५	मन पर्यव ज्ञानी में	१ चउदमों	७ (६ सूं १२ ताई)	१४ कार्मण टल्यो	७ ऊपर प्रमाणे	६
६	केवलज्ञानी में	१ चउदमो	२ (१३, १४)	७ अनेरी जिम	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन,	१ शुक्ल

ांक	बोल	जीवना भेद १४	गुणस्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
४	परिहार विशुद्ध सयतो में	१ चउदमो	२ (६, ७)	९ चार मन, चार वचन, औदारिक	७ प्रथम-ज्ञान ४, दर्शन ३	३ भली
५	सूक्ष्म संपराय संयती में	१ चउदमों	१ दशमो	५ सत्यमन, व्यव हार मन, सत्य भाषा, व्यवहार भाषा औदारिक	४ प्रथम चार ज्ञान	१ शुक्ल
६	यथाख्यात सयती मे	१ चउदमो	४ छेहला	७ अनेन्द्रीय जिम	९ तीन अज्ञान टल्या	१ शुक्ल
७	संयता संयतीमें	१ चउदमों	१ पाचमों	१२ आहारिक, आहारिक मिश्र, कार्मण टल्या	६ प्रथम ज्ञान ३, दर्शन ३	६
८	असंयती में	१४	४ (१ सू ४ ताई)	१३ आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	९ केवल ज्ञान, केवलदर्शन, मन पर्यव ज्ञान टल्या	६
९	नोसयती ना असयती मे	०	०	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
१३ १	सागरो वउत्ता में	१४	१४	१५	१२	६
२	अणगारो वउत्ता में	१४	१२ दशमो टल०	१५	१२	६
१४-१	आहारिक मे	१४	१३ चउदमों टल्यो	१४ कार्मण टल्यो	१२	६
२	अणाहारिक में	८ (७ अपर्याप्ता, १ चउदमों	५ (१,२,४, १३, १४)	१ कार्मण	१० मन पर्यव ज्ञान चक्षु दर्शन टल्या	६

अंक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
१६ १	भाषक मे	५ (६,८,१० १२,१४)	१३ चउदमो टल्यो	१४ कार्मण टल्यो	१२	६
२	अभाषक में	१० (७ अपर्याप्ता, २,४ १४,	५ (१,२,४, १३,१४	५ औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय वैक्रिय मिश्र, कार्मण	११ मन पर्यव ज्ञान टल्यो	६
१६ १	परित में	१४	१४	१५	१२	६
२	अपरित मे	१४	१ प्रथम	१३ आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	६ तीन अज्ञान प्रथम ३ दर्शन	६
३	नो परित नो अपरित	०	०	०	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन	०
१७-१	पर्याप्ता मे	७ पर्याप्ता	१४	१५	१२	६
२	अपर्याप्त में	७ अपर्याप्ता	३ (१,२,४)	५ औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण	९ केवल ज्ञान, मनपर्यव ज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
३	नो पर्याप्ता नो अपर्याप्त में	०	०	०	२ केवल ज्ञान केवल दर्शन	०
१८ १	सूक्ष्म में	२ प्रथम	१ प्रथम	३ औदारिक, औदारिक मिश्र कार्मण	३ मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन	३ प्रथम

भक	बोल	जीवना भेद १४	गुण स्थान १४	योग १५	उपयोग १२	लेश्या ६
२	बादर में	१२ छेहला	१४	१५	१२	६
३	नो सूक्ष्म नो बादर मे	०	०	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
११-१	सन्नी मे	२ छेहला	१२ प्रथम	१५	१० केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या	६
२	असन्नी में	१२ प्रथम	२ प्रथम	६ औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण	६ प्रथम ज्ञान २, अज्ञान २ दर्शन २,	४ प्रथम
३	नो सन्नी नो असन्नी में	१ चउदमो	२ छेहला	७ अनेन्द्रिय जिम	२ केवलज्ञान, केवल दर्शन,	१ शुक्ल
१० १	भवि में	१४	१४	१५	१२	६
२	अभवि में	१४	१ प्रथम	१३ आहारिक ने आहारिक मिश्र टल्या	६ तीन अज्ञान प्रथम ३ दर्शन	६
३	नो भवि नो अभवि	०	०	०	२ केवल ज्ञान, केवल दर्शन	०
११-१	चर्म में	१४	१४	१५	१२	६
२	अचर्म में	१४	१ प्रथम	१३ आहारिक, आहारिक मिश्र टल्या	८ प्रथम चार ज्ञान टल्या	६

॥ अथ गतागत का थोकड़ा ॥

जीवका ५६३ भेद की विगत—

१४ सात नारकी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४८ तिर्यंच का ।

४ सूक्षम बादर पृथ्वीकाय का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४ सूक्षम बादर अप्पकाय का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४ सूक्षम बादर वाउकाय का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

४ सूक्षम बादर तेउकाय का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

६ सूक्षम (बादर) प्रत्येक साधारण वनस्पतिका पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

६ तीन विकलेन्द्री का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

२० जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर ए पांच प्रकार का तिर्यञ्च सन्नी असन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

३०३ मनुष्य का—

२०२ सन्नी मनुष्य १५ कर्म भूमि. ३० अकर्म भूमि. ५६ अन्तरद्वीप ए १०१ का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

१०१ असन्नी मनुष्य ते सन्नी मनुष्य का मल मूत्रादि चउदह स्थानक मे उपजे ते अपर्याप्ता, अपर्याप्ता अवस्था मे मरे ।

१९८ देवता का—

भुवनपति १०, परमाधर्मी १५, वाणव्यन्तर १६, त्रिझृमका १०, जोतषी १०, किल्बिषी ३, लोकान्तिक ९, देवलोक १२, ग्रैवेयक ९, देवलोक १२, ग्रैवेयक ६, अनुत्तर विमान ५, एवं ९९ जाति का पर्याप्ता अपर्याप्ता ।

१	पहली नारकी में	आगति २५	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यञ्च पंचेन्द्री ५ सन्नी ५ असन्नी पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यञ्च पंचेन्द्री ५ सन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०
२	दूजी नारकी में	आगति २०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता
		गति ४०	ऊपरवत्
३	तीजी नारकी में	आगति १६	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ४ सन्नी तिर्यञ्चका पर्याप्ता भुजपर टल्यो
		गति ४०	ऊपरवत्
४	चौथी नारकी में	आगति १८	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ३ सन्नी तिर्यञ्च पर्याप्ता (भुजपर १ खेचर २ टल्या
		गति ४०	ऊपरवत्
५	पांचवी नारकी में	आगति १७	१५ कर्म भूमि मनुष्य, १ जलचर, १ उरपुर का पर्याप्ता
		गति ४०	ऊपरवत्
६	छट्टी नारकी में	आगति १६	१५ कर्म भूमि १ जलचर सन्नी को पर्याप्तो
		गति ४०	ऊपरवत्

१३	नवमांसे सर्वार्थ सिद्धि तांई	आगति १५	१५ कर्म भूमि, मनुष्य का पर्याप्त
		गति ३०	१५ कर्म भूमि का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१४	पृथ्वी पाणी वनस्पति मे	आगति २४३	१०१ असन्नी मनुष्य, ४८ तिर्यंच, १५ कर्म भूमि का, पर्याप्ता अपर्याप्ता ३० एवं १७६ लड़ी का और ६४ जातिका देवता एवं सर्व २४३ थया
		गति १७६	लड़ी का
१५	तेऊ वाउकाय मे	आगति १७६	लड़ी का
		गति ४८	तिर्यञ्च का
१६	तीन विकलेन्द्री मे	आगति १७६	लडी का
		गति १७६	लड़ी का
१७	असन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्री में	आगति १७६	लड़ी का
		गति ३९५	१७६ तो लड़ीका, ५६ अंतर्द्वीप ५१ जाति का देवता, १ पहलो नारकी १०८ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २१६ सर्व मिलो ३९५
१८	सन्नी तिर्यञ्च में	आगति २६७	१७६ तो लड़ी का, ८१ देवता ७ नारकी पर्याप्ता (नवमांसे सर्वार्थ सिद्ध तांई टल्या)
		गति ५२७	(नवमां से सर्वार्थ सिद्ध तांई का टल्या)

२५	केवल्यां में	आगति १०८	८१ देवता (पर्मा धर्म १५ कल्विषिक ३ टल्या) १५ कर्म भूमि ४ पहली से चौथी नर्क, ५ सन्नी तिर्यञ्च १ पृथ्वी १ अप्प वनस्पति
		गति ०	मोक्ष की
२६	तीर्थंकरा में	आगति १११	३५ देवता वैमानिक ३ नरक पहली से
		गति ४६	मोक्ष की
२७	चक्रवर्त में	आगति ८२	८१ जाति का देवता ऊपरवत् १ पहली नरक
		गति १४	७ सात नारकी मे जाय पदवी में मरे तो
२८	वासुदेव मे	आगति ३२	१२ देवलोक, ९ नव ग्रैवेयक, ९ लोकान्तिक तथा २ नारकी पहली दूजी
		गति १४	७ नारकीमें जाय
२९	वलदेव में	आगति ८३	८१ जातिका देवता ऊपरवत् नारकी पहली दूजी
		गति ०	पदवी अमर छे
३०	सम्यक दृष्टिमें	आगति ३६३	१७१ लड़ो का (तेउ वाउ का टल्या) ९९ देवता, ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति २५८	९९ देवता, १५ कर्मभूमि, ६ नारकी ५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता अपर्याप्ता, ५ असन्नी ३ विकलेन्द्री का अपर्याप्ता एवं २५८

१	शुक्लपक्षी	आगति ३७१	१७९ नो लड़ी का, ९९ देवता ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२	कृष्णपक्षी मे	आगति ३६६	३७१ मे ५ अनुत्तर टल्या
		गति ५५३	५ अनुत्तर का अपर्यासा टल्या
३	अचर्म मे	आगति ३६६	ऊपरवत्
		गति ५५३	ऊपरवत्
४	चर्म में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
५	बाल वीर्य मे	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तर का टल्या
६	पंडित वीर्य में	आगति २७५	१७१ लड़ी का में से, ९९ देवता का, ५ नारकी पहली से
		गति ७०	१२ देवलोक, लोकान्तिक, ९ नवग्रैवेयक ५ अनुत्तर वैमान का पर्यासा अपर्यासा

१३	निकेवल अचक्षु दर्शन में	आगति २४३	१७६ लड़ी का, ६४ जाति का देवता का पर्याप्ता
		गति १७६	लड़ी का
१४	समुचे अचक्षु दर्शन में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ५६३	सर्व
१५	अवधि दर्शन में	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति २५२	६६ देवता, १५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच ७ नारकी एव १२६ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१६	सूक्ष्म एकेन्द्री में	आगति १७६	लड़ी का
		गति १७६	लड़ी का
१७	बादर एकेन्द्री में	आगति २४३	१७६ लडीका ६४ देवता
		गति १७६	लड़ी का
१८	सयोगी अणाहारिक	आगति ३७१	ऊपरवत्
		गति ०	

२५	कापोत लेश्या को कापोत में जावे तो	आगति ३१६	ऊपरवत् पण नारका पहली दूजी तीजी जाणो
		गति ४५६	ऊपरवत् (नारकी पहली से तीजी)
२६	तेजू लेश्या को तेजू में जावे तो	आगति १६०	६४ जातिका देवता ८६ युगलिया का पर्याप्ता और १५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता
		गति ३४३	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, तिर्यंच ६४ जाति देवता का पर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वी, अप्प, वनस्पति का अपर्याप्ता
२७	पद्म को पद्म लेश्या मे जावे तो	आगति ५३	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता, नवग्रैवेयक १ दूजो किल्विपि ३ देवलोक (पहिला से) का पर्याप्ता
		गति ६६	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच नव लोकान्तिक, ४ देवलोक (तीजे से) का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२८	शुक्ल लेश्या को शुक्ल मे जावे तो	आगति ६२	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४० और २१ देवलोक (छट्ठा से सर्वार्थ सिद्धताँई) १ कल्विषिक का पर्याप्ता
		गति ८४	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच, २१ देवलोक ऊपरवत् १ तीजा किल्वेषी का पर्याप्ता अपर्याप्ता

इति दूजो गतागत को थोकड़ो

आठ कर्मा की १४८ प्रकृति को थोकड़ो

सूत्र श्री पन्नवणाजी पद तेवीस में कमबंध पद चाल्या ते अनुसारे कर्म प्रकृति कहे छे।

ज्ञानावरणीय की ५ दर्शनावरणीय की ६, वेदनीय की २, मोहनीय की २८ आयुष्य की ४, नाम की १०३, गोत्र की २, अन्तराय की ५, सर्व १५८ प्रकृति थयी।

प्रथम—ज्ञानावरणीय कर्म।

ज्ञानवरणीय कर्म की ५, प्रकृति—१ मति ज्ञाना वरणीय, २, श्रुति ज्ञानावरणीय, ३ अवधि ज्ञानावर णीय, ४ मनपर्यव ज्ञानावरणीय, ५ केवल ज्ञाना वरणीय।

जीवरे उन थोला करी ज्ञानावरणीय कर्म किम बंधे ते कहे छै—१ ज्ञान नो तथा ज्ञानवन्त नो प्रत्यनीक होवे, २ ज्ञान ने तथा ज्ञानवन्त ने निन्हवे, गोपवे तथा हेलना करे, ३ ज्ञान नी तथा ज्ञानवन्त नी अन्तराय पाड़े, ४ ज्ञान ऊपरे तथा बहुश्रुति साथा ऊपरे द्वेष कर, ५ ज्ञान नी तथा ज्ञानवन्त नी आशातना कर, ६ ज्ञान नो तथा ज्ञानवन्त नो विसमवाद योग ते व्यभिचार

दिखावे। ए छव बोलां करी जीव के ज्ञानावरणीय कर्म बंधे। ए कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ३० कोडाकोड़ सागरोपम। ए कर्म थकी जीव संसार मांहि रुले। ए कर्म पाटी नी दृष्टान्त जाणवो। जिम आंख्यां आड़ी कपड़ा नी पाटी बांध्यां थी दीसे नहीं, तिम ज्ञानावरणीय कर्म करी जीवने ज्ञान उपजे नहीं।

द्वितीय—दर्शनावरणीय कर्म।

दर्शनावरणीय कर्म की ९ प्रकृति—१ निद्रा, २ निद्रा-निद्रा, ३ प्रचला, ४ प्रचलाप्रचला, ५ थीणोद्धी, ६ चक्षु दर्शनावरणीय, ७ अचक्षु दर्शनावरणीय, ८ अवधि दर्शनावरणीय, ९ केवल दर्शनावरणीय।

सुख सूं आवे सुख सूं जागृत होवे ते निद्रा, दुःख सूं आवे दुःख सूं जागृत होवे ते निद्रानिद्रा, ऊभा बैठा निद्रा आवे ते प्रचला, चालतां निद्रा आवे ते प्रचलाप्रचला, थीणोद्धी निद्रा बलदेव सरीषो बल जागता मन में चिन्तवे ते निद्रा में करे, हाथी का दांत निद्रा मांहि उपाड़ कर ले आवे तेहने थीणोद्धी निद्रा कहीजे, ए निद्रा नो धणी मरी ने उत्कृष्टो सातवीं नारकी तेतीस सागर ने आयुष्ये जाय ने ऊपजे।

जीवरे छव बोलां करी दर्शनावरणीय कर्म किम बंधे ते कहे छे—१ दर्शन नो तथा दर्शनवन्त नो प्रत्य-

नीक होवे, २ दर्शन ने तथा दर्शनवन्त ने निन्दवे, गोपव तथा हेल्ना करे, ३ दर्शन नी तथा दर्शनवन्त नी अन्तराय पाडे, ४ दर्शननी तथा दर्शनवन्तनी आशातना करे, ५ दर्शन नी तथा दर्शनवन्त नी विसमवाद योगत व्यभिचार दिखावे ६ दर्शन तथा दर्शनवन्त ऊपरे द्वेष करे । ए छव बोला करी जीव दर्शनावरणीय कर्म बांधे। ए कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ३० क्रोड़ा क्रोड़ सागरोपम । ये कर्म थकी जीव ससार माही रुले। जीव जिहां जावे तिहां केई लागयो आवे । ए कर्म मोक्ष जाता जीवने प्रतिहार (पोलियो) समान छै। जिम राजा सूं भेंटवा जाता प्रतिहार जावा न देवे तिम ए कर्म थकी जीव ने दर्शन ऊपजे नहीं, मोक्ष पावे नहीं।

तृतीय—वेदनीय कर्म ।

वेदनीय कर्म की दोय प्रकृति—१ साता वेदनीय २ असाता वेदनीय। साता वेदनीय तिणसू सुख भोगवे । असातावेदनीय तिणसू दुःख भोगवे ।

पहले जीवरे सातावेदनीय कर्म किम बन्धे ते कहे छै। प्राण, भूत, जीव, सत्व नी अनुकम्पा करे । अनुकम्पा किम करे ते ओलखावा भणी छव बोल कहे छै।

घणा प्राण, भूत, जीव, सत्व ने दुःख उपजावे नहीं १, शोग उपजावे नहीं २, झुरावे नहीं ३, आसू नखावे

नहीं, लाठी प्रमुख सूं प्रहार करे नहीं ५, परितापना उपजावे नहीं ६, ए छव बोलां करी जीव शातावेदनीय कर्म बांधे संसार ना सुख भोगवे।

शातावेदनीय कर्म ना दोय भेद छे–१ इर्यावही, २ सम्पराय।

इर्यावही नी स्थिति, जघन्य ने उत्कृष्टी २ समा नी।

सम्पराय नी स्थिति जघन्य १२ मुहूर्त्त उत्कृष्टी १५ कोड़ाकोड़ सागरोपम।

जीवरे अशातावेदनीय कर्म किम बंधे ते कहे छै।

प्राण, भूत, जीव, सत्व नी अनुकम्पा न करे। अनुकम्पा किम न करे ते आलखावा भणी छव बोल कहे छे-—

पर जीवां ने दुःख उपजावे १, शोग उपजावे २, झुरावे ३, आंसू नखावे ४, लाठी प्रमुख सूं प्रहार करे ५, परितापना उपजावे ६, ए छव बोलां करी जीव अशातावेदनीय कर्म बांधे।

ए कर्म नी स्थिति जघन्य एक सागरा रा सातिया तीन भाग तिण मांटे एक पल्य रो असंख्यातवों भाग ऊणो, उत्कृष्टो ३० कोड़ाकोड़ सागरोपम तांई जीव ने रुलावे। ए कर्म मधु खरड्या खड्ग नी धारा सरीषा जाणजो। धारा चाटतां मधु ना स्वाद आवे ते शाता-

वेदनीय कर्म, जीम कष्ट जावे ते अशातावेदनीय कर्म जाणवो।

चतुर्थ—मोहनीय कर्म।

मोहनीय कर्म की २८ प्रकृति—सज्वल नो क्रोध, मान, माया, लोभ ४, प्रत्याख्यानी क्रोध मान, माया, लोभ ४, अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया लोभ ४, अनन्तानु बंधीय क्रोध, मान, माया, लोभ ४, ए १६ कषाय कही छे।

हिवे नव नोकषाय कहे छे—हास्य १७, रति १८ अरति १९, भय २०, शोग २१, दुर्गंच्छा २२, पुरुष वेद २३, स्त्री वेद २४, नपुसक वेद २५, ए पचीस प्रकृति चारित्र मोहनीय नी जाणवी। हिवे तीन प्रकृति दर्शनमोहनीय नी कहे छे—सम्यक्त्व मोहनीय २६ मिश्रमोहनीय २७, मिथ्यात्व मोहनीय २८, ए अठाईस मोहनीय कर्म नी जाणवी।

हास्य कहता हसे ते, रति कहता असयम में राजी पणो, अरति कहता सयम में निराजीपणो असुख पावे, भय कहता जीव जिहा तिहा डरपावे, शोग कहता जे मुवा गया नो जीव घणो दुःख निसर नहीं, दुर्गंच्छा कहता जीव माठी वस्तु देखीने निन्दा दुर्गंच्छा करे, पुरुष वेद स्त्री ऊपरे अभिलाषा उपजे, स्त्री वेद ते पुरुष

ऊपरे अभिलाषा उपजे, नपुंसक वेद ते स्त्री पुरुष दोनूं ऊपरे अभिलाषा उपजे। पुरुष नो अभिलाषा घास ना पूला नी अग्नि समान जाणवी। स्त्री नी अभिलाषा छाली ना मींगणा की उन्हो अग्नि समान जाणवी। नपुंसक नी अभिलाषा नगर नो दाह नी अग्नि समान जाणवी।

मोहनीय कर्म किम बंधे ते कहे छै—तीव्र क्रोध करी १, तीव्र मान करी २, तीव्र माया करी ३, तीव्र लोभ करी ४ (ए तीव्र चौकडी कषाय रूप चारित्र मोहनीय की कही)। नव नोकषाय रूप तीव्र चारित्र मोहनीय करी ५, तीन तीव्र दर्शन मोहनीय करी ६, ए छव प्रकारे जीव मोहनीय कर्म बांधे। चारित्र मोहनीय कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ४० कोड़ाकोड़ सागरोपम। दर्शन मोहनीय कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ७० कोड़ाकोड़ सागरोपम तांई जीव ने संसार मांही रूलावे।

ए कर्म मदिरापान समान जाणवो, जिम मदिरा पियां थी जीव ने भली भूंटी वस्तु नो विवेक विचार न होवे तिम मोहनीय कर्म ने उदय थी जीव म्हारो म्हारो करतो जग मांहीं फिरे, वलि ऊंधो सरधे।

पंचम—आयुष्य कर्म ।

आयुष्य कर्म नी ४ प्रकृति—नरकायु १, तिर्यंचायु २, मनुष्यायु ३, देवायु ४,

नरकायु ४ प्रकारे बंधे ते कहे छै—महाआरम्भ १, महापरिग्रह २ पञ्चेन्द्री जीवा री घात ३, मांस नो आहार ४

तिर्यंचायु ४ प्रकारे बंधे ते कहे छै—माया कपट करे १, माया ढांकवा ने माया ते गूढ माया करे २, कूडा वचन बोले ३, कूड़ा तोला कूड़ा मापा करे ४

मनुष्यायु ४ प्रकारे बंधे ते कहे छै—प्रकृति स्वभाव भद्रिक होवे १, प्रकृति स्वभाव विनीत होवे २, सांइ कोशते दया रा परिणाम राखे ३, अमच्छर भाव से दूसरा रो गुण सहन करे ४ ।

देवायु ४ प्रकारे बंधे ते कहे छै—सराग संयम पाले १, श्रावक पणो पाले २, बाल तप करे ३, अकाम निर्जरा करे ४ ।

ए कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ३३ सागर क्रोड़ पूर्वर तीजे भाग अधिक नो जाणवो । ए कर्म खोड़ा सरीषा जाणनो, जिम खोड़ा मांही घाल्यो मनुष्य निकल सके नहीं तिम आयुष्य कर्म बिम भोगया मरे नहीं, खपाया बिन संसार छूटे नहीं ।

षष्टम्—नाम कर्म।

नाम कर्म नी मूल प्रकृति ४२, भेदान्तरे ६७, भेदान्तरे ९३, भेदान्तरे १०३।

प्रथम मूल प्रकृति ४२ कहे छै—१४ पिण्ड, ८ प्रत्येक, १० त्रस, १० थावर एवं सर्व ४२ प्रकृति।

तिण में १४ पिण्ड प्रकृति कही, पिण्ड कहतां एक प्रकृतिमें घणा भेद थाय ते पिण्ड कहीजे ते कहे छे— (१) गति नाम ४, (२) जाति नाम ५, (३) शरीर नाम ५, (४) शरीर के अङ्गोपांग नाम ३, (५) शरीर का बन्धन ५, (६) शरीर संघातन नाम ५, (७) संघयन नाम ६, (८) संठाण नाम ६, (९) वर्ण नाम ५, (१०) गंध नाम २, (११) रस नाम ५, (१२) स्पर्श नाम ८, (१३) अनुपूर्वि नाम ४, (१४) विहायगति नाम २, हिवे आठ प्रत्येक प्रकृति कही, प्रत्येक कहतां एक प्रकृति में एक भेद थाय ते प्रत्येक प्रकृति ते कहे छै—१५ पराघात नाम (आप जीते पेलो घात पावे), १६ उश्वास नाम (श्वाशोश्वाश सुख से लेवे), १७ आताप नाम (आप शीतल स्वभावी होवे दूसरो आपने देखने तपायमान् होवे) १८ उद्योत नाम (शरीर की कान्ति ज्योति उज्ज्वल होवे), १९ अगुरु लघु नाम (अधिक हलको वा अधिक भारी नहीं होवे, २० तीर्थंकर नाम (तीर्थंकर

पद ने प्राप्त करने वालो), २१ निर्माण नाम (शरीर फोड़ा फुणगला रहित होवे), २२ अपघात नाम (आप हार पावे दूसरो जीते), ए आठ प्रत्येक प्रकृति कही। हिवे त्रस दशक ना दश नाम कहे छै—२३ त्रस नाम (हालन चालन होवे ते) २४ बादर नाम (नेत्रद्वारा देखने में आवे), २५ प्रत्येक नाम (एक शरीर में एक जीव होवे), २६ पर्याप्त नाम (पूरी प्रजा पावे ते), २७ स्थिर नाम (शरीर ना अवयव दृढ़ होवे), २८ शुभ नाम (सुन्दर शरीर होवे) २९ सौभाग्य नाम (सर्व ने वल्लभकारी), ३० सुस्वर नाम (मधुर स्वर होवे), ३१ आदेय नाम (वचन प्रिय और प्रमाणिक होवे), ३२ यशोकीर्ति नाम (जग में यश कीर्ति होवे)। थावरदशक ना दश नाम कहे छै—३३ स्थावर नाम (हालन चालन की शक्ति नहीं होवे), ३४ सूक्ष्म नाम छोटो शरीर होवे चक्षु इन्द्री के दृष्टिगोचर नहीं होवे), ३५ साधारण नाम (एक शरीर में अनन्ता जीव होवे), ३६ अपर्याप्त नाम (अपूर्ण पर्याय नो धारक), ३७ अस्थिर नाम (ढीलो शरीर होवे), ३८ अशुभ नाम (खराब शरीर होवे), ३९ दुर्भाग्य नाम (अप्रियकारी), ४० दुस्वर नाम (खराब स्वर होवे), ४१ अनादेय नाम (उस वचन ने कोई माने नहीं), ४२ अयशोकीर्ति नाम (जग में अजश अकीर्ति

होवे भलो काम करे तो भी अपजश होवे), ए ४२ मूल प्रकृति कही।

हिवे नाम कर्म नी ६३ प्रकृति कहे छै।

पूर्वे १४ पिण्ड प्रकृति कही तिणरा ६५ भेद थया ते कहे छै—गति नाम चार—नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवता ४, जाति नाम पांच—एकेन्द्री, बेन्द्री, तेन्द्री, चौरेन्द्री, पंचेन्द्री ६, शरीर नाम पांच—औदारिक, वैक्रिय, आहारिक, तैजस, कार्मण १४, अङ्गोपांग नाम तीन—औदारिक, वैक्रिय, आहारिक (तैजस, कार्मण शरीर सूक्ष्म छै तिण कारण से अङ्गोपांग होवे नहीं). शरीर का बंधन नाम पांच—औदारिक, वैक्रिय, आहारिक तैजस, कार्मण २२, संघातन नाम पांच—औदारिक, वैक्रिय, आहारिक, तैजस कार्मण (जैसे बुहारी सुं विखरोड़ा घास ना तृणा ने एकत्र करे ते संघातन) २७, संठाण नाम छव—समचतुरस संठाण (सर्वांगोपांग पूर्ण प्रमाणोपेत शरीर), न्यग्रोध परिमण्डल संठाण (घड़ के समान नाभी ऊपर अच्छो और नीचे खराब शरीर होवे), सादि संठाण (प्रथम नीचे को शरीर अच्छो ऊपर को शरीर खराब), वामन संठाण (ठिंगन शरीर), कुब्ज संठाण कूबडो), हुण्डक संठाण (आधे जले मुरदे जैसा शरीर) ३३. संघयण नाम छव—वज्र ऋषभ नाराच

सघयन (वज्र कीली ऋषभ पाटियो नाराच बधन इसो शरीर नो बधन होवे तो वज्र ऋषभ नाराच सघयन) ऋषभ नाराच सघयन (जिन में कीली नहीं होव), नाराच सघयन (जिन में पाटियो नहीं होवे), अर्धनाराच सघयन (आधो मरकट बध), केल्को सघयन (फक्त कीली रूप अटको होवे), ३६ छेवटो सघयन (अलग अलग हड्डिया होवे) ३६, वर्ण नाम पाच—कालो, पीलो नीलो, रातो, धोलो, ४४, गध नाम दोय—सुगध, दुर्गंध ४६, रस नाम पाच—खट्टो मीठो, कडवो, कषायलो, तीखो ५१, स्पर्श नाम आठ—हलको, भारी, खरदरो, सुहालो, लूखो, चोपड्यो, ठण्डो, उन्हो ५६, अनुपूर्वि नाम चार—नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवता ६३ विहाय गति (आकाश में गति करने योग्य शरीर वालो) नाम दोय—प्रशस्त विहाय गति, अप्रशस्त विहाय गति ६५,

एवं ७८ प्रकृति हुई—१० त्रस की, १० थावर की, ८ प्रत्येक एव सर्व ६३,

हिवे नाम कर्म नी १०३ प्रकृति ना भेद कहे छै—

ग्रन्थान्तर ५ बन्धनरे ठिकाणे बन्धन १५ कह्या छै तिण रा नाम (१) औदारिक बन्धन, (२) औदारिक तैजस बन्धन, (३) औदारिक कार्मण बन्धन, (४)

औदारिक तैजस कार्मण बंधन, (५) बैक्रिय बैक्रिय बन्धन, (६) बैक्रिय तैजस बन्धन, (७) बैक्रिय कार्मण बन्धन, (८) बैक्रिय तैजस कार्मण बन्धन, (९) आहारिक आहारिक बन्धन, (१०) आहारिक तैजस बन्धन, (११) आहारिक कार्मण बन्धन, (१२) आहारिक तैजस कार्मण बन्धन, (१३) तैजस तैजस बन्धन, (१४) तैजस कार्मण बन्धन, (१५) कार्मण कार्मण बन्धन। ए १५ बन्धन रा भेद कह्या तिवारे १० प्रकृति बधी, पूर्वे ९३ कही, सर्व मिल १०३ हुई।

हिवे ६७ प्रकृति ना भेद कहे छै—

चार गति नाम ४, पांच जाति नाम ९, पांच शरीर नाम १४, तीन शरीर अङ्गोपांग नाम १७, छव संघयण नाम २३, छव संठाण नाम २९, वर्ण नाम ३०, गंध नाम ३१, रस नाम ३२, स्पर्श नाम ३३, चार अनुपूर्वि नाम ३७, दोय विहाय गति नाम ३९, आठ प्रत्येक प्रकृति ४७, दश त्रस की ५७, दश थावर की ६७, उदय उदेरणा ने विषे सामान्य थी वर्ण १, गंध १, रस १, स्पर्श १, वर्णादिक ना २० प्रकृति नी ४ प्रकृति कही, बंधन ना १५, संघातन ना ५, ए वीस बोल पांच शरीर मुद्दे गिणिया, ६७ प्रकृति हुई ऊपर प्रमाणे।

नाम कर्म ८ प्रकारे किम बंधे ते कहे छै—

नाम कर्म ना दोय भेद—१ शुभ नाम, अशुभ नाम। शुभ नामकर्म ४ प्रकारे बंधे—१ काया नो सरल [काया करि दूसरा ने बंधे (ठगै) नहीं,] २ भाव सरल ३ भाषा नो सरल, ४ अविसमवाद योग करि (ते जेहवो करे तेहवो बोले विपरीत पणो न करे)।

अशुभ नाम कर्म ४ प्रकारे बंधे—१ काया नो असरल (काया करि बीजा ने बंधे), २ भावनो असरल, ३ भाषा नो असरल, ४ विसमवाद योग करि (ते जेहवो करे तेहवो नहीं बोले विपरीत पणो करे)।

ए कर्म नी स्थिति जघन्य ८ मुहूर्त उत्कृष्टी २० कोडाकोड सागरोपम ताई जीव ने रुलावे, ए कर्म चितारा सरीखा जाणवो जिम चितारो अनेक प्रकार ना चित्राम करे तिम नाम कर्म ने उदय थी नवा नवा रूप करे ।

सप्तम—गोत्र कर्म ।

गोत्र कर्म नी दोय प्रकृति—१ ऊंच गोत्र, २ नीच गोत्र। जीवरे ८ प्रकारे ऊंच गोत्र किम बंधे ते कहे छे—

१ जाति, २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ५ तप, ६ सूत्र, ७ लाभ, ८ ठकुराई, ए आठ बोला नो मद अहंकार नहीं करे तो जीवरे ऊंच गोत्र बंधे।

जीवरे ८ प्रकारे नीच गोत्र कर्म किम बंधे ते कहे छे—

१ जाति, २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ५ तप, ६ सूत्र, ७ लाभ, ८ ठकुराई, ए आठ बोलां नो मद अहंकार, करे तो जीवरे नीच गोत्र कर्म बंधे ।

ए कर्म नी स्थिति जघन्य ८ मुहूर्त उत्कृष्टी २० कोड़ाकोड़ सागरोपम, ए कर्म कुम्हार सरीषा जाणवो जिम कुम्हार मट्टीना पिण्ड थकी नाना प्रकार ना जिसा चिन्तवे तिसा भाजन करे, तिम ए जीव चारूं गति मांहे नया नया भव (ऊंच नीच गोत्र) करे ।

अष्टम—अन्तराय कर्म ।

अन्तराय कर्म नी ५ प्रकृति—१ दानान्तराय, २ लाभान्तराय ३ भोगान्तराय, ४ उप भोगान्तराय; ५ वीर्यान्तराय ।

जीवरे ५ प्रकारे अन्तराय कर्म किम बंधे ते कहे छै—

१ दाननी, २ लाभनी, ३ भोगनी, ४ उपभोगनी, ५ वीर्यनी ए पांच बोलां नी जीव अन्तराय देवे तो अन्तराय कर्म बंधे ए कर्म नी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टी ३० कोड़ाकोड़ सागरोपम, ए कर्म राजाना भण्डारी सरीषा जाणवो जिम राजा भण्डारी ने आदेश देवे, अमुक वस्तु दो, तिवारे भण्डारी देवे तो राजा पामें, तिम अन्तराय कर्म गाढो विषम जाणवो । ए

अन्तराय कर्म ना उदय थी सर्व भली वस्तु नी प्राप्ति नहीं होवे।

ए आठों कर्म नी १५८ प्रकृति जाणवी। प्रकृति सर्व खपाया सू जीव मुक्ति पहुचे। एहवो आपना कर्म ना विपाक कडुवा, कठोर, भारी जाणी ने सदाई जिन वना मुक्ति पन्थ पहुचवा भणी बारह भावना भावे, पंच महाव्रत, बारह व्रत, दया पाळे, दान देवे, देव गुरू सेवा-भक्ति करे, तो जीव थोड़ा काल माहि घणा भव स्थिति खपाय ने निर्मल सम्यक्त्व च्यारित्रादि आराधी केवल ज्ञान उपजायी मुक्ति गति पहुचे। ते भणी भवि जीव सदा काल धर्म ने विषै उद्यम करयो।

॥ इति ॥

आठ कर्म कितनी प्रकारे भोगवे।

(१) ज्ञानावरणीय कर्म १० प्रकारे भोगवे—१ श्रुत इन्द्री को आवरण (कानां सूं शब्द सुणीजे नहीं), २ श्रुत विज्ञानवरण (शब्दमें समझ सके नहीं), ३ चक्षु इन्द्री को आवरण (आंखा सूं रूप देख सके नहीं), ४ चक्षु विज्ञानावरण (रूप में समझ सके नहीं), ५ घ्राण इन्द्री को आवरण (गंध ग्रहण कर सके नहीं), ६ घ्राण विज्ञानावरण (गंध में समझ सके नहीं), ७ रस इन्द्री को आवरण (रस ग्रहण कर सके नहीं), ८ रस विज्ञानावरण (रस में समझ सके नहीं), ९ स्पर्श इन्द्री को आवरण (स्पर्श ग्रहण कर सके नहीं), १० स्पर्श विज्ञानावरण (स्पर्श का भेद शीतोष्णादि में समझ सके नहीं)।

(२) दर्शनावरणीय कर्म ९ प्रकारे भोगवे–१ निद्रा २ निद्रानिद्रा, ३ प्रचला, प्रचलाप्रचला, ४ थीणोद्धी, ६ चक्षु दर्शनावरणीय (आंखां सूं अच्छी तरह देखे नहीं), ७ अचक्षु दर्शनावरणीय (आंखां विना चारों इन्द्रिय मन सूं सम्यक् प्रकार देख सके नहीं), ८ अवधि दर्शनावरणीय (अवधि दर्शन उपजे नहीं), ९ केवल दर्शनावरणीय (केवल दर्शन उपजे नहीं)।

(३) वेदनीय कर्म १६ प्रकारे भोगवे--वेदनीय कर्म का दोय भेद--१ शाता वेदनीय, २ अशाता वेदनीय।

शाता वेदनीय ८ प्रकारे भोगवे--१ मन गमता शब्द, २ मन गमता रूप, ३ मन गमता गंध ४ मन गमता रस, ५ मन गमता स्पर्श, ६ मन रो सुख, ७ भलो वचन, ८ कायारो सुख।

अशाता वेदनीय ८ प्रकारे भोगवे--१ अमनोज्ञ शब्द, २ अमनोज्ञ रूप, ३ अमनोज्ञ गंध, ४ अमनोज्ञ रस, ५ अमनोज्ञ स्पर्श, ६ मन रो दु ख, ७ खोटा वचन, ८ काया रो दु ख।

(४) मोहनीय कर्म २८ प्रकारे भोगवे, मोहनीय कर्म का दोय भेद--१ दर्शन मोहनीय, २ चारित्र मोहनीय।

दर्शन मोहनीय का ३ भेद--१ सम्यक्त्व मोहनीय, २ मिथ्यात्व मोहनीय, ३ मिश्र मोहनीय।

चारित्र मोहनीय का दोय भेद--१ कषाय, २ नो कषाय।

कषाय का १६ भेद--

अनन्तानु बंधीय को चौक--१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ।

क्रोध को स्वभाव=पत्थर की तेड़, २ मान को स्वभाव=पत्थर को थांभो, ३ माया को स्वभाव=बांस की जड़, ४ लोभ को स्वभाव=किरमची रेशम को रङ्ग, इन चारों की गति नरक की, स्थिति जाव जीव की, घात करे सम्यक्त्व की।

अप्रत्याख्यानी चौक—१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ।

१ क्रोध को स्वभाव=तलाव की तेड़, २ मान को स्वभाव=हाथी दांत को थांभो, ३ माया को स्वभाव=मिंढे को सींग, ४ लोभ को स्वभाव=नगर को कीच, इन चारों की गति तिर्यंच की, स्थिति एक वर्ष की, घात करे श्रावक का बारा व्रत की।

प्रत्याख्यानी चौक—१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ।

१ क्रोध को स्वभाव=रेत में लकीर, २ मान को स्वभाव=बेंत को थांभो, ३ माया को स्वभाव=चालता बैल को मात्रो, ४ लोभ को स्वभाव=गाडा को खञ्जन, इन चारों की गति मनुष्य की, स्थिति चार महीना की, घात करे साधपणे की।

संजल को चौक—१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ।

१ क्रोध को स्वभाव—पानी में लकीर, २ मान को स्वभाव—घास को थाम्भो, ३ माया को स्वभाव=बांस की छाल, ४ लोभ को स्वभाव=हल्दी पतंग को रङ्ग, इन चारों की गति देवता की, स्थिति पन्द्रह दिन की, घात करे यथाख्यात चारित्र की।

नोकषाय का ६ भेद—१ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोक, ६ दुर्गन्छा, ७ स्त्री वेद, ८ पुरुष वेद, ९ नपुंसक वेद।

(५) आयुष्य कर्म ४ प्रकारे भोगवे—१ नारकी रो नारकी पणे, २ तिर्यंच रो तिर्यञ्च पणे, ३ मनुष्य रो मनुष्य पणे, ४ देवता रो देवता पणे।

(६) नाम कर्म २८ प्रकार भोगवे, नाम कर्म का दोय भेद—१ शुभ नाम कर्म, २ अशुभ नाम कर्म।

शुभ नाम कर्म १४ प्रकार भोगवे—१ इष्टकारी शब्द, २ इष्टकारी रूप, ३ इष्टकारी गन्ध, ४ इष्टकारी रस, ५ इष्टकारी स्पर्श ६ इष्टकारी गति, (चलने की), ७ इष्टकारी स्थिति (आयुष्य), ८ इष्टकारी लावण्यता, ९ इष्टकारी यशोकीर्ति, १० इष्टकारी उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम, ११ इष्टकारी स्वर, (बोली) १२ कान्तकारी स्वर, १३ प्रियकारी स्वर, १४ मनोज्ञ स्वर।

अशुभ नाम कर्म १४ प्रकारे भोगवे—१ अनिष्टकारी शब्द, २ अनिष्टकारी रूप, ३ अनिष्टकारी गंध, ४ अनिष्टकारी रस, ५ अनिष्टकारी स्पर्श, ६ अनिष्टकारी गति, ७ अनिष्टकारी स्थिति, ८ अनिष्टकारी लावण्यता, ९ अनिष्टकारी कीर्ति, १० अनिष्टकारी उत्थान कर्म, बल, वीर्य, पुरुषाकार,पराक्रम, ११ हीन स्वर, १२ दीन स्वर, १३ अनिष्ट स्वर, १४ अकन्त स्वर।

(७) गोत्र कर्म १६ प्रकारे भोगवे, गोत्र कर्म का दोय भेद—१ ऊंच गोत्र २ नीच गोत्र।

ऊंच गोत्र ८ प्रकारे भोगवे—१ जाति, २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ५ तप, ६ सूत्र, ७ लाभ, ८ ठकुराई (बड़ापन) ए आठ बोलां को मद नहीं करे तो ऊंच गोत्र भोगवे।

नीच गोत्र ८ प्रकारे भोगवे—१ जाति, २ कुल, ३ बल, ४ रूप, ५ तप, ६ सूत्र, ७ लाभ, ८ ठकुराई, ए आठ बोलां को मद करे तो नीच भोगवे।

(८) अन्तराय कर्म ५ प्रकारे भोगवे—१ दान, २ लाभ, ३ भोग, ४ उपभोग, ५ वीर्य, ए पांच बोलां की अन्तराय देवै तो अन्तराय पावे, अन्तराय नहीं देवे तो नहीं पावे।

आठ कर्मरो १५८ प्रकृति ऊपरे लिखी छे, तिणमे नाम कर्म नी ९३ प्रकृति मेलव्यां १४८ प्रकृति थाय छे, ए १४८ प्रकृति ना जघन्य उत्कृष्टो स्थिति ने अबाधा काल नो यन्त्र लिखिये छे।

ज्ञानावरणीय कर्म की ५ तथा अन्तराय कर्म की ५

अंक		प्रकृति का नाम	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी स्थिति	अबाधाकाल (इतने काल उदय नहीं आवे)
१०	१०	ज्ञानावरणीय कर्म की ५ अन्तराय कर्म की ५	अन्तर्मुहूर्त	३० कोड़ाकोड़ सागर	३००० वर्ष

दर्शनावरणीय कर्म की ९

अंक		प्रकृति का नाम	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी स्थिति	अबाधाकाल
१४	४	चक्षु दर्शनावरणीय १, अचक्षु दर्शनावरणीय २ अवधि दर्शनावरणीय ३, केवल दर्शनावरणीय ४	ऊपरवत्	ऊपरवत्	ऊपरवत्
१९	५	निद्रा १ निद्रानिद्रा २ प्रचला ३ प्रचलाप्रचला ४ थीणद्धि ५	एक सागर का सातिया तीन भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमो भाग ऊणो	ऊपरवत्	ऊपरवत्

२०	१	अशातावेदनीय १	उपरवत्	उपरवत्	उपरवत्
२१	१	शातावेदनीय का २ भेद— (१) इर्यावही	दोय समानी	दोय समानी	...
		(२ सम्पराय	१२ मुहूर्त	१५ क्रोडाक्रोड सागर	१५०० वर्ष

मोहनीय कर्म की २८

२२	१	सम्यक्त्व मोहनीय	अन्तर्मुहूर्त	६६ सागर जाझेरी	...
२३	१	मिथ्यात्व मोहनीय	एक सागर तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	७०क्रोडाक्रोड सागर	७००० वर्ष
२४	१	मिश्र मोहनीय	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त	...
२६	१२	प्रत्याख्यानी—क्रोध, मान, माया, लोभ; अप्रत्याख्यानी—क्रोध, मान माया, लोभ; अनन्तानुबंधीय—क्रोध, मान, माया लोभ	एक सागररा सातिया चार भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	४०क्रोड़ाक्रोड़ सागर	४००० वर्ष

अंक		प्रकृति का नाम	जघन्य स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति	अबाधाकाल (इतने काल उदय नहीं आए)
५०	४	संज्वलनके क्रोध, मान, माया, लोभ,	क्रोधकी २ मास, मानकी १ मास, मायाकी ॥ मास, लोभकी अन्तर्मुहूर्त	४० कोडाकोड़ सागर	४००० वर्ष
५१	१	स्त्री वेद	एक सागरका सातिया डेढ़ भाग तिसमें एक पल्यके असंख्यातमों भाग ऊणो	१५ कोडाकोड़ सागर	१५०० वर्ष
५२	१	पुरुष वेद	आठ वर्ष	१० कोडाकोड़ सागर	१००० वर्ष
५३	५	नपुंसक वेद, अरति, भय, शोक जुगुप्सा	एक सागरका सातिया दोय भाग तिसमें एक पल्यके असंख्यातमों भाग ऊणो	२० कोडाकोड़ सागर	२००० वर्ष
५४	२	हास्य, रति	एक सागरके सातियो एक भाग तिसमें एक पल्यके असंख्यातमों भाग ऊणो	१० कोडाकोड़ सागर	१००० वर्ष

आयुष्य कर्म की ४

… भाग उणो … १० कोडाकोड़ सागर २००० वर्ष

आयुष्य कर्म की ४

५३	२	तिर्यंचायु मनुष्यायु	अन्तर्मुहूर्त	३ पल्य क्रोड़ पूर्वरा तीजो भाग अधिक	

नाम कर्म की ६३

५९	६	नरकगति, नरकानुपूर्वि, वैक्रिय नो चौक (शरीर, अङ्गोपाङ्ग, बंधन, संघातन)	एक हजार सागररा सातिया दोय भाग तिणमे एक पल्यरो असख्यातमों भाग उणो	२० कोड़ाकोड़ सागर	२००० वर्ष
[illegible]	२	तिर्यंचगति तिर्यंचानुपूर्वि	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
[illegible]	२	मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वि	सर्व	स्त्री वेद जिम जाणवो	
६५	२	देवगति, देवानुपूर्वि	एक हजार सागररो सातियो एक भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१० कोडाकोड़ सागर	१००० वर्ष
७७	१२	एकेन्द्री जात, पंचेन्द्री जात, औदारिक नो चौक (शरीर, अङ्गोपाङ्ग, बंधन, संघातन) तैजस, कार्मण दोनां नो तृक (शरीर, बंधन, संघातन)	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
८०	३	बेइन्द्री जात, तेइन्द्री जात, चौइन्द्री जात	एक सागररा पैंतीसा नव भाग तिणमें एक पल्यरो असख्यातमों भाग उणो	१८ कोड़ाकोड़ सागर	१८०० वर्ष

९६	२	शुक्ल वर्ण, मधुर रस	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
१०१	२	पीलो वर्ण, खाटो रस	एक सागररा अठाइसा पांच भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१२॥ क्रोड़ाक्रोड़ सागर	१२५० वर्ष
१०३	२	लाल वर्ण, कषायलो रस	एक सागररा अठाइसा छव भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१५ क्रोड़ाक्रोड़ सागर	१५०० वर्ष
१०५	२	नीलो वर्ण, कड़वो रस	एक सागररा अठाइसा सात भाग तिणमें एक पल्यरो असंख्यातमों भाग उणो	१७॥ क्रोड़ाक्रोड़ सागर	१७५० वर्ष
१०७	२	कालो वर्ण, तीखो रस	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
१०९	२	सुगन्ध, प्रशस्त विहाय गति	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
१११	२	दुर्गन्ध, अप्रशस्त विहाय गति	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
११५	४	करड़ो, भारी, ठण्डो, लुखो	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	
११६	४	सुंहालो, हलको, उन्हो चोपड्यो	सर्व	हास्य जिम जाणवो	
१२६	७	पराघात, उस्सास, आताप, उद्योत, अगुरुलघु, निर्मान, उपघात	सर्व	नपुंसक वेद जिम जाणवो	

अंक		प्रकृति का नाम	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी स्थिति	अबाधाकाल (इतने काल उदय नहीं आवे)
१४९	१	सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त	सर्व तीन	विकलेन्द्री जिम वा	पयो
१५०	११	त्रस बादर, प्रत्येक पर्याप्त स्थावर, अस्थिर, अशुभ दुर्भाग्य दु स्वर अनादेय, अयश कीर्ति	सर्व	नपुंसक वेद जिम वा	पयो
१५५	५	स्थिर, शुभ, शोभाग्य, सुस्वर, आदेय	सर्व	हास्य जिम आपयो	
१५६	१	यश कीर्ति	८ मुहूर्त	१० कोड़ाकोड़ सागर	१००० वर्ष

गोत्र कर्म की २

१५७	१	उच्च गोत्र	ऊपरवत्	ऊपरवत्	ऊपरवत्
१५८	१	नीच गोत्र	सर्व	नपुंसक वेद जिम वा	पयो

नोट—ऊपर [illegible]

[illegible]

[illegible]

अथ काय स्थिति ।

नः	काय स्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी काय स्थिति	जघन्य अन्तरा	उत्कृष्ट अन्तरा
१	जीवको जीव रहै तो	सदाकाल रहै	सदाकाल रहै	०	०
२	नारकी को नारकी रहै तो	१० हजार वर्ष	३३ सागर	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल
३	तिर्यंच को तिर्यंच रहै तो	अतर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल	एवम्	प्रत्येक सागर जाझेरो
४	तिर्यंचणी को तिर्यंचणी रहै तो	एवम्	३ पल्य प्रत्येक पूर्व कोड़	एवम्	अनन्तो काल
५	मनुष्यरो मनुष्य रहै तो	एवम्	३ पल्य प्रत्येक पूर्व कोड़	एवम्	अनन्तो काल
६	मनुष्यणी री मनुष्यणी रहैतो	एवम्	३ पल्य प्रत्येक पूर्व कोड़	एवम्	अनन्तो काल
७	देवता को देवता रहै तो	१० हजार वर्ष	३३ सागर	एवम्	अनन्तो काल
८	देवीरी देवी रहै तो	१० हजार वर्ष	५५ पल्य	एवम्	अनन्तो काल
९	सिद्धां को सिद्धा रहै तो	सादिया	अपज्जवसिया	०	०

नारकी सूं लगाय ने देव्यां ताई ८ बोल अपर्याप्ता रहै तो ज० उ० अन्तर्मुहूर्त्त । नारकी देवता रो पर्याप्ता रहै तो ज० १० हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो उ० ३३ सागर अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो ।

देव्यां को पर्याप्तो रहै तो ज० १० हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो उ० ५५ पल्य अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो ।

तिर्यञ्च तिर्यञ्चणी मनुष्य मनुष्यणी को पर्याप्तो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टो ३ पल्य अन्तर्मुहूर्त्त ऊणो ।

२१	पृथ्वी। अप्प। तेउ। वाउ ए४	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल	अन्तर्मुहूर्त्त	अनतो काल
२२	वनस्पति को वनस्पति रहै तो	एवम्	अनन्तो काल	एवम्	असख्यातो काल
२३	तस को तस रहै तो	एवम्	२हजार सागर जाभेरो	एवम्	अनतो काल
२४	अकायो रो अकायो रहै तो	आद छै	अंत नहीं	०	०

सकाई जाव तसकाय तांई अपर्यासो रहै तो ज० उ० अन्तर्मुहूर्त्त।

सकाय तसकाय को पर्यासो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टो प्रत्येक सौ सागर जाभो।

पृथ्वी अप्प वायु वनस्पति को पर्यासो रहै तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टो संख्याता हजार वर्ष।

तेउ काय को पर्यासो रहै तो ज० अंतर्मुहूर्त्त उ० संख्याता दिन रात।

२६	समचे सूक्ष्म १ सूक्ष्मवनस्पति२	अन्तर्मुहुर्त्त	असंख्यातो काल	अतर्मुहुर्त्त	असंख्यातो काल
३०	सूक्ष्म पृथ्वी। सूक्ष्म अप्प। सूक्ष्म तेउ। सूक्ष्म वायु ए४	एवम्	असख्यातो काल	एवम्	अनन्तो काल

ऊपर सूक्ष्म रा ६ बोल कह्या तेह नो पर्यासो अपर्यासो रहै तो जघन्य उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त्त।

३२	समचे बादर १ बादर वनस्पति २	अतर्मुहूर्त्त	असंख्यातो काल	अन्तर्मुहूर्त्त	असख्यातो काल
३६	बादर पृथ्वी। बादर अप्प। बादर तेउ। बादर वाउ। प्रत्येक शरीरी वनस्पति ए५	एवम्	७०कोड़ाकोड़ सागर	एवम्	अनन्तो काल

नं०	काय स्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी काय स्थिति	जघन्य अन्तरा	उत्कृष्ट अन्तरा
४९	नपुसक वेद	१ समो	अनंतो काल	अन्तर्मुहूर्त्त	प्रत्येक सौ सागर
५०	उपशम अवेदी	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो।
५१	क्षीण अवेदी	साइया अपज्जवसिया		०	०
५२	सकषाई रो सकषाई	२ भेद सवेदीनी परे		०	०
५५	क्रोध। मान माया कषाई मु३	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त
५६	लोभ कषाई रो लोभ कषाई	१ समो	एवम्	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्
५७	उपशम अकषाई	१ समो	एवम्	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
५८	क्षीण अकषाई	साइया सपज्जवसिया		०	०
५९	सलेशी रो सलेशी	२ भेद सजोगीनी परे		०	०
६०	किशन लेशी रो किशन लेशी	अन्तर्मुहूर्त्त	३३सागर अन्तर्मुहूर्त्त अधिक	अन्तर्मुहूर्त्त	३३ सागर अतर्मुहूर्त्त अधिक
६१	नील रो नील	एवम्	१० सागर पल्य रो १ सख्यातमो भाग	एवम्	एवम
६२	कापोत रो कापोत	एवम्	३ सागर पल्यरो असख्यात भाग	एवम्	एवम
६३	तेजु रो तेजु	एवम्	२ सागर पल्य रो असंख्यातमो भाग	एवम्	अनन्तो काल
६४	पद्मरो पद्म	एवम्	१०सागर अतः अधिक	एवम	अनन्तो काल

नं०	काय थिति	जघन्य थिति	उत्कृटी काय थिति	जघन्य आंतरा	उत्कृष्ट आंतरा
७९	मनपर्यवज्ञानी	१ समो	कोड पूर्व देशूणो	अ तर्मुहूर्त्त	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
८१	केवलज्ञान १ केवल दर्शन२	साइया अपज्जवसिया		०	०
८४	मअज्ञानी। मत अ० श्रुतअ० ए३	३ भेद सवेदी नी परे		अ तर्मुहूर्त्त	६६ सागर जाभेरो
८५	विभंग अज्ञानी रो विभग०	१ समो	३३ सागर कोड़ पूर्व	एवम्	अनंतो काल
८६	चक्षु दर्शन	अन्तर्मुहूर्त्त	हजार सागर जाभेरो	एवम्	अनतो काल
८७	अचक्षु दर्शन	२ भेद सइन्द्रियानी परे		०	०
८८	अवधि दर्शन	१ समो	२ छासट सागर जाभेरो	अ तर्मुहूर्त्त	अनतो काल
९१	सजती सामायक छेदोपस्थापनी चारित्र २	१ समो	कोड पूर्व देश ऊणो	एवम्	अर्द्ध पुद्गल परावर्त्त देश ऊणो
९२	पडिहार विशुद्धि चारित्र	१ समो	२९वर्ष ऊणो कोड पूर्व	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
९३	सूक्ष्म सपराय चारित्र	१ समो	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
९४	यथाख्यात चारित्र	१ समो	देशूणो कोड पूर्व	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
९५	संजता संजती	अन्तर्मुहूर्त्त	देशूणो कोड पूर्व	एवम्	अर्द्ध पुद्गल देशूणो
९६	असंजती रो असंजती	३ भेद सवेदी ज्यूं कहणा		१ समो	देशूणो कोड पूर्व
९७	नो संजती नो असंजती	साइया अपज्जवसिया		०	०

नं०	कायस्थिति	जघन्य स्थिति	उत्कृष्टी कायस्थिति	जघन्य आंतरो	उत्कृष्ट अन्तरो
११०	मसार अपरत	दो भेद सजोगी नी परे		०	०
१११	काय परत	अन्तर्मुहूर्त्त	असंख्याती काल	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल
११२	काय अपरत	एवम्	अनन्तो काल	एवम्	असंख्याती काल
११३	पर्यासो रो पर्यासो	एवम्	प्रत्येक सौ सागर जाझो	एवम्	अन्तर्मुहूर्त्त
११४	अपर्यासो	एवम्	अन्तर्मुहूर्त्त	एवम्	प्रत्येक सौ सागर जाझेरो
११५	नो पर्यासो नो अपर्यासो	सादया अपज्जवसिया		०	०
११६	सूक्ष्म रो सूक्ष्म	अन्तर्मुहूर्त्त	असंख्या काल	अन्तर्मुहूर्त्त	असंख्याती काल
११७	बादर रो बादर	एवम्	असंख्या काल	एवम्	असंख्याती काल
११८	नो सूक्ष्म नो बादर	सादया अपज्जवसिया		०	०
११९	सन्नी रो सन्नी	अन्तर्मुहूर्त्त	प्रत्येक सौ सागर जाझो	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल
१२०	असन्नी रो असन्नी रहे सो	अन्तर्मुहूर्त्त	अनन्तो काल	एवम्	प्रत्येक सौ सागर जाझो
१२१	नोसन्नी नो असन्नी	सादया अपज्जवसिया		०	०

श्री जयाचार्य कृत—

भ्रम विध्वंसन की हुण्डी।

मिथ्यात्वि क्रियाऽधिकारः।

१ बाल तपस्वी ने सुपात्र दान, दया, शीलादि करी मोक्ष मार्ग नो देश थकी आराधक कह्यो।

(साख सूत्र भगवती श० ८ उ० १०)

२ प्रथम गुणठाणा नो धणी सुमुख नामे गाथापति, सुदत्त नामा अणगार ने सुपात्र दान देई परित संसार करी मनुष्य नो आउषो बांध्यो।

(साख सूत्र सुखविपाक अ० १)

३ मेघकुमार को जीव मिथ्याती थको हाथी के भव में सुसला री दया पाली परित संसार कीधो।

(साख सूत्र ज्ञाता अ० १)

४ गोशाला नो श्रावक सकडालपुत्र, भगवान ने त्रिण प्रदक्षिणा देई वंदना कीधी।

(उपाशक दशांग अ० ७)

५ मिथ्याती भली करणी लेखै सुव्रती कह्यो छै।

(साख सूत्र उत्तराध्ययन अ० ७ गा० २०)

६ नियागाही सम्यग्दृष्टि (मनुष्य तिर्यंच) एक वैक्रिय शाल और आरूपो न बांधे।

(भाग सूत्र भगवती श० १ उ० १)

७ मिथ्याती मास २ क्षमण तप करें तथा सूर्य की अग्र पै आवे तेतलाज अन्न नो पारणो करें, तिण सम्यग्दृष्टि ना चारित्र धर्म नी सोलमी कला तिण माते तेहनो न्याय।

(उत्तराध्ययन अ० ९ गा० ४४)

८ मिथ्याती मास ७ क्षमण तप करें, पिण माया थी अनन्त ससार रुले।

(सूयगडांग श्रुतस्कन्ध १ अ० २ उ० १ गा० ९)

९ जीव अजीव जाणी नहीं तेहना पच्चखाण दुपच्चखाण कह्या तेहनो न्याय।

[भगवती श० ७ उ० २]

१० भगवान दीक्षा लियाँ पहली, २ वर्ष जाझा (अधिका) घर में विरक्त पणे रह्या तथा काचो पाणी न भोगव्यो।

[प्रथम आचारांग अ० ९ उ० १ गा० ११]

११ जे तत्त्व ना अजाण मिथ्याती, त्यारो अशुद्ध पराक्रम छै ते ससार नो कारण छै। पिण निर्जरा नो

कारण नथी । (पिण शुद्ध प्राक्रम तो निर्जरा नोहिज कारण छै, संसार नो कारण नथी ।

[सूयगडांग श्रु० १ अ० ८ गा० २३]

(क) सम्यग्दृष्टि नो शुद्ध प्राक्रम छै, ते सब निर्जरा नो कारण पिण संसार नो कारण नथी (पिण-अशुद्ध प्राक्रम तो संसार नोहिज कारण, निर्जरा नो कारण नथी ।

[सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ८ गा० २४]

१२ भगवत दीक्षा लेतां इम कह्यो—आज थी सर्वथा प्रकारे मोने (मुझ ने) पाप करवो कल्पै नहीं । इम कही सामायक चारित्र आदर्यो ।

[आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १५]

१३ एक बेला रा कर्म बाकी रह्यां अनुतर विमाण में जाई उपजै ।

[भगवती श० १४ उ० ७]

१४ प्रथम गुणस्थान नी शुद्ध करणी छै, ते आज्ञा मांय छै । तेहनो न्याय ।

१५ प्रथम गुणस्थान ने निर्वद्य कर्म नो क्षयोपशम कह्यो ।

[समवायांग समवाय १४]

१६ अप्रमादी साधु ने अणारम्भी कह्या ।

[भगवती श० १ उ० १]

१७ असोच्चाकेवली अधिकारे इम कह्यो—तपस्यादिक थी समदृष्टि पामें।

[भगवती श० ९ उ० ३१]

१८ सूर्याभ ना अभियोगिया देवता भगवान ने वांद्या तिवारे भगवान कह्यो—ए वन्दना रूप तुम्हारो पुराणो आचार छै १ ए तुम्हारो जीत आचार छै २ ए तुम्हारो कार्य छै ३ ए वन्दना करवा योग्य छै ४ ए तुम्हारो आचरण छै ५ ए वन्दना नी म्हारी आज्ञा छै ६।

[रायप्रसेणी देवाधिकार]

१९ खन्धक सन्यासी, गौतम ने पूछ्यो, हे गौतम! तुम्हारा धर्माचार्य महावीर ने वांदा यावत् सेवा करां। तिवारे गौतम कह्यो, हे देवानुप्रिय! जिम सुख होवे तिम करो पिण विलम्ब मत करो।

[भगवती श० २ उ० १]

(क) दीक्षा नी आज्ञा पर भगवत पार्श्वनाथ 'अहा सुहं' पाठ कह्यो।

[पुष्फ चूलिया]

२० भगवन्त श्री महावीर, खन्धक ने पडिमा वहवानी आज्ञा दीधी।

[भगवती श० २ उ० १]

२१ तामली तापसनो अनित्य चिन्तवना ।

[भगवती श० ३ उ० १]

२२ सोमल ऋषिनी शुद्ध चिन्तवना ।

[पुष्फयोपांग अ०३]

२३ छद्मस्थ भगवान श्रीमहावीर नी अनित्य चिन्तवना।

[भगवती श० १५]

२४ अनित्य चिन्तवना ने धर्म ध्यान को भेद कह्यो ।

[उववाई]

२५ च्यार प्रकारे देवायु बंधै—सराग सञ्जम पाली १ श्रावक पणो पाली २ बाल तप करी ३ अकाम निर्जरा करी ४ तथा च्यार प्रकारे मनुष्यायु बांधै—प्रकृति भद्रिक १ प्रकृति विनीत २ दया परिणाम ३ अमत्सर भाव ।

[भगवती श० ८ उ० ६]

२६ गोशाले के शिष्यां के च्यार प्रकार नो तप कह्यो— उग्र तप १ घोर तप २ रस परित्याग ३ जीभ्या इन्द्री वश कीधी ४ ।

[ठाणांगठाणें ४ उ० २]

२७ अन्य दर्शणी पिण सत्य वचन ने आदर्यो ।

[प्रश्न व्याकरण संवरद्वार २]

२८ वाणव्यन्तर ना देवता देवी वनखण्ड ने विषै बैसे,

सूवै जाइ क्रीड़ा करै। पूर्व भवे भला प्राणमफोटया तेहना फल भोगवै।

[जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति]

२६ मिथ्यात्वी प्रकृति भद्रादि गुण थी वाणव्यन्तर देवता थाय।

[उववाई प्रश्न ०]

दानाऽधिकारः।

१ असयती ने दीधा पुन्य पाप को न्याय।

२ आणन्द श्रावक इण विधि अभिग्रह लीधो—जे हूं आज थकी अन्य तीर्थी ने अन्य तीर्थी ना देव ने तथा अन्य तीर्थी ना ग्रह्या अरिहन्त ना चैत्य साधु भ्रष्ट थया। ए तीमा प्रति वांदू नहीं, नमस्कार करूं नहीं, असनादिक देऊं नहीं, देवाऊं नहीं, बिना बतलाया एक बार तथा घणी बार बोलाऊं नहीं, तथा असनादिक च्यार आहार देऊं नहीं। अनेरा पास थी दिराऊं नहीं। छिण एतलो आगार—राजा ने आदेशे आगार १ घणा कुटुम्ब ने समुदाय ना आदेशे आगार २ कोई एक बलवन्त ने परवश पणे आगार ३ देवता ने परवश

पणे आगार ४ कुटुम्ब में थडेरो ते गुरु कहिये तेहने आदेशे आगार ५ अटवी कन्तार ने विषै आगार ६ ए छव छण्डी आगार राख्या तो पोता री कचाई जाणी ने राख्या ।

[उपाशक दशांग अ० १]

३ तथा रूप जे असंयती ने फासू अफासू सूझतो असूझतो अशनादिक दीधां एकान्त पाप निर्जरा नथी ।

[भगवती श० ८ उ० ६]

४ जे साधु कष्ट उपना एम विचारै । जे अरिहन्त भगवन्त निरोगी काया ना धणी, पोता ना कर्म खपावा ने उदेरी ने तप करै । तो हूं लोच ब्रह्म-चर्यादिक अनेक रोगादिक नी वेदना, किम न सहूं । एतले मुझ ने वेदना सम भावे न सहतां, एकान्त पाप कर्म हुवै तो वेदना समभावे सहतां निर्जरा हुवै ।

[ठाणागठाणे ४ उ० ३]

५ साधु नी वेला निन्दा करतो अशनादि देवै तिहां "पडिलाभित्ता" पाठ कह्यो ।

[भगवती श० ५ उ० ६]

(क) तथा साधु ने वंदना नमस्कार करतो थको

अशनादिक देवी तिहां पिण 'पड़िलाभित्ता' पाठ कह्यो।

[भगवती श॰ ७ उ॰ १]

६ पोट्टिला आर्यां महासतीने अशनादिक दीधा तिहां "पडिलामे" पाठ कह्यो। ते माटे "पडिलामे" नाम देवा नों छै पिण साधु असाधु जाणवा रो नहीं।

(ज्ञाता अध्ययन १४)

७ साधु ने अशनादिक परिठावे तिहां "दलएज्जा" पाठ कह्यो छै। ते माटे "दलएज्जा" कहो भावे 'पडिलामेज्जा" कहो दोनों एक अर्थ छै।

(आचारांग श्रु॰ २ अ॰ १ उ॰ ६)

८ सुदर्शन सेठ शुकदेव सन्यासी ने अशनादिक आप्यो तिहां "पडिलाभमाणे" पाठ कह्यो।

(ज्ञाता अ॰ ५)

६ 'पडिलाभ' नाम देवानोहिज छै।

(सूयगडांग श्रु॰ २ अ॰ ' गा ११)

१० आर्द्र मुनि ने विमा कह्यो—जो बे हजार कहना दो हजार ब्राह्मण जिमावे ते महा पुन्य स्कन्ध उपार्जी देवता हुइ। एह्यो म्हारे वेद में कह्यो छै। तिवारे आर्द्र मुनि बोल्या, हे विप्रो ! जे

मांस ना गृद्धी घर घर ने विषै मार्जार नी परै भ्रमण करणहार एहवा बे हजार कुपात्र ब्राह्मणां ने नित्य जिमाड़ै ते जिमाड़नहार पुरुष ते ब्राह्मणां सहित बहु वेदना छै जेहने विषै एहवी महा असह्य वेदना युक्त नरक ने विषै जाइं। अने दया रूप प्रधान धर्म नी निन्दाना करणहार हिंसादिक पञ्च आस्रव नी प्रशंसाना करणहार एहवो जो एक पिण दुःशीलवन्त निर्व्रती ब्राह्मण जिमाड़ै ते महाअन्धकारयुक्त नरक में जाइं। तो जे एहवा घणा कुपात्र ब्राह्मणा ने जिमाड़े तेहनो युं कहिवो। अने तमे कहो छो जे जिमाड़णहार देवता हुइं तो हमें कहां छां जे एहवा दातार ने असुरादिक अधम देवता नी पिण प्राप्ति नहीं, तो जे उत्तम वैमानिक देवता नी गति नी आशा एकान्त निराशा छै।

(सूयगडाँग श्रु० २ अ० ६ गा० ४३, ४४, ४५)

१ भृगु ने पुत्रां कह्यो, वेद भण्यां त्राण शरण न हुवै तथा ब्राह्मण जिमायां तमतमा जाय। (तमतमा ते अंधारा में अंधारो) एहवी नर्क।

(उत्तराध्ययन अ० १४ गा० १२)

२ श्रावक पिण विप्र जिमाड़ै तेहनो न्याय च्यार प्रकारे नरकायु बांधे तिणेकरी ओलखायो।

(भगवती शतक ८ उ० ६)

(क) मलि श्रावक विण विप्र जिमाडै निण ऊपर मालमर्ण थी समन्ता मर्‌ै ना भाव। तेहनो न्याय ।

(भगवती शतक ७ उ० १)

१३ जे सावद्य दान प्रशंसै तेहनें छ काय नो वध नो वछणहार कह्यो। अने वर्तमान काले निषेधे त्यांने अन्तराय नो पाडणहार कह्यो। ते माटे साधु नें वर्तमान में मौन राखिवे कही।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ११ गा० २०, २१)

१४ दान देवै तेहै, इसो वर्तमान देखी गुण दूषण कहणो नहीं।

(सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ७ गा० ११)

१५ नन्दण मणिहारो दानशालादिक नो घणो आरम्भ करी मरीने पोतारी वावड़ी मेंज डेडको थयो।

(ज्ञाता अ० १३)

१६ भगवान दश प्रकार ना दान परूप्या। (सावद्य निर्वद्य ओलखणा)

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

१७ दश प्रकार नो धर्म कह्यो (सावद्य निरवद्य ओलखणा) अने दश प्रकार ना स्थविर कह्या लौकिक लोकोत्तर विहु जाणवा।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

१८ नव विधि पुण्य कह्यो (सावद्य निर्वद्य ओलखणा)

(ठाणाङ्ग ठाणे ६)

१६ च्यार प्रकार ना मेह तिमहिज च्यार प्रकार ना पुरुष, कुपात्र ने कुक्षेत्र जिसा कह्या ।

(ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० ४)

२० शकडालपुत्र गोशाला प्रते कह्यो—हे गोशाला ! तूं मांहरा धर्माचार्य श्री महावीर ना गुण कीर्तन कस्था । ते माटे देऊं छूं तुमने पीढ, फलग, सेज्यादि । पिण धर्म तप ने अर्थे नहीं ।

(उपाशकदशा अ० ७)

२१ मृगालोढा प्रति देखने गौतम, भगवान ने पूछ्यो— हे भगवन्त ! इण पूर्व भवे कांई कुपात्र दान दीधा ? कांई कुशीलादि सेव्या ? अने कांई मांसादि भोगव्या ? तेहना फल ए नर्क समान दुःख भोगवै छै। तो जोवोनी कुपात्र दान ने चौड़े भारी कुकर्म कह्यो ।

(दुःखविपाक अ० १)

२२ ब्राह्मणां ने पापकारी क्षेत्र कह्या ।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० १४)

२३ पन्द्रह कर्मादान ने व्यापार कह्या ।

(उपाशकदशा अ० १)

२४ भात पाणी थी पोष्या धर्माधर्म नो न्याय।

(उपासकदशा अ० १

२५ तुंगिया नगरी ना श्रावका ना उघाड़ा बारणा रो न्याय।

(भगवती श० २ उ० ५ टब्बा में)

२६ श्रावक ना त्याग ते व्रत अने आगार ते अव्रत।

(उववाई प्रश्न २० तथा सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० २)

२७ दश प्रकार ना शस्त्र कह्या तिणमें अव्रत ने भाव शस्त्र कह्यो।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

२८ जे श्रावक देशथकी निवर्त्यो अने देशथकी पच्चखाण कीधा तिणे करी देवता थाय। पिण अव्रत थी देवता न हुवै।

(भगवती श० १ उ० ८)

२९ साधु ने सामायक में बहिरायां सामायक न भागै तेहनो न्याय।

(भगवती श० ८ उ० ५)

३० श्रावक जिमावै तिण ऊपर महावीर पार्श्वनाथ ना साधु नो न्याय मिलै नहीं।

(उत्तराध्ययन अ० २३ गा० १६)

३१ असोचा केवली, अन्यलिङ्गी रहा पोते तो धीरया

न देवै। पिण अनेरा पासे दीख्या लेवा नो उपदेश करै।

(भगवती श० ६ उ० ३१)

३२ अभिग्रहधारी अने परिहार विशुद्ध चारित्रियो कारण पड्यां अनेरा साधु ने अशनादि देवै।

(बृहत्कल्प उ० ४ बोल २७)

३३ गृहस्थादिक ने देवो साधु संसार भ्रमण नो हेतु जाणी छोड्यो।

(सूयगडाँग श्रु० १ अ० ६ गा० २३)

३४ गृहस्थी ने दान दियां अने देतां ने अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो।

(निशीथ उ० १५ बोल ७४-७५)

३५ आणन्द ने संथारा में पिण गृहस्थ कह्यो।

(उपाशकदशांग अ० १)

३६ गृहस्थी नी व्यावच्च कियां, करायां, भलि अनुमोद्यां २८ मो अणाचार कह्यो।

(दशवैकालिक अ० ३ गा० ६)

३७ इग्यारमी पड़िमा में पिण प्रेम बंधण तूट्यो नथी।

(दशा श्रुतस्कन्ध अ० ६)

३८ पड़िमाधारी रे कवच ऊपर अम्बड़ सन्यासी ना कवच नो न्याय

(जथार्थ प्रश्न १९)

३६ अनेरा मन्यासी नो कल्प।

(उपासग प्र० ५)

४० वर्ण नाग नतुओ संग्राम में गयो तिहां एहवो अभिग्रह धारयो—म्हारै मुझने जे पूर्व हणै तेहने हणवो। जे न हणै तेहने न हणवो।

(भगवती श० ७ उ० ९)

४१ जे एकेक अन्य तीर्थी थकी गृहस्थ श्रावक सर्व प्रते करी प्रधान अने सर्व श्रावक थकी साधु सर्व प्रते करी प्रधान।

(उत्तराध्ययन अ० ५ गा० २०)

४२ श्रावक नी आत्मा अधिकरण कही छै। अधिकरण ते छकाय नो शस्त्र जाणवो।

(भगवती श० ७ उ० १)

(क) भरतजी के घोड़े ने ऋषि की उपमा दीधी। निमहिअ श्रावक ने 'समण भुया' कह्यो पिण ते देशथकी उपमा जाणवी।

(जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति)

४३ च्यार व्यापार कह्या—मन, वचन, काया और उपकरण। ए च्यारूं व्यापार सन्नी पंचेन्द्रियरे कह्या। ए च्यारूं भूंडा व्यापार पिण १६ दण्डक सन्नी पंचेन्द्रियरे कह्या। अने ए च्यारूं भला व्यापार तो संयती मनुष्यारेज कह्या।

(ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० १)

अनुकम्पाऽधिकारः ।

१ असंयती जीवां रो जीवणो वांछणो घणे ठामे वर्ज्यो ते साख रूप बोल ।

२ पोताना कर्म खपावा तथा अनेरा (आर्य क्षेत्र ना मनुष्य) तारिवा निमित्त भगवान धर्म कहै। पिण असंयती जीवां ने बचावा अर्थे नहीं ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ६ गा० १७-१८)

३ पोताना पाप टालवा भणी नेमनाथ भगवान पाछा फिस्या।

(उत्तराध्ययन अ० २२ गा० १८-१६)

४ मेघकुमार नो जीव हाथी ने भवे सुसलानी अनुकम्पा कीधी, सुसला ने च्यार नाम करी बोलायो ।

(ज्ञाता अ० १)

(क) तथा मेढाई निग्रन्थ ने छः नामे करी बोलायो।

(भगवती श० २ उ० १)

५ पड़िमाधारी नो कल्प 'घहाय गहाय' पाठ नो अर्थ ।

(दशाश्रुतस्कन्ध अ० ७)

६ राग द्वेष आणी 'मार तथा मत मार' इम कहिवो वर्ज्यो ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३०)

७ गृहस्थां ने मांहो मांही लड़ता देखी—एहने हण

तथा एहने मन रूप एहवो मन में पिण विचार न करै।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

८ गृहस्थी ने, साधु 'अग्नि प्रज्वाल तथा बुझाय' इम न कहै।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

९ दश प्रकार नी याचा करी।

(ठाणांग ठाणे १०)

१० असंयम जीवतव्य वाञ्छणो वर्ज्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १० गा० २४)

११ असंयम जीवणो मरणो वाञ्छणो वर्ज्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १३ गा० २३)

१२ साधु असंयम जीवितव्य ने पूठ देई विचरै।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १५ गा० १०)

१३ असंयम जीवणो वाञ्छणो वर्ज्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० १५)

१४ असंयम जीवणो वाञ्छै तिणने बाल अज्ञानी कह्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ७ उ० १ गा० ३)

१५ साधु आपणी आत्मा में असंयम जीवितव्य की अर्थी न करै।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १० गा० ३)

१६ असंयम जीवणो वाञ्छणो वर्ज्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १६)

१७ संयम जीवितव्य वधारवो कह्यो ।

[उत्तराध्ययन अ० ४ उ० ७]

१८ संयम जीवितव्य दुर्लभ कह्यो ।

[सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १]

१९ मिथिला नगरी बलती देखी, नमिराजर्षि साह्मो न जोयो । वलि कह्यो म्हारै राग द्वेष करवा माटै वाह्लो दुवाह्लो एक पिण नहीं । ए मिथिलापुरी बलतां थकां मांह्रो किञ्चितमात्र पिण बलै नथी । मैं तो (संयम में सुख से जीऊं अने सुख से बसूं छूं) ।

[उत्तराध्ययन अ० ९ गा० १२-१३-१४-१५]

२० देवता, मनुष्य, तिर्यंच ए तीनां नूं माह्रों मांही विग्रह देखी अमुक नी जय होवो अने अमुक नी अजय होवो एहवो वचन साधु ने बोलणो नहीं ।

[दशवैकालिक अ० ७ गा० ५०]

२१ वायरो, वर्षा, सीत, तावड़ो, राज विरोध रहित, सुभिक्ष पणो, उपद्रव रहित पणो, ए सात बोल हुवो इम साधु ने कहिवो नहीं ।

[दशवैकालिक अ० ७ गा० ५१]

२२ समुद्रपाली चोर ने मरतो देखी वैराग्य पामी चारित्र लीधो पिण चोरनी अनुकम्पा करि छोड़ायो नथी ।

[उत्तराध्ययन अ० २१ गा० ९]

२३ जे साधु पोतानी अनुकम्पा करे पिण अनेरा री अनुकम्पा न करे।

[ठाणांग ठाणे ४ उ० ३]

२४ अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ मार्ग भूलाने साधु मार्ग बतावे तो चौमासी प्रायश्चित्त आवे।

[निशीथ उ० १३ बोल ९]

२५ हिंसादिक अकार्य करता देखी, धर्म उपदेश दई समझावणो तथा अणबोल्यो रहे तथा उठी एकान्त जावणो कह्यो।

[आचार अ० १ उ० १]

२६ साधु अनेरा जीवां में भय उपजावे, तो प्रायश्चित्त कह्यो।

[निशीथ उ० ११ बोल १

२७ गृहस्थ री रक्षा निमित्ते मन्त्रादिक क्रिया करि अनुमोद्या चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो।

[निशीथ उ० ११ बोल १६

२८ चुलणी पिया, पोषा में माता ने बचायवा उठ्यो तो व्रत नियम भांग्या कह्या।

[उपासक दशा अ० ३]

२९ नावा में पाणी आवतो देखी साधु ने गृहस्थ प्रते बतावणो नहीं।

[आचारांग श्रु० २ अ० ३ उ०

३० साधु अनुकम्पा आणी त्रस जीव ने बांधै बंधाव तथा बांधते प्रते भलो जाणै तथा बंधिया जीवां ने अनुकम्पा आणी छोडै, छुड़ावै छोड़ते ने भलो जाणै तो प्रायश्चित कह्यो।

[निशीथ उ० १२ बोल १-२]

३१ साधु कुतूहल निमित्त त्रस जीव ने बांधै बंधावै अने छोड़ै छुड़ावै तो प्रायश्चित कह्यो।

[निशीथ उ० १७ बोल १-२]

३२ जे साधु पच्चखाण भांगै अने भांगता ने अनुमोदे तो दण्ड कह्यो।

[निशीथ उ० १२ बोल ३-४]

३३ गृहस्थ साधु नी अनुकम्पा आणी तैलादि मर्दन करै तिहां 'कोलुण वडियाए' पाठ कह्यो।

[आचाराङ्ग श्रु० २ अ०.२ उ० १]

३४ हरिणगवेषी सुलसां नी अनुकम्पा कीधी।

[अन्तगड़ वर्ग ३ अ० ८]

३५ कृष्णजी डोकरानी अनुकम्पा करी ईंट उपाड़ी।

[अन्तगड़ वर्ग ३ अ० ८]

३६ हरिकेशी नी अनुकम्पा आणी यक्षे विप्रां ने ऊंधा पाड्या।

[उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ८ से २५ नां]

३७ धारणी राणी गर्भनी अनुकम्पा आणी मन गमता अशमादिक खाया।

[ज्ञाता अ० १]

३८ अभयकुमार मी अनुकम्पा आणी देवता मेल्यो साधो।

[ज्ञाता अ० १]

३९ जिन ऋषि करुणा आणी रयणादेवी र सामो जोयो।

[ज्ञाता अ० ९]

४० प्रथम आस्रव द्वार ने करुणा रहित कह्यो।

[प्रश्न व्याकरण अ० १]

४१ करुणा सहित जिन ऋषि ने रयणा देवी दया रहित परिणामे करि हण्यो।

[ज्ञाता अ० ९]

४२ सूर्याभ देवतारी नाटक रूप भक्ति कही।

[राय प्रश्नेणी]

४३ यक्षे छात्रा ने कंपा पाड़्या ते हरिकेशीनी व्यावच कही।

[उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२]

४४ भगवान शीतल तेजू लब्धि करी गोशाला ने बचायो तिहां 'अणुकम्पणट्ठाए' पाठ कह्यो।

[भगवती श० १५]

लब्धि अधिकारः ।

१ वैक्रिय तथा तेजस लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ।

[पन्नवणा पद ३६]

२ आहारिक लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ।

[पन्नवणा पद ३६]

३ आहारिक लब्धि फोड़ै तिणने प्रमाद आश्री अधिकरण कह्यो ।

[भगवती श० १६ उ० १]

४ जंघाचारण अथवा विद्याचारण लब्धि फोड़ी बिना आलोयां मरै, तो विराधक कह्यो ।

[भगवती श० २० उ० ६]

५ वैक्रिय लब्धि फोड़ै तिणने मायी कह्यो अने आलोयां बिना मरै, तो विराधक कह्यो ।

[भगवती श० ३ उ० ४]

६ सात प्रकारे छद्मस्थ तथा सात प्रकारे केवली जाणीजै ।

[ठाणांग ठाणे ७]

७ अम्बड सन्यासी वैक्रिय लब्धि फोड़ी, सौ घरां

पारणो कीधो ते लोकां ने विस्मय उपजावणी।

[भगवती श० १५]

८ साधु अनेरा ने विस्मय उपजावे तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो।

[निशीथ उ० ११]

प्रायश्चित्ताऽधिकारः ।

१ सींहो अणगार मोटे मोटे शब्दे रोयो।

[भगवती श० १५

२ अइमुत्तो साधु पाणी में पात्री तराई।

[भगवती श० ५ उ० ४]

३ रहनेमी, राजमती ने विषय रूप वचन बोलयो।

[उत्तराध्ययन अ० २२ गा० ३८]

४ धर्मघोषना साधा नागश्री ब्राह्मणी ने बाजार में हेली निन्दी।

[ज्ञाता अ० १६]

५ सेलक ऋषि ने उसनो पासत्थो कह्यो।

[ज्ञाता अ० ५]

गोशाला नो जीव विमलवाहन राजा ने सुमङ्गल नामे अणगार, तेजू लब्धिइं करी हणस्ये।

[भगवती श० १५]

७ खंधक नामे अणगार संथारो कीधो तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो।

[भगवती श० २ उ० १]

८ तिसक मुनि ने छेहड़ै तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो।

[भगवती श० ३ उ० १]

६ कार्तिक सेठ ने छेहड़ै तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो।

[भगवती श० १८ उ० २]

१० कषाय कुशील नियण्ठा नो वर्णन।

[भगवती श० २५ उ० ६]

११ दृष्टिवाद नो धणी पिण वचन खलावै।

[दशवैकालिक अ० ८ गा० ५०]

१२ अनुत्तर विमाण ना देवता उदीर्ण मोह नथी, अने क्षीण मोह नथी, उपशांत मोह छै।

[भगवती श० ५ उ० ४]

१३ हाथी अने कुंथुआ के अपचखाण की किया समान कही।

[भगवती श० ७ उ० ८]

१४ सर्व भवी जीव मोक्ष जास्ये ।

[भगवती श० १२ उ० २]

१५ पुद्गलास्तिकाय में ८ स्पर्श कह्या ।

[भगवती श० १२ उ० ५]

गोशालाऽधिकारः ।

१ भगवन्त गौतम ने कह्यो—हे गौतम ! गोशालै मोने कह्यो तुम्हें म्हारा धर्माचार्य अने हूं आपरो धर्मान्तेवासी शिष्य । तिवारे में अङ्गीकार कीधु ।

[भगवती श० १५]

२ सर्वानुभूति, सुनक्षत्र मुनि गोशाला ने कह्यो—हे गोशाला ! तोने भगवान मूंड्यो । तोने भगवान प्रवर्या दीधी । तोने शिष्य कियो । तोने सिखायो अने तोने बहुश्रुति कियो । तूं भगवान सूंडज मिथ्यात्व पडिवज्जी छै ?

[भगवती श० १५]

३ भगवान पिण कह्यो—हे गोशाला ! मैं तोने प्रवर्या दीधी ।

[भगवती श० १५]

४ गोशाला ने कुशिष्य कह्यो ।

[भगवती श० १५]

गुणवर्णनाऽधिकारः ।

१ गणधरां भगवान ना गुण किया ।

(आचारांग श्रु० १ अ० ६ उ० ४ गा० ८)

२ भगवान, साधां ना अनेक गुण किया ।

(उववाई प्रश्न २१)

३ कौणक ने माता पिता नो विनीत कह्यो ।

(उववाई)

४ श्रावकां ने धर्म ना करणहार कह्या ।

(उववाई प्रश्न २०)

५ गौतम ना गुण कह्या ।

(भगवती शतक १ उ० १)

लेश्याऽधिकारः ।

१ छद्मस्थ तीर्थंकर में कषाय कुशील नियण्ठो कह्यो ।

(भगवती श० २५ उ० ६)

२ कषाय कुशील नियण्ठा में छः लेश्या कही ।

(भगवती श० २५ उ० ६)

३ सामायक चारित्र छेदोस्थापनीय चारित्र में छः लेश्या पावै ।

(भगवती श० २५ उ० ७)

४ छ लेश्या ना लक्षण ।

(आवश्यक अ० ४)

५ च्यार ज्ञानवाला साधु में पिण कृष्ण लेश्या कही छै।

(पन्नवणा पद १७ उ० ३)

६ कृष्ण, नील अने कापोत लेश्या में च्यार ज्ञान नी भजना कही।

(भगवती श० ८ उ० २)

७ कृष्णादिक तीन लेश्या प्रमादी साधु में हुवै।

(भगवती श० १ उ० १)

८ तेजू पद्म लेश्या सरागी में हुवै।

(भगवती श० १ उ० २)

९ संयती में पिण कृष्ण लेश्या हुवै।

(पन्नवणा पद १७ उ० १)

वैयावृत्ति अधिकारः ।

१ यक्षे ब्राह्मण ने ऊंधा पाड्या ते हरकेशी नी व्यावच कही।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२)

२ सूर्याभ देव नी नाटक रूप भक्ति कही।

प्रश्नेणी)

३ भगवान ना अङ्गोपाङ्ग ना हाड भक्तिइं करी देवता ग्रहण करैं।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

४ बीस बोल करी तीर्थंकर गौत्र बंधै।

(ज्ञाता अ० ८)

५ साता दियां साता हुवै इम कहै ते आर्य मार्ग थी अलगो। समाधि मार्ग थी न्यारो। जिन धर्म री हेलणा रो करणहार। अल्प सुखां रे अर्थे घणा सुखां रो हारणहार। ए असत्य पक्ष अण छांडवे करी मोक्ष नहीं। लोह वाणिया नी परै घणो झूरसी।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० ६-७)

६ पांच स्थान के करी श्रमण निर्ग्रंथ ने महा निर्जरा हुवै। तिहां कुल गण संघ साधर्मी साधु ने कह्या।

(ठाणाङ्ग ठाणे ५ उ० १)

७ दश प्रकार नी व्यावच्च साधुरैइज कही।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

८ पुनः दश प्रकार नी व्यावच्च साधुरैइज कही।

(उववाई)

९ साधु ना समुदाय ने गण संघ कह्यो।

(भगवती श० ८ उ० ८)

१० साधन व्याख्यान पर भिक्षुगणिराज कृत वार्तिक कहे छै।

११ साधु ना अर्थ छेदै तिण पंथ ने मिथ्या कही।

(भगवती शतक १८ उ० ६)

१२ साधु अन्य तीर्थी तथा गृहस्थ पासे अर्श छेदावे तथा कोई अनेरा साधुनी अर्श छेदता अनुमोदै तो मासिक प्रायश्चित आवै।

(निशीथ उ० १५ बोल ३१)

१३ साधु रो गुमडो गृहस्थ छेदै तो साधु ने मने करी अनुमोदवो नहीं तथा वचन अने काया करी करावै नहीं।

(आचारांग श्रु० २ अ० १३)

विनयाऽधिकारः।

---

१ दोय प्रकार नो विनय मूल धर्म कह्यो साधु ना पंच महाव्रत ते साधु नो विनयमूल धर्म अने श्रावक ना १२ व्रत तथा ११ पडिमा ते श्रावक नो विनयमूल धर्म।

..०)

२ पांडुराजा अने पांच पांडव माता कुन्ती सहित नारद से त्रिप्रदक्षिणा देई वन्दना नमस्कार कियो। घणो विनय कियो।

(ज्ञाता अ० १६)

३ जिन पांडु नारद नो विनय कियो तिमहिज कृष्ण पिण नारद नो विनय कियो।

(ज्ञाता अ० १६)

४ साधु गृहस्थादिक ने वांदतो थको अशनादिक जाचै नहीं।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० २ गा० २६)

५ अम्बड़ ने चेला धर्माचार्य कही नमोत्थुणं गुण्यो।

(उववाई अ० १२)

६ धर्माचार्य साधु ने कह्या।

(राय प्रसेणी)

७ भरत चक्रवर्ती चक्र रत्न ने नमस्कार कियो।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

८ तीर्थंकर जन्म्या ते द्रव्य तीर्थंकर ने इन्द्र नमोत्थुणं गुण नमस्कार करै।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

९ इन्द्र एहवूं कह्यो जे तीर्थंकर नी जन्म महिमा करूं ते म्हारो जीत आचार छै पिण ए महिमा धर्म हेतु करूं इम नथी कह्यो।

[जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति]

१० तीर्थंकर नी माता ने इन्द्र प्रदक्षिणा देई नमस्कार करे।

[जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति]

११ अरिहन्तादिक पांच पदांनिज नमस्कार करवो कह्यो।

[चन्द्र प्रज्ञप्ति पा० [illegible]]

१२ सर्वानुभूति अणगार गोशाले ने श्रमण माहण नो रिज विनय करवा कह्यो।

(भगवती श० १५)

१३ अठारह पाप सूं निवर्त्या तेहने माहण कह्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १६)

१४ माहण नाम साधुरोहिज कह्यो।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० १)

१५ त्रस स्थावर त्रिविधे २ न हणे तेहने माहण कह्यो तथा और भी अनेक लक्षण माहणना बताया।

(उत्तराध्ययन अ० २५ गा० १९ से २९ तांई)

१६ समण माहण सर्व अतिथि नो नाम कह्यो।

(अनुयोग द्वार)

१७ श्रावक ने एतला नामे करी बोलावणो कह्यो— हे श्रावक! हे उपासक! हे धार्मिक! हे धर्म प्रिय! एहवा नामा करी बोलावणो कह्यो।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० ४ उ० १)

पुण्याऽधिकारः ।

---

१ परलोक ने अर्थे तप नहीं करवो ।

(दशवैकालिक अ० ६ गा० ४)

२ गाढा पुण्य न करै तो मरणान्ते पश्चाताप करे ।

(उत्तराध्ययन अ० १३ गा० २१)

३ पुण्यपद सांभली भरत चक्रवर्ती दीक्षा लीधी ।

(उत्तराध्ययन अ० १८ गा० ३४)

४ अकृत पुण्य ना धणी धर्म सांभली प्रमाद करै ते संसार में भ्रमण करै ।

(प्रश्न व्याकरण अ० ५)

५ यश नो हेतु तप संयम कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० ३ गा० १३)

६ आत्मा ने अयश अर्थात् असंयम करी जीव नरक में उपजै ।

(भगवती शतक ४१ उ० १)

७ नरक ना हेतु ने नरक कही ।

(उत्तराध्ययन अ० ५ गा० ८)

८ मृग सरिसा अज्ञानी ने मृग कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ५)

आस्रवाऽधिकारः ।

---

१ पञ्च आस्रव द्वार कह्या ।

(ठाणाङ्ग ठा० ५ तथा समवायाङ्ग स० ५)

(क) तथा मिथ्यादृष्टि नैं अरूपी कह्यो ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

२ पञ्च आस्रव ने कृष्ण लेश्या ना लक्षण कह्या ।

(उत्तराध्ययन अ० ३४ गा० २१-२२)

३ सम्यक्त्व अने मिथ्यात्व ने जीव क्रिया कही ।

(ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १)

४ दश प्रकार नो मिथ्यात्व कह्यो ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

५ अठारह पाप में वर्त्ते तेहिज जीव अने तेहिज जीवात्मा कही ।

(भगवती श० १७ उ० २)

६ जीव अजीव परिणामी रा दश २ भेद कह्या ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

७ कषाय, जोग, दर्शन ए आत्मा कही ।

(भगवती श० १२ उ० १०)

८ उदय निष्पन्न रा तेतीस बोलां ने जीव कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

९ उत्थानादिक ने अरूपी कह्या ।

(भगवती श० १७ उ० ५)

१० क्रोधादिक ने भाव संयोगी कह्या ।

[अनुयोग द्वार]

११ क्रोधादिक ने भाव लाभ कह्यो ।

[अनुयोग द्वार]

१२ अकुशल मनने रूंधवो कह्यो ।

[उववाई]

१३ माठा भाव थी ज्ञानादिक खपै ।

[अनुयोग द्वार]

१४ आस्रव ने, मिथ्या दर्शनादिक ने जीवरा परिणाम कह्या ।

[ठाणांग ठाणा ६]

सम्वराऽधिकारः ।

१ पंच सम्वर द्वार प्ररूप्या ।

[ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० २ तथा समवायाङ्ग स० ५]

२ जीव रा ज्ञानादिक ज्व लक्षण कह्या ।

[उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ११-१२]

३ चारित्र ने जीव गुण परिणाम कह्या ।

[अनुयोग द्वार]

४ सम्वर ने आत्मा कही ।

[भगवती श० १ उ० ९]

५ अठारह पाप ना विरमण में अरूपी कह्यो ।

[भगवती श० १२ उ० ५]

६ अठारह पाप ना विरमण ने जीव द्रव्य कह्यो ।

[भगवती श० १८ उ० ४]

जीव भेदाऽधिकारः ।

१ विशिष्ट अवधि रहित ने असंज्ञीभूत कह्यो ।

[पन्नवणा पद १५ उ० १]

२ मन्द्रा बालक तथा बालिका ने असंज्ञीभूत कह्या ।

[पन्नवणा पद ११]

३ आठ सूक्ष्म कह्या ।

[दशवैकालिक अ० ८ गा० १५]

४ तेऊ वाऊ ने त्रस कह्या ।

[जीवाभिगम प्र० १]

५ सम्मूर्च्छिम मनुष्य में पर्याप्त अपर्याप्ता बिहु नामे करी बोलाव्यो ।

[अनुयोग द्वार]

६ असुर कुमार ने उपजती वेला में वेद कह्या ।

[भगवती श० १३ उ० २]

आज्ञाऽधिकारः ।

---

१ वीतराग ना पग थकी जीव मुवां ईर्यावहि किया कही ।

[भगवती श० १८ उ० ८]

२ सम्यक् मानता ने असम्यक् पिण सम्यक् हुइं ।

[आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० ५]

(क) तीन उदक ना लेप लगावै तिणने सबलो दोष कह्यो ।

[दशाश्रुतस्कन्ध अ० २]

३ पांच मोटी नदी एक मास में वे वार अथवा तीन वार उतरवो कल्पे नहीं ।

[वृहत्कल्प उ० ४]

४ साधु ने नदी उतरवो कह्यो ।

[अचाराङ्ग श्रु० २ अ० ३ उ० २]

५ पाणी में डूबती थकी साध्वी ने साधु बाहिर काढे तो आज्ञा उलंघे नहीं ।

[वृहत्कल्प उ० ६]

६ रात्रि में सिझायदिक ने अर्थे बाहिर जावणो कल्पै ।

[वृहत्कल्प उ० १]

—:—

अतित्त आहाराऽधिकारः ।

१ ठण्डो आहार भोगवणो कह्यो ।

[उत्तराध्ययन अ० ८ गा० १२]

२ भगवन्त ठण्डो आहार लीधो कह्यो ।

[आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ९ उ० ४]

३ धन्ने अणगार न्हाखिवो आहार लियो ।

[अनुत्तर उववाइ]

४ अरस विरस तथा शीतलादिक आहार भोगवो । साधु ने द्वेष न करिवो ।

[प्रश्न व्याकरण अ० १०]

सूत्र पठनाऽधिकारः ।

१ साधुनेइज सूत्र भणवा री आज्ञा दीधी ।

[प्रश्न व्याकरण अ० ६]

२ साधु सूत्र भणे तिण री मर्यादा कही ।

[व्यवहार उ० १०]

३ अन्य तीर्थी ने तथा गृहस्थी ने साधु सूत्र रूप वाचणी देवे तथा देता ने अनुमोदे तो प्रायश्चित्त कह्यो ।

[उ० १९]

४ आचार्य उपाध्याय नी अणदीधी बांचणी ग्रहै तो प्रायश्चित कह्यो ।

[निशीथ उ० १९]

५ तीन जणा बांचणी देवा अयोग्य कह्या ।

(ठाणांग ठा० ३ उ० ४)

६ श्रावकां ने अर्थ रा जाण कह्या ।

[उववाई प्रश्न २०]

७ निग्रंथ ना प्रवचन ने सिद्धान्त कह्या ।

[सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० २]

८ साधुनेइज शुद्ध धर्म ना प्ररूपणहार कह्या ।

[सूयगडाग श्रु० १ अ० ११ गा० २४]

९ अभाजनने सूत्र सिखावै त्यांने अरिहन्त नी आज्ञा ना उलंघनहार कह्या ।

[सूर्य प्रज्ञप्ति पाहु० २०]

१० अर्थ ने पिण 'सूय धर्म्म' कह्यो ।

[ठाणांग ठा० २ उ० १]

११ सूत्र आश्री तीन प्रत्यनीक कह्या ।

[भगवती श० ८ उ० ८]

१२ पंचेन्द्रिय ना उपयोग ने श्रुत कह्यो ।

[पन्नवणा पद २९ उ० २]

१३ भावश्रुत ना १० नाम पर्यायवाची कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

—:—

अल्पपाप बहु निर्जराऽधिकारः ।

१ जे श्रावक साधु ने सचित अने असूझतो देवै त अल्प पाप घट् निर्जरा हुवै तेह मो न्याय ।

(भगवती श० ८ उ० ६

२ साधु ने अप्रासुक अणेषणीक आहार दीधां अल्प सुप बान्धै ।

(भगवती श० ५ उ० ६

३ साधु रे अशुद्ध आहार अभक्ष कह्यो ।

(भगवती श० १८ उ० १०

४ श्रावक ने प्रासुक एषणीक ना देवणहार कह्या ।

(उववाई प्रश्न २०

५ आनन्द श्रावक कह्यो कल्पै मुझ ने श्रमण निग्रंथ ने प्रासुक एषणीक अशनादिक देवो ।

(उपासक दशा अ० १)

(क) आधा कर्मी अने असूझतो आहार ए निर्दोष छै एहवो मन में धारै तथा प्ररूपै ते बिना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

(ख) जे श्रावक प्रासुक एषणीक अशनादिक साधु ने देई समाधि उपजावे, तो पाछो समाधि पावै ।

(भगवती श० ७ उ० १)

६ शुद्ध व्यवहार करी ने आधाकर्मी लियो निर्दोष जाणी ने तो पाप न लागै।

(सूयगडांग श्रु० २ उ० ५ गा० ८-९)

(क) वीतराग जोयर चालै तेहथी कुकुटादिक ना अण्डादिक जीव हणीजै तेह ने पिण पाप न लागै। पुण्य नी क्रिया लागै शुद्ध उपयोग माटै।

(भगवती श० १८ उ० ८)

(ख) साधु ईर्याइं करी चालतां जीव हणीजै तो तेह ने पिण पाप न लागै। हणवारो कामी नहीं ते माटै।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ४ उ० ५)

७ अल्प (नहीं) वर्षा में भगवान विहार कीधो।

(भगवती श० १५)

८ अल्प प्राणी बीज छै तिहां ते स्थान के साधु ने आहार करवो।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३५)

९ अल्प प्राण बीजादिक होवै तिण स्थान के शुद्ध करी आहार करवो।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० १)

१० साधु रे अर्थे कियो उपाश्रयो भोगवै तो महा-सावद्य क्रिया लागै। दोय पक्ष रो सेवणहार कह्यो

अने गृहस्थ पोता रे अर्थे कीधो उपाश्रय साधु भोगवै तो एक शुद्ध पक्ष रो सेवणहार कह्यो अने अल्प सावद्य क्रिया कही ।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० २ उ० २)

कपटाऽधिकारः ।

१ किमाड़ सहित स्थानक मन करी ने पिण वाछणो नहीं ।

(उत्तराध्ययन अ० ३५)

२ थोड़ो उघाड्यो पिण किमाण घणो उघाड्यो हुवै तेह ने पिण "मिच्छामि दुक्कड़" देवै ।

(आवश्यक अ० ४)

३ जागा न मिलै तो सूना घरमें विषे रह्यो साधु किमाड़ जड़े उघाड़े नहीं ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १३)

४ कण्टक बोंदिया ते कांटा नी शाखा करी ढांक्यो ढक्यो हुवै तो धणी नी आज्ञा मागी ने पूजने द्वार उघाड़णो ।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० ५)

५ एहवो स्थानक साधु ने रहिवो नहीं जे उपाश्रय माहीं एपु मीनि तथा बड़ी नीनि परठण री

जागा न हुवै अने गृहस्थ बारला किमाड़ जड़ता हुवै तिवारे रात्रि ने विषे अवाधा पीड़ता किमाड़ खोलना पड़े ते खुला देखि माहे तस्कर आवै बतायां न बतायां अवगुण उपजता कह्या सर्व दोष में प्रथम दोष किमाड़ खोलने को कह्यो तिण कारण साधु ने किमाड़ खोलनो पड़े एहवे स्थान के रहिवो नहीं।

[आचाराङ्ग श्रु० २ अ० २ उ० २]

साध्वी नें उघाड़े बारने रहिवो नहीं किमाड़ न हुवै तो पोता नी पछेवड़ी बांधी ने रहिवो, पिण उघाड़े बारने रहिवो नहीं कल्पै शीलादि निमते किमाड़ जड़वो अने साधु ने उघाड़े बारने रहिवो कल्पै।

[वृहत्कल्प उ० १]

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

लोंकेजी की हुण्डी।

॥ दोहा ॥

ॐ नमः परमेष्टि पद, पामूं सदा सुखकार ।
दुरित विघ्न दूरा टले, वर्ते जय जयकार ॥१॥
हुण्डी जेह लोंका तणी, अच्छे पुरातन तेह ।
तिणमें आगम साक्षि थी, बोल उनहत्तर जेह ॥२॥
सकल सुगुण सिर सेहरा, श्री कालू गणि राय ।
तासु पसाये गुलाब कहे, दोहा रच्य बनाय ॥३॥

॥ सद्गुरु विनती ॥

(कल्याण दादरा)

सद्गुरु सद्बुद्धि बताना मुझे, मेरे स्वामीन् चरणं लगाना मुझे ॥ टेक ॥ महाव्रत पांच पांच समिति का तीन गुप्ति धर धारना मुझे ॥ स० ॥१॥ आज्ञा में धर्म अधर्म आण बिन, यही पाठ पढ़ाना मुझे ॥ स० ॥२॥ आत्म ऋद्धि सिद्धि सुख पावे, सोही मारग बताना मुझे ॥ स० ॥३॥ अनादि से भ्रमण कियो भवारण्ये, अब शिवराह दिखाना मुझे ॥ स० ॥४॥ जिन वाणी सुन

जान लियो अब, सब पापों से छुड़ाना मुझे ॥ स० ॥५॥ भाव दया यही स्वपरकी, सुध निज घर की लगाना मुझे ॥ स० ॥६॥ उलझ रह्यो मोह कर्म जाल में, सुमति रे सुलझाना मुझे ॥ स० ॥७॥ समकित व्रत पायो हुलसायो, आयो शरण निभाना मुझे ॥ स० ॥ ८ ॥ गुलाबचन्द आनन्द भयो अति, सुख में सुख अब पाना मुझे ॥ स० ॥९॥

॥ सोरठा ॥

शहर जैतारण मांहिरे, लोंका गुजराती वली ।
सरूप रूपचन्द ताहिरे, तेहना उपाश्रय थकी ॥१॥
विक्रम संवत् जान रे, अठारह शत गुणतीस में ।
शुद्ध परूपणा मान रे, देखी पूर्व तिहां तिम लिखी ॥२॥
तिण अनुसारे देख रे, सूत्र तणा जेह पाठ युत ।
न्याय सहित सुविशेष रे, कहूं जिज्ञासु कारणे ॥ ३ ॥

॥ अथ हुण्डी का बोल ॥

तीनूं ही काल रा भाव केवल ज्ञानी दीठा, कोई जीव ने नव तत्त्व रा जाण पणा विना संसार समुद्र सूं तिरतो दीठो नहीं । साख सूत्र सूयगडांग अध्ययन १२ गाथा १६ वीं ।

॥ दोहा ॥

तीन काल रा भावना, जाणक केवली सोय।
नव तत्त्व जाण्यां बिना, तिरया न देख्यो कोय ॥१॥
यथा अवस्थित वस्तु ना, ज्ञाता वेता सन्त।
तैं बुद्धा पर तार कर, करै कर्म नो अन्त ॥२॥
पुरं सूयगडांगे कह्यो, अध्ययन बारमा मांहि।
तत्त्व यथा तथ्य जाणिये, सोलमी गाथा ताहि ॥३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

तईय उपन्न मणा गयाइ, लोगस्स जाणन्ति तहा गयाइ।
णेतारो अन्नेसि अणण्ण णेया, बुद्धा हु ते अन्तकडा भवन्ति ॥

सू० सुयगडांग सूत्र श्रुतस्कन्ध १ अ० १२ गाथा १६

॥ भावार्थ ॥

भूत, भविष्यत् और वर्तमान इन तीनों काल के भाव को जानने वाले, यथा अवस्थित वस्तुओं के और नव तत्त्वों के ज्ञाता वेत्ता हों, स्वयं तरे और दूसरों को तारें वे बुद्ध सन्त तत्त्वों को जानते हुए कर्मों के अन्त करता बनते हैं। अथात् तत्त्वों को जानने से मुक्ति होती है।

॥ बोल दूसरा ॥

राशि दो कही १ जीव राशि २ अजीव राशि। तीसरी राशि कहै जिण ने सात निन्हवा में छट्ठो निन्हव कह्यो। सा० सू० उववाई प्रश्न १६ में।

॥ दोहा ॥

राशि दोय जिनवर कही, जीव अजीव सु जोय।
तृतीय राशि कोई कहे, तेह तो निन्हव होय ॥४॥
उववाई सूत्रे कह्यो, प्रश्न उन्नीसवें जान।
मिश्र राशि तीजी कहे, ते सात निन्हव में मान ॥५॥
इक समय कार्य न हुवे, बहु रत्ता यह पेख।
जीव है एक प्रदेश में, द्वितीय निन्हव इम देख ॥६॥
साधु लिंग साधू नहीं, तृतीय निन्हव इम भास।
चौथू निन्हव इम कहै, खिण गति क्षण २ नाश ॥७॥
इक समय दो किरिया हुवे, पञ्चम निन्हव एह।
छट्ठा जीव अजीव मिल, तीजी राशि कहेह ॥८॥
कर्म सर्प कंचुकि परे, जीव तणें लागन्त।
सप्तम निन्हव जाणवो, कहै एकान्त विरतन्त ॥९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

सेजे इमे गामागर जाव सन्निवेसेसु, णिण्हगा भवन्ति जहा—बहुरत्ता, जीव पदेसिया, अव्वत्तिया, सामुच्छिया दोकिरिया राशिया, अबद्धिया, इच्चे ते सत्त पवयण णिण्हगा।

सू० उववाई प्रश्न १९ वां।

॥ भावार्थ ॥

वे जो ग्राम आगर यावत् सन्निवेश में जो निन्हव होते हैं सो कहते हैं—१ बहुत समय में कार्य होय एक समय में नहीं होय [जमालीवत्] २ एक प्रदेश में जीव है, ऐसा माननेवाला [तीसगुप्तवत्] ३ साधुओ

॥ भावार्थ ॥

जो सर्व प्राणी यावत् सर्व सत्वों के मारने का प्रत्याख्यान करे, किन्तु ऐसा नहीं जाने कि यह जीव है, यह अजीव है, यह त्रस है, यह स्थावर है, ऐसा अज्ञानी सर्व प्राण भूत जीव सत्व मारने के त्याग किये कहे तो उसके दुःपचक्खाण है, किन्तु सुप्रत्याख्यान नहीं।

॥ बोल चौथा ॥

जीव अजीव ने जाणै नहीं, जीव अजीव दोनां ने जाणै नहीं तिण ने संयम री ओलखणा नहीं। साख सू० दशवैकालिक अध्ययन ४ गा० १२ वीं।

॥ दोहा ॥

दशवैकालिक में कह्यो, तूर्य अध्ययने ताहि।
जीव अजीव जाणै नहीं, बारवीं गाथा मांहि ॥१२॥
जीव अजीव अजाणतो, तसु संयम किम होय।
जाणी त्याग कियां थकां, चारित्र गुण अवलोय ॥१३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जो जीवे वि न याणाइ, अजीवे वि न याणाइ।
जीवा जीवे अयाणतो, कहं सो नाहीय संयमं ॥१२॥

दशवैकालिक अ० ४ गाथा १२

॥ भावार्थ ॥

जो जीव को भी नहीं जाने, अजीव को भी नहीं जाने।, जीवों अजीवों को ही नहीं जाने उसके संयम कहां है? अर्थात् जीवाजीव जाने बिना संयम नहीं है।

॥ बोल पांचवां ॥

सम्यक्त्व बिना चारित्र नहीं समकित बिना ज्ञान नहीं। सा० सू० उत्तराध्ययन २८ वें गा० २९ वीं।

॥ दोहा ॥

समकित बिन चारित्र नहीं, नहीं समकित बिन ज्ञान।
उत्तराध्ययन अठवीसमें, गुणतीसमी गाथा सत ॥१४॥
दर्शन ज्ञान थकी हुवे, समकित चारित्र धर्म।
तिण सूं पूर्व समकित लह्या, पामें चारित्र धर्म ॥१५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

नत्थि चरित्तं सम्मत्त विहूणं दंसणे उ भइयव्वं।
सम्मत्त चरित्ताइं जुगवं, पुव्वं व सम्मत्तं ॥२९॥

सूत्र उत्तराध्ययन अ० २८ गा० २९

॥ भावार्थ ॥

सम्यक्त्व अर्थात् शुद्ध श्रद्धा बिना चारित्र नहीं होता है। ज्ञान से यथार्थ ज्ञान के शुद्ध श्रद्धने से सम्यक्त्वी होता है और सम्यक्त्वी होने से चारित्र गुण उत्पन्न होता है। इसलिये सम्यक्त्व चारित्र में पहिले सम्यक्त्व मुख्य है।

॥ बोल छट्ठा ॥

ज्ञान बिना दया नहीं दया चारित्र एक ही कह्यो। सा० सू० दशवैकालिक अ० ४ गा० १० वीं।

॥ दोहा ॥

दया नहीं है ज्ञान विन, चारित्र दयाज एक।
ज्ञान सहित संयम हुवै, समझो आण विवेक ॥१६॥
प्रथम ज्ञान पाछे दया, इम सर्व संयती होय।
अज्ञानी जाणै किस्यूं, पाप छेदै किम जोय ॥१७॥
चौथे अध्ययने कह्यो, दशवैकालिक वाय।
दशमी गाथा ने विषै, भाख्यो श्री जिनराय ॥ १८ ॥

॥ सूत्र पाठ ॥

पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्व संजए।
अन्नाणी किं काही, किंवा नाहीय छेय पावग ॥१०॥

॥ भावार्थ ॥

प्रथम ज्ञान और पीछे दया, अर्थात् ज्ञान द्वारा जीव अजीवादि को जाने से षट् जीव निकायो को मारने का त्याग करेगा तब दया होगी। इस तरह सर्व संयती होते है। अज्ञानी को जब यथार्थ ज्ञान ही नहीं वह दया किसकी करेगा और कैसे पाप कर्म छेदेगा।

॥ बोल सातवां ॥

असंयती अव्रती अपच्चक्खाणी ने सूझतो असूझतो, प्राशुक, अप्राशुक देवे तिण ने एकान्त पाप कह्यो। सा० सू० भगवती श० ८ उ० ६

॥ दोहा ॥

तथारूप जे असंयती वलि अविरति जेह।
च्यार प्रकारे आहार तसु श्रावक प्रति लामेह ॥१९॥
सचित अचित प्रासुक वली, अप्रासुक अवधार।
देवै दोष सहित वा, दोष रहित निरधार ॥२०॥
तिण ने हे प्रभु! शु करत, इम गौतम पूछन्त।
जिन कहे एकान्त पाप करै, नहीं काई निर्जरा हुन्त ॥२१॥
अष्टम शतके भगवती, षष्ठम उद्देशा माहि।
एकान्त पाप कह्यो प्रभु, निर्जरा किंचित नाहि ॥२२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

समणोवासगस्स णं भंते तहारूवं असंजय अविरय अपडिहय अपच्चक्खाय पाव कम्मं फासुएण वा अफासुएण वा एसणिज्जेण वा अणेसणिज्जेण वा असण पाण खाइम साइमेणं, पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ, गोयमा! एगंत सो से पाव कम्मे कज्जइ नत्थि से काइ णिज्जरा कज्जइ।

सा० सू० भगवती श० ८ उ० ६

॥ भावार्थ ॥

श्रावक हे भगवान तथा रूप असंयती, अव्रती और जिसने पाप-कर्म के त्याग नहीं ऐसे अप्रत्याख्यानी को प्रासुक अप्रासुक सदोष वा निर्दोष आहार पानी खादिम स्वादिम प्रतिलाभता हुआ क्या करता है। तब भगवान ने कहा हे गौतम! एकान्त पाप कर्मोपार्जन करता है वह किंचित निर्जरा नहीं करता है।

॥ सोरठा ॥

एह पाठ नूं अर्थ रे, केई जन इहां इम करै ।
जो देखे मोक्षार्थ रे, तो तसु एकान्त पाप हुवै ॥२३॥
अथवा तसु गुरु जान रे, दियां मिथ्यात्व नूं पाप है ।
यदि अनुकम्पा आन रे, देवै तो तसु पाप नहीं ॥२४॥
इम निज मत अनुसार रे, सूत्र विरुद्ध जे को कहै ।
पिण तसु उत्तर सार रे, बुद्धिवन्त न्याय विचारिये ॥२५॥
न कह्यो सूत्रे एम रे, मोक्षार्थी वा गुरु समझ ।
तो निज मन थी कहो केम रे, भावार्थ समझ्यां विना ।२६।
तथा रूप छै जेह रे, असंयती नां भेषयुत ।
तसु गुरु किम जाणेह रे, श्रावक जेह भगवान रा ।२७।
वलि दोष सहित किम देय रे, श्रावक गुरु जाणी करी ।
न्याय विचारि लेय रे, पक्षपात चित्त छांड़ करि ॥२८॥
अल्प आयु बन्धाय रे, असूझतो दियां साधु ने ।
तीजा ठाणा मांय रे, वलि ठाम २ सिद्धान्त में ॥२९॥
दोष सहित दियां ताहि रे, पाप हुवै पिण धर्म नहीं ।
कह्यो आगम मांहि रे, असूझता थी पुण्य नहीं। ॥३०॥
जो गुरु जाणी तास रे, कदा निर्दोष देवै तसु ।
तो पाप एकान्त विमास रे इहां कहो किण कारणें ।३१।
न देऊं अण तीर्थी प्रतेह रे, वलि देवाऊं नहीं ।

इम मसम अगेर रे, आनन्द भावक अभिग्र" लियो ॥३३॥
पुन सम्यक् दृष्टि जेर रे, असयती ना दान में।
मोक्ष अर्थ भद्रेइ रे, जो करा देवै जान करि ॥३४॥
तो पिण पाप ही त्याग रे, तुम लेखे मिथ्यात्व नू।
नहीं मुक्ति रो माग रे, सासारिक जे दान छै ॥३५॥
मोक्ष अर्थ दियां तेर रे, तेहने एकान्त पाप कहो।
तो अनुकम्पा एर रे मुक्ति काज नहीं जाणवी ॥३६॥
अनुकम्पा ससार रे, स्नेह राग युत जे हुवै।
आख्या पाप अठार रे, तिण में राग नमम् कह्यो ॥३७
असयती नू जोय रे, अथवा अविरति तणो।
पुद्गलीक सुख वछे सोय रे, ते जिम आज्ञा बाहिरे ॥३८
करणी जे करै कोय रे, पुण्य पुद्गल सुख कारणे।
तिण में धर्म न होय रे, पुण्य बन्ध पिण हुवै नहीं ॥३९
भगवती वृत्ति मसार रे, भर्ने कियो इम पाठ मू।
मुक्ति अभिलाषा धार रे, दीधा पाप एकान्त हुवै ॥४०॥
तिण लेखै पिण तत रे, असयती वा अविरति नू।
ठाम पाप एकान्त रे, मोक्ष मार्ग नहीं जाणवो ॥४१॥
एकान्त पाप मू अर्थ रे, अघाकशाम् जो करे।
तो ठाम २ सूत्रार्थ रे, एकान्त पाठ करता वह ॥४२॥
सुख शय्या कही च्यार रे, ठाणागे चौथा स्थान में।
एकान्त निरजरा धार रे, मुनि सम भावे वेदन सहै ॥४३॥

तो सम भावे न सहेह रे, तो पाप एकान्ते हुवै ।
इसां मुनि रे किस्यूं गिणेह रे, एकान्त पाप मिथ्यात्व नूं ।४४
वलि धुर शतक निहाल रे, अष्टम उद्देशे कह्यूं ।
अव्रती ने एकान्त बाल रे, एकान्त पण्डित साधु ने ।४५
अष्टम शतक रे मांहि रे, छठे उद्देशे भगवती ।
तथा रूप संयती ताहि रे, दियां एकान्त निर्जरा हुवै ।४६।
जो एकान्तक नूं जेह रे, छेहलो भेद एक ही कहै ।
तो ठाम २ सूत्रेह रे, एकान्त अर्थ छेहलूं किस्यूं ॥४७॥
तिण सूं एकान्त पाप रे, असंयती अविरति ने ।
दीधां जिन कह्यो आप रे, पाठ मांहि प्रकट पणै ॥४८॥
एक अन्त दो शब्द रे, तेहना अर्थ छै जुजूआ ।
एक तेह केवल लब्ध रे, अन्त तेह निश्चय जाणवो ॥४९॥
छट्ठा काण्ड मझार रे, नवम श्लोके देखलो ।
अन्त तेह निश्चय धार रे, हेम नाम माला विषे ॥५०॥
तिणसूं भगवती मांहि रे, दियां असंयती अविरति ने ।
एकान्त पाप हिज थाय रे, प्रभु आख्यो तेह सत्य है ।५१।

॥ बोल आठवां ॥

शाश्वता अशाश्वता री खबर नहीं, तिणने बोध रहित कह्यो । सा० सू० सूयगडांग अ० १ उ० २ गाथा ४ थी ।

॥ दोहा ॥

शाश्वत अने अशाश्वता, तेहनी खबर न कोय।
बोध रहित तिण ने कह्यो, प्रथम सूयगडांग माय ॥१२॥
बाल थका पंडित पणो, माने तेह अयाण।
नियत अनियत जाणे नहीं, द्वितीयाध्ययने चौथी जाण ॥१३॥

सूत्र पाठ ॥

एव मेगाइं जपंता, बाल पंडिय माणिणो। णियया णिय
छत, अयाणंता अबुद्धिया ॥४॥

म० सू० सूयगडांग अ० १ उ० २ गा०।

॥ भावार्थ ॥

बाल अर्थात् मूर्ख अपने को पण्डित मान रहे हैं। परन्तु उन्हें नियत अनियत यानी शाश्वत अशाश्वत की खबर नहीं है वे अज्ञान बोध रहित हैं।

बोल नवमां ॥

साधू थोड़ा असाध घणा। सा० सू० दशवैका-
लिक अ० ७ गा० ४८ वीं।

॥ दोहा ॥

साधु थोड़ा लोक में, घणा असाधू जाण।
ते असाधु थका पड़ इम करे, अमें साधु गुणखाण ॥१४॥
दशवैकालिक सात में, अड़तालीसमी गाथा ताहि।
असाधुने साधु कहणो नहीं, साधु ने साधु कहाहि ॥१५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

वहवे इमे असाहू, लोये वुचन्ति साहुणो ।
न लवे असाहु साहुत्ति, साहु साहुत्ति आलवे ॥४८॥

दशवैकालिक अ० ७ गा० ४८

॥ भावार्थ ॥

बहुत से ऐसे असाधु लोक मे हैं जो कहते हैं हम साधु हैं। परंतु विज्ञजनों को असाधुओ को साधु नही कहना चाहिये।

॥ बोल दशमां ॥

साधु रे सर्व थकी प्राणातिपात रा त्याग छे तिण रे अपच्चक्खाण री अपरिग्रह री किरिया नहीं। सा० सू० पन्नवणा पद २२ वें।

॥ दोहा ॥

सर्व प्रकारे साधु रे, प्राणातिपात रा त्याग।
अपच्चक्खाण ने परिग्रह तणी, तसु किरिया नहीं लाग ॥५६॥
बावीसम पद आखियो, पन्नवणा रे मांहि।
प्राणातिपात निवृत्ति ने, अव्रत परिग्रह नांहि ॥५७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

पाणातिपात विरयस्सणं भन्ते जीवस्स परिग्गहिया किरिया कज्जति? गोयमा णो इणट्ठे समट्ठे, पाणातिपात विरयस्सणं भन्ते जीवस्स अपच्चक्खाण वत्तिया किरिया कज्जति? गोयमा णो इणट्ठे समट्ठे।

पन्नवणा पद २२ वाँ।

॥ भावार्थ ॥

प्राणातिपात से हे भगवान् जो जीव निवृत्ते हैं उन्हें परिग्रह का क्रिया लगता है। उत्तर—हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् नहीं लगती है प्राणातिपात से हे भगवान् जो जीव निवृत्ते हैं उन्हें अप्रत्याख्यान का क्रिया लगता है। उत्तर—हे गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् नहीं लगता है।

॥ बोल ग्यारवां ॥

साधु रो आहार असावद्य कह्यो, व्रत में कह्यो, मोक्ष साधन रो हेतु कह्यो, पाप कर्म रहित कह्यो। सा० सू० दशवै० अ० ५ गाथा ९२ वीं।

॥ दोहा ॥

असावद्य साधु तणो, जयणायुत जेह आहार ।
पाप रहित छै व्रत में, भाख्यो श्री जगतार ॥४८॥
दशवैकालिक पंचमें, प्रथम उद्देश मझार ।
गाथा बाणवीं में कह्यो, मोक्ष साधन सुविचार ॥४९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अहो जिणेहिं असावज्जा, वित्ती साहूण देसिया ।
मोक्ख साहण हेउस्स, साहु देहस्स धारणा ॥९२॥

दशवैकालिक अ० ५ गा० ९२

॥ भावार्थ ॥

जिनेश्वरों ने साधुओं का आहार करना असावद्य कहा, वृत्ति गुण का

...कहा तथा मोक्ष साधन का उपाय और साधु के शरीर का ...करनेवाला है।

॥ बोल बारवां ॥

भगवान श्री महावीर स्वामी ठंडो आहार घणा दिनां रो नीपनूं लियो कह्यो। सा० सू० प्र० आचारांग अध्ययन ८ उद्देशा ४ गाथा १३ वीं।

॥ दोहा ॥

...णा दिना रो नीपनूं, शीतल वासी पिण्ड।
...शान्ति भाव धरि लेवता, महावीर गुणमंड ॥६०॥
...प्रथम अङ्ग में देखल्यो, अष्टम (नवम) अध्ययन उदार।
...चौथा उद्देशा विषे, तेरवीं गाथा सार ॥६१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अवि सूइय वा सुक्कं वा, सीय पिंडं पुराण कुम्मासं।
अदु बक्कसं पुलागवा, लद्धे पिंडे अलद्धए दविए ॥१३॥

॥ भावार्थ ॥

भगवान श्री महावीर स्वामी छद्मस्थपने में भीजा हुआ सूखा ठंडा ...णा बहुत दिनों का राँधा हुआ उड़द का तथा पुराने धान्य का बना ...त निरस धान्य का बना हुआ आहार मिलने से शान्ति भाव से ...चते यदि नहीं मिलता तो भी शान्ति भाव से रहते।

॥ बोल तेरवां ॥

केवल ज्ञानी री प्ररूपणा बिना आप आप री

प्ररूपणा करे तिण ने किंचित् मात्र जाणपणो नहीं सा० सू० सुयगडांग अ० १ उ० २ गाथा १४ वीं ॥

॥ दोहा ॥

केवली प्ररूप्या धर्म बिन, अपनी मति अनुसार ।
करे प्ररूपण जेहने, जाण पणो न लिगार ॥६२॥
इक २ ब्राह्मण श्रमण बलि, कहै म्हे छां सर्व जाण।
पिण प्राणी षट् लोक में, तेहना जेह अजाण ॥६३॥
ते किंचित नहीं जाणता, धुर सुयगडांग मांहि।
प्रथम अध्ययने जाणिये, द्वितीय उद्देशे ताहि ॥६४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

माहणा समणा एगे, सव्व नाणं सयं वए ।
सव्व लोगे वि जे पाणा, न ते जाणंति किंचणं ॥१४॥

॥ भावार्थ ॥

जगत में एक २ श्रमण ब्राह्मण ऐसे हैं सो कहते हैं हम सर्व जानकार हैं परन्तु लोक में सर्व प्राणी हैं उन्हें वे किंचित् मात्र नहीं जानते हैं। अर्थात् निज मतानुसार एक २ श्रमण ब्राह्मण कहते हैं हम सब जानते हैं परन्तु उन्हें किंचित् मात्र जानपना नहीं है।

॥ बोल चौदमों ॥

श्रावक ने केवल ज्ञानी प्ररूप्या धर्म बिना दूजो धर्म मानणो नहीं । सा० सू० उववाई प्र० २० वां।

॥ दोहा ॥

सत्य करि जानता, केवली भाषित धर्म ।
दूजो धर्म न मानणो, एह जिन शासन मर्म ॥६५॥
निर्ग्रन्थ वचनज अर्थ है, निर्ग्रन्थ प्रवचन परमार्थ ।
अन्य जन ने पिण इम कहे, प्रवचन विना अनर्थ ॥६६॥
लाधा भला अर्थ पूछ कर, धार्या विनय सहित्त ।
अस्थि अस्थि मञ्जा तसु, प्रेम राग रङ्ग रत्त ॥६७॥
सूत्र उववाई में कह्यो, प्रश्न बीसवें ठीक ।
शंक रहित जिन वचन में, त्यांने मुक्ति नजीक ॥६८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

णिग्गन्थे पावयणे निस्संकिया, णिक्कंखिया, निव्वितिगिच्छा, लद्धट्ठा, गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा, अभिगट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अट्ठि मिंज पेमाणु राग रत्ता, अयमाउसो णिग्गन्थे पावय णो अट्ठे अय परमट्ठे, सेसे अणट्ठे ।

सू० उववाई प्र० २० वाँ

॥ भावार्थ ॥

वे श्रावक निर्ग्रन्थ प्रवचन मे निःशङ्क है अर्थात् शङ्का रहित हैं आकांक्षा रहित हैं अर्थात् पाखण्डियो का ढोंक देख के उनको वांछा नही करते । विचिकित्सा रहित हैं यानी स्वयं जो जिनाज्ञा माँहि की करणी करते हैं उसके फल में सन्देह नहीं रखते । वे सूत्रों का अर्थ पाये हैं ग्रहण किये हैं, अर्थ पूछे हैं, प्रवचनों के अर्थों के सन्मुख हुए हैं, और विनय सहित ग्रहण किये हैं, जिनकी अस्थि और अस्थि की मज्जा जिन

वचनों से रंगे हुऐ हैं, अर्थात् निर्ग्रन्थ प्रवचनों में तल्लीन हो रहे हैं और दूसरों को भी ऐसा ही कहते हैं कि "आयुष्मानों" निर्ग्रन्थ वचन है यही अर्थ है, यो ही परमार्थ है। इसके अतिरिक्त शेष सब अनर्थ हैं।

उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ३१

॥ बोल पन्द्रवा ॥

समकिती ने निसङ्क निकङ्क नितगच्छा रहि रहणो कह्यो सा० सृ० उत्तराध्ययन अ० २८ वा गा० ३१ वीं।

॥ दोहा ॥

शंक नहीं जिन वचन में, कंखा अनमत नाहि।
करणी फल संदेह नहीं, ते नि वितिगच्छ कहाहि ॥६६॥
अमूढ दिट्ठी परमत तणी, देख प्रशंसा नाहि।
अन्य मत दृष्टि करे नहीं, जिन में करे समाधि ॥७०॥
उववूह गुणी ना गुण करे, थिरि करण थिर होय।
वत्सल भाव सहु थकी, धर्म प्रभाव न जोय ॥७१॥
उत्तराध्ययन अठवीस में, समकित ना आचार।
आराधे तेह समकिती, इकतीसवीं गाथा धार ॥७२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

निस्संकिय निक्कंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढ दिट्ठिय उववूह थिरी करण वच्छल्ल पभावणे अट्ठ।

उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ३१

॥ भावार्थ ॥

१ जिम वचनों में शङ्का नहीं करे अर्थात् भगवान ने एक शरीर में अनन्ते जीव आदि अनेक बातें कही है सो सत्य हैं।
२ निकंखिय अर्थात् जो अन्य मत वाले कहते हैं वह भी ठीक होगा ऐसी वांछा न करे।
३ निव्वितिगिच्छा यानी जो तप नियमादि करणी करता हुँ सो फल-दायक होगी या नहीं ऐसी विचारणा नही करे।
४ अमूढ दिठ्ठीय अर्थात् अन्य मत वालो को अनेक प्रकार प्ररूपणा को देखके उनकी तरफ खयाल न करे।
५ उववूह यानी गुणवन्त पुरुषो के गुणगान करे।
६ थिरि करणे अर्थात् सम्यक्त्व मे स्थिर रहे।
७ वत्सल यानी षट् कायों के जीवो पे वात्सल्य भाव रक्खें।
८ प्रभावना अर्थात् जैन धर्म की प्रभावना करे। यह सम्यक्त्व के आठ आचार कहे हैं।

॥ बोल सोलमां ॥

केवल ज्ञानी रा वचनां री खबर नहीं जिकां रे घणो बाल मरण अकाम मरण होसी। सा० सू० उत्तराध्ययन अ० ३६ गा० २६० वीं।

॥ दोहा ॥

जे जिन वचन जाणे नहीं, बाल मरण तसु जाण।
घणा अकाम मरणे मरे, उत्तराध्ययने छत्तिसमें पिछाण।७३।

॥ सूत्र पाठ ॥

बाल मरणाणि बहुसो, अकाम मरणाणि चेवय बहुसो।
मरिहिंति ते वराया, जिन वयणं जे न जाणंति ॥२६०॥

॥ भावार्थ ॥

बहुत बार मरण और बहुत से अकाम मरण मरे जो जिन वचनों को नहीं जानता है।

॥ बोल सतरहवां ॥

प्रवचन सोही अर्थ प्रवचन सोही परम अर्थ, सा० सू० उववाई प्र० ९० वा।

॥ दोहा ॥

प्रवचन सोही अर्थ है प्रवचन सो परमार्थ।
उववाई प्रश्न नीसवें बाकी सर्व अनर्थ ॥ ७४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे।

[उववाई प्र० ९० में]

॥ भावार्थ ॥

हे आयुष्मानों निर्ग्रन्थ प्रवचन ही अर्थ है यही परमार्थ है। इसके सिवाय सब अनर्थ है।

॥ बोल अठारहवां ॥

केवलिया रो आचार सोही छद्मस्थ रो आचार, केवलिया रो अनाचार सोही छद्मस्थ रो अनाचार। साख सूत्र आचारांग प्र० ५ उ० ६ ठो।

॥ दोहा ॥

केवलियां रो आचार सो, छद्मस्थ रो आचार ।
केवलियां रो अनाचार ते, छद्मस्थ रो अनाचार ॥७५॥
कुशल पुरुष जे केवली, नहीं बन्धाय मूकाय ।
जे आरम्भ्यो तिम आरम्भे, ते बुद्धिवन्त कहाय ॥७६॥
प्रथम आचाराङ्ग कह्यो. दूजे अध्ययन उदार ।
छट्टा उद्देशा विषे, निपुण न्याय अवधार ॥७७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

कुसले पुण णो वद्धे णो मुक्के से जं च आरम्भे जे च अणारम्भे अणा रद्धं च ण आरम्भे छणं छणं परिन्नाय लोग सन्नं च सव्वसो ।

[आचाराङ्ग अ० २ उ० ६ ठा०]

॥ भावार्थ ॥

केवली भगवान बन्धे हुवे नहीं, छूटे हुवे नहीं, जैसे वे वर्त्ते होय वैसे ही करना और जैसा उनका आचरण नहीं है वैसा नहीं आचरे । अर्थात् संयम क्रिया जैसी केवलियों की है वैसी ही अकेवलियों की है । हिंसा तथा लोक संज्ञा को जान कर उनका परिहार करना ।

॥ बोल उन्नीसमां ॥

वक्तव्यता २ कही १ स्व समय वक्तव्यता. २ पर समय वक्तव्यता । स्व समय वक्तव्यता की तो साधु आज्ञा दे तथा मानण योग छै, पर समय वक्तव्यता में सात अवगुण कह्या—१ अनर्थ, २ अहित, ३

असयम, ४ अक्रिया, ५ उन्मार्ग, ६ उपयोग रहित, ७ मिथ्यात्व सहित । सा० सू० अनुयोग द्वार सात नया को समास पूरो हुवो जठे ।

॥ दोहा ॥

होय वक्तव्यता जाणवी, स्वपर समय विचार ।
उभय मिश्रा तीजी हुवे, आख्यी अनुयोग द्वार ॥७८॥
वक्तव्यता स्व समय जे, श्री जिन आगम सार ।
पाखण्ड रचिता पर समय, तेह नी वात असार ॥७९॥
मुनि आज्ञा स्व समय नी, पर समय अवगुण सात ।
अहित अनर्थ असद्भाव वलि, अक्रिया उन्मार्ग जात ॥८०॥
ते उपदेशवा योग्य नहीं, वरणन जे मिथ्यात ।
पर सातों अवगुण कह्या, नहीं गुण छै तिलमात ॥८१॥
कारक जिन सिद्धान्त नी, कारक पर सिद्धान्त ।
बिहु मिल तीजी पिण हुवे, वक्तव्यता आख्यात ॥८२॥
स्व तेह स्व मा प्रक्षेपवो, पर तेह पर मा ओप ।
तिण सूं दोय वक्तव्यता, न्याय हिये अवलोप ॥८३॥
जिन प्रणीत सिद्धान्त ते, सक्षेपे आख्यान ।
वलि विस्तार प्ररूपणा, कहे स्थान विख्यात ॥८४॥
विशेष करि दर्शावता, परिषद में उपदेश ।
मुनि स्व समय स्थापना त्रिलोक वचन हमेश ॥८५॥

समय पद ते स्व समय, तेहिज मानण योग।
वक्तृता पर शास्त्र नी, जाणो तास अयोग ॥८६॥
नैगम संग्रह व्यवहार जे, इच्छै वक्तृता तीन।
स्व पर मिश्र इम त्रण हुवे, ऋजु सूत्र दोय लीन ॥८७॥
शब्दादिक त्रण नयतिका, इच्छे वक्तृता एक।
स्व समय तेहिज सत्य है, पर ते सहु अविवेक ॥८८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

से किं तं वत्तव्वया? वत्तव्वया तिविहा पन्नता, तंजहा—१ ससमय वत्तव्वया, २ पर समय वत्तव्वया, ३ ससमय पर समय वत्तव्वया, से किं तं ससमय वत्तव्वया? ससमय वत्तव्वया—जत्थयां ससमय आघ विज्जंति पयवा विज्जंति परूविज्जंति दसइ नि दंसिज्जइ उवदंसिज्जइ से त ससमय वत्तव्वया। से किं तं पर समय वत्तव्वया? जत्थणं पर समय आघविज्जति जाव उवदंसिज्जंति से त पर समय वत्तव्वया। से किं तं ससमय पर समय वत्तव्वया? जत्थाया ससमय पर समय आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति से त ससमय पर समय वत्तव्वया इयाणिंको न ओ क वत्तव्वय इच्छन्ति? तत्थ णेगम सगह ववहारो तिविह वत्तव्वय इच्छति तंजहा—ससमय वत्तव्वयं पर समय वत्तव्वयं ससमय पर समय वत्तव्वय। उज्जु सुओ दुविह वत्तव्वयं इच्छइ तंजहा—ससमय वत्तव्वयं पर समय वत्तव्वयं, तत्थयां जासा ससमय वत्तव्वया सा ससमय परिट्ठाजा, सा परसमय वत्तव्वया सा पर समय पाविट्ठाजा, तम्हा दुविहा वत्तव्वया णत्थि तिविहा वत्तव्वया।

कोंक जो पर समय वक्तव्यता है उसमें अनर्थ है, अहेतू है, असद्भाव है, क्रिया रहित है, उन्मार्ग है, कुउपदेश है, मिथ्या दर्शन है। यह सात अन पर शास्त्र में है। अतः एक स्व समय वक्तव्यता ही है पर समय वक्तव्यता नहीं।

॥ बोल बीसमों ॥

केवली प्ररूपियो धर्म एकान्त प्रधान कह्यो सा० सू० प्र० सूयगडांग अ० ६ गा० ७।

॥ दोहा ॥

केवल ज्ञानी भाषियो, तेहिज धर्म एकान्त।
सुर सूयगडांगे छट्ठे, सप्तमी गाथा तंत ॥८९॥
प्रधान धर्म श्री जिन कह्यो, तसु नेता वर्द्धमान।
शोभे हुए देवां बिचे, इन्द्र समा गुण खान ॥९०॥
सब नेतां में श्रेष्ठ है, काश्यप गोत्र उत्पन्न।
प्रेय धर्म जिनवर कह्यो, तेहिज धर्म सुमन्न ॥९१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अणुत्तरं धम्म मिणा जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपन्ने।
इन्देव देवाण महाणुभावे, सहस्स णेता दिवणं विसिट्ठे ॥७॥
प्र० सूयगडांग अध्ययन ६ ठा।

॥ भावार्थ ॥

प्रधान धर्म है जिनेश्वरों का कहा हुआ, उसके नेता मुनीश काश्यप गोत्रोत्पन्न श्री महावीर स्वामी हैं, ये हजारों नेताओं मे सुशोभित हैं।

॥ बोल इक्कीसवां ॥

केवली प्ररूप्यो धर्म यथार्थ सरल शुद्ध माया कपटाई रहित कह्यो। सा० सू० सूयगडांग अ० ६ गाथा १।

॥ दोहा ॥

धर्म यथा तथ्य भाखियो, जेह माहण मतिवन्त।
कपट रहित तेह सरल छै, जिनोक्त धर्म सुम तन्त ॥६५॥
प्रथम सूयगडांगे कह्यो, नवम अध्ययन रे माहि।
पहिली गाथा ने विषे, जिन कह्यो धर्म कहाहि ॥६६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

कयरे धम्मे अक्खाए, माहणेण मइमया।
अंजु धम्मं जहा तच्चं, जिणाणं तं सुणेह मे ॥१॥

प्र० सूय कृतांगे नवम अध्ययने १ गाथा।

॥ भावार्थ ॥

माहण अर्थात् मत हणो २ ऐसा उपदेश जिन का है मुनि कैसा धर्म कहे—ऋजु अर्थात् सरल माया कपटाई रहित जैसा जिनेन्द्रों से सुना है वैसा हा धर्म कहे।

॥ बोल बावीसवां ॥

जिस करणी मे किंचित मात्र हिंसा नहीं ते करणी दमन री सार कही। सा० सू० प्र० सूयगडांग अध्ययन १ उ० ४ गाथा १० मीं।

॥ दोहा ॥

किञ्चितमात्र हिंसा नहीं, ते करणी करे आर्य ।
धुर सूयगडांगे कह्यो, ज्ञान सार तेह कार्य ॥६४॥
अहिंसा समता धरै, ज्ञान तणो यह सार ।
एहिज जाणपणो सिरे, भाख्यो श्री जगतार ॥६५॥
प्रथमाध्ययने चतुर्थे, उद्देशे दशमी गाह ।
अहिंसा में वर्त्तता, ते विज्ञानी कहाहि ॥६६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

एव नाणिस्रो सार. जेन हिंसइ किंचियं ।
अहिंसा समय चेव, एतावत वियाणिणा ॥१०॥

प्र० सूत्र कृतांगे १ अध्ययने ४ उद्देशे १० गाथा ।

॥ भावार्थ ॥

ज्ञान पाने का, निश्चय कर के यही सार है कि किञ्चितमात्र भी हिन्सा नहीं करे अहिंसा और समता धरै यही ज्ञान विज्ञान है ।

॥ बोल तेवीसवां ॥

केवली ज्ञानी भाख्यो धर्म सन्देह रहित कह्यो ।
सा० सू० प्र० सूयगडांग अध्ययन १० वें गा० ३ री

॥ दोहा ॥

संदेह रहित सु आखियो, केवली भाषित धर्म ।
आतम वत् पर प्राणी गिण, न करे हिंसा कर्म ॥६७॥

शुद्ध आहार लेवे, सदा, संचय न करे लिगार।
सूयगडांग सूत्रमें कह्यो, तीजी गाथा सार ॥९८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

सुअक्खाय धम्म वितिगिच्छ तिण्णे ।
लाढे चर आय तुल पयासु ॥
आय न कुज्जा इह जीवियट्ठी ।
चय न कुज्जा सु तवस्सि भिक्खू ॥१॥

॥ भावार्थ ॥

समाधिस्थ पुरुष केवली भाषित धर्म को सन्देह रहित मान कर सर्व जीवों को आत्म तुल्य मानता हुआ निर्दोष आहार की गवेषणा करके विचरे। असंयम जीवितव्य के लिये पापाश्रव कर नहीं एवं सुतपस्वी साधु धनधान्यादि आहार पानी का संचय न करे।

॥ बोल चोवीसवाँ ॥

आप रो छान्दो रुंधे तेहिज धर्म। सा० सू० उत्तराध्ययन अ० ४ गा० ८ वीं।

॥ दोहा ॥

छान्दो रुन्धे आपणो, तेहिज धर्म उदार।
बहु वर्ष पूर्वां लगे, रोके स्वेच्छाचार ॥९९॥
पर छन्दे जिम अश्व ज्यूँ सीखपणो अवधार।
तिम अप्रमत्त पणे मुनि, लोपे नहीं गुरुकार ॥१००॥

गीय पणें कर्म क्षय करी, पामे मोक्ष प्रधान।
चौथा उत्तराध्ययन में, अष्ठम गाथा जान ॥१०१॥

॥ सूत्र पाठ ॥

छन्द निरोहेण इवेइ मोक्खं, आसे जहा सिक्खिये वम्म धारी।
पुव्वाइं वासाइं चर अप्पमत्तो, तुम्हा मुणी खिप्प मुवेइ मोक्खं ॥८॥

उत्तराध्ययन अ० ४।

॥ भावार्थ ॥

अपना छन्दा अर्थात् अपनी इच्छा का निरोध करने से मुक्ति होती है। जैसे आतिवन्त अश्व (घोड़ा) सवार की इच्छानुसार रहने से योग्यता प्राप्त करके दुःखों से छुटकारा पाता है। वैसे ही मुनि पूर्व का वर्षों पर्यन्त अपनी इच्छा (छन्दा) को रोक के गुर्वाज्ञा प्रमाण चलते अप्रमत्तपने विचरता हुआ मोक्ष प्राप्त करता है।

॥ बोल पच्चीसवां ॥

केवली प्ररूप्यो धर्म अहिंसा संयमो तवो कह्यो
सा० सू० दशवैकालिक अध्ययन १ गा० १ ली।

॥ दोहा ॥

दशवैकालिक में कह्यो, धुर अध्ययन मझार।
धुर गाथा केवली प्रणित, अहिंसा धर्म सार ॥१०२॥
अहिंसा संयम तपो, यह धर्म मंगलीक।
तासु नमे सर्व देवता, जासु धर्म मन ठीक ॥१०३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।

देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सयामणो ॥१॥

दशवैकालिक अ० १।

॥ भावार्थ ॥

अहिंसा संयम तप रूप धर्म उत्कृष्ट मङ्गल है, जिसका मन सदा धर्म में है। उन्हें देवता भी नमस्कार करते हैं।

॥ बोल छवीसवां ॥

अपछन्दा री प्रशंसा करे करावे करता ने भलो जाणे तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो। सा० सूत्र *निशीथ उद्देशे ११ में।*

॥ दोहा ॥

त्रिकरण प्रशंसा करे, अपछन्दा री सोय।
प्रायश्चित मुनि ने कह्यो, निशीथ ग्यारमें जोय ॥१०४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू अहाछन्दं पसंसइ पसंसंतं वा साइज्जइ ॥१८७॥

निशीथ उद्देशा अ० ११ वाँ।

॥ भावार्थ ॥

जो साधु अपछन्दा अर्थात् अपना छन्द अनुसार चलने वाला साधु की प्रशंसा करे करावे अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित आवे।

॥ बोल सताबीसवां ॥

बाल मरण री प्रशंसा करे करावे अनुमोदे तो प्रायश्चित्त कह्यो । सा० सू० निशीथ उद्देशे ११ वें ।

॥ दोहा ॥

मुनिवर बाल मरण तणी, करे प्रशंसा कोय ।
करतां भले अनुमोदियां, दंड निशीथ में जोय ॥१०५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

बाल मरणाणि वा पसंसइ पसंसं तं वा साइज्जइ ।

निशीथ उद्देशा ११ वें

॥ भावार्थ ॥

बाल मरण अर्थात् बिना अनशन किये मिथ्यात सहित मरे उसकी प्रशंसा करे करावे और उसका अनुमोदन करे तो प्रायश्चित्त ।

॥ बोल अठाबीसवां ॥

जो साधु गृहस्थ ने अणतीर्थी ने १ असाण, २ पाण, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ वस्त्र, ६ पात्र, ७ कम्बल, ८ पाय पुञ्छण, ये आठ बोल देवै देवावे देता ने भलो जाणै तो चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो । सा० सू० निशीथ उद्देशे १५ वें ।

॥ दोहा ॥

अन्य तीर्थि वा गृहस्थ ने, च्यार प्रकारे आहार ।
वस्त्र पात्र कम्बल वली, पाय पुञ्छणो धार ॥१०६॥

ये आठ बोल देवे सहु, तथा देवावे ताय।
देता भले भलो जाणिया, दंड चौमासी आय ॥१०७॥
निशीथ उद्देशो पन्दरवें, भाख्यो श्री जगतार।
पक्षपात सहु परिहरी, जोजो नयण उघार ॥१०८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा साइमं वा, देयइ देयंतं वा, साइज्जइ ॥७८॥
जे भिक्खू अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय पुंछणं वा, देयइ देयंतं वा साइज्जइ ॥७९॥

निशीथ उद्देशा १० वा

॥ भावार्थ ॥

जो साधु अन्य तीर्थी को गृहस्थ को आहार पानी खादिम स्वादिम देवे दिरावे देते हुए को भला जाने तो प्रायश्चित। जो साधु अन्य तीर्थी को गृहस्थ को वस्त्र पात्र कम्बल पाव (पग) पुंछना देवे दिरावे देते हुए को भला जाने तो प्रायश्चित।

॥ बोल उनतीसवां ॥

जो साधु दुखी राई ने अदुखी राई कहे अदुखी राई ने दुखी राई कहे तो चौमासी प्रायश्चित्त आवे। सा० सू० निशीथ उ० १६ वां।

॥ दोहा ॥

ज्ञान दर्शन चारित्र तणो, धारक सुखी जोय।
ते साधु गुण आगरा, तसु जे दुखी कहेय ॥१०९॥

विराधक ज्ञानादिक तणो, विषय लम्पटी जान ।
ते अवूसी राई ने वूसी कहै, प्रायश्चित्त तसु मान ॥११०॥
निशीथ उद्देशो सोलहवें, तेरम चवदम बोल ।
निन्दा करि गुणवन्त नी, गुण तेहना मत ओल ॥१११॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जे भिक्खू वूसी रायइ अवूसी रायइयं वदइ वद तं वा साइज्जइ ।
जे भिक्खू अवूसराइयं वूसराइयं वदइ वद त वा साइज्जइ ।

निशीथ उद्देशम १६ वां

॥ भावार्थ ॥

जो साधु वूसीरायई अर्थात् ज्ञान दर्शन चरित्र गुणके धारक अपने से बड़े मुनिराजको अवूसी रायई कहे और अवूसी रायई जो विषय लम्पटी को वूसी रायई कहे तो चौमासी प्रायश्चित्त ।

॥ बोल तीसवां ॥

सरीखा साधु होकर सरीखा साधुओं ने स्थानक देवे नहीं. देवावे नहीं, देतां प्रते भलो जाणे नहीं, तो प्रायश्चित्त कह्यो सा० सू० निशीथ उद्देशे १७ वें ।

॥ बोल इकतीसवां ॥

सरीखी साध्वी होकर सरीखी साध्वी ने स्थानक देवे नहीं. देवावे नहीं. देतां प्रते भलो जाणे नहीं, तो प्रायश्चित्त कह्यो । सा० सू० निशीथ उद्देशे १७ वें ।

॥ दोहा ॥

अन्य तीर्थी वा गृहस्थ की. वेयावच्च कियां है दंड ।
भलो जाण्यां पिण दंड है, निशीथ ग्यारहवें मंड ॥११४॥
तेलादिक मर्दन करे, मसले दावे पाय ।
धोवे रंगे प्रमार्जे, वलि लोद्रवादि लगाय ॥११५॥
तसु तन में देखी करी, गड्गुम्बड़ादिक कोय ।
पूंजे धोवे मालिश करे, वलि छेदे अवलोय ॥११६॥
रुधिर राध काढे तसु, तेल लेपादि लगाय ।
चूर्णादिक देई करि, क्रिमि आदि निकलाय ॥११७॥
केश संवारे काट कर, दन्तादिक धोवाय ।
घसे दांत मञ्जन करे, कान नाक नूं मैल कढाय ॥११८॥
नेत्र रोग युत देख के, प्रक्षाली साफ करेह ।
रोमादिक धाले तसु, भौंह वाल संवारे तेह ॥११९॥
पसीनादिक साफ करि, साता दे उपजाय ।
तृतीय उद्देशो जिम कह्या, पचपन बोल गिणाय ॥१२०॥
यावत् विचरन्ता मुनी, अन्य तीर्थि प्रते देखि ।
वा गृहस्थी प्रत देख कर, शिर ढांके सुविशेष ॥१२१॥
इत्यादिक वेयावच्च कियां, वलि करायां ताह ।
भलो जाण्यां पिण दंड कह्यो, सूत्र निशीथ रे मांह ॥१२२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

भिक्खू अण्ण उत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, पायं संमार्ज्ज

र्थों वा गृहस्थ को देखकर उनका मस्तक छत्र वस्त्रादि से ढांके त्यादि वैयावृत्य करे करावे, करते हुए को अनुमोदना करे, तो प्राय-श्चित।

॥ बोल तेतीसवां तथा चौतीसवां ॥

साधु आप रहता होय जिण स्थानक में न्यातीला वा अण न्यातीला, श्रावक वा अश्रावक ने आखी रात वा आधी रात, राखे तो प्रायश्चित्त आवे। सा० सू० निशीथ उद्देशे ८ वें बोल १२ वें।

साधु रहता होय जिण स्थानक में न्यातीला वा अण न्यातीला, श्रावक वा अश्रावक, आखो रात वा आधी रात रहे उणां ने नहीं निषेधे तो प्रायश्चित्त आवे। सा० सू० निशीथ उद्देशे ८, बोल १३ वें।

॥ दोहा ॥

साधु वसे तिण स्थान में, निज न्याती प्रते जान।
अथवा अण न्याती प्रते, राख्या दंड पिछान ॥१२३॥
श्रावक हो अथवा वलि, अश्रावक जो होय।
सर्व वा अर्ध रात्रि में, राख्यां प्रायश्चित जोय ॥१२४॥
इमहिज रहता हुयां प्रते, नहीं निषेधै तास।
निशीथ उद्देशे आठवें, प्रायश्चित कह्यो जास ॥१२५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

प्रश्नव्याकरण इग्यारहवां ने विषै, बीसमी गाथा मांहि ।
निषेधियां वर्तमान में, वृत्ति छेद कहाहि ॥१२६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

जेय दाणं पसंसंति, वह मिच्छन्ति पाणिणो ।
जेयणं पडि सेहंति, वित्तिच्छेयं करन्ति ते ॥१३०॥

॥ भावार्थ ॥

जो दान की प्रशंसा करे सो प्राणी जीवो का वध वछता है, और जो वर्तमान में निषेध करे तो लेने वाले की वृत्ति का छेद करे।

॥ सोरठा ॥

इहां को प्रश्न करेह रे, सावद्य शब्द नहीं पाठ में।
समुचै दान कहेह रे, तसु उत्तर आगे सुणो ॥१३०॥
छहुं काय री घात रे, मुनि ने देतां नहिं हुवै।
ते निरवद्य साक्षात रे, तिणरी प्रशंसा बहु जगह ।१३१।
दान शील तप भाव रे, च्यार मार्ग यह मुक्ति रा।
ए निरवद्य ठहराव रे, करे जिन आज्ञा सहित जो ।१३२।
शरीर अधिकरण नांहि रे, पीहर है षट् काय ना।
यावज्जीव लग तांहि रे, मुनि रे हिंसा त्याग है ॥१३३॥
तसु दीधां पुण्य जान रे, अशुभ कर्म पिण क्षय हुवै।
दियां सुपात्र दान रे, श्रावक रे व्रत बारमूं ॥१३४॥
दुर्लभ कह्या जिनराय रे, शुद्ध दान दाता निका।
दीधां शुभ गति जाय रे, दशवैकालिक मिषे कह्यो ॥१३५॥

सुमुज प्रमुख दश ताय रे, मुनि ने दान देई करी।
गच्छपतारी थाय रे, केइक तिण भव मोक्ष में ॥११६।
पञ्चम अङ्ग पिछाण रे, अष्टम शत उद्देश पइ।
तथा रूप मुनि ने जाण रे, श्रावक पडिलामे तसु।।११७
एकान्त निर्जरा होय रे, किञ्चित्मात्र पिण पाप नहीं।
पुण्य बन्ध अवलोय रे, ठाम ठाम सूत्रे कह्यो ॥११८॥
स्थानाङ्ग नवमे जोय रे, नव विधि पुण्य बन्धे कह्यो।
निर्वद्य नवों अवलोय रे, मुनि ने कल्पे ते कह्या ॥११६॥
नमस्कार किया आदि रे तेहने निर्दोष अन दिया।
पुण्य तणो बन्ध थाय रे, नव ही सरीखा जाणिये।।१४०।
ते माटे इहां जान रे, निर्वद्य दान न छेलवो।
बीसमीं इकवीसमीं पिछान रे, गाथा देख निर्णय करो।
अस्ति नास्ति पे होय रे, पुण्य पाप भी नहीं कहे।
वर्त्तमान में जोय रे, पूछ्या थी मुनि नहीं वदे।।१४१॥
तेम इहां अवधार रे, निषेधिया वर्त्तमान में।
करन्ति शब्दे धार रे, किया तेह वर्त्तमान री॥१४३॥
किम्पां प्रशंसा सोय रे, वध पञ्चणहारो कह्यो।
प्रत्यक्ष ही अवलोय रे, सावद्य दान यह जाणवो।।१४४।
ठाम * जिम राय रे, कुपात्र दान तणा कह्या।
फल कडुआ अविकाय रे पक्षपात तज सामलो॥१४५॥
मृगा लोढा मे देख रे, गौतम जिनपै आय करि।

दुःख विपाक में लेख रे, पूछ्यो किं दंचा इणे ॥१४६॥
वलि भगवती मांहि रे, अष्टम शतके देखलो।
छट्ठे उद्देशे ताहि रे, असंयती अविरतिने ॥१४७॥
दान एकान्त जे पाप रे, सचित अचित पड़िलाभियां।
निर्जरा किञ्चित नाहिं रे, प्रत्यक्ष पाठ विषे कह्यो ॥१४८॥
तथा सूयगडाअंगेह रे, नवम अध्ययन तेवीसमीं।
गाथा में इम लेह रे, साधु बिन अनेरा प्रते ॥१४९॥
दान देवो अवधार रे, कारण पाप तणो तिको।
भ्रमण हेतु संसार रे, इत्यादिक बहु सूत्र में ॥१५०॥
वलि आनन्द श्रावक जान रे, अन्य तीर्थी ने देण रा।
कीधा छे पचखान रे, सप्तम अंगे देखल्यो ॥१५१॥
जो फल न कहे कदेह रे, सावद्य दान तणा अशुभ।
तो भवी किम जाणेह रे, सुपात्र कुपात्रज दान ने।१५२।
निषेधियां वर्त्तमान रे, अन्तराय लागे तसु।
वलि वृत्तिच्छेदक जान रे, दान लेण वाला तणी ॥१५३॥
प्रशंसियां जे दान रे, प्राण घात वांछक कह्यो।
तो ते दीधां दान रे, ते हिंसक किम नहीं हुवै ॥१५४॥
मुनि विन अपर शरीर रे, अधिकरण षट् काय नूं।
तसु तीखो कियां सीर रे, हिंसादिक कारज तणो।१५५।
अव्रत मांहि देह रे, लेवे ते पिण अविरत में।
दूजो आस्रव सेवेह रे, तिण थी न हुवे पुण्य बंध।१५६।

कोई कहे शुभ परिणाम रे, दान देण वाला तणा।
तिण मे पुन्य बन्ध ताम रे, तसु उत्तर हिये विचारिये॥
साता पछी एक रे, धुर आस्रव सेवानियो।
दूजो बोल अलीकरे, धु प दूजा रो भेटियो॥१५८॥
तीजो चोरी कराय रे पर साता परिणाम से।
इक मैथुन सेवाय रे, साता रा परिणाम से॥१५६॥
इम परिग्रह रखवाय रे, हित वच्छी भल भाव से।
यह पचास्रव न्याय रे, बुद्धिवन्त हिये विचारिये।१६०॥
धुर पचम रे माहि रे, धर्म पुण्य ओ होय तो।
बिचला तीन में ताहि रे, धर्म पुन्य पिण जाणवो॥१६१॥
न हुवे शुभ परिणाम रे, पचास्रव सेवावतां।
जिन आज्ञा बिन काम रे, कीधा थी धर्म पुण्य नहीं॥
तिणमू लौकिक दान रे, प्रशसवो नही मुनि भणी।
प्रशसिया थी जान रे, छकाय प्राणी वध तणु॥१६३॥

॥ बोल छत्तीसवा ॥

विषय सहित धर्म बुरो, जिम ताल पुट जहर खाया, कुरीति से हाथ में शस्त्र लिया, कुविधि मन्त्र जपिया मरण पामें, तिम इन्द्रियों को विषय सहित धर्म प्ररूपे ते घणा जन्म मरण करावे। सा० सू० उत्तराध्ययन अ० २० वें गा० ४४

॥ दोहा ॥

जिम विष खायां तालपुट, कुविधि शस्त्र हाथ मझार ।
मन्त्र कुरीति जपियां थकां, पामे मरण तिवार ॥१६४॥
तिम विषय सहित जे धर्म छे, प्ररूपियां तसु जान ।
दुःखदाई होवे घणो, जन्म मरण बहु मान ॥१६५॥
उत्तराध्ययन में जिन कह्यो, बीसमाध्ययन रे मांहि ।
चार चालीसवीं गाह में, हिंसा धर्म दुःखदाय ॥१६६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

विसन्तु पीयं जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहियं ।
एसो विधम्मो विसओव वन्नो, हणाइ वेयालइवा विवन्नो ॥४४॥

उत्तराध्ययन अ० २० वे ।

॥ भावार्थ ॥

जैसे कालकूट जहर पीने से, कुविधि शस्त्र ग्रहण करने से, और कुरीति से वेतालादि मन्त्र जपने से, मृत्यु प्राप्त हो । वैसे इन्द्रिय विषय सहित धर्म प्ररूपना करने से जन्म मरणादि की वृद्धि हो तथा दुःखदाई हो ।

॥ बोल सैंतीसवां ॥

भाषा २ कही १ आराधक, २ विराधक । विराधक भाषा में औगुण ४ कह्या यथा—१ असंयम, २ अविरति, ३ अपडियाई, ४ अपच्चक्खाण पाप कर्म सा० सू० पन्नवणा पद ११ वें ।

घर छांडे नहीं मरा श्रपी, नहीं उखावे जेह।
पज मग स्त्री तणो, छशाम सूयगडा अंगेह ॥१७३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

गुणोश्र पर समाहि पत्ते सप समाहट्टु परिव्वया।
गिह न छाए नवि य छवा, समिस भाव पवइ पवाइ ॥१॥

॥ भावार्थ ॥

प्रथम गुप्तियुक्त भगवान् मानव प्रथम गात्रेमें समाधि और शुभ लेश्या के धारक अपने रहने के लिये घर छावे नहीं अग्नि से छवावे नहीं, सममाव धारण करता हुआ मिश्र माया का त्याग करे।

॥ बोल चालीसवां ॥

मिश्र भाषा तथा असत्य भाषा सर्व प्रकारे छोड़नो कही सत्य और व्यवहारनी भाषा बोलनी कही। सा० सू० दशवैकालिक अ० ७ गाथा १ लो।

॥ दोहा ॥

सर्व प्रकारे असत्य, मिश्र, नहीं बोले मुनि वैण।
सत्य व्यवहार री भाषमें, व्यार भाषा में सैण ॥१७४॥
दशवैकालिक में कह्यो, सप्तम अध्यने सवज।
पहली गाथा ने विषे, मीखे सविनय श्रव्ज ॥१७५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पन्नवं।
दोण्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासिज्ज सव्वसो ॥१॥

दशवैकालिक अ० ७ वाँ।

॥ भावार्थ ॥

चार प्रकार की भाषा है जिसमें सत्य और व्यवहार तो विनय सूं बोले, किन्तु असत्य और मिश्र भाषा सर्वथा प्रकारे नहीं बोले।

॥ बोल इकचालीसवां ॥

मिश्र भाषा रा धणी रो वचन अवक्तव्य कह्यो, भणविमासो बोलनहार कह्यो, अज्ञानवादी कह्यो, पूछ्यां रो जबाब देवा असमर्थ कह्यो, मिश्र धर्म प्ररूपणे वालो आप रो मत थापवा भणी छलबल मांडतो कह्यो। सा० सू० प्र० सूयगडांग अध्ययन १२ वें गाथा ५ वीं।

॥ दोहा ॥

मिश्र भाषा प्राप्त थको, मिश्र नूं बोलणहार।
बोले बिना विचारियो, अज्ञान वादी धार ॥१७६॥
जाय देवा समरथ नहीं, पूछ्यां थी अवलोय।
मिश्र धर्म प्रते स्थापवा, छल बल मांटे सोय ॥१७७॥
आत्म अक्रिया मान कर, फुन प्रकृति क्षय मुक्ति।
इम इक पख इम दोय पख, सांख्य दर्शनी उक्ति ।१७८।
प्रथम सूयगडाअङ्ग कह्यो, द्वादशाध्ययने पेख।
मिश्र वक्ता अवक्त है, पंचमी गाथा पेख ॥१७९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अभिभूय नाणं च गिरा गहीय, न मुच्चई होइ मुसाणुवाए ।
इम दु पक्ख इमगा धम्म, माहसु एवाब तत्वं च कम्म ॥६॥

प्र० सूत्र गडांगे अध्ययने ।

॥ भावार्थ ॥

मिश्र भाव को प्राप्त होवै, प्रथम कर्म कारी को वस्तर देवैमें असमर्थ होते हैं, और मौन धारण करते हैं वे स्वामनतापी कभी क्षमा कहै, कभी क्षमा नहीं, इस तरह से कभी पक्ष पक्षी, कभी दो पक्षा होते हैं। और प्रश्न पर करके अपना मत स्थापन करते हैं।

॥ बोल बयालीसवा ॥

साधु री आज्ञा बारे धम कहै तिण ने काम भोग मे मूर्छा कह्यो, हिंसा रा करणहार कह्यो। सा० सू० प्र० आचारांग अध्ययन ५ उद्देशो ४ थो।

॥ दोहा ॥

साधु री आज्ञा बिना, भई धर्म उदार।
ते काम भोग में मूर्छिया, हिंसा रा करणहार ॥१८०॥
प्रथम आचारांग कह्यो, पञ्चम अध्ययन मझार।
चौथा उद्देशा विषे, मामलज्यो विस्तार ॥१८१॥
ब्रह्मचर्य बसता थका, आण न मन मामेर।
माननीय होऊ लोक में, इम धारी धर छोड़ ॥१८२॥

ते काम भोग गृद्धी छता, मूर्च्छित विषय मझार।
समाधि मार्ग जिन भाषियो, ते नहीं सेवे लिगार ।१८३।
आर्य व शुद्ध साधु तसु, शिक्षा दे किण वार।
तो तेहनी निन्दा करे, वे द्विगुण मूर्ख इम धार ॥१८४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

वसित्ता बंभचेरंसि आणा तं णो त्ति मण्णमाणा, अग्घायं तु सोच्चाणि सम्म समणुन्ना जिविस्सामो, एगे णिक्खम्मते असंभवेता विड्ज्झमाणे कामेहि गिद्धा, अज्झो ववण्णा समाहि माणाए अज्झो सेरे ता सत्था मेव फरूस वदन्ति । सील मता उव सन्ता संखाए रीयमाणा असीला अणुवय माणस्स बितिया मदस्स बालया ।

प्र० आचारांगे षष्ठमध्ययने चतुर्थोद्देशे।

॥ भावार्थ ॥

कितनेक साधू होकर आज्ञा का अनादर करते हुए विषय लम्पटी होकर उनमें लिप्त हो जाते हैं। मैं सब का माननीय होऊंगा ऐसा विचार करके दीक्षा अंगीकार करते हैं, ब्रह्मचर्य धारते हैं, परन्तु गुर्वाज्ञा प्रमाण मोक्ष मार्गमें नहीं चलते। काम इच्छा से सुखो में मूर्च्छित होकर विषयों की ओर ध्यान दे गृद्धि हो तीर्थंकर भाषित जो समाधि मार्ग है उसका सेवन नहीं करते, यदि उन्हें कोई अच्छी शिक्षा देवे तो उनको निन्दा करते हैं, गुर्वाज्ञा बिना अपने मनमाना हिंसा धर्म प्ररूपते हुए सुखों से जीवें ऐसा विचार के भए हुए, वे बाल, मन्द बुद्धि वाले, शुद्धाचार के पालने वाले साधुओं से द्वेषभाव रखके निन्दा करने में तत्पर हैं अत वे द्विगुने मूर्ख हैं।

॥ सूत्र पाठ ॥

सम्मिस्स भाव च गिरा गहीए, से मुम्मुई होइ अणाणुवाए ।
इम दु पक्ख इममेग पक्ख, आहसु छलायतण च कम्म ॥५॥

प्र० सूय० बारमें अध्ययनमें ।

॥ भावार्थ ॥

मिश्र भाव को प्राप्त होवे, प्रश्न करने वाले को उत्तर देवैमें असमर्थ होते हैं और मौन धारण करते हैं वे अज्ञानवादी कभी क्या कहे, कभी क्या कहे, इस तरह से कभी एक पक्षी, कभी दो पक्षी होते हैं। और छल कर करके अपना मत स्थापन करते हैं।

॥ बोल बयालीसवा ॥

साधु री आज्ञा बारे धर्म अड़े तिण ने काम भोग में रमतो कह्यो, हिंसा रो करणहार कह्यो। सा० सू० प्र० आचारांग अध्ययन ५ उद्देशो ४ थो।

॥ दोहा ॥

साधु री आज्ञा बिना, अट्ठे धर्म उचार ।
ते काम भोग में म्हालिया, हिंसा रा करणहार ॥१८०॥
प्रथम आचारांगे कह्यो, पञ्चम अध्ययन मझार ।
चौथा उद्देशा विषे, लाभलज्यो विस्तार ॥१८१॥
ब्रह्मचर्य बसता थका, आण न मन मानेह ।
मानवीय होउ लोक में, इम भाखी पर ज्ञानेह ॥१८२॥

॥ बोल तीयालीसवां ॥

आज्ञा बाहर धर्म कहसो तिण रा तप अने नियम भ्रष्टकह्या, तिण ने मूर्ख कह्यो, संसार से पार पामतो नहीं कह्यो। सा० सू० आचारांग अध्ययन २ उद्देशो २।

॥ दोहा ॥

कहसी धर्म आज्ञा बिना, तिणरा तप अरु नेम।
भ्रष्ट कह्या धुर अंग में, द्वितीय अध्ययने एम ॥१८९॥
दूजे उद्देशे देखल्यो, परिसह उपसर्ग पाय।
आज्ञा बाहिर होयके, शिथिल थई मोह वर्तांत ॥१९०॥
कहे मैं अपरिग्रही अछूं, पिण भोग मिल्यां भोगाय।
तथा भोग मिलवा तणा, करत अनेक उपाय ॥१९१॥
ते भेष लजावे साधु नूं, सेवे काम विकार।
बार २ मोह में फंस्या, जे नहीं पामे पार ॥१९२॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अणाणाए पुट्ठावि, एगेणियट्ट ति मन्दा मोहेण पाउडा, अपरिग्गहा भविस्सामो समुट्ठाए लद्धे कामे अभिगाहेंति, अणाणाए मुणिणो पडिलेहन्ति, एत्थ मोहे पुणो पुणो सण्णा णो पाराए।

आचारांगे द्वितीयाध्ययने द्वितीय उद्देशे।

॥ भावार्थ ॥

अज्ञानी मूर्ख जीव परीषह उपसर्ग आने से आज्ञा बाहिर होके

संयम से भ्रष्ट होते हैं, और कहते हैं हम अपरिग्रही हैं ऐसा ऐसे गुर्ण का वेश बनाते हैं, काम भोग प्राप्त होने से अभिमान करते हैं कामों प्राप्त करने को उपाय करते रहते हैं इस तरह आज्ञा बाहिर धर्म बतावे जो हैं वे पार २ मोह में फसे हुए संसारका पार नहीं पावे।

॥ बोल पचालीसवां ॥

आज्ञा बारे उद्यम, आज्ञा माहि आलस्य, ए दो बोल मत होज्यो, यह कुशल पुरुष भगवान् की श्रद्धा छै। सा० सू० आचारांग अ० ५ उ० ६।

॥ दोहा ॥

कुशल पुरुष महावीर नी, यह श्रद्धा है सार।
आज्ञा में उद्यम सदा, नहिं उद्यम आज्ञा बार ॥१६३॥
उद्यम आज्ञा बाहिरे, आज्ञा में आलस्य।
यह दोनूं मत होयज्यो, इम भाख्यो कुशलस्स ॥१६४॥
धुर आचारांगे कह्यो, पंचम अध्ययने देख।
छट्ठा उद्देशा विषे, जिम वर्णन इम लेख ॥१६५॥

॥ सूत्र पाठ ॥

अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एत ते मा होउ, एयं कुसलस्स दंसणं ॥

[आचारांग पंचम अध्ययने षष्ठमोद्देशे।

॥ भावार्थ ॥

कितनेक आज्ञा बाहिर विपरीत प्रवृत्तिमें उद्यमी बनते हैं और कितने ही जिनाज्ञानुसार प्रवृत्ति में निरुद्यमी होते हैं अतः यह दोनों

॥ दोहा ॥

राग द्वेष दो पाप है, प्रवर्त्ते पाप मझार ।
जे भिक्खू न्यारा रहे, ते न रुले संसार ॥१९८॥
उत्तराध्ययने आखियो इकतीसम अध्ययने जान ।
तीजी गाथा ने विषे, भाख्यो श्री भगवान ॥१९९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

राग दोस य दो पाव, पाव कम्म पवत्तणं ।
ज भिक्खू रुम्भइ निच्च, स न अ उ मण्डले ॥३॥

उत्तराध्ययन अ० ३१ गा० ३

॥ भावार्थ ॥

राग द्वेष ये दोनों पाप हैं, पाप कर्म में ही प्रवर्त्ताते हैं। अर्थात् किसी से राग करने में भी पाप है और द्वेष करने में भी पाप है। इसलिये साधु राग द्वेष किसी पर भी न करें। वे संसार रूपी मंडल में भ्रमण नहीं करते हैं।

॥ बोल सैंतालीसवां ॥

कोई इम कहे साता दियां साता होय तिण ऊपर भगवान छव बोल परूप्या—१ आर्य मार्ग से वेगलो, २ समाधि मार्ग से न्यारो, ३ जिन धर्म री हेलणा रो करणहार, ४ अमोक्ष रो कारण, ५ थोड़ा सुखा रे कारणे घणा सुखा रो हारणहार

॥ दोहा ॥

राग द्वेष दो पाप है, अत्रसे पाप मझार ।
जे भिक्खू न्यारा रहे, ते न रुले संसार ॥१६८॥
उत्तराध्ययने आखियो इकतीसम अध्ययने जान ।
तीजी गाथा ने विषे, भाख्यो श्री भगवान ॥१६६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

राग दोस य दो पाव, पाव कम्म पवत्तणं ।
जे भिक्खू रुम्भइ निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥३॥

उत्तराध्ययन अ० ३१ गा

॥ भावार्थ ॥

राग द्वेष ये दोनों पाप है, पाप कर्म में ही प्रवर्त्ते है। अर्थात् किसी पे राग करने में भी पाप है और द्वेष करने में भी पाप है। इसलिए साधु राग द्वेष किसी पर भी न करें। वे संसार रूपी मण्डल में भ्रमण नहीं करते हैं।

॥ बोल सैंतालीसवां ॥

कोई इम कहे साता दियां साता होय तिण ऊपर भगवान छव बोल प्ररूप्या—१ आर्य मार्ग से बेगलो, २ समाधि मार्ग से न्यारो, ३ जिन धर्म री हेलणा रो करणहार, ४ अमोक्ष रो कारण, ५ थोड़ा सुख रे कारणे घणा सुख रो हारणहार,

॥ दोहा ॥

राग द्वेष दो पाप है, अवस पाप मभार।
जे भिक्खू न्यारा रहै, ते न रुलै ससार ॥१६८॥
उत्तराध्ययने आखियो इकतीसम अध्ययने जान।
तीजी गाथा ने विषे, भाख्यो श्री भगवान ॥१६६॥

॥ सूत्र पाठ ॥

राग दोस य दो पाव, पाव कम्म पवत्तण।
ज भिक्खू रुभइ निच, स न अच्छइ मडल ॥३॥

उत्तराध्ययन अ० ३१ गा०

॥ भावार्थ ॥

राग द्वेष ये दोनों पाप है, पाप कर्म में हो प्रवर्तते है। अर्थात् किसी पै राग करने में भी पाप है और द्वेष करने में भी पाप है। इसलिये साधु राग द्वेष किसी पर भी न करे। वे संसार रूपी मडल में भ्रमण नहीं करते हैं।

॥ बोल सैंतालीसवा ॥

कोई इम कहे साता दियां साता होय तिण ऊपर भगवान छन बोल प्ररूप्या—१ आर्य मार्ग से वेगलो, २ समाधि मार्ग से न्यारो, ३ जिन धर्म री हेलणा रो करणहार, ४ अमोक्ष रो कारण, ५ थोड़ा सुख रे कारणे घणा सुख रो हारणहार...

स स कर्म अनुसार रे, इन्द्रिय विषय विकार थी।२२४।
तसु सेवावे भोग उपभोग रे, खाणा पीणा आदि दे।
त्यारो मिलाया जोग रे, दूजे करणे पाप है ॥२२५॥
निज खाणो पीणो जेह रे, श्रावक अव्रत में गिणे।
तो पर ने खवाख्या तेह रे, किम धर्म भद्दे समकिती॥
असख्य एकेन्द्रिय जीव रे, मार असाता तसु करे।
पचेन्द्रिय ने साता अतीव रे, किया धर्म किण विध हुवे॥
मोह अनुकम्पा आण रे, साता करै निज पर तणी।
ते सावद्य ही पिछाण रे, जिन आज्ञा नहीं तेह में॥
उपदेशे त्याग कराय रे, घटावे अव्रत मद्दस्त्री नी।
तप चारित्र बढाय रे, मुक्ति मार्ग साहम्‌ करे ॥२२६॥
चिहुगति भ्रमण मिटाय रे, दुःख जन्म मरण मकाय दे।
आतम सुख प्रकटाय रे, निरवद्य साता इम हुवे ॥२२७॥
ते माटे इहा जोय रे, सावद्य साता जाणवी।
स्व परनी अवलोय रे, करया थी जिन धर्म नहीं ॥२२८॥
सासारिक उपकार रे, सासारिक मू मार्ग है।
जिन धर्म नहीं लिगार रे, जिन आज्ञा बिन कार्य में॥
तिण सू कह्यो जिनराय रे, जे को इक इक इम कहै।
दुःख दिया सुख थाय रे, ते आर्य मार्ग से वेगला।२३१।
यावत् भूरसी तेह रे, छोड वाणिया नी पर।
सूत्र में आयेह रे तेह सत्य करि जाणजो ॥२३२॥

॥ भावार्थ ॥

जो साधु अनुकम्पा के लिये त्रस प्राणियां का जाति प्रकार त्रस जीवां को घास की डोरी से, चमड़े का डोरी से, रस्सी की डोरी से सूत्रादिक डोरियों से, बांधे बंधावे बांधते को अनुमोदे तो चौमासिक प्रायश्चित ॥१॥ ऐसे ही बंधे हुए त्रस जीवां को देख अनुकम्पा करके छोड़े छोड़ावे और अनुमोदे तो चौमासिक प्रायश्चित ॥२॥

॥ सोरठा ॥

जन्तु अर्थ अनु जोड़ रे, ते केवल इण इम कही ।
कोलुण जीव आखेर रे, भाख्या जोवा छड ही ॥१३९॥
ततोत्तर विध कह्यो ए४ रे, दीन भाव इण सूं हुवे ।
त्रस प्रति भाख्या तेय रे, गरीब भाव होवे तिण तणो ॥
मुनिवर दीनज होय रे, त्रस पावे किण कारणे ।
कठा दीन त्रस जोय रे, तो साधू अनुकम्प करि ॥१४०॥
तथा पखिया प्रति देख रे, दीन पणो मुनि सूं करै ।
जो दीन अनुकम्पा देख रे, सावद्य तिण सूं प्रायश्चित कह्यो
न्याय दृष्टि अवलोय रे, लघु चूर्णि जिन दास कृत ।
तिहा कोलुण शब्द जोय रे, कोलुण अनुकम्प अर्थ॥१४१॥

॥ जिनदास आचार्यकृत लघुचूर्णिका पाठ ॥

भिक्खू पुव्व भणित्रो कोलूणति कारुण्य अनु-कम्पा प्रतिज्ञाया इत्यर्थ ।

पाम्यां म्होत्या तत्र भार रे, त्रस जीवा प्रति आश्रियो॥
इम पिण स्थाने जोय रे, पाठ शब्द छै जुजुआ।
कोसुण अनुकम्प होय रे, कोउल ते कौतुहल कह्यो॥
त्रस जीवा रे मारि रे, मनुष्य तिर्यञ्च सहु आश्रिया।
तसु अनुकम्पा पयाहि रे, पाये म्होखे मुनि तदा।२४६।
प्रायश्चित्त कह्यो तिणिवार रे, सूत्र वचन ते सत्य है।
ग्रहस्थ नी सार सभार रे, सावद्य जाण मुनि नहीं करे॥
ग्रहस्थ तणो जे काम रे ते करवू कल्पे नहीं।
कह्या अकल्पनीक ठाम रे, पाम्या ग्रहस्थ अनुकम्प करि।
तेलादि मर्दन करेह रे, मुनि तनु शान्ति पमायवे।
यह दोष उपजेह रे, द्वितीयश्रुत स्कन्धे चुर अगे।२५२।
तिहां पिण कोसुण ही शब्द रे तसु अनुकम्पा अर्थ छै।
एम इहां पिण लन्ध रे, कह्यो कोलुण शब्द सारखो॥
तथा आजीविका निमित्त रे अर्थ करे कौसुण तणो।
ते पिण है विपरीत रे, इहां मुनि ने काई आजीविका॥
किहां ही न सूत्र विषेह रे, कोलुण ते आजीविका।
जे सूत्रार्थ न जाणेह रे, ते मन कल्पित अर्थ करे।२५४।
बलि कहीं इम वाय रे, अनुकम्प सावद्य न हुवे।
निर्णय ही कहिवाय रे, तत्तोत्तर न्याय विचारिये।२५६।
अनुकम्पा रे काज रे, देवकी ना षट् सुत प्रते।
सुलसा घरे समाज रे, मेल्या हरण गवेषि सुर॥२५७॥

उद्देशा चौथा विषे, भाख्यो श्री जिनराय।
मोक्षाभिलाषी वीर ने, मार्ग विकट कहिवाय ॥२६५॥
तिण सुं तप थी निज तनु, लोही मांस सुकाय।
ब्रह्मचर्य वसबे करी, माननीय कहवाय ॥२६६॥
प्रथम इन्द्रियां वश करी, पिण मोह उदय ते बाल।
विषयासक्त होवा थकी, न सके बन्धन टाल ॥२६७॥
बलि प्रयत्न करे घणो, पइयो पुरुष अयाण।
मोह तिमिर में वर्त्ततो, किम पामे जिण आण ॥२६८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुरणुचरो मग्गो, वीराणं अणियट्टगामीणं, विगिंच मंस सोणियं एस पुरिसे दविए वीरे आयाणिज्जे वियाहिए जे धुणाइ समु-स्सयं वसित्ता बंभचेरंसि, णेत्तेहिं पलिछिन्नेहिं आयाणसोय गढिए बाले अव्वोच्छिन्नबंधणे अणभिक्कंत संजोए। तमंसि अविजाणओ आणाए लंभो नत्थि त्ति बेमि।

श्री आचाराङ्ग सूत्रे प्रथम श्रुत स्कन्धे चतुर्थ अध्ययने।

॥ भावार्थ॥

मुक्ति पाने वाले वीर पुरुषों का मार्ग बहुत ही कठिन है। इसलिये हे मुनि! तपश्चर्यादि करके मांस रक्त को शुष्क कर। जो पुरुष सदैव ब्रह्मचर्य पूर्वक तप कर, तप से शरीर को दमते हैं वे मोक्ष मार्ग चलने वाले वीर पुरुष माननीय होते हैं। और जो पुरुष गुरुकुल में कदाचित् इन्द्रियों को वश करके रहते हैं और पीछे मोह के उदय में आके विषयों में आसक्त हो जाते हैं ऐसे बाल (अज्ञानी) पुरुष किस कारण से नहीं

॥ सोरठा ॥

इहां कोई युक्ति लगाय रे, कहे भृगु सुत तो महत्त्व ण।
तसु वच केम मनाय रे, वा तमतमा मिथ्यात हुवे ॥
तसु उत्तर सुविचार रे, न्याय दृष्टि अवलोकिये।
इग्यारहवीं गाथा मझार रे, भगवन् गणधर इम कह्यो॥
पोछे वचन विमास रे, पूर्व पदे इम आखियो।
तो मिथ्या वच किम तास रे, गणधर तास सरावियो॥
साचो सुत वच मान रे, भृगु पिणसयम लियो ।
जिन मत साचो जान रे, निज मन म्होटो मद्वियो ।२७५।
कहे हुवे मिथ्यात् रे, धर्म भ्रष्ट जिम्यवियां।
ते लेखे पिणा थात रे, पाप बन्ध भोजन दियां ॥२७६॥
अवचूरी रे मझार रे, अन्धकारे अन्धकार उ।
रौरवादि नरक विस्तार रे तमतमा नू अर्थ इम ॥२७७॥

॥ अवचूरि का पाठ ॥

भोजिता द्विजा विप्रा नयन्ति तम सोपियत्त मस्तस्मिन् रौद्रे रौरवादिके नरकेण साम्याजकारे।

॥ सोरठा ॥

तथा सुयगडाङ्ग मझार रे, आर्द्र मुनि पिण इम कह्यो।
द्वितीय श्रुतस्कन्धे सार रे, अ ध्ययन छठा ने विषे ।२७८।

॥ बोल इक्यावनवाँ ॥

साधु रे सर्व थकी अठारह पाप रा त्याग छै पिण थकी नहीं । सा० सू० उववाई प्र० ११ वे ।

॥ दोहा ॥

सर्व प्रकारे त्यागिया, पाप अठारह जान ।
उववाई प्रश्न इकीसवे, साधु महा गुणखान ॥२८३॥
गामागर अरु नगर में, यावत् सन्निवेश ।
इक २ मनु एहवा अछे, सामल जो सुविशेष ॥२८४॥
अणारम्भ अपरिग्रही, धार्मीक धर्म इष्ट ।
यावत् धर्म नी वृत्ति करत, सुशील सुव्रती शिष्ट ।२८५
आनन्दकारी मुनि तिका, सर्व प्राणातिपात ।
यावत् सर्व परिग्रह थकी, निवृत तेह सुजात ॥२८६॥
क्रोध मान माया अरु, लोभ थकी मुनि तेह ।
जाव मिथ्या दर्शन शल्य थी, प्रति विरत्या छै तेह ॥
सर्व आरम्भ समारम्भ वलि, करण कराषण जाण ।
पचम पचावन तेहना, सर्वथा किया पचखाण ॥२८८॥
कुटन पीटण तर्जना, ताडन वध अने बध ।
परिकेशो थी निवृत थया, छोड दिया सर्व धन्ध ॥
न्यावा तणा, वलि मर्दन पीठी जाण ।
मैल विलेपन आदि मा, ऊ स्यार पचक्खाण ॥२९०॥

॥ भावार्थ ॥

वे जो ग्राम आकर नगर यावत् सन्निवेश में मनुष्य होते हैं सर्वथा— सर्वथा छवों ही कायों के आरंभ रहित सर्वथा मृषावाद रहित, सर्वथा अदत्त रहित, सर्वथा मैथुन रहित, सर्वथा धातु मात्र परिग्रह रहित होते हैं जिन्हों को धर्म हा इष्ट है यावत् धर्म की ही वृत्तिकरते हुए विचरते हैं वे सुशील सुव्रताचारी सुव्रती अच्छा कार्य कर आनन्द मनानेवाले सर्व प्रकार तीन करण तीन योग से प्राणातिपात से निवृत्त हुए यावत् परिग्रह निवृत हुए ऐसे ही सर्व प्रकार से क्रोध मान माया लोभ यावत् मिथ्या दर्शन शल्य से निवृत्त हुए, सर्व तरह आरम्भ समारम्भसे निवृत हुए एवं पचन पचावनादि क्रिया से निवृत्त हुए सर्व तरह से कूटना पीटना तर्जन ताडन वध बन्धन क्लेश से निवृत्त हुए एवं सर्व तरह से स्नान, पीठी मर्दन, विलेपनादि विलेपन से निवृत्ते शब्द स्पर्श रस गन्ध माला अलंकार आदि से सर्वत निवृत हुए और जो सावद्य काम योगोपाधि कर्म से अन्य प्राणा को परिताप होय ऐसे कार्य्य से यावत् जीव पर्यन्त सर्वथा निवृत्तहुए वे अणगार यानी साधू होते हैं, वे ईर्या समितिसमत भाषा समितिसमत यावत् जिन प्रणीत निग्रन्थ प्रवचन को आगे कर उनके अनुगामी पने विचरते हैं।

॥ बोल बावनवां ॥

साधु रा भंड उपकरण परिग्रह मे कह्या नहीं मूर्च्छा राखे तो परिग्रह लागे इम कह्यो। सा० सू० दशवैकालिक अ० ६ गाथा २१ वीं।

॥ दोहा ॥

वस्त्र पात्र मे कम्बल, पाय पूंछणा आदि।
संयम् लज्जा अर्थ मुनि, धारे तज असमाधि ॥२६५॥

षट् जीव निकाय ने प्रते, हणे हणावे नाहिं।
अनुमोदे न हणता प्रति, मन वच काया ताहिं ॥२६८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

इच्चेसिं छण्हं जीव निकायाणं नेव सयं दंड समारम्भेज्जा नेवन्नेहिं दण्ड समारम्भावेज्जा, दण्ड समारम्भन्ते वि अन्नेन समणुजाणेज्जा जाव-जीवाए तिविहं २ मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि।

दशवैकालिक अध्ययन ४ था।

॥ भावार्थ ॥

इन छह जीव निकायों का स्वयं आरम्भ करे नहीं अन्य से आरम्भ करावे नहीं और करने वाले को अच्छा जाने नहीं मन वचन काया से जावज्जीव पर्यंत ऐसा करूं नहीं अन्य से करावें नहीं करते को अच्छा जाने नहीं इस तरह सब भेद्या पचखान है।

॥ बोल चौपनवां ॥

आचारज नी आज्ञा बिना आहार करे करता ने भलो जाणे तो प्रायश्चित कह्यो। सा० सू० निशीथ उ० ४ बोल २२ वां।

॥ दोहा ॥

आचार्य नी आज्ञा बिना, अन्न जिन दीधा आहार।
जे साधु जो भोगवे, प्रायश्चित लघु धार ॥२६९॥

॥ भावार्थ ॥

ऐसे भव संसार में प्रमादी और शुभाशुभ कर्म करके परिभ्रमण करता है इसलिये हे गौतम ! समय मात्र भी प्रमाद मत कर।

॥ बोल छप्पनवां ॥

पुन्य पाप ने खपावणा कह्या। सा० सू० उत्त० अ० २१ वें गाथा २४ वीं।

॥ दोहा ॥

पुन्य पाप दोऊ भणी, खपावणा सुविशाल।
उत्तराध्ययने इकवीसमें, चौबीसमी गाथा न्हाल ॥१०३॥
द्विविध खपाया शीघ्र ते, पुन्य पाप असराल।
अपुनरागम गति लही, भवाब्धि तर्यो समुद्रपाल ॥१०४॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुविह खवे ऊण पुण्ण पाव निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के।
तरित्ता समुद्दं व महाभवोघं, समुद्दपाले अपुणागमं गए त्तिबेमि ॥

उ० अध्य० २१ वें गा० २४ वीं।

॥ भावार्थ ॥

पुण्य पाप दोनों का क्षय करके शैलेसी अवस्था को प्राप्त होके महा प्रमाणिक भव समुद्र है उसे तैर कर पुनः वापिस न आना पड़े ऐसा जो सिद्ध गति है सो समुद्रपाल मुनि प्राप्त हुए।

मोदे तो प्रायश्चित ॥४३॥ जो भिक्षु उसपा पाना सूत्र उत्तर गुणों में दोष लगावे पाले को पन्ने पन्तावे अनुमोदे तो प्रायश्चित ॥४४॥ जो भिक्षु उसपा का प्रयास करे करावे अनुमोदे तो प्रायश्चित ॥४५॥

॥ बोल अठावनवा ॥

जो साधु गृहस्थ की औषधि करे करावे करता प्रते अनुमोदे तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ उ० १२ वे बोल १७ मू।

॥ दोहा ॥

गृहस्थ नी औषध करे, जो साधु मुनिराय।
निशीथ उद्देशे बारवें, दंड कह्यो जिनराय ॥१०८॥

॥ सूत्र पाठ ॥

ज भिक्खू गिहि तिगिच्छ करइ कर त वा साइज्जइ ॥१७॥

॥ भावार्थ ॥

जो साधु गृहस्थ की औषधि करे करावे करते को अनुमोदे तो प्रायश्चित।

॥ बोल उणसठवां ॥

सामायक दो कही १ आगार सामायक २ अणागार सामायक। सा० सू० ठाणांग ठाणे २ उ० ३ रा।

॥ सूत्र पाठ ॥

चरित्त धम्मे दुविहे पण्णत्ते तंजहा —आगार चरित्त धम्मे चेव, अणागार चरित्त धम्मे चेव।

सू० ठाणांग द्वितीय ठाणे।

॥ भावार्थ ॥

चारित्र धर्म के दो भेद प्ररूपे—आगार चारित्र धर्म सो ग्रहस्थ सम्यक्त्व सहित स्थूलपने व्रत आदरे। अणगार चारित्र धर्म सो मुनि सर्वथा सर्व स्याग कर पञ्च महाव्रत आदरे।

॥ बोल इकसठवां ॥

धर्म दोय कह्या—श्रुत धर्म १, चारित्र धर्म २ सा० सू० ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १।

॥ दोहा ॥

दोय धर्म जिन भाखिया, श्रुत चारित्र उदार।
श्रुत ते आगम जिन कथित, चारित्र ते व्रत धार।११२।
स्थानाग स्थाने दूसरे, प्रथमा उद्देश मझार।
बोल पचीसमा में विषे, कह्यो धर्म विस्तार॥११३॥

॥ सूत्र पाठ ॥

दुविहे ध० प० सुयधम्मे चेव चरित्त धम्मे चेव।

ठाणांग ठा० २।

॥ भावार्थ ॥

दुर्गति में पडते हुए को धार रक्खे वह धर्म दो प्रकार का कह्या—श्रुत धर्म द्वादशाङ्ग रूप १, चारित्र धर्म पंच महाव्रत रूप २।

॥ दोहा ॥

दोय मार्ग है जगति में, इक पाखण्डि कराय ।
द्वितीय मार्ग है जिन कथित, तेह परम सुखदाय ॥११५
उत्तराध्ययन तेवीसवें, केशी श्रमण पूछन्त ।
तब गोयम इह विधि कह्यो, ते सुणिजो धरि ख्यन्त ।११६
कुप्रवचन पाखण्डी ना, सर्व उन्मार्ग गमन्त ।
सन्मार्ग जे जिन कह्यो, उत्तम मार्ग ते तन्त ॥११७॥

॥ सूत्र पाठ ॥

कु पवयण पासंडी, सव्व उम्मग्ग पट्ठिया ।
सम्मग तु जिणक्खाय एसमग्गे हि उत्तमे ॥ ६३ ॥

॥ भावार्थ ॥

कुप्रवचन है सो पाखण्डियों का कहा हुआ उन्मार्ग है उसमें जाने वाले सर्व कुमार्ग जा रहे हैं और जो जिनेश्वरों का कहा हुआ है सो सन्मार्ग है सोही उत्तम अर्थात् श्रेष्ठ है।

॥ बोल चौसठवां ॥

संवर गुण अने आस्रव गुण जुदा २ कह्या। सा० सू० प्र० आचारांग अ० ४ उ० २।

॥ दोहा ॥

संवर गुण न्यारो कह्यो, आस्रव गुण कह्यो न्यार ।
प्रथम आचारांग चतुर्थ में, बुद्धिवंत करो विचार ॥११८

॥ बोल पैंसठवां ॥

करणी च्यार कही—इह लोक रे हित १, पर लोक रे हित २, कीर्ति वर्ण शब्द ने पूजा श्लाघा हित ३, निर्जरा रे हित ४, इण च्यार प्रकार में एकान्त कर्म निर्जरा रे हित तप करणो कह्यो । सा सू० दशवैकालिक अ० ६ उ० ४ ।

॥ दोहा ॥

करणी च्यार प्रकार नी, कही दशवैकालिक मांहि ।
नवमा अध्ययन ने विषे, चौथे उद्देशे तांहि ॥१२२॥
इह लोक अर्थ तप नहिं करे, वलि नहीं परलोक ने हेत
वर्ण श्लाघा शब्दादि निमित, न करे तप सकेत ।१२३।
एकान्त निरजरा कारणे, तप करणो कह्यो सोय ।
समाधि तुरी चौथे पदे, तसु गुण श्लोके जोय ॥१२४॥
नित्य विविध गुण होत है, आशा रहित तप आसक्त ।
निरजरा अर्थी पाप क्षय करे, तप समाधि सदा सयुक्त॥

॥ सूत्र पाठ ॥

चउव्विहा खलु तव समाहि भवइ तंजहा —नो इह लोगट्ठयाए तव महि ट्ठिज्जा, नो परलोगट्ठया ए तव महि ट्ठिज्जा, नो कित्ति वण्ण सद्द सिलोगट्ठयाए तव महि ट्ठिज्जा, नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तव महि ट्ठिज्जा, चउत्थं पयं भवइ भवइ यत्थसिलोगो, विविह गुण तवोरए निच्च,

॥ सूत्र पाठ ॥

जस्स ते लोग सि कम्म समारम्भा परिण्णया भवंति, स हु मुणी विरमि ।

प्र० आचारांग अ० १ उ० १ ।

॥ भावार्थ ॥

समस्त वस्तुओं के जानने वाले भगवान वर्द्धमान ने साक्षात् देखकर उपरोक्त जो क्रियाओं के भेद बताये तथा दो प्रकार की प्रज्ञा द्वारा उन्हें अच्छी तरह समझ के कर्मों के कारणों से दूर रहे सो मुनि कहलाते हैं।

॥ बोल सडसठवां ॥

धर्म दोय कह्या—आगार धर्म १, अणगार धर्म २, सा० सू० उववाई समवशरण अधिकार में।

॥ दोहा ॥

धर्म दोय प्रकार नू, कह्यो उववाई मांहि ।
आगार ने अणगार रो, ते प्रत में धर्म कहांहि ॥१२६॥
सर्व प्रकारे मुण्ड हो, आगार सं अणागार ।
प्रवर्ज्या अंगीकार करि, अणागार धर्म धार ॥११०॥
हिन्सा सर्व प्रकार से, मृषा सर्व प्रकार ।
चोरी मैथुन परिग्रह, सर्व प्रकार निवार ॥१११॥
सर्व प्रकारे त्यागियो, रात्री भोजन जेह ।
अहो आयुष्मान ते, अणागार सामाइ कहेह ॥११२॥

मुसावाय वेरमण, अदिन्नादाणाओ वेरमणं, मेहुणाओ वेरमणं, परिग्गहाओ वेरमणं, राईभोयणाओ वेरमणं, अयमाउसो अणागार सामाइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए निग्गंथे वा निग्गंथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवति। आगार धम्मं दुवालसविहं आइक्खइ तंजहा—पंच अणुव्वयाई तिण्णि गुणव्वयाई चत्तारि सिक्खावयाइं, पंच अणुव्वयाइं तंजहा—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, थूलाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सदारसंतोसे, इच्छापरिमाणे थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं, तिण्णि गुणव्वयाइं तंजहा—दिसिव्वयं, उवभोग परिभोग परिमाणं, अणत्थ दंड वेरमणं, चत्तारि सिक्खावयाइं तंजहा—सामाइयं, देसावगासियं, पोसहोववासे, अतिहि स विभागे, अपच्छिम मारणंतिया संलेहणा झूसणाराहणयाए। अयमाउसो अगार सामाइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए समणो-वासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवन्ति।

॥ भावार्थ ॥

धर्म दो प्रकार का कहा सो कहते हैं—आगारिक धर्म तो गृहवास में रहता हुआ धर्म पाले १, अणागारिक धर्म गृहवास त्याग कर साधु धर्म पाले सो निश्चय कर के सर्वथा प्रकार मुण्ड होके आगार से अणागार हो सर्वथा प्रकार प्राणातिपात से निवृत्ते सर्वथा प्रकार मृषावाद से निवृत्ते, सर्वथा प्रकार चोरी से निवृत्ते, सर्वथा प्रकार स्त्री संग से निवृत्ते, सर्वथा प्रकार परिग्रह से निवृत्ते, सर्वथा प्रकार रात्रि भोजन से निवृत्ते, हे आयुष्मान यह अणागार सामाइ धर्म परूप्या है, यही धर्म साधा है, इसी धर्म में रहे हैं साधु तथा साध्वी उपरोक्त पंच महाव्रत रूप धर्म पालते हुए विचरते हैं। आगार धर्म बारे प्रकार का कहा है

अस्ति धर्म किम जोय रे, अव्रत सेवायां धर्म ॥१४४॥
ठाम ९ सिद्धान्त रे, बारमूं व्रत श्रावक तणूं।
श्रमण निर्ग्रन्थ ने तंत रे, दान दे चउदे प्रकार नूं ।१४५
प्रासुक दोष रहित रे, मुनि प्रते प्रतिलाभतो।
विचरे छै इण रीत रे, ते बारमूं व्रत सूत्र कह्यो ॥१४६॥
वलि देवगुरु धर्म काज रे, हिन्सा करै षटकाय नीं।
तें धर्म न कह्यो जिनराज रे, आगार धर्म विषे इहा ॥

॥ बोल अड़सठवां ॥

ध्यान च्यार कह्या—आर्त्ति ध्यान, रौद्र ध्यान, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान। सा० सू० उववाई समवसरण अधिकार में।

॥ दोहा ॥

च्यार ध्यान जिनवर कह्या, आर्त्त ने रौद्र ध्यान।
धर्म ध्यान है तीसरो, चौथो शुक्ल ध्यान ॥१४८॥
समवसरण अधिकार में, तप वर्णन रे माहि।
आर्त्त रौद्र नहि ध्यावणो, सूत्र उववाई ताहि ॥१४९॥

॥ सूत्र पाठ ॥

से किं तं झाणे ? झाणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा—अट्टे झाणे रुद्दे झाणे धम्मे झाणे सुक्के झाणे।

उववाई।

॥ दोहा ॥

ए गुणोत्तर मोक्ष क्रम, आख्या आगम माय ।
लोंकाजी प्रगट किया, तिण सूं लोंका ढुण्डो कहाय ॥
प्रगटे पंचम अर्क में, भिक्षु महा गुणधार ।
श्री जिन आज्ञा शिर धरी, प्रगट कियो उजियार ।३५४
यथा तथ्य ओलखावियो, धर प्रभु तेरापंथ ।
पाले महाव्रत पंच समिति, तीन गुप्त निर्ग्रन्थ ॥३५५॥
हिंसा धर्म उथापियो, दयामयी धर्म दिपाय ।
कहणी करणी एकसी, आगम न्याय बताय ॥३५६॥
श्री जिन धर्म अनादि रो, हुआ अनन्त अरिहन्त ।
जे जिम भाख्यो तिम कह्यो, निशङ्क सूं भिक्षु सन्त ॥
तसु पट भारीमालजी, तीजे पाट ऋषिराय ।
जयगणी चौथे पाट वर, पंडित प्रसिद्ध कहाय ॥३५८॥
मघवा सम मघवा गणी, पंचम पट अवलोय ।
पाट छठे माणक भला, सप्तम डाल गणीश्वर जोय ॥
वर्तमान शासन धणी, अष्टम पाटे जान ।
सुखदाता सुरतरु समा, कालूगणी गुणखान ॥३६०॥
दिन २ वृद्धि ज्ञान नी, चारित्र गुण इधकाय ।
दिन २ सुख सम्पति बढ़े, सुगुरु तणें सुपसाय ॥३६१॥

॥ कलश ॥

(चाल मालक छन्द)

गुण रयन वयन जिनेश केरा, अति अचेरा जानिये। जे कह्या, जे जिम सत्य तथ्य, सुअथ्य पथ्य वखानिये। धरि आसता प्रतीति रीति, जिनोत केरी आनिये। सुगुरु वाचा सर्व साचा, अधिक आस्था मानिये ॥१॥ तज कपट लपट मिथ्यात नी, निज आथिनी सुध ध्याविये ॥ अव्रत पटावी व्रत वधावी, आतम भावे भाविये ॥ सुख सम्पदा निज घर घणी, गुणवन्त ना गुण गाविये। कहे गुलाबचन्द आनन्द अति ही, सुगुरु सेवा पाविये ॥२॥

प्रती, बले आरम्भी अणारम्भी आणो । ते प्रत्त आश्री तो अणारम्भी आर्य, ते मुक्त रो मारग निर्मल जाणो । आ ॥ ४ ॥ ए दोनूई स्थानक जू जूवा छे, ते धर्म अधर्म दोया में लायो । साध श्रावक व्रत आश्री धर्म आर्य, असजती अव्रत आश्री अधर्म मायो ॥आ॥ ५ ॥ अधर्म पक्ष ने अनार्य कह्यो छै, पिण सम्यक्त निर्जरा अधर्म नाहीं । ज्यूं श्रावक ने धर्म आर्य कह्यो छै, पिण अव्रत नहीं धर्म आर्य माही ॥ आ ॥ ६ ॥ जिन आज्ञा लोपी आप रै छांदे चाले, तिण ने ज्ञान-रहित कह्यो भगवत । आचाराग दूजा अध्ययन रे छट्ठे उद्देशे, तो आज्ञा बारे धर्म कहे नहीं सत ॥ आ ॥ ७ ॥ केवली आचरयो ते छद्मसत आचरै, केवली अणाचरयो ते आचरै नाहीं, आचाराग दूजा अध्ययने रे छट्ठे उदेशै, ए दोया रो एक आचार छै ताही ॥ आ ॥ ८ ॥ वीर कह्यो आज्ञा माहिलो धर्म मांह रो, आज्ञा बारे बोल बोलवो युक्तो नाही । ए उतकृष्टी चरचा करी आचारगे छट्ठे अध्ययने दूजा उदेशा माहीं ॥आ॥६॥ प्राण भूत जीव ने दुःख नहीं देणो, ए तीन काल रा तीर्थंकर नी वाणी । ए सुधधर्म आचाराग चौथे, पहिला उद्देशा सू लीज्यो पिछाणी ॥ आ ॥ १० ॥ प्रमादी द्रव्यलिंगी पासस्थादिक, सगला छै जिणआज्ञा बारे । चौथे

आचरङ्ग पाचमाध्येन रे छठे उद्देशे, तो जिन आज्ञा ने लीजो आगार ॥ आ ॥ १८ ॥ उन्मार्ग खोटो सर्व छाड़, मुक्ति मारग ने कह्यूं अङ्गीकारो । बीजा अध्येन आवस्सग रे माही, साधा ओळखो ते जिण आज्ञा बारो ॥ आ ॥ १९ ॥ ठाणा अङ्ग सूत्र रे नवमें ठाणे, नव प्रकारे पुन्य समचे बतायो । पिण असजती ने दीयां पुन्य नाहीं, तिणरो ये न्याय सुणो बिसतारायो ॥ आ ॥ २० ॥ असयती ने निरदोषण दीयां, एकन्त पाप भगवती रे माख्यो । आठमा शतक रे छठे उद्देशे, पुन्य कहे ते तो मृसावायो ॥ आ ॥ २१ ॥ अन्य तीर्थी ने च्यार आहार देवारा, आणन्दजी सूस किया जिन आगे । उपासकदशा रे पहिले अध्येने, तो तिण ने दीधा पुन्य किसी पर लागे ॥ आ ॥ २२ ॥ पात्र ने देवे कुपात्र ने देवे, ए चौभङ्गी कही ठाणाअङ्ग माय । चौथे ठाणे कुपात्र कुक्षेत्र कह्या छे, तिण ने दीध्या सू पुन्य किसी पर थाय ॥ आ ॥ २३ ॥ अन्यतीर्थी गृहस्थ ने देवो पोख्यो, ते ससार भमवा नो हेतु जाणी । सूयगडा अङ्ग मे नवमाध्येन, तेवीसमी गाथा वीर बखाणी ॥ आ ॥ २४ ॥ उत्तराध्येन चवदमारी बारमी गाथा, भृगु प्रोहित ने बेटा बोल्या विमासी । विप्र जिमाया तमतमा जावे, तो पुन्य कहे ते घणो दुःख पासी ॥

कीधा, तिण ने चोर कह्यो है दशमा अंगे। तिणने अन पाणी देवै ते पिण चोर, तीजै अध्ययन जोवो मन-रंगे ॥ आ ॥ ३३ ॥ सचित्त खवाया उत्कृष्टे भांगै, च्यार चोरी ठाणाअंग अर्थ माय। तो वीर नी आज्ञा बिण सरब चोरी छै, पहिले ठाणा में भाख्यो जिनराय ॥ आ ॥ ३४ ॥ लोकिक रो दान माठो जाणी छोडवो, निरवद्य दान परूपणो सार। आचारांग छठाध्ययन रे पांचमै उद्देशे, वर्तमान मौन सामै अणगार ॥ आ ॥ ३५ ॥ देता लेता इसो वर्तमान देखी, साधु ने मून कही तिण कालो। सूयगडांग इकवीसमेध्ययन, छत्ती-समी गाथा जोय संभालो ॥ आ ॥ ३६ ॥ सावद्य दान प्रशंस्या छ काय री हिंसा, वर्त्तमानकाल निषेध्या अंतराय। सूयगडांग इग्यारमाध्यने, बीसमी गाथा भाखी जिनराय ॥ आ० ॥ ३७ ॥ ठाणाअङ्ग सूत्र रे दशमै ठाणै, दश शस्त्र में अव्रत शस्त्र जाणो। ते शस्त्र तीखो किया पुण्य परूपै, त्याने पुन्य धर्म री नहीं छै पिछाणो ॥ आ ॥ ३८ ॥ कर्मां ने मुकावा ने जीव हणै ते, नरक तणा फल पामै विशेष। तो धर्म हेते जीव हणै तो, आचारांग पूजाध्ययन रे पूजै उद्देश ॥ आ ॥ ३९ ॥ जन्म मरण मुकावाने जीव हणै तो समकित जावै ने आवै मिथ्यात। आचारांग पहिला

देगी ने पूछ्यो, कुण कथण किजो कुपात्र दान। विपाक रे पहिले अध्ययन गौतम पूछ्यो, तिणरा साम्प्रत फल भोगवै छै अज्ञान ॥ आ० ॥ ४८ ॥ धर्म ना अवगुण अधर्म ना गुण बोलै, निशीथ इग्यारमें दंड चौमासी। आज्ञा माहि पाप आज्ञा बारे धर्म कहै ते, चिहुं गति माहि घणो दुःख पासी ॥ आ० ॥ ४६ ॥ जिम आज्ञा मिलै तिम तिम धर्म कहणो सुयगडाअङ्ग रे चवदमा माय। सत्तावीसमी गाथा भी जिण भाषी, आज्ञा बारै धर्म न कहै मुनिराय ॥ आ० ॥ ५० ॥ बारे व्रत श्राव क्या ते पहिलो विसरामो, १ सामाई २ पोसो ३ ने करै संथारो ४। ए च्यार विसामा ठाणा अङ्ग चौथे, पिण आज्ञा बिण धर्म नहीं छै लिगारो ॥ आ० ॥ ५१ ॥ तीन भावया श्रावक रा मनोरथ, ठाणा अङ्ग सूत्र रे तीजै ठाणै। परिग्रह छाडण री भावना भावै, पिण धन दीधा में पुन्य अज्ञानी ताणै ॥ आ० ॥ ५२ ॥ दश दान कह्या ठाणा अङ्ग दशमें, दश धर्म कह्या तिणरी कीजै पिछाण। दश स्थविर कह्या ते पिण ओलख लेणा, पान न्यारा न्यारा ओलखै बुद्धिवान ॥ आ० ॥ ५३ ॥ हिंस्या करी प्राणी ने झूठ बोले, साधु ने असणादिक अशुद्ध बहि-रावै। भगवती पांचमें शतक रे छठै उद्देशै, जिण कह्यो अल्प आउखो बंधावै ॥ आ० ॥ ५४ ॥ अफासु

॥ दोहा ॥

हिवे निरवद करणी ओलखायवा, संक्षेप कहूं विस्तार।
ते करणी करतां पुन्य नीपजे, तिण मांहिला सू नहीं पुन्य लिगार ॥ १ ॥
जिण आगन्या मांहिली करणी करे, शुभ जोग वर्ते तिणवार।
तिहां कर्म कटे पुन्य नीपजे, देखो सिद्धान्त मंझार ॥ २ ॥
केई अज्ञानी इम कहै आगा बाहरी करणी सू पुन्य।
त्यांने खबर नहीं जिण धर्मनी, त्यांरा आंख्यां पाटा अनूप ॥ ३ ॥
शुभ कर्म बंधे आतरे, आगा मांहिला करणी सू जाण।
ठाम ठाम सिद्धान्त में जिन कह्यो ते सुणजो सुमता आण ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

भवियण जिण आज्ञा सुखकारी (ए देशी)

साधु ने सूजता च्यारू आहार प्रतिलाभे, तो एकंत निर्जरा जाण। भगवती आठमें शतक छठे उदेशे, शुद्ध निर्वद्य करणी पिछाण रे ॥ भवियण जोवो रे हृदय विचारी ॥ या निरवद्य करणी सुखकारी रे भवियण, तिण सू पामै भवपारी ॥ १ ॥ हिंसा झूठ दोनूं न सेवे, साधां ने शुद्ध आहार प्रतिलाभे। भगवती पांचमें शतक छठे उदेशे, दीर्घ आउखो बंधावे रे ॥ भवि ॥ २ ॥ वले साधां ने वंदणा नमस्कार करी ने, मनोगम शुद्ध आहार प्रतिलाभे। भगवती पांचमें शतक छठे उदेशे, शुभ लांबो आउखो बंधावे रे ॥ भवि ॥ ३ ॥ वंदणा कर नीच गोत्र खपावे, ऊंच गोत्र कर्म बंधावे।

॥ भवि ॥ ११ ॥ प्रहरर री व्यावच करे करावै, करै तिण ने भलो जाणै तायो । निशीथ रे इग्यारमें उदेशौ, चौमासी प्रायश्चित आयोरे ॥ भवि ॥ १२ ॥ तिणने भलो जाणै तो भी कड कह्यो छै, पुन्य कहै किण न्याय । ए सावद्य काम ससार नो मारग, तिण में भी जिण आज्ञा नापरे ॥ भवि ॥१३॥ भली सातमा शतक रे दशमे उदेशौ, अठारे पाप सेव्या सू पाप। अठारे पाप न सेव्या सू पुन्य थवै, ओ कह्यो जिणेश्वर आप रे ॥ भवि ॥ १४ ॥ ठाणाअङ्ग रे दशमें ठाणे, दश बोल थकी पुन्य थवै, त्या दशाई बोला री भी जिण आज्ञा, इम भाख्यो वीर जिणद रे ॥ भवि ॥ १५ ॥ भगवती सातमें शतक रे छठै उदेशौ, अठारे पाप न सेवै कोय । तिण रे अकरकश वेदनी कर्म थवै छै, सेव्या करकश वेदनी होय रे भवि ॥ १६ ॥ तीर्थंकर नाम कर्म थवै वीस बोला, ज्ञाता आठमाध्येन भाख्यो । ते महाबल अणगार सेव्या छै, तिण सू थया तीर्थंकर ताख्यो रे ॥ भवि ॥ १७ ॥ तिण में सतरमो बोल समाधि भाख्यो, इण बोल ने लीजो आराध । गुरु रो कार्य करी समाधि उपजावै, यसे ज्ञानादि भाव समाध रे ॥ भवि ॥ १८ ॥ कोई कहे सगला जीवा ने, द्रव्य साता उपजावै । श्रावक ने असणादिक खवावै, तो तीर्थंक-

कह्यो बंध। भगवती सातमें शतक रे छठे उद्देशे, इणरी पिण आज्ञा देवे जिणवर रे ॥ भवि ॥ २७ ॥ भगवती आठमें शतक रे नवमें उद्देशे, आठ कर्म बंधण रो न्याय। तिणमें आठाई पाप कर्म री करणी, माठी कही जिनराय रे ॥ भवि ॥ २८ ॥ वेदनी आउखो नाम गोत ए च्यारू, शुभ कर्म तणी शुद्ध करणी। निरवद्य ने आज्ञा मांह कही छै, जिण सू जीवने आदरणी रे ॥ भवि ॥ २९ ॥ कोई कहै साधु आगार करी नींद लेवे, भले भोगवे उपाधि अनेक। त्यांनि आज्ञा छै तोहि पाप बंधे छै, इम बोलै ते विना विवेक रे ॥ भवि ॥ ३० ॥ कोई कहै पच प्रमाद कह्या छै, निद्रा लेवे ते प्रमाद माय। इम कही आज्ञा मांहें पाप थापे छै, तिणरो जाब सुणो चितलाय रे ॥ भवि ॥ ३१ ॥ निद्रा प्रमाद मांहें ते तो भाव निद्रा, द्रव्य निद्रा प्रमाद नाय। मिथ्यात अज्ञान रूप मोह कर्म उदा सू, भाव निद्रा कही जिणराय रे ॥ भवि ॥ ३२ ॥ आचारांग तीजा-ध्ययन रे पहिले उदेशे, द्रव्य भाव निद्रा कही दोय। मिथ्यादृष्टि भाव निद्रा में सूता, साधु सदा जागता सोयरे ॥ भवि ॥ ३३ ॥ द्रव्य निद्रा दर्शणावर्णी कर्म उदै सू, तिण सू पाप न बंधे कोय। पाप बंधे एक मोह कर्म उदै सू, अवरा सू पाप न होय रे ॥ भवि ॥

साम्पी । सुध खेपे देपे ते सुध गति आवे, ते दशवैकालिक साख्री रे । भवि ॥ ४२ ॥ भगवती पहिले शतक रे नवमें उदेशे, आहार करता तोड़े सात कर्म । वलि कह्यो सातमा शतक रे पहिले उदेशे, आहार करे बलावाने धर्म रे । भवि ॥ ४३ ॥ साधु आहार करे संजम यात्रा निभाषा, वले करणो कह्यो ठहो आहार । उत्तराध्येने रे आठमें भाख्यो, इग्यारमी बारमी गाथा सार रे । भवि ॥ ४४ ॥ मूर्छा रहित संजम यात्रा निभाषा, साधु ने करणो आहार । उत्तराध्येन पैंतीसमें सतरमी गाथा, पिण प्रमाद म कह्यो लिगार रे । भवि ॥ ४५ ॥ आचारङ्ग तीजा ध्येन रे दूजे उदेशे, संजम पालवा करणो आहार । प्रमाद सू तो संजम यात्रा विणसे छे, वले हुवे संजम रो बिगार रे । भवि ॥ ४६ ॥ ठाणाअङ्ग रे नवमें ठाणे, पहिला छेहला तीर्थंकर रो धर्म । मानोपेत उपधि ने पांच महाव्रत, तिण सू लागी नहीं पाप कर्म रे । भवि ॥ ४७ ॥ साधु ने परिग्रह रहित कह्यो छे, धर्म उपधि ने परिग्रह कह्यो नाहीं । दशमा अङ्ग रे दशमें अध्येने, पिण पाप नहीं तिण माही रे । भवि ॥ ४८ ॥ राग-द्वेष रहित उपधि भोगवै, तिण ने परिग्रह कह्यो नाही । दशमाअङ्ग रे दशमेध्येने, परिग्रह कह्यो ते मूर्छा माही

कह्यो छै, पिण नहीं सावद्य माहीं रे । भवि ॥ ५७ ॥
प्रमाद रा फल तो कडुआ कह्या छै, प्रमाद में जिन आज्ञा नाय । पछे केवलज्ञानी पिण आहार करै छै, ते तो अप्रमादी जिनराय रे । भवि ॥ ५८ सजम रो गुण तो कर्म रोकवा रो, तपस्या सू कर्म मोड़ा थाय । उत्तराध्येने गुणतीस में भाख्यो, सताबीसमा बोल मझार रे । भवि ॥ ५६ ॥ उपधि तणा पचखाण क्रियां सू, सझाय नो पलिमथ न थाय । उत्तराध्येन गुणतीस में ध्येने, चौतीसमा बोल मांय रे । भवि ॥ ६० ॥ उपधि पडिलेहता सझायनो पलिमन्थ, तिण सू पाप न लागै कोय । पडिलेहणा करै जब पडिलेहणा रो धर्म, सझाय रो धर्म न होय रे । भवि ॥ ६१ ॥ ज्यू आहार करै ते प्रमाद तपस्या रो, तिण सू पाप न लागै कोय । आहार करै तिण वेला धर्म आहार रो पिण तपस्या रो धर्म न होय रे । भवि ॥ ६२ ॥ पडिलेहणा करै ते सझाय नो पलिमथ, पिण तिण ने सावद्य कहिजे नाहीं । पलिमथ रो नाम सुणी ने, न थापणो सावद्य माही रे ॥ भवि ॥ ६३ ॥ ज्यू आहार करै ते तो प्रमाद तपरो, पिण सावद्य नहीं छै लिगार । तपस्या तणी प्रमाद सुणी ने, बोलणो नहीं बिना विचार रे ॥ भवि ॥६४॥ ठाणाअंग रे पांचवे ठाणे, पांच अचेल कह्या अरिहन्त ।

मन मांयके। चौमासी डंट निशीथ में, बारमें उदेशे कह्यो जिनराय के, भीणो ज्ञान जिनराज नो ॥ १ ॥ सिंह बाघ हिंसक जीव देखने, मार न कहिणो तिण सू द्वेष आण के। मत मार न कहिणो राग आणने, सूयगडाअङ्ग इक्कीसमें पिछाण के॥ २ ॥ दशा वाणा करवी नहीं, दशमें ठाणे ठाणाअङ्ग मांय के। तिणमें जीवणो मरणो न वाछणो, तो पारको किम वाछे मुनि-राय के॥ ३ ॥ बाल अज्ञानी वाछे घणो जीवणो, ते पण्डित नहीं बाछे ताम के। आचारङ्गथ्येने पांच में, पहिले उदेशे प्रभु कह्यो आम के॥ ४ ॥ दशमें अध्येन सूयगडाअङ्ग में, चौवीसमी गाथा र मांय के। साधु जीवणो मरणो वाछे नहीं, ते असयम जीतव्य बाल मरण छै ताय के॥ ५ ॥ सूयगडाअङ्ग रे तेरमें, बीसमी गाथा में विस्तार के। जीवणो मरणो न वाछे साधजी, ए पिण असयम जीतव्य धार के॥६॥ असयम जीतव्य उपराठो करे, तिणने आदर नहीं देवे अणगार के। सूयगडाअङ्ग रे पनरमे, दशमी गाथा रो करो विचार के॥ ७ ॥ असयम जीतव्य मती वाछणो, बाल मरण न वाछे वीर के। सूयगडाअङ्गध्येने तीसरे दूजे उदेशो कह्यो महावीर के॥ ८ ॥ बाल अज्ञानी जीवड़ा, अस-जम जीतव्य मा मरी आण के। सूयगडा अङ्ग र पांच-

बीच पड़े तें तो विपरीत कै ॥ १७ ॥ बायरो, वर्षा सी, तावड़ो, कलह, उपद्रव रहित सुकाल कै। ए साधु ने नहीं वाछणा, दशवैकालिक सातमें सभाल कै ॥ जी ॥ १८ ॥ कोई भेषधारी इसड़ी कहै, म्हे ऊमरा ने बचावा जिनजी ने न्हसाय कै। तो उपद्रव रहित नहीं वाछणा, तो उपद्रव सहित किम करणों आय कै। जी ॥ १९ ॥ दूजे आचारागध्येन दूसरे, पहिले उदेशी गृहस्थ लड़े माहों माय कै। तो मार मतमार कहिणो नहीं, राग द्वेष करणो नहीं ताय कै ॥ जी ॥ ॥ २० ॥ दूजे आचारागध्येन दूसरे, पहिले उदेशे गृहस्थ ए गें तेऊकाय कै। तो अग्नि लगावा रो कहिणो नहीं, बुझावा रो पिण न कहै मुनिराय कै ॥ जी ॥ ॥ २१ ॥ सुयगडाअङ्ग श्रुतस्कंध दूसरे, छटे अध्येने कह्यो आर्द्रकुमार कै। बीर धर्म कहै कर्म काटवा, वलि अनेरा मा तारण श्वार कै ॥ २२ ॥ उपदेश देई सम-झावणो, आ पैला री अणुकपा जाण कै। चौथे ठाणेठाणाअग में ए चउभगी कीध्यो पिछाण कै। ॥ २३ ॥ हरणगवेषी देवता, देवकी रा पुत्रा मे म्हेल्या आण कै। सुलसारी अणुकपा आणने, अन्तगड सूत्र में जिन वाण कै ॥ २४ ॥ ईट उपाड़ी कृष्ण जी, तिण पुरुष तणी अणुकम्पा जाण कै। अन्त-

भगवन्त दीक्षा दीधी गोशाला भणी, पनरमा शतक भगवती माह रे ॥ ११ ॥ ए सावज अणुकम्पा करी, तिणरी आज्ञा नहीं दे जिनराय रे। हिवै निरवद्य अणुकम्पा कहू ते सांभलज्यो भवियण चित्तल्याय रे ॥ १२ ॥ सुसला प्राण भूत जीव नी, हाथी अणुकम्पा कर कियो प्रत संसार रे। ज्ञाता रा पहिला अध्येन में, ते मरने हुवो छै मेघकुमार रे ॥ १५ ॥ चित्त कह्यो केशी स्वाम ने, आप धर्म कहो तो प्रदेशी रे गुण थाय रे। घणा दीपद चौपद पशु पंखिया भणी, रायप्रसेणी उपांग रे माह रे ॥ १६ ॥ कोई कहे गुण जीवा तणो, पिण जीवां रा तो भाव गुण नहीं थाय रे। भाव गुण तो न जीवां तणो, इण द्रव्य गुण सू तो मोक्ष नहीं जाय रे ॥ जी ॥ १७ ॥ नमोथुण कह्यो आवस्सग मझे, तिण में कह्यो संजम जीतव्य ना दातार रे। पिण असंजम जीतव्य कह्यो नहीं, असंजम में नहीं धर्म लिगार रे ॥ जी ॥ १८ ॥ समद्रपाल चोर न देखने, संजम लीधो वैराग मन आण रे। उत्तराध्येन रे इकवीस में, तिण घर देई न छोडायो आण रे ॥ जी ॥ १९ ॥ गृहस्थ मारग भूलो उजाड़ में, तिणने जो मारग बतावै मुनिराय रे। निसीथ उद्देशो तेरमें, चौमासी डंड कह्यो जिनराय रे ॥ २० ॥ भगवती शतक सात मे छट्ठा मे

फ ॥ ४८ ॥ ए अणुकम्पा ओलखायवा, जोड़ कीधी रेश्लाणा मभ्कार कॅ। समत् अठारा असीये, वैशाख निद तीज सुकवार कॅ ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

नव तत्व ओलख्या, बिना, सम्यक आवे नाय।
ठाम ठाम सिद्धान्त में जिन कह्यो, ते सुणज्यो चित्तलाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ९ थी ॥

(देशी—पाषण्ड पषण्डा आरे फ्यों रे)

च्यार सघ कह्या ठाणाअग सूत्रमे रे, ते च्यारू ही गुणरत्नारी ख्याण रे। त्यारा गुण ओलख ने निरणय करो रे, साधी सरध्या सू सम्यक आण रे ॥ नव तत्व ओलखिया बिन समकित नही रे ॥ १ ॥ तीजे ठाणे ठाणाअग सूत्रमें रे, पहिला ते भणवो नव तत्व ग्राम रे। तपस्या ने ध्यान दोनू भणिया पछे रे, भणिया बिण निरफल तपस्या ध्यान रे ॥ २ ॥ उत्तराध्ययन अध्ययन अठावीसमें रे, नव तत्व जाण्या बिण सम्यक नाय रे। भावे करी सरध्या सू समकिती हुवे रे, पन-रमी गाथा कही जिनराय रे ॥ ३ ॥ ज्ञान पहली मे दया पाछे कही रे, दशवैकालिक रे चौथे जाण रे। दशमी गाथा देखो चित्त खोलने रे, ज्ञान बिन सम्यक नहीं पिछाण रे ॥ ४ ॥ जीव अजीव दोनू ही जाणे

स् नहीं छै मोक्ष रे ॥ १२ ॥ तपस्या पिण अशुद्ध नहीं छै तेहनी रे, जे तपस्या कर गृहस्थ ने देवे असाय रे। ते पूजा स्लाघा रा अर्थी थका रे, सूयगडा अङ्ग आठमा अध्यने माय रे ॥१३॥ आचाराङ्ग रे चाथमा ध्यपनमें रे, चाथमें उदेशै करो पिछाण रे। उ भी अद्धा कही छै ओळखणी रे, शुद्ध अद्धा आदरणी नव तत्व आण रे॥१४॥ समकित विण चारित्र निश्चय नहीं रे, चारित्र विण मोक्ष म जाणो कोय रे। उत्तराध्ययन अध्यन अठावीस में रे, नव तत्व ओलखिया सम्यक्त होय रे॥१५॥ दशामें ठाणै ठाणाअङ्ग देखस्यो रे, मिथ्यात तणा चाख्या दश भेद रे। एक बोल ऊंधो सरध्या मिथ्याती कह्यो रे, तो नवतत्व ओलखो आण उमेद रे ॥ १६ ॥ तम चावर जीव अजीव जाणै नहीं रे, तिण त्याग किया ते दुपचखाण रे। सात में शतक भगवती सूत्र में रे, बीजे उदेशै करो पिछाण रे ॥ १७ ॥ तिण त्याग किया ते व्रत नहीं निपजे रे, ते पिण सवर आखी आण रे। शुभ जोग वर्तै छै मिथ्याती तणै रे, तिणरे कर्म निर्जरा शुद्ध बखाण रे ॥१८॥ तिणरै निर्जरा हुवे तिणसू जिन आगन्या रे, अशुद्ध कहे ते मूढ गवार रे। ठाम २ सूत्र में जिन कह्यो रे, मिथ्यातीरी करणी जिन आज्ञा मभ्रार रे ॥ १६ ॥ आठ मे शतक भगवती सूत्रमें रे,

आर्वै ते कर्म छै रे, या छोया ने बुद्धिवन्त सरधो न्यार रे ॥ २७ ॥ उत्तराध्येन अध्येन गुणतीसमें रे, पच- खाण सूं आस्रवद्वार रूधाय रे। वली उत्तराध्येन गुण तीसमें रे, घ्रतारा मिश्र कह्या आस्रव द्वार रे। तिणद्वार माहें आवे ते कर्म छै रे, या वोयनि बुद्धिवन्त सरधो न्यार रे ॥ २७ ॥ उत्तराध्ययन अध्ययन गुणतीसमें रे, पचक्खाण सू आस्रवद्वार रुधाय रे। वली उत्तराध्ययन गुणतीसमाध्ययनमें रे, अप्रशस्तद्वार आस्रव कह्यो ताप रे ॥ २८ ॥ उत्तराध्ययन अध्ययन तीसमें रे, आस्रव रूपीया नाला सोय रे। वली उत्तराध्ययम अध्ययन चौतीसमें रे, कृष्ण लेश्यारा लक्षण आस्रव जोय रे ॥ २६ ॥ भाव लेश्या ने तो कहै जीव छै रे, तो त्यारा लक्षण किम हुवै अजीव रे। त्या जीव अजीव दोनू मतॆ ओल्दया रे, त्यार मोटी मिथ्यात तणी छै नीव रे ॥ ३० ॥ उ भाव लेश्या दशा वर्ण विहने रे, या ने अरूपी कह्या भगवती माय रे। बारमें शतक उदेशो पाचमें रे, कोई बुद्धिवन्त जोय विचारो न्याय रे ॥ ३१ ॥ प्राणातिपातमे पत लेहने रे, भगवतीमें जीव कह्यो जगनाथ रे। सातमें शतक उदेशो दूसरै रे, तिणने अजीव कहै ते जड़ मिथ्यात रे ॥ ३२ ॥ प्राणातिपात वेरमण तेहने रे, भगवतीमें

सुध पिछाण रे । अनुयोग द्वार माहिं अधिकार छै रे, भावे मन छै ते आरूध जाण रे ॥ ४० ॥ तीजे ठाणे ठाणाअग तेह में रे, पहिले उदेशे देखो सोय रे। कर्म क्षयोपशम वीर्य तेहने रे, जोग क्षयोपशम ते अव लोग रे ॥ ४१ ॥ पहिले ठाणे ठाणाअङ्ग अर्थ में रे, जोग प्रणाम ते लेस्या जाण रे । ते लेस्या ने जोग सरीषा लेखव्या रे, भाव लेस्या ते जोग पिछाण रे ॥४२॥ पहिले ठाणे ठाणाअग पेखस्यो रे, आस्रव कर्म अवा-ना द्वारा रे । ते द्वार ने कर्म जू जुवा जाणज्यो रे। तिणरो मूढ़ न जाणे मूल विचार रे ॥ ४३ ॥ शतक तीजे भगवती सूत्र में रे, तीजे उदेशे दियो दृष्टान्त रे । जीव रूपी तो नावा जिन कही रे, आस्रव रूप छिद्र जल पथ रे ॥ ४४ ॥ ते आस्रव रूपी छिद्र रूंध्या थका रे, ते साधु पामे शिव रमणी सग रे। जिण पाणी रूपियो तो आस्रव नहीं कह्यो रे, ए जूजुवा जाण्यां सम्यक्त रङ्ग रे ॥ ४५ ॥ नव तत्व ओळखिया बिण सम्यक्त नहीं रे, ते ओळी रहसाणा गाम मझार रे । सम्बत अठारे असीयसमें रे, वैशाख विद तीज ने शुक्कर रे ॥ ४६ ॥

कल्पै साधु भणी साधा काजे नहीं कीया रे । ए मारग छै साधु रो ॥ ७ ॥ दूजै श्रुतस्कंध आचाराङ्ग अध्येन दूसरे, उन्ह उदेशै तायो रे । एक काय स्थ्या हिसा छ कायरी एक व्रत भागा छहूं जायो रे ॥ ८ ॥ अठारा ठाणा माहिलो, एक सेव्या सू मिष्ट थायो रे ॥ दशवै कालिक छट्टा ध्येन मे, सातमो गाथा मायो रे ॥ ६ ॥ आचाराङ्ग रे आठ म, पहिले उदेशै मायो रे । अकल्प तो लेवै तेहने चोर कयो जिनरायो रे ॥ १० ॥ पूमी-कम नो अश भोगवै, तिण ने कह्यो महस्य भेषधारी रे। पहिला अध्येन सूयगडा अङ्ग में, तीजा उदेशा मझा-रीरे ॥ ११ ॥ कारण अशुद्ध लेणो कहे, तिणने कह्यो बहुल ससारीरे । आचाराङ्ग छट्टा ध्येन म, चौथे उदेशै विस्तारीरे ॥ १२ ॥ शरीर उबे धर्म कारणे, पिण आधाकम्यादि लेणो नाहीं र । आचाराङ्ग छट्टा ध्येन में, चौथा उदेशा माही रे ॥ १३ ॥ पाचमा आरारो नाम ले, दोष लगावे ते दुःख पासी र । आचाराङ्ग छट्टा ध्येन मे, जोवो चौथो उदेशो विमासी रे ॥१४॥ क्रय विक्रय में वरत तेहने, कह्यो साधा नणी पात बारो रे । उत्तराध्येन पैंतीसम, देखो करो विस्तारो र ॥१५॥ अचित वस्तु मोल लिरावियां, चौमासी दण्ड पिछा-णोर । निशीथ उदेशौ उगणीस में तिणने निरधैई

गाढा कारण पड़िया थकां, पहिला पहोर रो आण्यो आहारो रे । छेहले पहोर भोगवणो कह्यो, बृहत्कल्प मझारो रे ॥ २५ ॥ चौमासी प्रायश्चित्त चालो कारण पड्या, लिया दोष नहीं ग्मोरं । ते मासिक दण्ड नित्यपिण्ड तणो, ते कारण पड्या लियां दोष केमो रे ॥ २६ ॥ पछे मास कल्प रहिणो शेषे काणमें, पिण कारण पड्या दोष नांही रे । ज्यूं कारण पड्या नित-पिण्ड लीये तिण रो दोष नहीं दीसे काई रे ॥ २७ ॥ ए तो चर्चा बोल्या पहिला जाणने, तिणसूं कारण पड्यां दोष न कोयोरे, आधाकर्म्यादिक कारण पड्या, लेणो नहीं छे सोयोरे ॥ २८ ॥ गृहस्थ ने साता पूछियां, दशवैकालिक में अणाचारो रे । तीजे अध्येन गाथा तीसरी, तो साता पूछ्यां न धर्म लिगारो रे ॥ २९ ॥ गृहस्थरी वियावच किया, अठावीसमो अणाचारो रे । दशवैकालिक रे तीसरे, उणी गाथामें न्याय विचारो रे ॥ ३० ॥ गृहस्थने साधु कहे मती, आव आव बेस कर कामो रे । दशवैकालिक सात में, सेंतालीसमी गाथा में तामोरे ॥ ३१ ॥ ज्ञान दर्शण चारित्र सहित छै, तिणने साधु कह्यो जिनरायो रे । ते पिण थोडा बोलने, दशवैकालिक सातमा मायो रे ॥ ३२ ॥ पहिले उद्देशे बृहत्कल्प में, साधु ने रहिणो उपाश्रे मझारो रे ।

पडिलाण्पपनमें, पाचमे उदेशो पिछाणो रे। कादारी खाली असगी करी, आज्ञा माग गृहस्थ घर आणो रे ॥ ४२ ॥ साधु रहे तिहां श्रावक भणी आधी आम्बी रात बखावे रे। निशीथ उदेशो आठमें, चौमासी प्रायश्चित आवे रे ॥ ४३ ॥ जोरीवाले रहता ने बरजे नहीं, तो विण चौमासी प्रायश्चित पावे रे। तीजो प्रायश्चित जोरी वाये रह्या, तिण साथे भारे जावे पाछो आवे रे ॥ ४४ ॥ प्रमाण अधिको उपगरण भरे तो चौमासी दण्ड पिछाणो रे। निशीथ उदेशो सोलमें, गुणचालीसमो बोल आणो रे ॥ ४५ ॥ शस्त्र धात नहीं रागणो, काच मणि पाषाणो रे। प्रश्न व्याकरण दशमें कह्यो, पचामो राखे ते मूढ़ अयाणो रे ॥ ४६ ॥ थोड़ोई उपधि पडिलेहे नहीं, तो मासिक प्रायश्चित आयो रे। दूजे उदेशो निशीथ में, छेहलो बोल कह्यो जिनरायो रे ॥ ४७ ॥ छतो शक्ति कल्प स्यू अधिका रहे, तो मासिक दण्ड विचारो रे। दूजा उदेशा माहें कह्यो, सेंतीसमो बोल सारो रे ॥ ४८ ॥ दूजे भुतस्कन्ध आचाराङ्ग दूसरे, दूजे उदेशे कह्यो भगवन्तो रे। तो कल्प लोपी ने अधिको रहे, मिथ्या लागे काल इकन्तो रे ॥ ४९ ॥ ऋतु बन्ध प्रमा पाट पाटला, ऋतुबन्ध जो देवे नाहीं रे। मासिक दण्ड निशीथ में, दूजा उदेशो माही रे ॥

भाण्यो वीर जिणन्दो रे । तो पासत्थादिक री व्यावच किया, धर्म्म कहे ते मति अन्धो रे ॥ ५६ ॥ वलि सेलक ने पासत्थो कह्यो, वले कह्यो ढीलाचारी रे । पन्थी विनय व्यावच किया, किम हुवे धर्म्म सिगारी रे ॥६०॥ च्यारू आहार वस्त्र पात्र काम्बलो, वले रजोहरण विचारो रे । ए आठ बोल देवे गृहस्थ भणी, तो दण्ड चौमासी धारो रे ॥ ६१ ॥ निशीथ उदेरी पनरमें, जोय करो निस्तारो रे । तो गृहस्थ ने देवे पूजणी स्याने, किम कहिए अणगारो रे ॥ ६२ ॥ पूछ्या कहे म्हे दीधी नहीं, म्हे तो परठ दीनी छै तायो रे । इम झूठ बोले जाणने, तिण साधु रो भेष लजायो रे ॥ ६३ ॥ वले पासत्थादिक सगला भणी, ए आठ बोल लेवे देवे रे । तो पिण चौमासी दण्ड छै, ते परमार्थ नहीं वेवे रे ॥ ६४ ॥ निशीथ उदेरी पनरमें, श्रीजिन वचन सम्भाल्ये रे । तो पथक असणादिक दियो सेलक भणी, तिण में धर्म्म कहे ते बालो रे ॥ ६५ ॥ पासत्था ना सरीषो आचार छै, तिणने कह्यो असणादिक नहीं आण्यो रे । पडे ओसवस्या आपे जू जुवा, तो पिण चौमासी प्रायश्चित्त आणो रे ॥ ६६ ॥ चौथे उदेशै निशीथ में, एक सौ तयालीसमो बोल्ये रे । तो पन्थक ने धर्म्म किहां थकी, आख हिया री खोलो रे ॥ ६७ ॥

रे ॥ ७६ ॥ मासिक दण्ड निशीथ में, बीजै उदेशै अधिकारो रे । तो पाणी कारवा ने खाल करें, त्यांने किम कहिजे अणगारो रे ॥७७॥ बले कादो दूर्ये धानक मध्ये अव काकरादिक न्हगाये रे । बले गृहस्थ रो कियो त्यामें, साध पणो किम थावै रे ॥ ७८ ॥ राजा ने करें आपरो, इम प्रधान नगर अधिकारी रे । बले थाण्या रा अधिकारी भणी, आपरो करें तो दण्ड भारी रे ॥ ७६ ॥ बले सर्व ना अधिकारी भणी, बले देश तणे अधिकारी रे । या सगला ने करें आपरा, तो मासिक दण्ड विचारी रे ॥ ८० ॥ चौथे उदेशे निशीथ में, इण रो न्याय हिये में धारीजै रे । थन्यो करावे गृहस्थ भणी, कहे म्हा आगेइज दीग्या लीजै रे ॥ ८१ ॥ बले कहे म्हे समझाविषो, तिणरी राखे छै थणीयापो रे । तिण गृहस्थ ने कियो आप रो, तिण स्यूं कर रह्या कुगुरु मिलापो रे ॥ ८२ ॥ कोई दीक्षा लेवै आचार्य कने, तिण शिष्य रा परिणाम पाड़ै रे । बले शिष्य त्याव त्यारो चोर ने, बले आचार्य रो पिण मन उतारै रे ॥८३॥ जो पूरव काली दीक्षा लेवै छै, तो आचार्य ने मेलै पच्छिम काली रे । त्यारु बोल सेव्या दण्ड चौमासी छै, निशीथ रे दशमें पिछाणीरे ॥ ८४ ॥ तो केई मारो माद साध सरचै छै, शिष्य काजे करे अगम

रे ॥ ६३ ॥ पाछो छेरी स्हामो आणियो, तो चौमासी प्रायश्चित्त आयो रे । निशीथ उद्देशे चवदमें, ते मोमाने स्पर न कायो रे ॥ ६४ ॥ तीन घरा उपरान्त स्हामो आणियो, चले अमणादिक च्यारू आहारो रे । मासिक दण्ड निशीथ में, तीजा उद्देशा मझारो रे ॥ ६५ ॥ आचार साधु नो ओलखायवा, जोड़ी पचेवड़ मझारो रे । समत अठारै असीये समै, वैशाख विद उदु सोमवारो रे ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

मर्यादा बांधे करी, चौरासमा वर्धमान ।
त्यां अर्थ रूप भाषा तणा, मर्यादा भर जाणा रे मान ॥ १ ॥
त्यां सूत्र दिया साधां भणा, ते पिण मर्याद प्रमाण ।
तिण औरां ने सूत्र दिया नहीं, तिण री न्याय सुणो बुद्धिवान ॥ ४ ॥
जे साधु मर्यादा मूं भणे, तिणने आज्ञा आवा सोय ।
मर्यादा विण साधु भणे, तिण ने पिण आज्ञा न कोय ॥ २ ॥
ते भणायणा साधु भणी, पिण औरां ने भणावणा नाहि ।
जे सूत्र भणावै गृहस्थ भणी, जिन आज्ञा नहीं तिण माहि ॥ ४ ॥
साधु ने सूत्र भणावणा ठाम २ सिद्धान्त रे मांय ।
गृहस्थ ने नहीं भणावणा । ते सुणज्यो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

(देशी—चतुर विचार करो ने देखो)

गृहस्थ ने साधु सूत्र री वाचणी देवै, वलि वाचणी देवै तिण आगै रे । निशीथ रे उगणीसमे उद्देशे, तिण

दाप न लागें, ते बुद्धिवन्त न्याय विचारो रे ॥९॥ केई मूढ़ मिथ्याती भारी कर्मा, ते धर्म कहै जिन आज्ञा बारो रे। ते कहै गृहस्थ ने साधु सूत्र भणावै, तो तिण में दोष न सरधै लिगारो रे ॥१०॥ भणनरा वाला ने तिण आज्ञा नाहीं, भणता वालक ने तिण आज्ञा नाहीं रे। भणै भणावै ते आपरै छन्दै, तिण धर्म नहीं तिण माहीं रे ॥ ११ ॥ रसाकसा रूप जे सूत्र नी गाथा, ते श्रावक ने साध सीखायो रे। तिण रो दोष तो मूल न दीसै, तिण रो न्याय सुणो चित ल्यायो रे ॥ १२ ॥ पहिला छेहला पहोर सूत्र कालिक करणी, और पहोर में करणी नाहीं र। तिण कहा रूप प्रश्न नो काम पड़ै तो तीन प्रश्न कह्या सूत्र माही रे ॥ १३ ॥ वले श्रावक सूत्र गृहस्थ ने भणावै, तिण रो पिण दोष न दीसै तायो रे। इणरी पिण अथा आज्ञा न दीसै, देख्य विचारो न्यायो रे ॥ १४ ॥ आचारङ्ग नवमो ध्ययन बाच्या विण, ऊपरला सूत्र भणावै जो साधो रे। निशीथ उगणीसमें दण्ड चौमासी, सूत्र जोय छोड़ो विपराधो रे ॥ १५ ॥ नव ध्ययन वाच्या विण ऊपरला सूत्र भणावै, तिण साधु ने धर्म न थायो र। तो गृहस्थ सूत्र वाच्या धर्म किहां थी, जोय विचारो न्यायो रे ॥ १६ ॥ अव्यक्त ने जो सूत्र भणावै, मोटो बर्षा पहिली

रिमासी जोयो रे ॥ २५ ॥ ज्या तीना ने भणायँते आज्ञा बारै, भणी ते पिण आज्ञा बारो रे। तो गृहस्थ सिद्धन्त भणे छै तिण में, जिन आज्ञा नहीं सिगारो रे ॥२६॥ तो गृहस्थ तो क्रोधी मानी हुवै छै, वले क्रियाविकरो लोलपी भावे रे। इत्यादिक अनेक अवगुण गृहस्थमें, तो साधु सूत्र केम सीखावे रे ॥२७॥ वले प्रश्न व्याकरण रे सातमें अध्येने, सत्य वचन तणो विस्तारो रे। तिण में कह्यो ए सूत्र साधु ने इज दीधो, पिण औरा ने नहीं दीध सिगारो रे ॥ २८ ॥ साधु नें इज वीतराग नी आज्ञा औराने नहीं आज्ञा सिगारो रे। और जो सिद्धन्त भणे भणावे, ते श्रीजिन आज्ञा बारो रे ॥ २९ ॥ तीन वर्ष थया हुवै दीक्षा लियाने, कल्पे आचारङ्ग वले निशीथो रे। तीन वर्ष पहिला निशीथ न भणवो, आ श्रीजिन मारगरी रीतोरे ॥३०॥ तीन वर्ष पहिली साधु ने नहीं भणवो, आ श्रीजिन आज्ञा सारो रे। तो गृहस्थ ने जिन आज्ञा किहांथी, न्याय ते चतुर विचारो रे ॥ ३१ ॥ सम्वत् अठारै ने वर्ष असीये, वैशाख विद सातम बानिवारो रे। सूत्र भणवा ऊपर जोड कीधी, इणी गाम बूडाड मझारो रे ॥ ३२ ॥

छै। तेह दरवाजे दरवाजे आन्तरो ७९०५२॥ मझेरो छै। से जगती नी बाहरली परिधि ३१६२२७ जोजन, ३ कोस, १२८ धनुष, १३॥ आगुल १ जौ, १ जू, १ लीख, ६ बालाग्र, ६ त्रीसरेणु जाम्भी।

गाथा।

खंडा जोयण वासा पव्वय कुडा तित्थ सेढीओ।
विजय द्रह सलिलाओ पिंडए होइ संगहणी॥

पहलो खण्ड द्वार।

जम्बु द्वीपका भरत क्षेत्र जितना खण्ड करै, तो १९० खण्डया हुवे ते किम? भरत एरवत क्षेत्रका १-१, चुल हेमवन्त शिखरी परवत का २-२, हेमवय क्षेत्रका ४-४, महा हेमवन्त रूपी पर्वत का ८-८, हरिवास रम्यकवास क्षेत्र का १६-१६, निषद नीलवन्त पर्वत का ३२-३२, महा विदेह क्षेत्रका ६४, सर्व १९० खण्डया थया।

दुओ जोजन द्वार।

जम्बुद्वीप का जोजन जोजन का टुकड़ा करै, तो सात सौ नव्वे कोड़ छप्पन लाख, चौराणवे हजार, एक सौ पचास जोजन १॥ कोस साढी पन्द्रह धनुष, पाँचैं आगुल जाम्भी ७९०५६९४१५० जो० १॥ कोस १५॥ धनुष १२ आगुल जाम्भी।

जीवा ३७३७४ जोजन १६ कला मठेरी। तेहनी धनुपृष्ट ३८७४० जोजन १० कला। तेहनो शर ३६८४ जोजन ४ कला।

३ हरिवास क्षेत्रको विषमपणो ८४२१ जोजन १ कला। तेहनी बाहा १३३६१ जोजन ६॥ कला। तेहनी जीवा ७३६०१ जोजन १७॥ कला। तेहनी धनुपृष्ट ८४०१६ जोजन ४ कला। तेहनो शर १६३१५ जोजन १५ कला।

४ महा विदेह क्षेत्र को विषमपणो ३३६८४ जोजन ४ कला। तेहनी बाहा ३३७६७ जोजन ७ कला। तेहनी जीवा मध्य भाग मे १००००० लाख जोजन। तेहनी धनुपृष्ट बेहु पासे १५८११३ जोजन १६ कला जाभेरी। तेहनो शर ब्यारू पासे पचास पचास हजार जोजन।

५ देवकुरु क्षेत्र को विषमपणो ११८४२ जोजन २ कला। तेहनी बाहा नथी। तेहनी जीवा ५३००० जोजन। तेहनी धनुपृष्ट ६०४१८ जोजन १२ कला। तेहनो शर ११८४२ जोजन २ कला।

भरत क्षेत्र जिम एरवर्त क्षेत्र जाणवो। हेमवय जिम अरणवय क्षेत्र जाणवो। हरिवास जिम रम्यक वास क्षेत्र जाणवो। देवकुरु जिम उत्तरकुरु क्षेत्र

३ निषध और नीलवन्त ए दोय पर्वत ४०० जोजन ऊंचा, १०० जोजन जमीन मे ऊंडा। तेहनो विषमपणो १६८४२ जोजन २ कला। तेहनी बाहा २०१६५ जोजन २॥ कला। तेहनी जीवा ६४१५६ जोजन २ कला। तेहनी धनुपृष्ट १२४३४६ जोजन ६ कला। तेहनो शर ३३१५७ जोजन १७ कला।

४ मेरु पर्वत जम्बुद्वीप के मध्य भाग में एक लाख जोजन को। तिण में १००० जोजन जमीन मे ऊंडो। ९९००० जोजन ऊंचो। जमीन में १००० जोजन छै तिण मे २५० जोजन पृथ्वीमय २५० पृथ्वी हीरा मय २५० कठिन पृथ्वी मय २५० वज्र हीरामय। ९९००० जोजन ऊपर छै तिण में १५७५० जोजन स्फटिक रत्नमय १५७५० अक रत्न मय १५७५० रूपा रत्नमय १५७५० पीला सुवर्ण मय ३९००० जोजन जम्बु नद (राता) सुवर्ण मय। तेह मेरु पर्वत नीचे थकी १००९० जोजन, एक जोजन का इग्यारिया १० भाग को लम्बो पहोलो, सम्भूतल पासे १०००० जोजन लम्बो पहोलो। ऊपर इग्यारह जोजन जावे १ जोजन घटता घटता मेरु नो शिखर १००० जोजन लम्बो पहोलो तिगुणी झाझेरी परिधि पद्मवर वेदिका वनखण्ड करी सहित।

ईशान इन्द्र की रच में छै। व्यास मत्तायात २५० जोजन लम्बा पहोला ५०० जोजन का ऊंचा छै। एक एक महल के च्यारू दिशा में ४-४ बावड्या छै। तिणरा नाम ईशाण कोण में बावडी ४ पद्मा १ पद्मप्रभा २ कुमुदा ३ कुमुद प्रभा ४। अग्नि कोण में बावडी ४ उत्पला १ गुल्मा २ नलिना ३ उज्वला ४। वायुकोण में बावडी ४ भिंगा १ भिंग नामा २ अंजना ३ अंजन प्रभा ४ नैऋत्य कोण में बावडी ४ श्री-कान्ता १ श्रीचन्द्रा २ श्रीमहिता ३ श्रीनलिता ४। ए सोले बावडी ५० जोजन लम्बी २५ जोजन चौडी १० जोजन ऊंडी। अनेक कमला सूं वापरिया, सहस पत्र छिया कमला करी शोभा-यमान छै। भद्रशाल बन में च्यार विदिशा में ८ हस्ती कूट छै। ५०० जोजन ऊंची ४०० जोजन नीची सपी पहोली ३७५ जोजन बीच में छकी पहोली २५० जोजन ऊपर लवी पहोली तिगुणी जामेरी परिधि गोपुच्छ सठाण छै।

२ नन्दन बन, भद्रशाल बन सु ५०० जोजन ऊंचो आवै जठे नन्दन बन छै। ५०० जोजन चौड़ो मेरु पर्वत के चौफेर चक्रवाल पहोलो पद्मवर

ते दो सिंहासन छै। उत्तर दक्षिण की शिलापर १-१ सिंहासन छै। सब सिंहासन ५०० धनुषका लम्बा २५० धनुष चौड़ा, तिण ऊपर श्रीतीर्थंकर देवका जन्म अभिषेक आदि महोत्सव चौसठ इन्द्र मिलने करे छै।

५ मेरु पर्वत ऊपर एक मन्दिर चुलिका छै। ४० जोजन की ऊंची १२ जोजन मूलमें लम्बी पहोली ८ जोजन मध्यमें लम्बी पहोली ४ जोजन ऊपर में लम्बी पहोली तिगुणी जाझेरी परिधि तिण ऊपर घणो रमणीक भूमिभाग छै। तिणरे मध्य भागमें १ महलायतन छै १ कोसकी लम्बी ॥ कोसकी पहोली देशूणा १ कोसकी ऊंची अनेक धम्भाकरी शोभायमान छै। तिणमें शास्वती जिन प्रतिमा छै।

५ चित्र विचित्र दोय पर्वत देवकुरु क्षेत्रमें निषध पर्वत सु ८३४ जोजन एक जोजन का सातीया ४ भाग उत्तर जावे जठे सीतोदा नदीके देनु पासे छै। इमही जमक, समक ए दोय पर्वत उत्तर कुरुक्षेत्रमें नीलवन्त पर्वत सु ८३४ जोजन एक जोजनका सातीया ४ भाग दक्षिण सीता नदी के बेनु पासे छै। ए इग्यारह पर्वत १०००

चित्र १ विचित्र २ निष्न ३ एकसेल ४ त्रिकूट ५ वेसमण ६ अजम ७ मयजन ८ अंकावाई ६ पदमा वाई १० आसीविप ११ सुखावह १२ चन्द्र १३ सूर्य १४ नाग १५ देव १६। सोल्ह वक्षारा पर्वत निषद नीलवन्त सू निकल्या सीतासीतोदा नदीने पासे रह्या सोळेही पर्वत १६५९२ जोजन लंबा निषद नीलवन्तने पासे ४०० जोजन ऊचा १०० जोजन जमीन में ऊडा ५०० जोजन का पहोला सीता सीतोदा पासे ५०० जोजम ऊचा १२५ जोजम धरतीमें ऊडा ५०० जोजन का पहोला।

६ चौतीस लंबा वैताड़ पर्वत महाविदेह क्षेत्र मे ३२ विजय छै तिण में ३२ वैताड़ भरत क्षेत्रमें १ वैताड़ एरवर्त क्षेत्रमें १ वैताड़। तिणमें भरत एरवर्त क्षेत्र का वैताड़ २५ जोजन ऊचा ६ जोजन धरती में ऊडा ५० जोजन पहोल पणे। तेहनी बाहा ४८८ जोजन १६॥ कला तेहनी जीवा १०७२० जोजन १२ कला तेहनी धनुपृष्ठ १०७४० जोजम १५ कला तेहनो शर २८८ जोजन ३ कला बतीस महाविदेह क्षेत्रका वैताड़ २२१२ जोजन एक जोजन रा आठीया ७ भाग लंबा, २५ जोजन ऊचा ६। जोजन धरती में ऊडा ५० जोजन का पहोला पल्ल के

पांचवों कूंट द्वार ।

जम्बुद्वीप में ६१ पर्वत ऊपर ४६७ कूट ते किम ! चौतीस वैताड्, निषड्, नीलवन्त, विद्युत्प्रभ, मालवन्त, नन्दन वन ए १६ पर्वत ऊपर ६-६ कूट छे ३५१ कूंट हुई। चूल हेमवन्त ऊपर ११ शिखरी पर्वत ऊपर ११ महा हेमवन्त ऊपर ८ रूपी पर्वत ऊपर ८ गन्ध मादन ऊपर ७ सोमनस गजदन्ता पर्वत ऊपर ७ सोळे वखारा पर्वत ऊपर ४-४ कूट ६४ कूट। सर्व मिली ६१ पर्वत ऊपर ४६७ कूट छे। धरती ऊपर कूट ५८ भद्रशाल वन में हस्ती कूट ८ देवकुरु क्षेत्र मे कूट ८ उत्तरकुरु क्षेत्र में कूट ८ चौतीस विजय में ऋषभ कूट ३४ सर्व मिली ५२५ कूट जम्बुद्वीप में छै।

१ चौतीस वैताड् की कूट ३०६ ते २५ गाऊ ऊंची २५ गाऊ मूल में पहोली १८॥ गाऊ मध्य मे पहोली १२॥ गाऊ ऊपर में पहोली। तिगुणी जामी परिधि, गौ पुऊ सधाण।

२ गजदन्ता की कूट ७ नन्दन वन की कूट १ ए ३ कूट १००० जोजन ऊंची १००० जोजन मूल मे लम्बी पहोली ७५० जोजन मध्य में लम्बी पहोली ५०० जोजन ऊपर में लम्बी पहोली। तिगुणी जाझेरी परिधि।

सातवाँ श्रेणि द्वार।

जम्बुद्वीप में १३६ श्रेणी ते किम ? चौतीस वैताढ़ पर्वत ऊपर ४-४ श्रेणी छै।

१ भरत क्षेत्र को वैताढ़ २५ जोजन ऊंचो छै। तिण पर्वत ऊपर धरती सुं १० जोजन ऊंचो जावै जठे बेहु पासे २ विद्याधरनी श्रेणी १० जोजन चौड़ी वैताढ़ प्रमाण लाम्बी तिहां नमि विनमि विद्याधर बसै छै। बसवाना नगर दक्षिण श्रेणी में ५० उत्तर में ६० तिहां थकी १० जोजन ऊंचो जावै जठे बेहु पासे २ अभियोगी देवतानी श्रेणी छै। १० जोजन चौड़ी वैताढ़ प्रमाण लम्बी। तिहां अभियोगी देवता बसै छै। बसवाना नगर दक्षिण श्रेणी में ५० उत्तर श्रेणी में ६०

२ एरवर्त क्षेत्र को वैताढ़ इमहिज नगर उत्तर श्रेणी ५० दक्षिण श्रेणी ६०।

३ महाविदेह का वैताढ़ इमहिज। नगर बेहु पासे ५५-५५।

आठवाँ विजय द्वार।

जम्बुद्वीप में ३४ विजय ३४ नगरी ३४ राजधानी ३४ वैताढ़ ३४ तमस गुफा ३४ खण्ड प्रभा गुफा ३४

कमलानो अभिन्तर कोट ४००००० कमलानो मध्यम कोट ४८००००० कमला ना बाह्य कोट सरब मिल १२०५०१२० कमल छै कमला मो मान बीचे १ मोटो कमल छै ते कमल १ जोजन लम्बो पहोलो आधा जोजन जाडो १० जोजन पाणीमें ऊडो २ कोस पाणी सु ऊचो तिणरे मध्य भागमें १ कनीका आधा जोजन की लम्बी पहोली १ गाऊकी जाडी तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छै। तिणरै मध्य भागमें १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोलो देसूणी १ कोस ऊची अनेक थम्भा करी शोभायमान छै। तिणमें श्रीदेवी बसै छै। बारला कमलको मान परिधि पर परिधि आधा आधा जानना, पानीमें ऊंडा सरीषा जानना।

२ शिखरी पर्वत ऊपर पुंडरिक द्रह, पद्मद्रह जिम जाणवो लच्छी देवी बसै छै।

३ महाहिमवन्त पर्वत ऊपर महा पद्मद्रह रूपी पर्वत ऊपर महापुण्डरिक द्रह ए २ द्रह २००० जोजन पूर्व पश्चिम लम्बा १००० उत्तर दक्षिण पहोला १० जोजन ऊडा महापद्म द्रहमें हरिदेवी महापुण्डरिक द्रहमें बुद्धि देवी बसै छै। बसबाना कमल १२०५०१२० कमला नो मान श्रीदेवी थकी दूणा

रक्तवती ए २ नदी शिखरी पर्वतकी पुण्डरिक द्रह सुं नीकली। नदी नामे ४ कुण्ड १० जोजनका लम्बा पहोला १० जोजन का ऊंडा। तिणमें १ द्वीपो ८ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो २ कोस ऊंचो तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छै तिणरे मध्य भागम १ महलायत छै १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देशूणी १ कोस ऊंची तिणम नदी नामे देवी परिवार सहित बसै छै ते नदी नीकली ६। जोजन पहोली आधा गाऊ ऊंडी समुद्रमें मिली जठै ६२॥ जोजन पहोली १। जोजन ऊंडी १४०००-१४००० नदियां के परिवार सु लूण समुद्रमें मिली।

२ रोहिता रोहितसा ये दो नदी हेमवय क्षेत्रमे सोवन कूला रुपकूला ये २ नदी अरणवय क्षेत्रमें। रोहिता चूल हेमवन्त पर्वत के पद्म द्रह सु नीकली। रोहितसा महा हेमवन्त पर्वत के महा पद्म द्रह सु नीकली। सोवनकूला शिखरी पर्वत के पुण्डरिक द्रह सु नीकली। रूपकूला रूपी पर्वत के महा पुण्डरिक द्रहसुं नीकली। नदी नाम ४ कुंड १२० जोजन लम्बा पहोला ८० जोजन ऊंडा तिणरे मध्यम १ द्वीपो ८६ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो

नीकलती २५ जोजन पहोली २ गाऊ ऊंडी समुद्र में मिली जठे २५० जोजन पहोली ५ जोजन ऊंडी ५६००००-५६००० नदिया के परिवार सु परवरी लूण समुद्र में मिली।

४ सीता सीतोदा दोय मोटी नदी महाविदेह क्षेत्र में सीतोदा निषध पर्वत का तिगच्छ द्रह सु नीकली। सीता नीलवन्त पर्वत के केशरी द्रह सु नीकली। नदी नाम २ कुण्ड ४८० जोजन लम्बा पहोला १० जोजन ऊंडा तिण में १ द्वीपो ६४ जोजन लम्बो पहोलो १० जोजन ऊंडो २ कोस पाणी सु ऊंचो तिण ऊपर घणो रमणीक भूमि भाग छे तिणार मध्य भाग में १ महलायत छे १ कोस लम्बी आधा कोस पहोली देवूणी १ कोस ऊंची तिण में नदी नामे देवी परिवार सहित बसे छे। ते नदी नीकलती ५० जोजन पहोली १ जोजन ऊंडी समुद्र में मिली जठे ५०० जोजन पहोली १० जोजन ऊंडी ५३२०००-५३२००० नदिया के परिवार सु परवरी लूण समुद्र मे मिली।

१ ८४००० नदी देवकुरु क्षेत्र में मिली।
२ ८४००० नदी उत्तरकुरु क्षेत्र में मिली।
३ १६ गंगा १६ सिन्धु १६ रक्ता १६ रक्तवती ए

लम्बी आधा कोस पहोली देसूणी १ कोस ऊंची तिण में नदी नामे देवी परिवार सहित बसे छै। ते नदी नीकली १२५ जोजन पहोली २॥ जोजन की ऊंडी १२५१९ जोजन २ कला लम्बी सीता सीतोदा में मिली।

पूर्व पश्चिम	लाख जोजन माप।
मेरु पर्वत	१००००
भद्रशाल वन दोनों तरफ	४४०००
८ वखारा पर्वत	
५०० जोजन	४०००
६ अन्तर नदी १२५ जोजन	७५०
१६ विजय २२१२ जोजन	
१ जोजनका आठमा	३५४०६
भाग ०	
सीतोदा मुखवन	२९२२
सीता मुखवन	२९२२
	१०००००

उत्तर दक्षिण	लाख जोजन माप।
भरतक्षेत्र	जोजन कला
	५२६—६
क्षुद्र हेमवन्त पर्वत	१०५२—१२
हेमवय क्षेत्र	२१०५—५
महा हेमवन्त पर्वत	४२१०—१०
हरिवास क्षेत्र	८४२१—१
निषध पर्वत	१६८४२—२
महा विदेहक्षेत्र	३३६८४—४
नीलवन्त पर्वत	१६८४२—२
रम्यकवास क्षेत्र	८४२१—१
रुपी पर्वत	४२१०—१०
अरणवय क्षेत्र	२१०५—५
शिखरी पर्वत	१०५२—१२
एरवत क्षेत्र	५२६—६
	१०००००

निरवद्य क्रियाऽधिकारः ।

१ अठारह पाप सू निवर्त्या कल्याणकारी कर्म बंधे.
[भगवती श० ७ उ० १०

२ वन्दना करता नीचा गोत्र खपावे ।
[उत्तराध्ययन अ० २९ बोल १०

३ धर्मकथा सू शुभ कर्म बंधे ।
[उत्तराध्ययन अ० २९ बोल २३]

४ व्यावच किया तीर्थंकर गोत्र बंधे ।
[उत्तराध्ययन अ० २९ बोल ४३]

५ तीन प्रकार शुभ दीर्घायु बंधे ।
[भगवती श० ५ उ० ६]

६ दश प्रकार कल्याणकारी कर्म बंधे ।
[ठाणांग ठाणे १०]

७ अठारह पाप सेव्यां कर्कश वेदनीय कर्म बंध अने १८ पाप सू निवर्त्यां अकर्कश वेदनीय कर्म बंधे ।
[भगवती श० ७ उ० ६]

८ बीस बोला करी तीर्थंकर गोत्र बंधे ।
[ज्ञाता अ० ८]

९ प्राण, भूत, जीव, सत्व ने दुःख न दियां साता वेदनी कर्म बन्धे ।
[भगवती श० ७ उ० ६]

४ साधु जयणा सूं आहार करै तो पाप कर्म बंधै नहीं।

[दशवैकालिक अ० ४ गा० ८

५ साधु ना आहार नी वृत्ति असावद्य कही।

[दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० ९२

६ निर्दोष आहार ना लेवणहार तथा देवणहार दोनूं शुद्ध गति में जावै।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० १००

७ छव स्थानके करी साधु आहार करे तो आज्ञा उलंघै नहीं।

[ठाणांग ठा० ६]

— —

निग्रन्थ निद्राऽधिकारः।

१ साधु रै यत्नाइ करी सोवतां पाप बन्धै नहीं।

(दशवैकालिक अ० ४ गा० ८)

२ 'सुत्ते' नाम निद्रावन्त नो छै।

(दशवैकालिक अ० ४)

३ कांइक सुतो कांइक जागतो स्वप्न देखे।

(भगवती श० १६ उ० ६)

४ अभिग्रह धारी साधु तीजी पोरसी में निद्रा मूकै।

(उत्तराध्ययन अ० २६ गा० १८)

४ एकलो रहै तिण में आठ दोष कह्या।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० १)

५ सूत्र अने वय करी अव्यक्त तेह ने एकाकि पणो करवे नहीं। तथा सूत्र अने वय करी व्यक्त छै तिण ने पिण गुरु नी आज्ञा सूं एकाकि पणो करवो पिण आज्ञा बिना करवो नहीं।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० ४)

६ आठ गुणसहित ने एकल पडिमा योग्य कह्यो। श्रद्धा में सेंठो १ देव डिगायो डिगै नहीं २ सत्यवादी ३ मेधावी (मर्यादावान) ४ बहुसूत्री (नवमा पूर्वनी तीन वस्तु नो जाण) ५ शक्तिवान ६ कलह-कारी नहीं ७ धैर्यवन्त ८ उत्साह वीर्यवन्त।

(ठाणांग ठाणे० ८)

७ साधु अने श्रावक बिहुं ने धर्मना करणहार कह्या वलि साधु अने श्रावक ने 'सुव्रता' कह्या।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० २१)

८ घणा साधां में पिण विकाले तथा रात्रि में एकला नें दिशा न जाणो।

(बृहत्कल्प उ० १ बोल ४७)

९ जे ज्ञानाधिक ने अथवा गुणाधिक नी सेवा करै तो गच्छ मध्यवर्ती साधु निपुण समाधियो वाछै।

(उत्तराध्ययन अ० ३२)

२ उचार पासवण परठी काष्ठादिके करी पूंछणां प्रायश्चित ।

(निशीथ उ० ४ बोल १३८)

३ उचार पासवण परठी ने शुचि न लेवै अथवा तठेई उचार ऊपर शुचि लेवै अथवा अति दूर जाई शुचि लेवै तो प्रायश्चित आवै ।

(निशीथ उ० ४ बोल १३६ से १४१)

४ दिवसे तथा रात्रि तथा विकाले पोता ना पात्रे तथा अनेरा साधु ने पात्रे उचार पासवण परठवी सूर्य रो ताप न पहुंचे तिहां न्हाखे तो दण्ड आवै ।

(निशीथ उ० ३ बोल ८०)

५ धन्नो सार्थवाह विजय चोर साथे एकान्ते जाई उचार पासवण परठ्यो कह्यो ।

(ज्ञाता अ० २)

कल्पिताऽधिकारः ।

१ तीर्थंकर ना अंतरा साधु हुआ ते ४ बुद्धि करी कल्पना पड्या करै ।

(नन्दी-पन्नवणा वर्णन)